



# श्री पट्टावली-समुच्चयः

प्रथमो भागः

सं०--मुनिदर्शनविजयः

प्रकाशयित्री —



श्री चारित्र-स्मारक-ग्रन्थमाला

वीरमगाम (गुजरात)

वी० नि० सं० २४५६  
कमलचारित्राब्द १५

मूल्य-सार्धरूप्यकम्  
१-५-०

{ विक्रमाब्द १९८६  
यिरवब्द १९३३

*Published by:—*

**MAFATLAL MANEKCHAND,**

*Hony. Secretary,*

S. C. M. B. S.

VIRAMGAM (Gujrat)

*Printed by:—*

**BHOOP SINGH SHARMA,**

SARASWATI PRINTING PRESS,

Belanganj, AGRÁ.

## उपक्रम

यह एक अति स्पष्ट बात है कि किसी भी धर्म-समाज या राष्ट्र का जीवन केवल वर्तमान कालीन परिस्थिति में ही परिसीमित नहीं होता, वरन् उसके पीछे अतीव विस्तृत भूतकाल होता है और आगे निःसीम भविष्यकाल। भूतकाल को सुचारुतया ज्ञात करने का एक मात्र साधन है उसके इतिहास का तुलनात्मक ज्ञान एवं ऐतिहासिक महापुराणों का चरित्रावलोकन। भविष्य की रूपरेखाका ज्ञान भी पूर्व इतिहास की धुनियाद के ऊपर खुले हुए विचारपूर्ण मनोमथन के ऊपर निर्भरित है। इस तरह भूत और भविष्य दोनों ही के लिये इतिहास का ठोस ज्ञान अनिवार्य है, और इसी कारण से इतिहास एक अति महत्वपूर्ण एवं आवश्यकीय विषय माना जाता है।

इतिहास के धरिण पौराण्य व पश्चात्य विद्वानों का यह अनुभवपूर्ण कथन है कि जैन इतिहास के अलावा भारतीय इतिहास अपूर्ण है। अतएव जैन इतिहास के अभ्यास में उपयुक्त हों ऐसे शिलालेख, पट्टावली, प्रशस्ति, सिक्के एवं राससग्रह आदि विषयक ग्रन्थरत्न तैयार कराना जैन समाज के लिये अतीव आवश्यक है। इसी विचारजन्य प्रेरणा से, उपलब्ध किन्तु अमुद्रित पट्टावलियों के प्रकाशनरूप में 'पट्टावली समुच्चय' नामक ग्रन्थ तैयार करने की योजना की गई है। यह ग्रन्थ क्रमशः कई भागों में प्रकाशित होगा, और इसमें निम्नचरिया, केवल ऐतिहासिक दृष्टि से यथोपलब्ध हरेक जैन मत एवं गच्छ की पट्टावलियों का समावेश होगा।

आज मैं इसी योजना के फलस्वरूप "पट्टावली समुच्चय" के प्रथम भाग को पुरातत्व के अभिलेखियों के सम्मुख प्रस्तुत करता हूँ। इसमें कुल तेरह पट्टावलिया दी गई हैं।

"कल्पसूत्र स्थविरावली" व "नटिसूत्र पट्टावली" ये दोनों देवर्धिगणि समाश्रमण की (१) गणधरवगीय तथा (२) वाचकवशीय पट्टावलिया हैं, जिनके ऊपर, जैनधर्म के क्रमिक विकास की ओर दृष्टिपात करने वाले की दृष्टि प्रथम ही स्थिर होती है।

मैंने उपर्युक्त दोनों पट्टावलियों को मुख्य मान कर १३ पट्टावलिया, इस भागमें सगृहीत एवं संपादित की हैं। जिनमें तीन वाचकवशीय की हैं और शेष दस गणधरवशीय की। इन सब का क्रम इस प्रकार है—

(१) कल्पसूत्र थेरावली (प्राकृत)—चतुर्दशपूर्वधारी श्री भद्रबाहु स्वामी ने नवम पूर्णमे दशा श्रुतस्कंध उद्धृत किया, जिसके आठवें अध्यायन में कल्पसूत्र की रचना हुई। प्रस्तुत ग्रन्थ का समावेश उसी कल्पसूत्र में होता है। पश्चात् उम्परपरा में, देवर्धिगणि समाश्रमण ने वी० नि० स० ६५० की वल्लभीवाचना में विद्यमान एवं अपने नाम तक के गणनायकों की पट्टावली योजित करिद।

दे० ला० सुरत मुद्रित कल्पसूत्र, सुखबोधिका; आ० स० भावनगर मुद्रित कल्पकिरणावली, सुखबोधिका; भी० मा० बंबई मुद्रित कल्पसूत्र; श्रीचारित्रविजय जी के ज्ञानभण्डार का सचित्र हस्तलिखित कल्पसूत्र तथा हर्मन जेवोत्री द्वारा मुद्रित कल्पसूत्र से इस धरावली का संशोधन किया है। ग्रन्थकर्ता का परिचय इस ग्रन्थ के पृ० ४४ में दिया है।

(२) नंदी सूत्र पट्टावली (प्राकृत)—नंदीसूत्र के कर्ता श्री देवधिंगणिक्रमाश्रमण ने भगवान् महावीर से प्रारंभकर अपने समय तक के आचाराचार्यों की नामावली नंदीसूत्र के प्रारंभ में दी है। जिनका रचना काल वि० नि० सं० १८० है। आ० स० सुरत मुद्रित श्री नंदीसूत्र तथा डेला के उपाध्वय ब्रह्मदावाद की हस्तलिखित व० डा० नं० १४ नं० ४१ की २३ पत्र वाली प्रति में उपलब्ध श्री आवश्यक नियुक्ति के आदि-मंगल पाठ से यह पट्टावली उद्धृत की गई है। तथा हस्तलिखित प्रति से उपलब्ध अधिक गायार्थें ब्रेकिट-( ) में दी गई हैं।

(३) दुसमाकालसमणसंघथयं (प्राकृत)—इस ग्रन्थ में आचकार्य के आचार्यों की नामावली है। श्रीधर्मचोपसूरि ने तेरहवीं शताब्दि में इसकी रचना की। यह स्तोत्र वि० ध० ल० ज्ञा० आगरा से अशुद्ध एवं अपूर्ण प्राप्त हुआ था, जिसे अवचूरी के आधार पर यथाशक्य शुद्ध करके मुद्रित किया है। परचान् पू० पा० प्रवर्तक श्रीकांतविजय जी महाराज से प्राप्त प्रति के शुद्ध पाठ को भी संयोजित कर दिया है। ग्रन्थकर्ता का परिचय पृ० २८ व ६० में दिया है।

(४) श्रीगुरुपर्वक्रमः (संस्कृत)—महावैयाकरण श्रीगुणरत्नसूरि ने “क्रिया-रत्नसमुच्चय” नामक ग्रन्थ वि० सं० १४६६ में निर्माणात् किया था। जो, य० ब्र० मा० बनारस से प्रकाशित हुआ है। उसी से यह पट्टावली उद्धृत की है। ग्रन्थकर्ता का परिचय पृ० ६५ में है।

(५) गुर्वावली-पट्टपरंपरासूरिनामानि (संस्कृत)—युगप्रधान श्रीमुनि-सुन्दरसूरि रचित यह ग्रन्थ य० ब्र० मा० बनारस से प्रकाशित हुआ है। उससे ४६६ पद्यमय छन्दों में से केवल पट्टपरंपरा के आचार्यों के नाम मात्र ही फेरिस्त के रूप में यहां दिये गये हैं। रचनाकाल वि० सं० १४६६ है। ग्रन्थकर्ता का परिचय पृष्ठ ६६ में दिया है।

(६) सोमसौभाग्य-पट्टावली (संस्कृत)—मुनि प्रतिष्ठासोमने श्रीसोम-सुन्दरसूरि के चरित्र रूप “सोमसौभाग्य” काव्य की वि० सं० १५२४ में रचना की। जो जै० ज्ञा० प्र० सं० बंबई से भाषायुक्त मुद्रित हो चुका है। उसी के तीसरे सर्ग से यह पट्टावली ली गई है। ग्रन्थकर्ता को प्रशस्ति पृ० ४० में है।

(७) तपगच्छ पट्टावली सूत्रवृत्ति (प्राकृत-संस्कृत)—उपाध्याय श्रीधर्म-सागर जी ने भगवान् महावीर से प्रारंभ कर जगद्गुरु श्रीहीरविजयसूरि तक के निर्गुण्य, कौटिक, चंद्र, वात्रानी वृद्ध व तपगच्छ का शृंगलावद्ध इतिहास दिया है। इसकी वृत्ति स्वोपज्ञ है। श्रीहीरविजयसूरिजी ने चार गीतार्थों की परिपद् में हमका निरीक्षण व सशोधन किया था, अतएव यह ग्रन्थ अधिक प्रामाणिक गिना जाता है। यह पट्टावली वि० ध० ल० ज्ञा० आगरा से प्राप्त ६० लि० प्रति से सम्प्रीत की है। रचनाकाल वि० स० १६४६ है। ग्रन्थकर्ता का परिचय पृ० १७३ में है। इसी के साथ हमने निम्न तीन अनुपूर्तियाँ भी सम्मिलित कर दी हैं।

(१) तपागणपतिगुणपद्धति (प्राकृत संस्कृत) उपा० श्रीगुणविजयगणि ने श्रीविजयसेनसूरि व श्रीविजयदेवसूरि के चरित्र वर्णन के रूपमें पूर्ण पट्टावली की अनुपूर्ति की है। इसे मैंने वि० ध० ल० ज्ञा० आगरा से प्राप्त ६ लि० प्रति व जै० सा० स० ग्र० अहमदाबाद से प्रकाशित श्रीविजयदेवमहात्म्य के परिशिष्ट से सम्पादित की है। गून्थकर्ता का परिचय पृ० ८२ में है।

(२) तपगच्छपट्टावली सूत्रवृत्ति अनुसंधान (संस्कृत-प्राकृत) उपा० श्री मेघविजयजी ने स्वोपज्ञवृत्तियुक्त चारगाथाओं द्वारा श्रीविजयसेनसूरि प्रमुखचार आचार्यों की जीवनी प्रदर्शित की है। यह, वि० ध० ल० ज्ञा० आगरा से प्राप्त, कर्ता ने स्वहस्त से लिखित शुद्ध किन्तु जीर्ण प्रति से, मुद्रित की गई है। रचनाकाल वि० स० १७३२ है। गून्थकर्ता का परिचय पृष्ठ १०६ में है।

(३) गुस्माला (संस्कृत)—श्री० य० जै० गु० पालिताना के सत्यापक गुरदेव श्रीचारित्रविजय जी महाराज ने इस गून्थ में भगवान् महावीर से लेकर अपने दादागुरु श्रीविजयकमलसूरि तक के पट्टधरों का परिचय दिया है। साथ ही में पट्टधरों के समकालीन साधुओं की भी गणना दी है। मैंने उक्त गून्थ में से केवल हीरविजयसूरि से प्रारंभ कर अत तक के भाग को उद्धृत किया है।

(८) श्रीमहावीर पट्टपरपरा (संस्कृत)—श्रीदेवमिललगणि विरचित एव नि० सा० प्रेम बन्धई से मुद्रित "हीरमोभाग्य" काव्य के चौथे सर्ग को यहा पर मैंने अक्षरग उद्धृत किया है। जिसमें भगवान् महावीर से लेकर श्रीविजयहीरसूरि तक के आचार्यों की नामावली है। उसकी निशद एव सोपज्ञ वृत्ति से मैंने यहा पर उपयुक्त भागमात्र ही गूहण किया है। इसकी रचना के विषय में यह विशेषता है कि इसका प्रारंभ करीव वि० स० १६३६ में हुआ था और अत करीव १६५६ में। क्योंकि धर्मसागरगणि रचित तपागच्छ पट्टावली में इसका उल्लेख है और १६५६ तक की कुछ घटनाओं का वर्णन भी इसमें मिलता है। गून्थकर्ता का परिचय पृ० १०३ में है।

(६) युगप्रधानाः (संस्कृत)—उपा० श्रीविनयविजय जी रचित व पं० ही० हं० जामनगर द्वारा प्रकाशित “लोकप्रकाश” के ३४ वें सर्ग में दुग्मकालन्यमणसंघ-धर्य का विशद अवतरण संस्कृत भाषा में दिया है। अतएव मैंने इसे बलों से संगृहीत किया है। रचनाकाल वि० सं० १७०८ है। गून्थकर्ता का परिचय पृ० १०५ में है।

(१०) श्री सूरिपरंपरा (संस्कृत)—“लोकप्रकाश” के ३७ वें सर्ग में कर्ता ने अपनी सूरि परंपरा रूप गणधरवंश का उल्लेख किया है। मैंने इसे वहीं से उद्धृत किया है।

(११) पट्टावली सरोद्धार (संस्कृत)—उपा० श्रीरविवर्द्धन रचित इस गून्थ में स्वसमयवर्ती गणनायक श्रीविजयरत्नसूरि तक की सूरिपट्टावली अवतरण की है। इसे मैंने वि० ध० ल० ज्ञा० आगरा से लब्ध प्रति से संगृहीत किया है। इसकी अनुपूर्ति में प्रदत्त परंपरा शायद् गून्थकर्ता की गुरुपरंपरा हो, ऐसा प्रतीत होता है। रचनाकाल वि० सं० १७३६ के करीब है।

(१२) श्री गुरुपट्टावली (संस्कृत)—आगरा के श्रीचिंतामणि जी के भण्डार से आठपत्रों की श्रीविजयप्रभसूरि तक की पट्टावली की एक प्रति उपलब्ध हुई है। जिस पर कर्ता का नाम अदृश्य है। कतिपय विशेषता होने से मैंने उसे संगृहीत की है। लेखक ने बाद में जिन नामों की वृद्धि की है, उनका भी अनुपूर्ति में संयोजन कर दिया है। तथा उनके फुटनोट भी “टिप्पणकं” स्वरूप अक्षरशः दे दिये हैं। पिछले भागमें उल्लिखित वर्तमानकाल तक की भट्टारक परंपरा भी अनुपूर्ति में संयोजित कर दी है।

(१३) उकेश गच्छीया पट्टावली (संस्कृत)—इसमें भगवान् पार्श्वनाथ से बीसवीं शताब्दी के कवलागच्छ के भट्टारक पर्यंत का इतिहास दिया है। गून्थकर्ता के नाम का पता नहीं है। यह पट्टावली मैंने जैनसाहित्य संशोधक त्रैमासिक से शुद्धाशुद्ध जैसी थी उद्धृत की है।

इस प्रकार इस प्रथमभाग में १३ पट्टावलियां, १० अनुपूर्तियां तथा ७ आवश्यक परिशिष्ट दिये गये हैं। और यथोचित स्थानों पर विशेष फुटनोट व पाठान्तर देने के साथ साथ विद्वानों की सरलता की दृष्टि से इस गून्थ में आये हुए विशेष शब्दों के सात प्रकार के भिन्न-भिन्न अकारादि अनुक्रम दिये गये हैं इस प्रकार इस गून्थ को यथाशक्य पूर्ण करने की कोशिश की गई है।

इस उपक्रम को समाप्त करने से पूर्व—मैं उन उदार एवं सहृदय विद्वद्वरों का नामोल्लेख करना उचित समझता हूँ, जिनकी प्रेमपूर्ण—हार्दिक प्रेरणा ने इस गून्थ को शीघ्र तैयार करने में सहायता की है। वे हैं—(१) पटना निवासी श्रीयुत

के पी० जयस्वाल (२) महान् वैज्ञानिक सर जगदीशचन्द्र बौस, जिनका प्रत्यक्ष परिचय मुझे राजगृही में हुआ था और जिनकी जैनतत्त्वज्ञान एवं जैन इतिहास विषयक जिज्ञासा ने मुझे आकर्षित किया था । (३) कृष्णनगर के डिम्बिकट इंजीनियर व बगला के प्रखर लेखक तथा कवि श्रीयुत भूपदेवेन्द्र सोवाकर चटर्जी और (४) मथुरा न्युज्युम के क्यूरेटर श्रीमान् बानू वासुदेवशरण M , A ।

इस ग्रन्थ के प्रत्येक कार्य में पू० हेतमुनि जी महाराज, मुनिरय श्री ज्ञान-विजय जी तथा मुनि श्री न्यायविजय जी का उत्साहपूर्ण एवं हार्दिक सहभाव रहा है । तथा रतिलाल जी देसाई न्यायतीर्थ तर्कभूषण, भिरालाल जी देसाई न्यायतीर्थ तर्कभूषण तथा प० रामकुमार जी न्यायतीर्थ विद्याभूषण हिन्दी प्रभाकर ने अकाराधिक्रम के तैयार करने में उत्तरेषणीय समय का भोग दिया है । अतएव उनका तथा अन्य ग्रन्थ-प्राप्ति में सहायक महानुभावों का हृदय से ऋणा हैं । साथ ही मैं इस ग्रन्थ के मुद्रक प० भूपसिंह जी शर्मा मैनेजर मरस्वती प्रेम को भी धन्यवाद देना जरूरी समझता हूँ ।

“पट्टावली समुच्चय” के सत्र हिस्से प्रकट होने के पश्चात् ऐतिहासिक विचार पूर्ण एक विस्तृत प्रस्तावना लिखने का विचार होने से इस ग्रन्थ में तत्सम्बन्धी ऊहापोह नहीं किया है ।

जैन इतिहास के विमृत क्षेत्र के अभ्यासियों को किसी भी अंश में यह ग्रन्थ मार्गदर्शक एवं सहायक होगा तो मैं अपने प्रयास को सफल समझूँगा ।

अन्त में इस ग्रन्थ के दूसरे भाग को भी मैं शीघ्रतिशीघ्र पुस्तक के अभिलाषियों के कर कमल में रख सकूँ ऐसी परमात्मा महावीर से प्रार्थना करते हुए, मैं अपने कथन को पूर्ण करता हूँ ।

रोगन मोहल्ला आगरा, वी. नि. म. २४५६ )

वसंत पंचमी

—मुनि दर्शनविजय ।

विशेष नोट—उपक्रम प्रथम संस्कृत में ही लिखने का विचार था किन्तु वर्तमान राष्ट्रीय प्रवृत्ति व हिन्दी भाषा का, राष्ट्रभाषा बनने की दृष्टि से, बढ़ता हुआ प्रचार देखा कर हिन्दी में ही लिखना उचित समझा गया है ।



# अनुक्रमणिका ॥

अंक	पद्यावली-नामानि	पत्रांक:
१--	सिरिकप्पसूत्त-थेरावली	१
२--	सिरिनंदीसुत्र-पद्यावली	१२
३--	सिरि दुसमाकालसमणसंघथयं	१५
४--	श्रीगुरुपर्वक्रमः	२५
५--	गुर्वावली-पट्टपरंपरा-सूरिनामानि	३३
६--	श्रीसोमसौभाग्य-पद्यावली	३५
७ -	श्रीतपागच्छ-पद्यावलीसूत्रम्	४१
	( १ ) श्रीतपागणपतिगुणपद्धतिः	७८
	( २ ) श्रीतपागच्छ-पद्यावलीसूत्रवृत्त्यनुसन्धानं	८८
	( ३ ) श्रीगुरुमाला	१०२
८--	श्रीमन्महावीर पट्टपरंपरा (तिस्रोनुपूर्तयश्च)	१२०
९--	श्रीयुगप्रधानाः	१३६
१०--	श्रीसूरिपरंपरा	१४४
११--	श्रीपद्यावलीसारोद्धारः (अनुपूर्तिश्च)	१४८
१२--	श्रीगुरुपद्यावली (तिस्रोनुपूर्तयश्च)	१६३
१३--	उपकेशगच्छीया पद्यावली	१७७

## परिशिष्टानि ॥

१--	दुष्पमाकाल श्रीश्रमणसंघस्तोत्र-संवन्धः	१६५
२--	गाथासंग्रहः	१६६
३--	राजवंशाः A. B. C. D. E.	१६७
४--	ऐतिहासिक पत्रं	२०१
५--	८४ गच्छाः	२०३
६--	लघुपद्यावली	२०४
७ -	पल्लीवालगच्छ ऐतिहासिक संग्रहः	२०५
	शब्दानां अकाराद्यनुक्रमः A. B. C. D. E. F. G.	२०७

समोत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स ॥

( १ )

चउइस-पुव्वधारग-अन्तिमसुअकेवली-जुगप्पहाण  
सिरि-भइवाहु सामि विरइअस्स, सिरिकप्पसुत्तस्स ॥

## थेरावली

( श्री कल्पमूत्र स्थविरावली )

तेण कालेण तेण समणण समणस्स भगवओ महावीरस्स नवगणा,  
इक्कारस गणहरा हुत्था ॥ १ ॥

से केणट्टेण भते । एवं बुच्चइ-समणस्स भगवओ महावीरस्स नव  
गणा, इक्कारस गणहरा हुत्था ? ॥ २ ॥

समणस्स भगवओ महावीरस्स जिट्ठे इदभूर्इ अणगारे गोयम (गोयमस)  
गुत्तेणं पच समणसयाइ वाणइ, मज्झिमए अग्गिभूर्इ अणगारे गोयमगुत्तेणं  
पचसमणसयाइ वाणइ, कणीअस्से अणगारे घाउभूर्इ गोयमगुत्तेण (नामेण)  
पच समणसयाइ वाणइ, थेरे अज्जवियत्ते भारद्वाए गुत्तेण पच समणसयाइ  
वाणइ, थेरे अज्जसुहम्मे अग्गिवेसायणे गुत्तेण पच समणसयाइ वाणइ थेरे  
मडित्तपुत्ते वासिट्ठे गुत्तेण अद्दधुट्ठाइ समणमयाइ वाणइ, थेरे भोरिअपुत्ते  
कासवे गुत्तेण अद्दधुट्ठाइ समणसयाइ वाणइ, थेरे अकपिए गोयमे (गोयमस)  
गुत्तेण—थेरे अयलभाया हारिआयणे गुत्तेण—पत्तेय एते टुण्णिणवि थेरा  
तिण्णिण तिण्णिण समणमयाइ वाणति, थेरे अज्जमेइज्जे येरेपभासे—एण  
टुण्णिणत्रि थेरा कोडिन्ना गुत्तेण तिण्णिण तिण्णिण समणमयाइ वाणति । से  
तेणट्टेण अज्जो । एण बुच्चइ-समणस्स भगवओ महावीरस्स नव गणा,  
इक्कारस गणहरा हुत्था ॥ ३ ॥

सव्वेवि णं एते समणस्स भगवओ महावीरस्स एकारसवि गणहस  
दुवालसंगिणो चउदसपुन्विणो समत्तगणिपिडगधारगा रायगिहे नगरे  
मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं कालगया जाव सव्वदुक्खप्पहीणा, थेरे इंदभूर्ई,  
थेरे अज्जसुहम्ममेय सिद्धिगए महावीरे पच्छा दुणिएवि थेरा परिनिव्वुया ॥  
जे इमे अज्जत्ताए समणा निग्गंथा विहरंति, एए णं सव्वे अज्जसुहम्मस्स  
अणगारस्स आवच्चिजा, अवसेसा गणहरा निरवच्चा वुच्चिजा ॥ ४ ॥

१—समणे भगवं महावीरे कासवगुत्ते णं । समणस्स णं भगवओ  
महावीरस्स कासवगुत्तस्स अज्जसुहम्मे थेरे अंतेवासी अग्गिवेसायणगुत्ते

२—थेरस्स णं अज्जसुहम्मस्स अग्गिवेसायणगुत्तस्स अज्जजंबुनामे  
थेरे अंतेवासी कासवगुत्तेणं ॥

३—थेरस्स णं अज्जजंबुणामस्स कासवगुत्तस्स अज्जप्पभवे थेरे  
अंतेवासी कच्चायणसगुत्ते ॥

४—थेरस्स णं अज्जप्पभवस्स कच्चायणसगुत्तस्स अज्जसिज्जंभवे  
थेरे अंतेवासी मणगपिया वच्छसगुत्ते ॥

५—थेरस्स णं अज्जसिज्जंभवस्स मणगपिउणो वच्छसगुत्तस्स अज्ज-  
जसभदे थेरे अंतेवासी तुंगियायणसगुत्ते × ॥

संखित्तवायणाए अज्जजसभदाओ अग्गओ एवं थेरावली भणिया ।

६—तंजहा—थेरस्स णं अज्जजसभदस्स तुंगियायणसगुत्तस्स अंते-  
वासी दुवे थेरा—थेरे अज्जसंभूअविजए माढरसगुत्ते, थेरे अज्जभदवाहू  
पाईणसगुत्ते ।

७—थेरस्स णं अज्जसंभूअविजयस्स माढरसगुत्तस्स अंतेवासी थेरे  
अज्जथूलभदे गोयमसगुत्ते ।

८—थेरस्स णं अज्जथूलभदस्स गोयमसगुत्तस्स अंतेवासी दुवे थेरा-  
थेरे अज्जमहागिरी एलावच्चसगुत्ते, थेरे अज्जसुहत्थी वासिट्ठसगुत्ते ।

× अत्र चतुर्दशपूर्वधारीणः दश श्रुतस्कंध-कल्पसूत्र रचयितुः भगवतः श्रीभद्रबाहु  
स्वामिनः पट्टावली समाप्ता ।

६—थेरस्स ए अज्जसुहत्थिस्म वासिद्वसगुत्तस्स अतेवासी दुबे थेरा सुट्ठियसुप्पडिवुद्धा कोडियकाकदगा वग्घावच्चसगुत्ता ।

१०—थेराए सुट्ठियसुप्पडिवुद्धाए कोडियकाकदगाए वग्घावच्चसगुत्ताए अतेवासी थेरे अज्जइददिन्ने कोसियगुत्ते ।

११—थेरस्स ए अज्जइददिन्नस्स कोसियगुत्तस्स अतेवासी थेरे अज्जदिन्ने गोयमसगुत्ते ।

१२—थेरस्सए अज्जदिन्नस्स गोयमसगुत्तस्स अतेवासी थेरे अज्जसीहगिरी जाइस्सरे कोसियगुत्ते ।

१३—थेरस्सए अज्जसीहगिरिस्स जाइस्सरस्स कोसियगुत्तस्स अतेवासी थेरे अज्जचडरे गोयमसगुत्ते ।

१४—थेरस्म ए अज्जवइरस्स गोयमसगुत्तस्म अतेवासी थेरे अज्जवइरसेणे उक्कोसियगुत्ते ।

१५—थेरस्म ए अज्जवइरसेणस्स उक्कोसिअगुत्तस्स अतेवासी चत्तारि थेरा—थेरे अज्जनाइले १ थेरे अज्जपोमिले २ थेरे अज्जजयन्ते ३ थेरे अज्जतावसे ४ ॥ थेराओ अज्जनाइलाओ अज्जनाइला साहा निग्गया, थेराओ अज्जपोमिलाओ अज्जपोमिला साहा निग्गया, थेराओ अज्जजयन्ताओ अज्जजयन्ती साहा निग्गया, थेराओ अज्जतावसाओ अज्जतावसी साहा निग्गया ४ इति ॥ ६ ॥

वित्थरवायणाए पुण अज्जजसभदाओ पुरओ थेरावली एव पलोइज्जइ (विलोज्जइ) । तजहा—

६—थेरस्स ए अज्जजसभदस्स तु गियायणसगुत्तस्स इमे दो थेरा अन्तेवासी अहावच्चा अभिण्णया हुत्था ॥ तजहा—थेरे अज्जभदवाहू पाईणसगुत्ते, थेरे अज्जसभूअविजण माढरसगुत्ते,

७—थेरस्स ए अज्जभदवाहुरस पाईणसगुत्तस्म इमे चत्तारि थेरा अन्तेवासी अहावच्चा अभिण्णया हुत्था, तजहा—थेरे गोदासे १, थेरे अग्गिदत्ते २, थेरे जण्णदत्ते ३, थेरे सोमदत्ते ४ कासवगुत्तेण ॥ थेरेहिन्तो गोदासेहिन्तो कासव गुत्तेहिन्तो इत्थ ए गोदामगणे नाम गणे निग्गए, तस्म ए

इमाञ्चो चत्तारि साहाञ्चो एवमाहिज्जन्ति, तंजहा - तामलिक्तिया १, कोडीवरि-  
सिया २ पंडुवद्धणिया (पोंडवद्धणिया) ३, दासी खव्वडिया ४ ।

७ थेरस्स णं अज्जसंभूयविजयस्स माढरसगुत्तस्स इमे दुवालस  
थेरा अन्तेवासी अहावच्चा अभिण्णया हुत्था तंजहा -

नंदणभद्दु १ वनंदण-भदे २ तह तीसभद्द ३ जसभद्दे ४

थेरे य सुमणभद्दे (सुमिणभद्दे) ५, मणिभद्दे (गणिभद्दे) ६ पुण्णभद्दे ७ य ॥१॥

थेरे अ थूलभद्दे ८ उज्जुमई ९ जंवुनामधिज्जे १० य ॥

थेरे अ दीहभद्दे ११, थेरे तह पंडुभद्दे १२ य ॥२॥

थेरअस्स णं अज्जसंभूअविजयस्स माढरसगुत्तस्स इमाञ्चो सत्त अंते-  
वासिणीञ्चो अहावच्चाञ्चो अभिण्णयाञ्चो हुत्था,

तंजहा - जक्खा १ य जक्खदिण्णा २, भूया ३ तह चैव भूयदिण्णा य ४ ॥

सेणा ५ वेणा ६ रेणा ७ भगिणीञ्चो थूलभद्दस्स ॥ १ ॥

८ - थेरस्स णं अज्जथूलभद्दस्स गोयमसगुत्तस्स इमे दो थेरा अन्ते-  
वासी अहावच्चा अभिण्णया हुत्था, तज्जहा-थेरे अज्जमहागिरी एलावच्चस-  
गुत्ते १ थेरे अज्जसुहत्थी वासिट्ठसगुत्ते २

थेरस्स णं अज्जमहागिरिस्स एलावच्चसगुत्तस्स इमे अट्ठ थेरा अन्ते-  
वासी अहावच्चा अभिण्णया हुत्था, तज्जहा-थेरे उत्तरे १ थेरे बलिस्सहे २,  
थेरे धण्डू ३ थेरे सिरिड्डू ४ थेरे कोडिन्ने ५ थेरे नागे ६, थेरे नागमित्ते ७, थेरे  
छल्लूए रोहगुत्ते कोसियगुत्ते णं ८ ॥ थेरेहिन्तो णं छल्लूएहिन्तो रोहगुत्तेहिन्तो  
कोसियगुत्तेहिन्तो तत्थ णं तेरासिया निग्गया । थेरेहिन्तो णं उत्तर बलिस्स-  
हेहिन्तो तत्थ णं उत्तर बलिस्सहे नामं गणे निग्गये । तस्सणं इमाञ्चो चत्तारि  
साहाञ्चो एवमाहिज्जन्ति,

तंजहा—कोसम्बिया १, सोइत्तिया (सुत्तिवत्तिआ) २, कोडंवाणी ३, चन्दनागरी ४

१—थेरस्स णं अज्जसुहत्थिस्स वासिट्ठसगुत्तस्स इमे दुवालस थेरा  
अंतेवासी अहावच्चा अभिण्णया हुत्था,

तंजहा-थेरे अ अज्जरोहण १, जसभद्दे २, मेहगणी ३ य कामिड्डी ४

सुट्ठिय ५, सुप्पडिबुद्धे ६, रक्खिय ७ तह रोहगुत्ते ८ अ ॥१॥

इसिगुत्ते ६ सिरिगुत्ते १०, गणी अ वम्भे ११ गणी य तद् सोमे १२ ॥

वम वो अ गणहरा खलु, एण सीसा सुहत्थिस्म ॥२॥

थेरेहिन्तो ए अज्जरोहणेहिन्तो ए कासवगुत्तेहिन्तो ए तत्थ ए  
उदेहगणे नाम गणे निग्गए, तस्सिमाओ चत्तारि साहाओ निग्गयाओ । छच्च  
कुलाइ एवमाहिज्जति ॥

के किं त साहाओ ? साहाओ एवमाहिज्जति, तज्जहा—उदुवरिज्जिया  
१, मास पूरिआ २, मडपत्तिया ३, पुण्णपत्तिआ (पण्णपत्तिआ) ४ से त साहाओ ॥

से किं त कुलाइ ? कुलाइ एवमाहिज्जति । तज्जहा—

पढम च नागभूय । त्रिय पुण सोमभूय होइ ॥

अह उल्लगच्छ तइअ ३, चउत्थय हत्थलिज्ज तु ॥१॥

पचमग नन्दिज्ज ५, छट्ट पुण पारिहासय ६ होइ ॥

उदेह गणस्सेए, छच्च कुला इति नायव्वा ॥ २ ॥

थेरेहिन्तो ए सिरिगुत्तेहिन्तो हारियमगुत्तेहिन्तो इत्थ ए चारणगणे  
नाम गणे निग्गए, तस्स ए इमाओ चत्तारि साहाओ, सत्त य कुलाइ एव-  
माहिज्जति

से किं त साहाओ ? साहाओ—एवमाहिज्जति तज्जहा—हारियमाला-  
गारी १, सकासीआ २, गवेधुया ३, वज्जनागरी ४ । से त साहाओ ॥

से किं त कुलाइ ? कुलाइ एवमाहिज्जति तज्जहा—

पढमित्थ वत्थलिज्ज १ वीय पुण पीइधम्मिअ २ होइ ॥

तइअ पुण हालिज्ज ३ चउत्थय पूसमित्तिज्ज ॥१॥

पचमग मालिज्ज ५, छट्ट पुण अज्जनेडय ६ होइ ॥

सत्तमय कएहसह ७, सत्त कुला चारणगणस्स ॥२॥

थेरेहिन्तो भदजमेहिन्तो भारद्वायसगुत्तेहिन्तो इत्थ ए उडुवाडियगणे  
नामगणे निग्गये, तस्स ए इमाओ चत्तारि साहाओ तिरिण कुलाइ एवमा-  
हिज्जति ॥

से किं तं साहाय्यो ? साहाय्यो एवमाहिज्जन्ति, तंजहा - चंपिज्जिया  
१ भदिज्जिया २ काकन्दिज्जिया ३ मेहलिज्जिया ४ से तं साहाय्यो ॥

से किं तं कुलाइं ? कुलाइं एवमाहिज्जन्ति तंजहा--

भदजसियं १ तह भद-गुत्तियं २ तइयं च होइ जसभदं ३ ॥

एयाइँ उडुवाडिय-गणस्स तिण्णोव य कुलाइं ॥ १ ॥

थेरेहितो एं कामिड्डीहितो कोडालस गुत्तेहितो इत्थ एं वेसवाडियगणे  
नामं गणे निग्गये, तस्स एं इमाय्यो चत्तारि साहाय्यो चत्तारि कुलाइं एव-  
माहिज्जन्ति ।

से किं तं साहाय्यो ? सा० तंजहा- सावत्थिया १, रज्जपालिया २,  
अन्तरिज्जिया ३, खेमिलज्जिया ४ । से तं साहाय्यो

से किं तं कुलाइं ? कुलाइं एवमाहिज्जन्ति, तंजहा--

गणियं १ मेहिय २ कामड्डियं ३ च तह होइ इन्दपुरगं ४ च ॥

एयाइं वेसवाडिय गणस्स चत्तारि य कुलाइं ॥ १ ॥

थेरेहितो एं इसिगुत्तेहिन्तो काकन्दएहिन्तो वासिट्टसगुत्तेहिन्तो इत्थ एं  
माणवगणे नामं गणे निग्गये, तस्स एं इमाय्यो चत्तारि साहाय्यो,  
तिण्णिण य कुलाइं एवमाहिज्जन्ति ॥

से किं तं सहाय्यो ? सहाय्यो एवमाहिज्जन्ति, तज्जहा--कासवज्जिया १,  
गोयमज्जिया २, वासिट्ठिया ३, सोरट्ठिया ४ । से तं साहाय्यो ॥

से किं तं कुलाइं ? कुलाइं एवमाहिज्जन्ति, तज्जहा--

इसिगुत्ति इत्थ पढमं १, वीयं इसिदत्तिअं मुणोयव्वं २ ॥

तइयं च अभिजयन्तं ३, तिण्णिण कुला माणवगणस्स ॥१॥

थेरेहितो सुट्ठिय-सुप्पडिबुद्धे हितो कोडिय-काकंदएहितो वग्घावच्चसगुत्ते-  
हितो इत्थएणं कोडियेगणे नामं गणे णिग्गए, तस्स एं इमाय्यो चत्तारि  
साहाय्यो, चत्तारि कुलाइं एवमाहिज्जन्ति ॥ २ ॥

से किं तं साहाय्यो ? साहाय्यो एवमाहिज्जन्ति

तजहा—उच्चा नागरि १ विज्जाहरी य २ वइरी य ३ मज्झिमिस्सा ४ । य  
कोडियगणस्स एया, हवति चत्तारि साहाओ ॥ १ ॥ से त साहाओ ॥  
कि त कुलाइ ? कुलाइ एचमाहिज्जति  
तजहा—पढमित्थ वमलिज्ज १, विइय नामेण वत्थलिज्ज तु ॥ २ ॥  
तइय पुण वाणिज्ज ३, चउत्थय पएहवाहणय ४ ॥ १ ॥

१०—येरण सुट्ठियसुप्पडिघट्ठाण कोडियकाकदयाण वग्घावच्चसगु-  
त्ताण इमे पच थेरा अतेवासी अहावच्चा अभिएणाया हुत्था तजहा—थेरे  
अज्जइददिन्ने १, थेरे पियगथे २, थेरे विज्जाहर गोवाले कासवगुत्ते ण ३,  
येरे इसिदिन्ने (इसिदत्ते) ४, थेरे अरिहदत्ते थेरेहितो ण पियगथे हिन्तो  
एत्थण मज्झिमा साहा णिग्गया, थेरेहितो ण विज्जाहरगोवालेहितो  
कासवगुत्ते हितो एत्थण कासवगुत्तेहितो एत्थ ण विज्जाहरी साहा निग्गया ॥

११—थेरस्स ण अज्जइददिन्नस्स कासवगुत्तस्स अज्जदिन्ने थेरे अते-  
वासी गोयमसगुत्ते ।

१२—थेरस्स ण अज्जदिन्नस्स गोयमसगुत्तस्य इमे दो थेरा अतेवासी  
अहावच्चा अभिएणाया हुत्था, तजहा—थेरे अज्जसतिसेणिये माढरसगुत्ते १,  
थेरे अज्जसीहगिरी जाइस्सरे कोसिय गुत्ते २ ॥ थेरेहितो ण अज्जसतिसेणि-  
एहितो माढरसगुत्तेहितो एत्थण उच्चानागरी साहा निग्गया ।

१३—थेरस्स ण अज्जसतिसेणियस्य माढरसगुत्तस्स इमे चत्तारि थेरा  
अन्तेवामी अहावच्चा अभिएणाया हुत्था, तजहा—थेरे अज्जसेणिए,  
थेरे अज्जतावसे, थेरे अज्जकुवेरे, थेरे अज्जइसिपालिए । थेरेहितो ण  
अज्जसेणिएहितो एत्थ ण अज्जसेणिया साहा निग्गया, थेरेहितो ण  
अज्जतावसेहितो एत्थ ण अज्ज तावसी साहा निग्गया, थेरे हितो ण अज्ज-  
कुवेरे हितो एत्थ ण—अज्जकुवेरा ( अज्जकुवेरि ) साहा निग्गया, थेरेहितो  
ए अज्जइसिपालिएहितो एत्थ ण अज्जइसिपालिया साहा निग्गया ।

१३—थेरस्स ण अज्जसीहगिरस्स जाइस्सरस्स कोसिय गुत्तस्स इमे  
चत्तारि थेरा अतेवासी अहावच्चा अभिएणाया हुत्था, तजहा—थेरे धणगिरी,



थेरे अज्जवइरे x थेरे अज्जसमिए, थेरे अरिहदिन्ने । थेरेहिंतो एं अज्जस-  
मिएहिंतो गोयमसगुत्तेहिंतो इत्थ एं वंभदीविया साहा निग्गया, थेरेहिंतो एं  
अज्जवइरेहिंतो गोयमसगुत्तेहिंतो इत्थ एं अज्जवइरी साहा निग्गया ।

१४—थेरस्स एं अज्जवइरस्स गोयमसगुत्तस्स इने तिरिण थेरा अंते-  
वासी अहावचा अभिण्णया हुत्था तंजहा—थेरे अज्जवइरसेणे, थेरे अज्ज-  
पउमे, थेरे अज्जरहे । थेरेहिंतो एं अज्जवइरसेणेहिंतो इत्थ एं अज्जनाइली  
साहा निग्गया, थेरेहिंतो एं अज्जपउमेहिंतो इत्थ एं अज्जपउमा साहा निग्गया,  
थेरेहिंतो एं अज्जरहेहिंतो इत्थ एं अज्जजयंतीसाहा निग्गया ।

१५—थेरस्स एं अज्जरहस्स वच्छसगुत्तस्स अज्जपूसगिरी थेरे अंते-  
वासी कोसियगुत्ते ।

१६—थेरस्स एं अज्जपूसगिरिस्स कोसियगुत्तस्स अज्ज फग्गुमित्ते  
थेरे अंतेवासी गोयमसगुत्ते ।

१७—थेरस्स एं अज्जफग्गुमित्तस्स गोयमसगुत्तस्स अज्जधणगिरी  
थेरे अंतेवासी वासिट्ठसगुत्ते ।

१८—थेरस्स एं अज्जधणगिरिस्स वासिट्ठसगुत्तस्स अज्जसिव भुई  
थेरे अंतेवासी कुच्छसगुत्ते ।

१९—थेरस्स एं अज्जसिवभूइस्स कुच्छसगुत्तस्य अज्जभइे थेरे अन्ते-  
वासी कासवगुत्ते ।

x अत्रहि श्रीवज्रस्वामिपर्यन्ते सक्षिप्तवाचनाविस्तारवाचनाचेति पट्टावली  
समाप्ते । श्रीआर्यवज्रसेनसूरिशासने चत्वारो अनुवोगाः संजाताः ॥

यदुक्तं—जावंत अज्जवइरा, अपुहुत्त कालिआणुओगस्स ।

• तेणारेण पुहुत्तं, कालिअसुइ दिड्ढिवाए अ ॥ आ० नि० ७६३ ॥

देविंद वदिएहिं, महाणुभावेहिं रक्खिअ अज्जेहिं ।

जुगमासज्ज विहत्तो, अणुओगो ताकओ चउहा ॥ आ० नि० ७७४ ॥

अत्रतः श्रीआर्यवज्रसेन प्रभवा पट्टावली निदर्शिता, पर श्रीआर्यरथ संतानांय-  
श्रीदेवर्षिगणो क्षमाश्रमण पर्यंत गद्य-पद्यपट्टावलीयुग्मं दर्शितमस्ति ॥ सं० ॥

२०—धेरस्म ण अज्जमदस्स कामवगुत्तस्म अज्जनक्खत्ते धेरे अते-  
धामी कामवगुत्ते ।

२१—धेरस्म ए अज्जनम्वत्तस्स कासवगुत्तस्म अज्जरक्खे धेरे  
अन्नेवामी कामवगुत्ते ।

२२—धेरस्म ण अज्जरम्वस्स पामवगुत्तस्म अज्जनागे धेरे अते- ५  
धामी गोअमसगुत्ते ।

२३—धेरस्म ण अज्जनागस्स गोअममगुत्तस्म अज्जेदिले धेरे अन-  
धामी धामिट्ठसगुत्ते ।

२४—धेरस्म ए अज्जेदिलस्स धामिट्ठसगुत्तस्म अज्जविण्ह धेरे  
अतेवामी मादरमगुत्ते । 10

२५—धेरस्म ए अज्जविण्हस्स मादरमगुत्तस्म अज्जकाले धेरे अते-  
धामी गोयममगुत्ते ।

२६—धेरस्म ए अज्जकालेधस्स गोयममगुत्तस्म इमे दो धेरा अतेवामी  
गोयममगुत्ता-धेरे अज्जमपलिण १ धेरे अज्जभदे २ ।

२७—णग्गि ए दुण्हवि धेराए गोयममगुत्ताए अज्जबुट्ठे धेरे अते- 15  
धामी गोयममगुत्ते ।

२८—धेरस्म ए अज्जबुट्ठस्स गोयममगुत्तस्म अज्जमपलिण धेरे अते-  
धामी गोयममगुत्ते ।

२९—धेरस्म ण अज्जमपलिअस्स गोयममगुत्तस्म अज्जहर्था धेरे  
अतेवामी कामवगुत्ते । 20

३०—धेरस्म ण अज्जहर्थास्स कामवगुत्तस्म अज्जधम्मे धेरे अन्नेवामी  
मात्रपगुत्ते (मुख्यवगुत्ते) ।

३१—धेरस्म ए अज्जधम्मस्स मात्रपगुत्तस्म (मुख्यवगुत्तस्म) अज्जगिह्ठे  
धेरे अन्नेवामी कामवगुत्ते ।

३२—धेरस्म ए अज्जगिह्ठस्स कामवगुत्तस्म अज्जधम्मे धेरे अन्ने 2,  
धामी कामवगुत्ते ।

३३--थेरस्स एं अज्जधम्मस्स कासवगुत्तस्स अज्जुसंडिल्लो धेरं  
अन्तेवासी ॥

वन्दामि फग्गुमित्तं च, गोयमं धणगिरिं च वासिट्ठं ।  
कुच्छं सिवभूझ्मिपय, कोसिय दुज्जंत कएहे अ ॥१॥

ते वन्दिऊण सिरसा, भदं वन्दामि कासवसगुत्तं (कासवंगोत्तं) ॥५  
नक्खं कासवगुत्तं, रक्खम्पि य कासवं वन्दे ॥२॥

वन्दामि अज्जनागं च, गोयमं जेहिलं च वासिट्ठं ।  
विण्हं माढर गुत्तं, कालगमवि गोयमं वन्दे ॥३॥

गोयमगुत्तकुमारं, सम्पलियं तहय भदयं वन्दे ।  
थेरं च अज्जवुद्धं, गोयमगुत्तं नमंसामि ॥४॥ 10

तं वन्दिऊण सिरसा, थिरसत्तचरित्तनाणसम्पन्नं ।  
थेरं च संघवालिय, गोयम (कासव) गुत्तं पणिवयामि ॥५॥

वन्दामि अज्जहत्थिं च, कासवं खन्तिसागरं धीरं ।  
गिम्हाण पढममासे, कालगयं चेव सुद्धस्स ॥६॥

वन्दामि अज्जधम्मं च, सुव्वयं सीललद्धिसम्पन्नं । 15  
जस निक्खमणे देवो, छत्तां वरमुत्तमं वहइ ॥७॥

हत्थिं (हत्थं) कासवगुत्तं, धम्मं सिवसाहगं पणिवयामि ।  
सीहं कासवगुत्तं धम्मंपिय कासवं वन्दे ॥८॥

तं वन्दिऊण सिरसा, थिरसत्तचरित्तनाणसम्पन्नं ।  
थेरं च अज्जजम्बुं, गोयमगुत्तं नमंसामि ॥९॥ 20

मिउमहवसंपन्नं, उवउत्तं नाणदंसणचरित्ते ।  
थेरं च नन्दियंपिय, कासवगुत्तं पणिवयामि ॥१०॥

तत्तो य थिरचरित्तं, उत्तमसम्मत्तसत्त संजुत्तं ।  
देसिगणि खमासमणं, माढरगुत्तं नमंसामि ॥११॥

ततो अणुश्रोगर, धीर मडसागर महामत्त ।  
 धिरगुत्त स्वमासमण, वन्द्यसगुत्त पणिवयामि ॥१२॥  
 ततो य नाणदसण—चरित्तवसुद्धिय गुणमहन्त ।  
 धेर कुमारधम्मा, वन्दामि गणि गुणोवेयं ॥१३॥  
 सुत्तत्थरणभग्गि, वमदममद्वगुणेहि सम्पन्ने ।  
 देविद्धियमासमणे, कामवगुत्ते पणिवयामि ॥१४॥

5

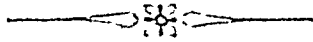
सिरि धेगवली नमत्ता

( श्री स्वविरावली नमाप्ता )



# शिवरि नंदीसुख-पट्टाकली

[ कर्ता—श्रीमद् देववाचकगणी ]



उत्तमं अजियं संभवमभिनंदण सुमइ सुप्पभ गुपासं ।  
ससि पुप्फदंत सीयल सिज्जंसं वामुपुज्जं च ॥१८॥

विमलमणंत य धम्मं, सन्ति कुथुं अरं च मल्लिं च ।  
मुनिसुव्यय नमि नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥१९॥

पढमित्थ इंदभूई, वीए पुण होइ अग्गिभूइत्ति । 5  
तईए य वाउभूई, तओ वियत्ते सुहम्मे य ॥२०॥

मंडिअ मोरियपुत्ते, अकंपिए चेव अलयभाया य ।  
मेअज्जे य पहासे य, गणहरा हुन्ति वीरस्स ॥२१॥

निव्वुइपहसासणयं, जयइ (उ) सया सव्वभावदेसणयं । +  
कुसमयमयनासणयं, जिणिंदवरवीरसासणयं ॥२२॥ 10

सुहम्मं अग्गिवेसाणं, जंवूनामं च कासवं ।  
पभवं कच्चायणं वन्दे, वच्छं सिज्जंभवं तथा ॥२३॥

जसभदं तुंगियं वंदे, संभूयं चेव माढरं ।  
भहवाहुं च पाइन्नं, थूलभदं च गोयमं ॥२४॥

एलावच्चसगोत्तं, वंदामि महागिरिं सुहत्थिं च । 15  
तत्तो कोसिअगोत्तं, बहुलस्स सरिठ्वयं वंदे ॥२५॥

हारियगुत्तं साइं च, वंदिमो हारियं च सामंज्जं ।  
यन्हे कोसियगोत्तं, संडिल्लं अज्जजीयधरं ॥२६॥

तिममुहन्वायाकृत्ति दीवसमुद्देशु गहियपेयाल ।  
 घन्टे अज्जममुद्द, अन्नुभियसमुद्दगभीर ॥२७॥  
 भण्णं करग ऋरग, पभावग णाणदसणगुणाण ।  
 घंदांमि अज्जमगु, सुयमागरपारग धीरं ॥२८॥  
 घदांमि अज्जवम्म, घदे तत्तोअ भद्दगुत्तं च । 5  
 तत्तो अ अज्जवयर, तन्नियमगुणेहिं वयरसम ॥ ६  
 वदांमि अज्जरक्खित्तअ—रमणे रन्धित्तअचरित्त सव्वस्ते ।  
 रयणकरडगभूओ, अणुओंगो रक्खित्तओ जेहिं ॥ ७  
 नाणमि दंमणमि अ तच्चविण्ण णिच्चकालमुज्जुत्त ।  
 अज्ज नन्दिअरमण, मिरमा घंटे पसन्नमण ॥२९॥ 10  
 घट्टउ वायगपमो जसवमो अज्जनागहत्थीयं ।  
 वागरणकरणभगिय—कम्मपयडीपहाणाण ॥३०॥  
 जच्चजणपाउसमप्पहाण मुद्दियकुवलयनिहाण ।  
 घट्टउ वायगवसो, रेवडनम्बत्तनामाण ॥३१॥  
 अयलपुरा णिक्खत्ते, कालियसुअणुओगिण धीरे । 15  
 वभट्टीअगमीहे, वायगपयमुत्तम पत्ते ॥३२॥  
 जेमि इमो अणुओगो, पयरइ अज्जावि अट्टभरहम्मि ।  
 वट्टनयरनिग्गयजमे, ते घन्टे गट्टिलाअरिण ॥३३॥  
 तत्तां हिमघन्तमहन्त—विफमे धिइपरफममण्णंते ।  
 मज्जायमणतधरे, हिमवते घट्टिमो मिरसा ॥३४॥ 20  
 कालियसुअणुओगस्स, धारए धारए य पुव्वाण ।  
 हिमवतरमाममण्णे, घदे णागज्जुणायरिण ॥३५॥  
 मिअमदधमपन्ने आणुगुत्तिअ वायगत्तणं पत्ते ।  
 ओहमुयममायारे, नागज्जुणायण (ग) घन्टे ॥३६॥  
 गोविंदाण पि नमो, अणुओमे धिउलधारण्णिदाणं । 25  
 निस्सं अतिदयाण. पट्टयिणे दुक्खमिदाणं ॥ ३७

ततो अ भूयदिन्नं, निच्चं तवसंजमेअ तिविन्नं ।  
 पंडिअजणसामएणां, वंदामि अ संजमविहन्तुं ॥ ॐ  
 वरकणगतत्रियचंपग—विमउलयर कमल गन्ध सरिवन्ने ।  
 भविअजण हिययदइए, दयागुणविसारिए धीरे ॥३७॥  
 अड्डभरहप्पहाणे बहुविहसज्जाय सुमुणियपहाणे । 5  
 अणुओगियवरवसभे, नाइलकुलवंसनंदिकरे ॥३८॥  
 भूयहिअप्पगन्धे वंदेऽहं भूयदिन्नमायरिए ।  
 भवभयवुच्छेयकरे, सीसे नागज्जुणरिसीण ॥३९॥  
 सुमुणियनिच्चानिच्चं सुमुणियसुत्तत्थधारयं वंदे ।  
 सवभावुब्भावणयातत्थं लोहिच्चणामाणं ॥४०॥ 10  
 (सुमुणिय निच्चानिच्चं, सुणियसुत्तत्थधारयं निच्चं ।  
 वंदेहं लोहिच्चं, सवभावुब्भावणा तत्थं) ॥ +  
 अत्थमहत्थक्खाणिं सुसमणवक्खाणकहणनिव्वाणिं ।  
 पयईइ महुरवाणिं पयओ पणमामि दूसगणिं ॥४१॥  
 तवनियमसच्चसंजम—विणयज्जच्चखंतिमदवरयाणं । 15  
 सीलगुण गदियाणं, अणुओगजुगप्पहाणाणं ॥ ॐ  
 सुकुमालकोमलतले तेसिं पणमामि लक्खणपसत्थे ।  
 पाए पावयणीणं पडिच्छं (ग) सयएहि पणिवइए ॥४२॥  
 जे अन्ने भगवन्ते कालिअसुयआणुओगिए धीरे ।  
 ते पणमिऊण सिरसा नाणस्स परूवणं वोच्छं ॥४३॥ 20

इति पट्टावली समत्ता

( इति श्रीनंदीसूत्र पट्टावली समाप्ता )

ॐ कस्मिन्चित् ग्रंथे, एता गाथा अपि दृश्यन्ते ।

+ ( ) एतच्चिन्हांकितानि पाठान्तराणि ।

# सिरि दुःपमाकाल समसाखंघ थंयं

( दुःपमाकाल श्रीश्रमणसघस्तोत्रम् )

[ कर्ता—श्री धर्मघोष सूरि. ]

वीरजिण भुवण विस्सुअ पवयण गयणिक्कटिणमणि समाणो ॥  
वट्टन्त सुअनिहाणे, थुणामि सूरी जुगप्पहाणे ॥१॥  
चीस तिचीस ठुनवइ, अडमयरी पञ्चमयरी गुणनवई ॥  
सउ सगसी पणनउइ सगसी छयस्सरी अडसयरी ॥२॥  
चउनवइ अठ तिअ, सग चउ पन्नुरुत्तरसय ॥ 5  
तित्तिमसय सउ पणनउई, नवनवई चत्त तेवीसुदय सूरी ॥३॥  
अह उदयाण पढमे, जुगपवरे पणिवयामि तेवीस ॥  
मिरिसुहम्म वयर पडिवय हरिस्सय नदिमित्त च ॥४॥  
सिरिसूरसेण रविमित्त सिरिपह मणिरह च जसमित्त ॥  
धणसिंह सच्चमित्त, धम्मिल्ल सिरिविजयाणद ॥५॥ 10  
वदामि सुमगल धम्मसिंह जयदेव सूरी सूरदिन्त . ॥  
वइसाह कोडिल, माहुर वणिपुत्त सिरिदत्त ॥६॥  
उदयात्तिम सूरी, पुसमित्त मरहमित्त वडसाह ॥  
वदे सुकीत्ति थावर रहसुअ जयमगलमुणिद ॥७॥  
सिद्धत्थ ईसाण, रहमित्त भरणिमित्त दढमित्त ॥ 15  
सिरि मगयमित्त मिरिधर च मागह ममरसूरि ॥८॥  
सिरिरेवइमित्त कित्तिमित्त सुरमित्त फग्गुमित्त च ॥  
कल्लाण देवमित्त, णमामि दुप्पसह मुणिवसह ॥९॥  
वदे सुहम्म जव् पभव सिज्जभव च जसभद ॥  
मभ्यविजय सिरिभद—वाहु सिरिथूलभद च ॥१०॥ 20



महगिरि सुहृत्थि गुणसुन्दरं च सामञ्ज खंडिलायरिजं ॥  
 रेवइ मित्तं धम्मं च' भद्दगुत्तं सिरिगुत्तं ॥११॥  
 सिरिवयर मज्जरक्खिअ सूरिं पणमामि पूसमित्तं च ॥  
 इअ सत्तकोडिनामे पढम मुदए वीस जुगपवरे ॥१२॥  
 वीए तिवीस वइरं च, नागहत्थि च रेवइमित्तं ॥ 5  
 सीहं नागज्जुणं, भूइदिन्नियं कालयं वंदे ॥१३॥  
 सिरिसच्चमित्तं हारिलं, जिणभदं वंदिमो उमासाइं ॥  
 पुसमित्तं संभूइं. माढर संभूइ धम्मरिसिं ॥१४॥  
 जिट्ठंग फग्गुमित्तं, धम्मघोसं च विणयमित्तं च ॥  
 सिरि सीलमित्तं रेवइ-मित्तं सूरि सुमिणमित्तं हरिमित्तं ॥१५॥ 10  
 इय सब्बोदयजुगपवर सूरिणो चरणसंजूए वंदे ॥  
 चउत्तर दुसहस्सा, दुप्पसदंते सुहम्मार्इ ॥१६॥  
 इय सुहम्मं जंबू तवभव सिद्धा एगावयारिणो सेसा ॥  
 सड्ढुजोअण मज्जे जयंतु दुभिक्खडमरहरा ॥१७॥  
 जुगपवर सरिस सूरी, दुरीकय भवियमोह तमपसरे ॥ 15  
 वंदामि सोलसुत्तर इगदस लक्खे सहस्सेय ॥१८॥  
 पंचमअरम्मि पणवन्नलक्ख - पणवन्नसहस कोडीणं ॥  
 पंचसयकोडि पन्ना, नमामि सुचरण सयलसूरी ॥१९॥  
 तह सत्तरिकोडिलक्खा, नवकोडिसय वार कोडियं ॥  
 छप्पन्न लक्ख वत्तीस—सहस्स एगूण दुन्निसया ॥२०॥ 20  
 तह सोल कोडिलक्खा, तियकोडिसहस्सा तिनिकोडिसया ॥  
 सत्तरस काडि चुलसी लक्खा सुसावगाणं तु ॥२१॥  
 पणतीसकोडिलक्खा, सुसाविया कोडिसहस्स वाणउई ॥  
 पणकोडिसया वत्तीस कोडि तह वारअहिया ॥२२॥  
 एवं देविंदनयं, सिरविजयाणंद धम्मकीत्तिपयं ॥ 25  
 वीरजिण पवयण ठिइं, दूसमसंघं रासह निच्चं ॥२३॥  
 ॥ इय दुसमाकाल सिरि समणसंघ थयं ॥

अवचूरि—॥ ८० ॥ सिरि जिणनिव्वाणगमण रयणिण उज्जोणीए  
चंडपज्जोअमरणे पालओ राया अहिसित्तो ॥ तेण य अपुत्त उदाइमरणे  
कोणिअरज्ज पाडलिपुर पि अहिट्टिअ ॥

तस्स य वरिस ६० रज्जे—गोयम १२ सुहम्म ८ जंबू ४४  
जुगप्पहाणा । 5

पुणो पाडलीपुरे ११, १०, १३, २५, २५, ६, ६ ४, ५५ नवनद  
एवं वर्ष १५५ रज्जे—जंबू शेषवर्षाणि ४ प्रभव ११ शय्यभव २३ यशो-  
भद्र ५० समूतिविजय ८ भद्रवाहु १४ स्थूलभद्र ४५, एव वीरनिर्वाणान् २१५ ॥

मोरिअरज्ज १०८ तत्र—महागिरि ३० सुहस्ति ४६ गुण सुन्दर ३२,  
उनवर्षाणि १२ ॥ प्रकृष्टलब्धीना प्रकीर्णकसहस्राणां व्यवच्छेद ॥ एव 10  
वर्षाणि ३२३ ॥

राजा पुष्यमित्र ३० बल मित्र-भानु मित्र ६० (तत्र)—गुण सुन्द-  
रस्येव शेषवर्षाणि १२ कालिके ४ (४१) खदिल ३८ ॥ एव वर्षाणि ४१३ ॥

राजानरराहन ४० गर्दभिल्ल १३ शाक ४ (तत्र)—रेवतिमित्र ३६  
आर्यमगुधर्माचार्य २० ॥ एव वर्षाणि ४७० ॥ 15

अत्रांतरे—बहुल सिरिज्वयं स्वामि (स्वाति) हारिन श्यामाऽऽर्यं  
शाहिल्य आर्य आर्यममुद्रादयो भविष्यन्ति ॥

तद् गद्भिन्नरज्जस्स, छेयगो कालगारिश्रो होही ॥

छत्तीमगुणोवेयो, गुणमय कलिओ पहाजुत्तो ॥ १ ॥

वीरनिर्वाणान् ४५३ भरुअच्छे रणपुटाचार्या वृद्धनादी पचकल्प- 20  
विच्छेदो जीतकल्पोद्धार प्रत्येकमुद्धस्वयपुद्धविच्छेदो बुद्धवोधिताऽल्पता ॥

धर्माचार्यस्येव शेषवर्षाणि २४ भद्रगुप्त ३६ श्रीगुप्त १५ वज्र-  
स्वामी ३६ । एवं सर्वांक ५८४ ॥ गर्द (भिल्ल) नित्र सुत विक्रमादित्य ६०  
धर्मादित्य ४० भाइल्ल ११ ॥ एव ५८१ ॥

अत्रांतरे—धर्माचार्य शिष्य श्रीसिद्धसेन प्रभावक । तथा तोपलि- 25  
ऽत्राचार्य प्रभावक ॥

आर्यरक्षितः १३ ॥ राजाभाइल्ल १४ ॥ अत्रांतरे—विलासपुरे

रुद्रदत्ताचार्यः प्रभावको युगप्रधानसमः ६ ॥

पुष्पमित्र (दुर्वलिका पुष्प मित्र) २० ॥ तथा राजा नाहडः ॥१०॥

(एवं) ६०५ शाकसंवत्सरः ॥ अत्रांतरे वोटिका निर्गता । इति ६१७  
प्रथमोदयः ॥०॥ 5

वयरसेण ३ नागहस्ति ६६ रेवतिमित्र ५६ चंभदीवगसिंह ७८ नागार्जून ७८॥

प्रणसयरी सयाइं तिन्निसय समन्निआइं अइकमिऊं ॥

विक्रमकालाओ तओ बहुली (वलभी) भंगो समुप्पओ ॥ १ ॥

बालन्न (वालभ्य) संघकज्जे उज्जमिओ जुगपहाण तुल्लेहिं ॥

संधववाइवेआल—संतिसूरिइ बहुलाए (वलहीए) ॥ १ ॥ 10

एवं वर्षाणि ६०४ ॥ भूतदिन्न ७६ कालिकार्य्य ११ ॥

तेणउय नवसएहिं, समइकंतेहिं वद्धमाणाओ ॥

पज्जोसवणाचउत्थी, कालगसूरिहिं तो ठविआ ॥ १ ॥

सत्यमित्र-७ हारिल ५४ ॥ ( एवं वर्षाणि १०५५ वि० ५८५ )

पंचसए पणसीए विक्रमकाला उड्डु (भू) त्ति अत्थमिओ ॥ 15

हरिभदसूरि सूरौ, भविआणं दिसउ कल्लाणं ॥ १ ॥

जिनभद्रगणिः ६० उमास्वाति ७५ ॐपुष्यतिष्य ६० संभूति यति

५० माढरसंभूति गुप्त ६० ॥ ( एवंवर्षाणि १३६० )

ॐ संभवन्ति चैते सभाष्यतत्वार्थाधिगमसूत्र पूजाप्रकरादि ग्रंथ निर्मांतारः

आंउमास्वातिगूरयः । तेषां पितृ-मातृ-जन्मभूमि-गणधर-वाचक वंशानां संवंधश्चैवं ॥

वाचकमुख्यस्य शिवश्रियः प्रकाशयराः प्रशिष्येण ॥

शि-ष्येण घोपनदिल्लमणस्यैकादशांगविदः ॥ १ ॥

वाचनया च महावाचक क्षमण मुँडपाद शिष्यस्य ॥

वशिष्येण, च वाचकाचार्य मूलनाम्नः प्रथितकीर्तैः ॥ २ ॥

न्यग्रोधिकाप्रयत्नेन विहरता पुरवरे कुसुमनाम्नि ॥

क्रोभीषणिना स्वातितनयेन वास्सीमुतेनार्ध्वम् ॥ ३ ॥

६८० श्री कल्पसूत्र श्री महागिर सतानीय श्री देवर्धिगणि क्षमा-  
श्रमणैर्लिखित । तस्मिन्वर्षे आनन्दपुरे ध्रुवसेननृपस्य पुत्रमरणे शोकार्तस्य  
समाध्यर्थं सभाममन्त्र श्री कल्पवाचना जाता इति बहुश्रुता ॥ ×

तेरस वास सण्हि, वीराओ समतिण्हि अइक्कमिउ ॥

सिरिवप्पभट्टसूरी, विजसाण सिरोमणी जाओ ॥ १ ॥ 5

इत्यादि । द्वितीयोदय ॥ छ ॥ श्री ॥

इति दुष्पमाकाल श्री श्रमण सघस्तोत्रं समाप्त ॥१॥

इदमुच्चैर्नागरवाचकेन मत्वानुरूपया दृश्यते

तत्त्वार्थाधिगमास्त्र स्पष्टमुमाम्वातिना शारत्रम् ॥ ५ ॥

× “नववामसयाइ विद्वक्कनाइ०” चायमर्थो, यथा श्रीवीरनिर्वाणादशोत्यधिक-  
नववपरातातिक्रमे पुस्तकाख्य सिद्धातो जातन्तदा कल्पोपि पुस्तकाख्यो जात इति,  
तथोक्त—ब्रह्महिपुरमि नयरे, देवाट्टिद्वपमुहमयलक्षणेहि ॥

पुस्ये आगम तिहिओ, नवमय अर्माओ वीराओ ॥ १ ॥

अन्येवदति—नवशतअशीतिवर्षे, वीरात् मेजागजायमानन्दे ॥

सधममच समह, प्रारब्ध वाचितु विदे ॥ १ ॥

इत्यादि अन्तर्वाच्यवचनात् ॥

“वायणतरेपुण०” तथाचायमर्थ --नवशतशतितमवप कल्पस्य पुराणे  
लिखित, नवशत त्रिनवतिनववर्षे च कल्पस्य पर्यन्तवाचनेति । तथोक्त श्रीमुनिमुद्रसूरिभि  
स्वकृतस्तोत्ररत्नकोशे—

वीरात्त्रिनशक (९९३) गरयचीकरत्, स्वच्चैत्यपूते ध्रुवसेनभूपति ।

यस्मिन्महै संसदि कल्पवानना—माया तदानन्दपुर न क स्तुति ॥ १ ॥

—इति महोपाध्याय श्रीविनयविजयनिरचिताया मुग्धोपिकाया ।

१ पत्तमपकनूया श्रीधर्मपोषगरीया वि० सं० १३२७ तमवर्षे मुद्रिपद्, वि० सं०

३५७ तमवर्षे स्वयमन ।

# अथ योर्विंशत्युद्दययुग्मं प्रथान्तं कालं यंत्रः

उदय २३	सर्वाचार्य संख्या	युगप्रधानाः	उदयवर्षप्र माणसंख्या	मास	दिन
१	सूरिकोटि ७०	२०	६१७	१०	१७-२७
२	सूरिकोटि ३०	२३	१३६०-८०-४६	१०	२६
३	कोटिलक्ष १०	६८	१४६४-१५००	११	२० 5
४	कोटिलक्ष १०	७८	१५४५	८	२६
५	कोटिलक्ष १०	७५	१६००	३	२६
६	कोटिलक्ष १०	८६	१६५०	६	२२
७	कोटिलक्ष १०	१००	१७७०	७	२७
८	कोटिलक्ष ५-१०	८७	१०१०	१०	१५ 10
९	कोटिसहस्र १०	६५	८८०	१	१८
१०	कोटिसहस्र १०	८७	८५०	२	१२
११	कोटिसहस्र १०	७६	८००	३	१४
१२	कोटिसहस्र १०	७८	४४५	४	१६
१३	कोटिसहस्र १०-५	६४	५५०	७	२२ 15
१४	कोटिसहस्र ५	१०८	५६२	५	२५
१५	कोटिशत १०	१०३	६६५	६	२६
१६	कोटिशत १०	१०७	७१०	६	२०
१७	कोटिशत १०	१०४	६५५	६	२४
१८	कोटिशत १०	११५	४६०	६	२ 20
१९	कोटिशत १०	१३३	३५६	१	१७
२०	कोटिशत १	१००	४०८-८६	४	७-२
२१	कोटिशत १	६५	५७०	३	६
२२	कोटिशत १	६६	५६०	५	५
२३	कोटिशत १	४०	४४०	११	१७ 25

सर्वं २००४

सर्वेषामुदयानां यंत्रलिखितेषु वर्षमासदिनेषु सप्तप्रहर-सप्तघटिका-सप्तपल-  
उदयांकमीतान्तराणां वृद्धिः कार्या ॥

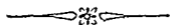
# उदयस्य २३ युगप्रधान यंत्रः

	उदयस्य आद्यसूरि नामानि	गृहवास	व्रतपर्याय	युगप्रधान काल	सर्वायु	
१	सुधर्मास्वामी	५०	३०-४०	२०-८	१००	
२	वयरसेन	६	११६	३	१२८	
३	पाडिवय	६	८२	६	१००	५
४	हरिस्सह	६	६०	१३	८२	
५	नदिमित्र	१३	३०	२४	६७	
६	सूरसेन	१३	४०	१०	६३	
७	रविमित्र	१३	४०	१०	६३	
८	श्रीप्रभ	१३	४२	८	६३	१०
९	मणिरथ	१३	४२	८	६३	
१०	यशोमित्र	१४	४१	८	६३	
११	धणसिंह	१४	४०	१०	६४	
१२	सत्यमित्र	१४	४०	१२	६६	
१३	धम्मिल्ल	२०	३०	१२	६२	१५
१४	विजयानन्द	१२	३०	१४	५६	
१५	सुमगल	१२	२०	२४	५६	
१६	धर्मसिंह	१२	२०	१८	५०	
१७	जयदेव	१२	२७-२०	११-१८	५०	
१८	सुरदिन्न	१७	२७	१०	५४	२०
१९	वैशाख	१०	२०	२०	५०	
२०	कौडिल्य	१०-११	२१	१६-१८	५०	
२१	माथुर	१०	२५	१५	५०	
२२	वाणिपुत्त	१०	२०	१७	४७	
२३	श्रीदत्त	१०	१५-२५	२५-१५	५०	२५

# उद्दयान्तिम २३ युगप्रधान संज्ञाः

उ०	सूरिनामानि	गृहवासः	व्रतपर्यायः	युगप्रधान कालः	सर्वायुः	
१	दुर्बलिकापुष्पमित्र	१७	३०	२०-१३	६७-६०	
२	अरह मित्र	२०	१६	४५-२५	८१-६१	
३	वैशाख	२५	१०	१६	५४	5
४	सत्कीर्ति	१६	२२	१८	५६	
५	थावर	१३	२०	१७	५०	
६	रहसुत	१३	२८	१३	५४	
७	जयमंगल	१५	२०	१३	४८	
८	सिद्धार्थ	१५	२०	१३	४८	10
९	ईशान	१५	३०	१०	५५	
१०	रथमित्र	२२	१०-२०	८	४०-५०	
११	भरणिमित्र	१०	२०	२०	५०	
१२	दृढमित्र	१४	१५	२६	५५	
१३	संगत मित्र	१२	१५	२२	४६	15
१४	श्रीधर	१८	२०-१०	१८	५६-४६	
१५	मागध	१३	११	६	३३	
१६	अमर	१५	२४	१३	५२	
१७	रेवतिमित्र	२२	२६-१६	१८	६६-५६	
१८	कीर्तिमित्र	२०	१०	१०	४०	20
१९	सिंहमित्र	२०	१४	६	४०	
२०	फलगुमित्र	१३	१०	७	३०	
२१	कल्याणमित्र	८	१६	१४	३८	
२२	देवमित्र	१२	१२	१२	३६	
२३	दुष्पसहसूरि	१२	४	४	२०	25

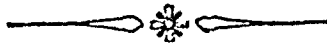
# प्रथमोदय युगप्रधान यंत्रम्



२०	प्रथमोदय युगप्रधान	गृहवास	घ्नतपर्याय	युगप्रधान	सर्वायु	मास	दिन
१	सुधर्मास्वामी	५०	४२	८	१००	३	३
२	जयू स्वामी	१६	२०	४४	८०	५	५
३	प्रवभ स्वामी	३०	६४-४४	११	१०५-८५	२	२
४	शय्यभवसूरि	२८	११	२३	६२	३	३ 5
५	यशोभद्र	२२	१४	५०	८६	४	४
६	सभूतिविजय	४२	४०	८	६०	५	५
७	भद्रबाहु	४५	१७	१४	७६	७	७
८	स्थूलभद्र	३०	२४	४५	६६	५	५
९	महागिरि	३०	४०	३०	१००	५	५ 10
१०	सुहस्ति	२४-३०	३०-२४	४६	१००	६	६
११	गुणसुन्दर सूरि	२४	३२	४४	१००	२	२
१२	श्यामाचार्य	२०	३५	४१	६६	१	१
१३	स्कदिल	१२-२२	५८-४८	३८-३६	१०८-१०६	५	५
१४	रेवतिमित्र	१४	४८	३६	६८	५	५ 15
१५	धर्मसूरि	१८-१४	४०-४४	४४	१०२	५	५
१६	भद्रगुप्त	२१	४५	३६	१०५	४	४
१७	श्रीगुप्त	३५	५०	५०	१००	७	७
१८	वज्रस्वामी	८	४४	३६	८८	७	७
१९	आर्यरक्षित	११-२२	५१-४०	१३	७५	७	७ 20
२०	दुर्वलिकापुष्पमित्र	१७	३०	२०-१३	६७-६०	७	७



# द्वितीयोदयुगप्रधान यंत्रम्



द्वितीयोदयुगप्रधान	गृहवास	व्रतपर्याय	युगप्रधान	सर्वायुः	मास	दिन	
२३			वर्ष०	वर्ष०			
१ वयरसेन	६	११६	३	१२८	३	३	
२ नागहस्ति	१६	२८	६६	११६	५	५	
३ रेवतिमित्र	२०	३०	५६	१०६	२	२	५
४ सिंहसूरि (ब्रह्मद्वीपक)	१८	२०	७८	११६	३	३	
५ नागार्जुन	१४	१६	७८	१११	५	५	
६ भूतिदित्र	१८	२२	७६	११६	४	४	
७ कालिकाचार्य	१२	६०	११	८३	७	७	
८ सत्यमित्र	१०	३०	७	४७	५	५	१०
९ हारिल	१७-२७	३०-३१	५४	१०१-११२	५	५	
१० जिनभद्रगणीक्षमाश्रमण	१४	३०	६०	१०४	६	६	
११ उमास्वातिवाचक	२०	१५	७५	११०	२	२	
१२ पुष्पमित्र	८	३०	६०	६८	०	०	
१३ संभूति	१०	१६	५०-४६	७६-७८	२	२	१५
१४ माढरसंभूति गुप्त	१०	३०	६०	१००	५	५	
१५ धर्मऋषि (रक्षित)	१५	२०	४०	७५	४	४	
१६ ज्येष्ठांगगणि	१२	१८	७१	१०१	३	३	
१७ फल्गुमित्र	१४	१३	४६	७६	७	७	
१८ धर्मघोष	८	१५	७८	१०१	७	७	२०
१९ विनयमित्र	१०	१६	८६	११५	७	७	
२० शीलमित्र	११	२०	७६	११०	७	७	
२१ रेवतिमित्र	६	१६	७८	१०३	०	०	
२२ सुमिणमित्र	१२	१८	७८	१०८	०	०	
२३ हरिमित्र	२०	१६	४५	८१	०	०	२५

श्रीगुरुपर्वकर्मकर्णिकम्

( कर्त्ता—श्रीगुणरत्नसूरिः )

- अनन्त तद्ज्ञान म हि निरुपमो दोषविलयो  
 नति शक्रादीनामहमहमिकापूर्वमिह सा ।  
 विसवादातीत तदपि च वचो दैवतगणे  
 न यस्मादन्यस्मिन् स जयतितरा वीरजिनप. ॥१॥
- जयति विजितद्रोप. श्रीसुधर्मा गणेशो 5  
 जनितजनकजायाचौरवोधोऽथ जन्मू ।  
 प्रभवधिभुरथो यश्चौर्यलब्धत्रिरत्नो  
 मत्प्रगतजिनद्युद्ध सूरिशन्यम्भवोऽत ॥२॥
- यशोभद्र सूरिस्तदनु समभूद्विश्वविदित  
 तत सूरि रयातोऽजनि जगति सम्भूतिविजय । 10  
 तथा भद्राद्वाहू रचितवरनिर्युक्तितिको  
 वराहाऽमर्त्योत्थ ह्यशिवमहरत्र स्तवन्त ॥३॥
- योगीन्द्र स्थूलभद्रोऽभूदथान्त्य श्रुतकेवली ।  
 सिंह स्व दर्शयामास भगिनीविस्मयाय य ॥४॥
- तस्मान्महागिरिरभूज्जिनकल्पिकल्प. 15  
 श्रीसम्प्रतेर्नरपतेश्च गुरु सुहृन्मी ।  
 शिष्योत्तमावथ सुहस्तिविभोरभूता  
 श्रीसुस्थितस्थविर-सुप्रतिवद्वसूरी ॥५॥
- तदा च सूरिमन्त्रस्य ध्याता ज्ञानचतुष्कवान् ।  
 सर्वज्ञदृष्टद्रव्याणां कोट्यशमवलोकते ॥६॥ 20

तेन तौ कौटिकौ ख्यातौ ततोऽभूत्कौटिको गणः ।

तत्रेन्द्रदिन्न-दिन्नर्पी सूरिः सिंहगिरिस्ततः ॥७॥

जातिस्मृतिर्जृम्भकदत्तविद्ये श्रीसङ्घात्सल्यमनीहता च ।

यस्मिन्नतुल्यान्यभवंस्ततोऽभूद् विमुः स वज्रो दशपूर्ववेदी ॥८॥

श्रीवज्रशाखाधुरिवज्रसेनात्रागेन्द्रचन्द्रादिकुलप्रसूतिः ।

5

चान्द्रे कुले पूर्वगतश्रुताढ्यःसामन्तभद्रो विपिनादिवासी ॥९॥

ततोऽपि वृद्धोऽजनि देवसूरिः प्रद्योतनः सूरिरथो शमाढ्यः ।

श्रीमानदेवोऽथ पदस्य काले यदंसयोर्वीक्ष्य रमागिरौ द्वे ॥१०॥

अष्टोत्थयं ही भवितेति खिन्ने गुरौ विधिज्ञः किल योऽभ्यगृह्णान् ।

भक्ताङ्गिभक्तिं विकृतीश्च सर्वा आजन्म भोक्ष्ये न हि सर्वथेति ॥११॥

10

पद्माजयादिदेवीभिर्नतो नङ्गूलपूःस्थितः ।

शाकम्भरीपुरे मारिं जह्ने शान्तिस्तवाच्च यः ॥१२॥

—त्रिमिर्विशेषकम् ।

भक्तामराद्यद्भुतकाव्यसिद्धिः श्रीमानतुङ्गोऽथ बहुप्रसिद्धिः ।

श्रीवीरसूरिर्जयदेवदेवानन्दौ क्रमेण प्रभुविक्रमश्च ॥१३॥

15

नरसिंहपुरे बोधितहिंसकयक्षौऽथ सूरिनरसिंहः ।

नागहृदतीर्थकृते क्षपणकजेता समुद्रोऽथ ॥१४॥

ख्यातः श्रीहरिभद्रमित्रमभवत् श्रीमानदेवस्ततो

मान्द्याद्विस्मृतसूरिमन्त्रमिह यो लेभेऽम्बिकाया मुखात् ।

तस्मात् श्रीविबुधप्रभोऽजनि जयानन्दस्ततः संयमी

20

भव्याम्भोजरवी रविप्रभंगुरुर्जज्ञेऽथ विज्ञेश्वरः ॥१५॥

सरस्वतीकण्ठसुवर्णभूषणख्यातिर्यशोदेवयतीश्वरोऽमुतः ।

प्रद्युम्नसूरिर्जिनशासनम्बरप्रद्योतनैकद्युमणिस्ततोऽभवत् ॥१६॥

श्रीमानदेवोऽप्युपधानवाचकग्रन्थप्रेरणांताऽजनि विश्वपावकः ।

वादे जिते गोपगिरीशपूजितः सत्स्वर्णसिद्धिर्विमलेन्दुरप्यतः ॥१७॥

25

युगाङ्कनन्दप्रमिते ६६४ गतेऽन्ते श्रीचिकमाकात्सह संघलोकै ।  
पूर्वावनीतो विहरन् धरायामुद्द्योतन सूरिरथार्बुदाध ॥१८॥

आगत्य टेलीपुरसीमसस्थपद्यासमासन्नदृढद्वयाध ।

शुभे मुहूर्ते स्वपदेऽष्टसूरीनतिष्ठिपत्नीचकुलोद्वयाय ॥१९॥

॥ युग्मम् ॥ ७

ततो (३५) गणोऽय वटगच्छसङ्घोऽयभूद् बृहद्गच्छ इति प्रसिद्ध ।

श्रीसर्वदेवो विदितोऽतिभूरिप्रशम्यशिष्य प्रथमोऽत्र सूरि ॥२०॥

रूपश्रीविरुदख्यातो देवसूरिस्ततोऽभवत् ।

श्रीसर्वदेवसूरीन्द्र पुनरासीद्गुणोदधि ॥२१॥

तस्माद्यशोभद्रयतीशचन्द्र श्रीनेमिचन्द्रश्च विनिद्रभद्र । 10

ततोऽजनि श्रीमुनिचन्द्रसूरि प्रज्ञापराभूत्सुपर्वसूरि ॥२२॥

नित्य पपौ काञ्चिकमेकमम्भस्तत्याज सर्वा विकृतीश्च सम्यग् ।

जिगाय यो भावरिपू श्च सोऽय श्लाघ्यो न केपा मुनिचद्रसूरि ॥२३॥

तस्याभयन्नजितदेवमुनीन्द्रवादि—

श्रीदेवसूरिवृषभप्रमुखा विनेया । 15

आद्यादभूद्विजयसिंहगुरुर्गरीयान्—

निस्सद्गतादिकगुणैरनिश वरीयान् ॥२४॥

तत शतार्थिक ख्यात श्रीसोमनप्रभसूरिराट् ।

सूरि श्रीमणिरन्नश्च भारत्यास्तनयाविव ॥२५॥

मणिरन्नगुरो शिष्या श्रीजगच्चन्द्रसूरय । 20

सिद्धान्तवाचनोद्भूतवैराग्यरसचार्द्रय ॥२६॥

विधोश्चैत्रगाणाम्भोधौ तपोज्ञानक्रियानिधे ।

वाचकानाममङ्कारात् देवभद्रगणीश्वरात् ॥२७॥

चारित्रमुपसम्पद्य यावज्जीवमभिप्रहात् ।

आचामाम्लतपस्तेनुस्तपागच्छस्ततोऽभवत् ॥२८॥ 25

—त्रिभिर्विशेषकम्

तत्पट्टोदयभूधरे शशिरवी वागीश्वरीमन्दिरे

सेनान्यौ वृषभूपतेः शमरमाकर्णावतंसाभुवौ ।

श्रीदेवेन्द्रमुनीश्वरोऽमलमना आद्यो द्वितीयः पुनः

सुरीशो विजयेन्दुरुत्तमगुणः सेव्यावभूतां सताम् ॥२६॥ 5

श्रीदेवेन्द्रगुरोः शिष्यौ तमस्तौमैकभेदकौ ।

महाप्रभावजायेतां जम्बूद्वीपरवी इव ॥३०॥

विद्यानन्दमुनीन्दुरादिम इह प्रह्लादने पत्तने

यस्याचार्यपदेऽमुचन् दिविपदो गन्धोदकं मण्डपात् ।

दुष्टस्त्रीदमनः सुशास्त्ररचनः श्रीधर्मधोपः पुनः

10

पाथोधिप्रकटीकृताद्भुतमणिः श्रीगोमुखोद्बोधकृत् ॥३१॥

तदाच—

योगी कश्चन शिष्यवृन्दकलितोऽवन्त्यां स्थितोर्गर्वभृ

ज्ञानासिद्धिवहुप्रसिद्धिहृतहृद्भूप्रजाऽभ्यर्चितः ।

तत्र स्थातुमयं न जैनयतिनां दत्ते कदाऽपि क्वचि—

15

च्चेदागच्छति कोऽपि साधुरिह यस्तं प्रत्यसौ मत्सरात् ॥३२॥

आसन्नोऽप्यथ दूरगोऽपि सहसा सौवप्रभावोद्धुरो

हुङ्कारात्तृणतन्तुधूलिकणिकाक्षेपात्तथा स्वाङ्कतः ।

मार्जारान्नकुलोन्दुराहिसरटान् गोधावृकान् वृश्चिकान्

फेरण्डप्रभृतींश्च मुञ्चतितमां लक्षादिसङ्ख्यान् क्षणात् ॥३३॥ 20

॥ युरमम् ॥

अन्याश्चापि विभीषिकाः प्रकटयत्युच्चैः स नानाविधा

स्तद् दृष्ट्वा भयविप्लुताँश्छलयति जुह्वान् स पापः क्षणात् ।

साधुः कोऽपि न तत्र तिष्ठति ततः श्रीधर्मधोपोऽन्यदा

सूरिस्तत्र समीयिवान् बहुपरीवारो विहारक्रमात् ॥३४॥ 25

साधूनध्वनि सङ्गतान् स सहसा दृष्टोऽथ दुष्टो रुपा  
 दन्तैर्दष्टरदच्छदोऽनददऽद श्वेताम्बरा किंधरा ।  
 शून्यास्ते सकलाऽपरा यदिह भो प्राप्ता विशङ्का हठात्  
 दृष्टोऽह यदि नो, श्रुतोऽपि किमु रे नात्र स्थितो नन्वहम् ॥३५॥ 5  
 बाहुभ्या जलधिं तराणि यदि वा त शोपयाणि क्षणा—  
 दाकाशं विपुल प्रयाणि रगवद्रात्रौ च कुर्या दिनम् ।  
 शेषाहिं दृढयोगपट्टतुलया ध्वनानि सौवासने  
 फूट्कृत्यापि गिरीन् नयानि गगने घायू रजोवद् रयात् ॥३६॥

॥ युग्मम् ॥

भो भो यात पलाय्य दृष्टिपथतो मा माऽवमन्ध्व हठा— 10  
 न्नो चेत्येयमिह स्थिरैर्भवति यत्तद्दृश्यता सम्प्रति ।  
 व्याहारुर्मुनयो मुधाऽऽत्मनि मद्र धत्से विधत्से न किं  
 चान्तिं ब्रूम इद द्विताय भवतो जानासि चेत्किंचन ॥३७॥  
 नोचेद्यन्ननु रोचते प्रकुरु तत् तावत् स्थिता स्मो वय  
 योगिन्नुच्छलितोऽपि यन्न चणको भाण्डं प्रभेत्तु क्षम । 15  
 क्रुद्धस्तद्वचसा विधाय विहृतं वम्त्र स भीत्यावह  
 दन्तान् स्थूलतरानदीदृशदथो जान्वग्रजाप्रन्मुस्रान् ॥३८॥

किं नो भीपयसे तृणाय न वय मन्यामहे त्वादृश  
 व्याहृत्येति भयोऽभिता मुनिधरास्तत्पातससूचनीम् ।  
 उद्गीर्ष्य स्वकफोणिमुन्नततरा जग्मुस्तत श्रीगुरो— 20  
 रभ्यर्णे जगदुश्च तद्गुरुरयो प्रोवाच सर्वान् यतीन् ॥ ३६ ॥  
 चेत्योगीह निभीपिका विकुरुते माभैष्ट तद्भो मनाक्  
 प्राताऽहं वरिवर्त्मि वोऽथ वसतौ दोषागमे लक्ष्म ।  
 शूच्याख्या अतिवश्रतुण्डनररा अन्यान्यदेहोर्ध्ववगा  
 कङ्गोला इव वारिधेर्दशद्विगुद्भूता प्रसस्रु क्षणात् ॥४०॥ 25

अङ्गारोहणवस्त्रपात्रवलकस्तम्भादनैकादृगान

दृष्ट्वा तान् वसतेर्बहिश्च परितः श्वानौतुनर्पध्वनीन् ।

श्रुत्वा रौद्रतमान् प्रकंप्रतनवां भीतिर्भगत्माध्रवां—

ऽन्योन्याह्वानपराश्च नालयान्नन् स्थानुं प्रणष्टुं तथा ॥४१॥

वस्त्रच्छन्नमुखे घटे प्रथमतः सर्जाकृते श्रीगुरु—

र्दत्त्वा हस्तमथाजपद्गतभयो यावत्स्य तावच्छठः ।

सर्वाङ्गेऽप्युदितं व्यथासमुदयं हर्तुं विपांहुं प्रणि—

होतुं वाऽप्यसहस्ततोऽनुगजनादृचं म्रिये भो म्रिये ॥ ४२ ॥

धिक् मामनात्मज्ञमदीर्घदर्शिनं येनाभिमानादपमानितो गुरुः ।

काणुः क मेरुः क सरः क सागरः काहं हहा कैप च सर्वसिद्धिभृन् ॥४३॥ 10

भीतः सोऽधिक्रलं निजं विलसितं संहृत्य पीडावशा—

दाक्रन्दंश्च कणंश्च तत्र वसतौ गत्वा मुखात्ताडुलिः

ऊचेऽज्ञानवशाद्यदत्र विहितं तत्क्षम्यतां क्षम्यतां

नातो वो विदधामि किञ्चिदशुभं ताक्षी जनोऽत्राखिलः ॥ ४४ ॥

निरीक्ष्य दीनं स्वपदोर्विलीनं तं योगिराजं सुसमाधिभाजम् । 15

चकार शान्तः प्रभुधर्मघोषः पुण्यप्रभायाश्च वभूव पोपः ॥ ४५ ॥

श्रीसोमप्रभसूरयो ऽजनिपताथैकादशाङ्गीस्फुर—

त्सूत्रार्थाः किल कार्तिके समधिके कृत्वा चतुर्मासकम्

अन्याचार्यगणे निषेधति भृशं ये भीमपल्या ययु

र्भङ्गं भाविनमेक्ष्य मन्त्रनिवहं नालुर्गुरुभ्यश्च ये ॥ ४६ ॥ 20

तेषां विनेया वरभागधेयाश्चत्वार आसन् स्वगुरोरैरमेयाः ।

चतुर्गतिभ्योऽसुमतां सुखेनोद्धाराय धर्मस्य वपूंपि किं नु ॥ ४७ ॥

श्रीविमलप्रभसूरिः श्रीपरमानन्दसूरिगुरुराजः ।

वचनातिगयतनावान् सूरिः श्रीपद्मतिलकगुरुः ॥ ४८ ॥

श्रीसोमतिलकाख्याश्च सूरयो यद्यशोऽर्णवे ।

ज्योत्स्ना जलं प्रहाः फेनपिण्डा वेल्लवलिर्दिशाः ॥ ४९ ॥

युग्मम् ॥

विश्वस्याततपागणाप्रिपतय सार्त्रिकख्यातय

सद्वैराग्यपयोप्रयस्त्रिजगतीदीव्यद्गुणश्रेणय ।

ध्यामन् ग्रन्थकृत मदागमभृतश्चारित्रलक्ष्मीवृत्

सद्भाग्याभ्यधिकाश्च सामतिलका सूरीशत्रुन्दारका ॥ ५० ॥ 5

तेषा शिष्यास्त्रय स्याता अभूवन्नद्भुतैर्गुणै ।

ज्ञानदर्शनचारित्रयी मूर्त्तिमती किल ॥ ५१ ॥

सञ्जवसागरगभीररवेण नित्यमाप्रर्जिताखिलजगज्जनमानसालि ।

श्रीचन्द्रशेखरगुरुर्गारिमैकधाम विद्याविलासवसित प्रथमो बभूव ॥५२॥

भव्यप्राणिशिवश्रियो परिणये सावत्मराधीश्वरा. 10

गाम्भीर्यादिगुणैर्निजैरुदधिवत्केनाप्यलब्धान्तरा ।

ते ऽजायन्त यतीश्वराद्दह जयानन्दा द्वितीया क्रमात् ।

येषा देवतया करेण निहतो भ्राता ऽनुमेने व्रतम् ॥ ५३ ॥

वैराग्य विमल शमोऽतिविशद शास्त्रज्ञता चाद्भुता ,

सिद्धान्तैरुरुचिर्मनोहरतरा भव्योपकार पर । 15

चारित्र त्रिजगत्यनुत्तरतम भाग्य ह्यसाधारण,

येषा श्रीयुत देवसुन्दरवरा स्यातास्त्वृतीयास्तु ते ॥५४॥

एकद्वित्रिमुपैर्गुणै कृतमदा देहेऽपि गेहेऽपि ये,

नो मान्ति प्रचुरा नरा जगति ते सन्तु प्रकाम परे ।

ये सर्वेषु गुणेषु सत्स्वपि मद कुर्वन्ति नो कर्हिचित् । 20

ते ऽमी श्रीयुतदेवसुन्दरवरा सन्त्येक एवावन्तौ ॥५५॥

न यन्निन्दास्तुती कर्त्तुं शक्येते एतल सज्जनै ।

असद्भावेन दोषाणा गुणाना चाप्रमाणत ॥५६॥

उच्छिष्या सूरय पञ्च मेरुपञ्चकसन्निभा ।

मुपर्णभरविग्याता विद्यन्ते गरिमास्पदम् । ५७॥ 25

१—यद्वैराग्यमखण्डित बहुविध नित्य तपो यत्पर,

चाद्भुत्यमुदारविस्मयकर यत्रच शान्त मन ।



योऽन्यो वाऽप्यभवद्गुणो गुरुवरे श्रीज्ञानतः सागरे  
तत्सर्वं नहि वीक्ष्यते गणिगणेऽन्यस्मिन् कदाऽपि क्वचित् ॥५८॥

२—दाक्षिण्यैकपयोधयश्चतुरसच्चेतश्चमत्कृद्गुणाः

सिद्धान्तार्णं वगाहनैकरसिका उत्सर्गमार्गाध्वगाः ।

5

प्रागल्भ्यप्रचरास्तपोत्रिधिरताः सन्मत्युदाराशयाः

आसञ् श्रीकुलमण्डनाह्वयगुरूत्तंसा द्वितीया इमे ॥५९॥

३—भूतभाविभवत्सूरिक्रमरेणुकणोपमः

सूरिः श्रीगुणरत्नाह्वस्तृतीयः समजायत ॥६०॥

४—श्री सोमसुन्दर इति प्रथिताभिधानाः

10

सौभाग्यभाग्यविशदाः क्षमया प्रधानाः

तुर्याः सुधामधुरिमाञ्चितवाग्विलासाः

सूरीश्वरा गुणिगुणैः कृतनित्यवासाः ॥६१॥

५—श्री साधुरत्नाश्च ततो मुनीन्द्रास्तदद्भुतं यत्सुगुणा यदीयाः ।

नान्यत्र सन्तोऽपि जगज्जनानां सर्वत्र कर्णातिथयो भवन्ति ॥६२॥ 15

काले षड्रस पूर्व १४६६ वत्सरमिते श्रीविक्रमार्काद्गते

गुर्वादेशवशाद्विमृश्य च सदा स्वान्योपकारं परम् ।

ग्रन्थं श्रीगुणरत्नसूरिरतनोत्प्रज्ञाविहीनोऽप्यमुं

निर्हेतूपकृतिप्रधानजननैः शोध्यस्त्वयं धीधनैः ॥ ६३ ॥

इति श्रीगुरुपर्वक्रमवर्णनम्

20

अपरनाम श्रीक्रियारत्नसमुच्चयप्रशक्तिः समाप्ता

श्रीमुनिमुदरसूग्भिः सदशितानि

शुक्लवल्कीफट्टपरंपरासूरिकामानि

१ भगवान महावीर स्वामी [ निगन्थ गच्छ ]	१६ श्री चन्द्र सूरि [ वनवासी गच्छ ]	
२ श्री सुधर्मा स्वामी	१७ श्री सामन्त भद्र सूरि	
३ श्री जयू स्वामी	१८ श्री वृध्धदेव सूरि	
४ श्री प्रभव स्वामी	१९ श्री प्रद्योतन सूरि	5
५ श्री शय्यभव स्वामी	२० श्री मानदेव सूरि	
६ श्री यशोभद्र सूरि	२१ श्री मानतु ग सूरि.	
७ श्री सभूति विजय श्री भद्रवाहु स्वामी + }	२२ श्री वीर सूरि	
८ श्री स्थुलभद्र स्वामी	२३ श्री जयदेव सूरि	
९ श्री आर्य महागीरि +	२४ श्री देवानन्द सूरि	10
१० श्री आर्य सुहस्ति सूरि [ कौटिक गच्छ ]	२५ श्री विक्रम सूरि	
११ श्री सुस्थित सूरि श्री सुप्रतिवध्व सूरि + }	२६ श्री नरसिंह सूरि	
१२ श्री इन्द्रदिन्न सूरि	२७ श्री समुद्र सूरि	
१३ श्री दिन्न सूरि	२८ श्री मानदेव सूरि	
१४ श्री सिंहगिरि सूरि	२९ श्री विबुधप्रभ सूरि	15
१५ श्री वज्र स्वामी	३० श्री जयानन्द सूरि	
१६ श्री वज्रसेन सूरि [ चद्र गच्छ ]	३१ श्री रविप्रभ सूरि	
५	३२ श्री यशोदेव सूरि	
	३३ श्री प्रद्युम्न सूरि	
	३४ श्री मानदेव सूरि +	20
	३५ श्री प्रिमलचद्र मृरि +	

३६ श्री उद्योतन सूरिः [ वडगच्छः ]	४७ श्री त्रिव्रानन्द सूरिः श्री धर्मघोष सूरिः
३७ श्री सर्वदेव सूरिः	४८ श्री सोमप्रभ सूरिः
३८ श्री देव सूरिः	( ४९ ) श्री विमलप्रभ सूरिः
३९ श्री सर्वदेव सूरिः	( ,, ) श्री परमानन्द सूरिः 5
४० श्री यशोभद्र सूरिः } श्री नैमिचंद्र सूरिः }	( ,, ) श्री पद्मतिलक सूरिः
४१ श्री मुनिचंद्र सूरिः	४९ श्रीसोमनिलकसूरिः †
४२ श्री अजितदेव सूरिः	( ५० ) श्री चंद्रशेखर सूरिः
४३ श्री विजयसिंह सूरिः	( ,, ) श्री जयानंद सूरिः +
४४ श्री सोमप्रभ सूरिः श्री मणिरत्न सूरिः [ तपागच्छः ]	५० श्री देवसुंदर सूरिः + 10
४५ श्री जगच्चंद्र सूरिः	( ५१ ) श्री ज्ञानसागर सूरिः
४६ श्री देवेन्द्र सूरिः	( ,, ) श्री कुलमंडन सूरिः
श्री विजयेन्दु सूरिः	( ,, ) श्री गुणरत्न सूरिः
	५१ श्री सोमसुंदर सूरिः
	( ,, ) श्री लाधुरत्न सूरिः 15
	५२ श्री मुनिसुंदर सूरिः

( ) एतेषां पट्टपरंपरा गुर्वावल्यां सदाभिता नोपलभ्यते ।

† एतेषां चत्वारः पट्टधरा आसन् ! इति तपागच्छपट्टावलीसूत्रे ।

+ केषांचित् मते श्रीभद्रबाहुस्वामियुग्म—आर्यमहागीरिसूरियुग्म—श्रीसुस्थित-  
सूरियुग्मानां एकपट्टगणने चंद्रसुरेरंकः १६, अन्येषां मते पृथक्पृथक्गणने अंकः १९ ॥  
अनया गणनया वृहद्गच्छादिमाचार्यश्रीसर्वदेवसुरेरंकौ ३५, ३८ । श्रीप्रद्युम्नसूरि—श्रीमान-  
देवसूरियोरपि पट्टगणनेऽकौ ३७, ४० ॥ अतः देवसुंदरसुरेरपिपट्टांकाः ४८, ५०, ५१, ५३ ।  
श्रीजयानंदसुरेरपि पट्टगणने अंकः ५४ ॥ ( ४५ ) श्री जगच्चंद्रसुरेरारभ्य विशिष्ट-  
गणनयातु श्रीदेवसुंदरसुरेः ५०, ५६, ६१ अपि अंकाः । किंतु संततिगणनया ५० एव ॥

मतातराणि ५९, ४८५, ४८६, ४८७ श्लोकेषु ।

क्रमीय १४६६ वर्षे ४९६ पद्यदेहा गुर्वावली

## श्रीसोमसौभाग्य-पट्टावली

[ कर्ता—मुनिश्रीप्रतिष्ठासोम ]

ततो गण शिष्यनतो वटाख्याख्यातोऽभनत्कापि बृहद्गणाह ।  
 तस्मिंश्च गच्छे प्रवरेषु भूरिमूरिष्वतीतेषु बहुश्रुतेषु ॥२३॥  
 श्रीमान् जगच्चन्द्र इति प्रतीतनामा सुधामाजनि सूरिराज ।  
 पट्त्रिंशदाचार्यगुणा गणेंद्र त शिश्रियु प्रेमभरप्रणुत्रा ॥२४॥ युगम्  
 स्वगोभरैर्ध्वस्तसमस्तपापतमा क्षमादर्शितपुण्यमार्ग । 5  
 जगज्जनाना प्रमद वितन्वन् श्रीचन्द्रवद्योऽजनि सार्थकाह ॥२५॥  
 वैराग्यवान् द्वादश हायनान्याचामान्लनिर्माणतपो ह्यतप्त ।  
 यो दुस्तप तेन तपागणोति गणस्य सत्प्यातिरभूत् क्षमाया ॥२६॥  
 श्रीमज्जगच्चन्द्रगुणोर्विनेयस्त्रमेयसद्गुणैर्विनिद्र ।  
 देवेन्द्रमत्येंद्रमुनीन्द्रवद्यो देवेन्द्रसूरि समभूत् प्रभाढय ॥२७॥ 10  
 व्याख्याकला यस्य कला विलोक्य श्रीवस्तुपालादिमहेभ्यसभ्या ।  
 के धूर्णयन्ति स्म न पूर्णचित्ता शीर्षाणि हर्षेण च त्रिम्भयेन ॥२८॥  
 कर्मसरूपप्रथनाद्य कर्मप्रथादिसद्प्रथविधानप्रेधा ।  
 मेधाप्रधानो जगता गताहा व्यभासयज्जैनमत मत य ॥२९॥  
 सशुद्धमाधुस्थितिदुर्गमार्गं प्ररूपयश्चारु समाचरश्च । 15  
 अन्तपसकृतिपतदानकल्पद्रुमो ऽभयद्यो जिनकल्पिकल्प ॥३०॥  
 त्यातो दिगते वितते तद्वैतामी स्वदासीकृतदेवसूरि ।  
 निस्नीमगभोरिमहद्यविद्यानदाहमूर्तिद्र इहाप्रभासे ॥३१॥  
 अनोकह नृचलता श्रिता वा सरित्पति वा मरितस्तता या ।  
 मरानवाला इय मानमं या य इयविद्या हि तथा प्रथादयाः ॥३२॥ 20

प्रह्लादनस्पृकूपुरपत्तने श्रीप्रह्लादतोर्वापतिसद्विहारे ।  
 श्रीगच्छधुर्यैः किल यस्य वर्यश्रीसुरिमंत्रे सति दीयमाने ॥३३॥  
 सत्पात्रमात्रातिगसद्गुणातिप्रहृष्टहृल्लेखभृद्गच्यूलेखाः ।  
 कर्पूरकाश्मीरजकुंकुमादिगंधोदकं श्राक् चवृष्टुस्तदानीम् ॥३४॥ युग्मम्  
 तत्पट्टपूर्वाद्रिविनिद्रभानुर्जगत्रयाह्लादनशीतभानुः । 5  
 श्रीधर्मघोषः स्फुटदण्डघोषः स नन्दतात्रिमितपुरण्यपोषः ॥३५॥  
 प्रबोधितो येन नयेन साधुः पृथ्वीधरः साधुधुरंधरोऽसौ ।  
 स्कारान् विहारांश्चतुरश्चतुर्भिः समन्विताशीतिमितानकार्पीन् ॥३६॥  
 पट्टं पूर्वपंचाशदतुल्यहेमधटीभिरिभ्यो रुचिरेंद्रमालाम् ।  
 कंठे निजे यो विनिवेश्य वश्यां मुक्तिं वशां तां हृदि मन्यते स्म ॥३७॥ 10  
 माधुर्यधुर्यां च सुधासदेश्यां यद्देशनां श्रोतपुटैर्निपीय ।  
 पृथ्वीधरांगोद्भवभङ्गणोऽसौ श्रीतीर्थयात्रां रचयन् पवित्रतां ॥३८॥  
 सुवर्णदुर्वर्णमयीं किलैकामेवाद्भुतश्रेणिकरीं पताकाम् ।  
 ददौ सदैचित्यधरः सुतीर्थे शत्रुंजयाद्रावपि चोज्जयते ॥३९॥ युग्मम्  
 श्रीधर्मघोषो गुरुरन्यदोर्व्यां गुर्व्यां विहारं रचयन् समागात् । 15  
 श्रीउज्जयिन्यामलकाजयिन्यामनन्यसामान्यघनप्रभावः ॥४०॥  
 गुरुव्रतिं लोकनतिप्रसूतामतिप्रभूतां पुरि वीक्ष्य कश्चित् ।  
 योगी विपश्चित् कुपितः समागात् गुर्वाश्रमं संश्रित आप्तशिष्यैः ॥४१॥  
 सर्पान् सदर्पान् वदनोत्थतारफूत्कारवारैर्भरितांतरिज्ञान् ।  
 परः सहस्रात् स मुमोच विद्याकृतानि चान्यान्यपि वैकृतानि ॥४२॥ 20  
 पद्मासने ध्यानमथ प्रपूर्य सूर्यग्रणीर्गैयगुणोऽनर्णीयः ।  
 विनेयवृन्दैः सह तं वबंध स क्रौंचबंधं बुधसार्वभौमः ॥४३॥  
 म्रिये म्रियेऽहं सह शिष्यलक्ष्मीं मुंच सद्यः सुगुरो ? प्रसद्य ।  
 कारुण्यपुण्यः श्रितसाम्यकाम्यस्त्वं वर्तसे यद् व्रतिनामिनश्च ॥४४॥  
 ततो व्यमुंचद्गुरुचक्रवर्ती तं योगिनं योजितपाणिपद्मम् । 25  
 ततो मनः साम्यभृतां नितान्तं कांतं घृणासांद्ररसैः प्रशस्यैः ॥४५॥

- विद्यापुरे क्षुद्रविनिद्रविद्याविद मद्र सञ्चितचारपट्टा ।  
 श्राद्धी प्रदुष्टा हृदि शाकिनी श्रागन्मभयद्यश्चतुरश्चतस्र ॥४६॥  
 य पूर्जनाभ्यर्थनया नयानुमारी च ता स्तभनतो मुमोच ।  
 अदर्शयद्यस्य च रत्नमेक रत्नाकर स्व तटसञ्चितस्य ॥४७॥  
 चिनिर्मिता येन च भव्यनव्यप्रथा अनेके सरमार्थमार्था । 5  
 प्रदीप्रदीपा इव तत्वमार्गमद्यापि हृद्या किल दर्शयन्ति ॥४८॥  
 गिरीशगिर्युज्वलतोत्यगर्वरर्षीरुतौ पेशलकौशलाह्वया ।  
 सदावदाता प्रचरावदाता वक्तुं न शक्या कत्रिभिर्यदीया ॥४९॥  
 तस्य क्षमाभृत्प्रणतस्य पट्टे सोमप्रभ सोमसमानकीर्त्ति ।  
 सूरिर्वभौ यो भुवि सच्चकोरलोक चकारास्तसमस्तशोकम् ॥५०॥ 10  
 गलत्कलक भुवि यो निजाक काव्यप्रभ काव्यनिचद्धशास्त्रम् ।  
 घन त्रिपश्चिजनरजन तद्विनिर्ममे निर्मलनिर्ममेश ॥ ५१ ॥  
 श्रीसोमकीर्त्तिनिकर करणौघजेता श्रीयुक्तसोमतिलकाभिवसूरिराज ।  
 तत्पट्टपूर्ववसुधावरतु गशृग विध्वस्ततामसभरोऽरचयद्दुचाह्वयम् ॥ ५२ ॥  
 श्रीसोममौलिसुरमौलिमल करोति स्मासौ नभोद्गणविभूपणतुल्यसोम । 15  
 श्रीसोमपु द्रसुगुरुस्त्वकरोत्सवास स्फूर्जन्मन सुमनसा विगतैनसास ॥५३  
 दीव्यहृद्या सहृदया हृदयावदातविद्योदया घनतरा भुवनेष्वभूवन् ।  
 श्रीस्तोमसोमतिलकस्य मुनीश्वरस्य साम्यं न केऽपि तु दधुर्दविशुभ्रकीर्ते ॥५४  
 जयानद सूरिस्त्रिदशपतिसूरिर्निजधिया  
 विनेयस्तस्यासीन्नयविनयसौभाग्यकलित, । 20  
 अभग वैराग्य दृढतमतमस्तोममथन  
 यदीयागे चगे प्रणयवशतो वासमकरोत् ॥ ५५ ॥  
 गुरौ यस्मिन् स्मेरद्युतिदिनकरे सयमरमा—  
 लसद्रामापाणिप्रहणमहमातन्वतितराम् ।  
 लघुभ्राता देव्या जिनमतजुपा मुर्ध्नि निहत— 25  
 श्चपेटाभि प्रादादनुमतिमसौ तद्ग्रहणजाम् ॥ ५६ ॥

सुधर्मश्रीजंबूप्रभृतिगुरुत्तु धीधनगुञ्ज ।

महौन्नत्यान् नित्याभ्युदयजयन्तकीर्तिकलिनान् ।

दृशोऽर्तीतान् स्नीतान् नयन्ति अनिराट् यः स्मृतिपथम् ।

गुणैश्चन्द्रोन्निद्रैर्गिरिशगिरिशुभ्रैरिह शुभैः ॥ ५७ ॥

सदर्पः कंदर्पः प्रसृमरधुजौजाः स समरे

5

ऽवधि क्रोधो योधो निकृतिमदमात्सर्यसहितः ।

जयानंदश्रीमद्गुरुभिरपरेऽपीह रिपवो

ऽन्तरंगास्तेऽखर्वास्सपदि हतगर्वा विदधिरे ॥ ५८ ॥

ये श्रीमद्गुरवो रवोजितजितप्रावृद्धनाः श्रीधनाः

श्रीमद्गौतमसंनिभा हृदि निभान्मुक्ताश्च युक्ता गुणैः । 10

विश्वं कीर्तिजलैः समुज्ज्वलतरैः प्रज्ञालयंतः स्फुर—

न्मूर्तिस्फूर्तिजुपः सृजन्ति सुकृतश्रीप्राज्यराज्यं क्षितौ ॥ ५९ ॥

इति श्री युगप्रधानावतारश्रीबृहत्तपागच्छशृंगारद्वाग्भट्टारकपुरं—

दरपूज्यश्रीसोमसुंदरसूरिसौभाग्यवर्णने सोमसौभाग्यनाम्नि काव्ये श्रीतपा-

गच्छपूर्वाचार्यसंहतिप्रकटनो नाम तृतीयः सर्गः ॥ ३ ॥

15

अथ अनुपूर्तयः—

स्वर्गं ययुर्ययुचलेंद्रियजिज्जयाद्याऽऽनंदाहसूरिसुकुटाः प्रकटाभिधानाः ॥

श्रीदेवसुंदरगुरुप्रभवोऽभयंरच, श्रीगच्छनायकतया विदितास्तदानीं ॥

—सर्ग ५ श्लो० १

अद्रीश्वरान्यंबुधिविचंद्रसंमिते, भृते प्रमोदप्रकरेण वत्सरे ॥

20

समं भगिन्या गिरिदेवताद्युता, सोमेन दीक्षा जगृहे महामहैः ॥

श्रीसोमसुंदरमुनिस्त्विति नाम धाम, श्रेयःश्रियां वितरतिस्म यतीश्वरोऽसौ ॥

सोमाभिधानपुरुषप्रवरस्य तस्य, दीव्यद्गुणैः प्रसृमरस्य नतामरस्य ॥

( दीक्षा वि० सं० १४३७ ) सर्ग ४, श्लो० ५९-६०,

श्रीवाचकोतमपदं खशराविधिविचंद्रसंवत्सरे विगतमत्तरचित्तवृत्तेः ॥ 25

—अब्दैः समस्य समभूत् तखसंमिताब्दे

“शाब्देन सन्मधुरिमाऽतिशयेन तस्य ॥ १ ॥

श्रीसोमसुदरगुणाद्भुतवाचकेद्रा केंद्रास्पदाश्रितशुभ्रहशुद्वलग्ने ॥

सस्थापिता किल तदैव सदैव पुण्या,

प्रार्था दिश प्रति विनेययुता विजह् ॥ ७ ॥

श्रीदेवसुदरगुरुर्गिरिमाभिराम, श्रीवाचकस्य कलिशत्रुभयानकस्य ॥

कर्णैसकर्णमुकुटस्य 'स' सूरिमत्र, सन्यस्यतिस्म भुवि विस्मयकारिशक्तिः ॥ ३ ॥ 5

वर्षे कुलाचलशिलीमुखवारिराशिपीयुपदीवितिमितेऽप्रमिते प्रमोदै ॥

श्रीसोमसुदरगुणोज्वलवाचकानामाचार्यवर्यपदमद्भुतकारि जज्ञे ॥ ४ ॥

( वाचकपद नि० म० १४५०, सूरिपद वि० स० १४५७ )

सर्ग ५, श्लो० १४, १५, ५०, ५१,

स्वर्गगते सद्गुणसगते श्री—ऋद्गुरौ जह्नु रथो प्रथाह्या ॥ 10

श्रीगच्छनाथा महिमा सनाथा, श्रीसोमयुक् सुदर सूरिराजा ॥

सर्ग-६, श्लोक-१

स्वच्छे श्रीयुतसोमसुदरगुरोर्गच्छे ऽप्यतुच्छे गुणै ।

मख्या नो वरिवर्ति पडितगणिच्छुक्लादिमख्यामृताम् ॥

रत्नानामिव कातकातिसजुपा रत्नाकरस्य स्फुर— 15

त्ताराणा च यथापृथुद्युतिभृता श्रीतारकाधीशितु ॥ १ ॥

x

सर्ग-१०, श्लोक ६४.

x आसोमसुदरगुणा महव पट्टधरा वाचका शिष्याश्चासन् तेषु केषांचित्

नामानि यथ — श्रीमुणिसुदरसुरि, वृष्णमरस्वतीश्रीनयसुदरसुरि, श्रीभुवनेसुदरसुरि  
पद्मादरागसूत्राभधारकश्रीनिनसुदरसुरि, जिनकीर्तिसुरि, श्रेष्ठिगोविंदकृतपदोत्सव,  
श्रीविशालराजसुरि, महादेवश्रेष्ठिकृतपदोत्सवो दक्षिणदिग्वादिजेता श्रीरत्नशेखरसुरि,  
गधारनगरश्रेष्ठिनमधपतिकृतपदोत्सव आउटयर्नादिसुरि, रत्नशेखरसुरिशिष्यलक्ष्मी-  
सागरसुरि, महावादी समर्थव्याख्याता मेवाटाधिपतिकुम्भकण-जीखटुर्गाधिपतिमडलिक-  
चापानेराधिपतिश्यामिहृत्पूजित समधरवि श्रीनोमदेवसुरि, रत्नमठनसुरि, सप्तनव-  
रहरस्यशाही श्रीरत्नमठनसुरि, शुभरत्नसुरि, महानार्किकसोमजयसुरि । उपाध्याय-  
साधुगा, महापाध्यायचिनमटन सुत्यदिग्वादिगणमरस्वतीउपाध्यायधीधारिशरत्न,  
उपाध्यायमहाशेखर, वादाञ्जय वली उपाध्याय श्रीदेमह्य । दक्षिणदिग्वादिजेता प०



वर्षे नन्दनिधानवारिधिहिमज्योतिर्मिते स्वर्गयुः ।

केचित् सातिशया वदंत्विति मुनिश्रेष्ठा गरिष्ठा धिया ॥

श्रीसोमं वरतीर्थनाथचरणांभारुट्पवित्रीकृते ।

जाताः पूर्वमहाविदेहनगरे ते सूरयः सत्कुले ॥१॥

( वि० सं० १४६६ स्वर्गमनं ) सर्ग-६ श्लोक १०६ ७

श्रीसोमसुन्दरयुगोत्तमसूरिपट्टे, श्रीमान् रराज मुनिसुन्दरसूरिवाजः ॥

श्रीसूरिमंत्रवरसंस्मरलौकशक्ति-र्यस्याऽभवद् भुवनविस्मयदानदत्ता ॥१॥

श्रीरोहिणीति विदिते नगरे ततीति पश्चात्कृतेः किल चमत्कृतहृत्पुरेशः ।

उरीचकार मृगयाकरणे निपेधं, प्रावर्तयन्निखिलनीवृति चाप्यमारि ॥२॥

प्रागेव देवकुलपाटकपत्तने यो, मारेरुपद्रवदलं दलयांचकार ॥ 10

श्रीशांतिकृत्स्तवनतोऽवनतोत्तमांग-भूपालमौलिमणिघृष्टपदारविंदः ॥३॥

श्रीमानदेवशुचिमानसमानतुङ्ग-मुख्यान् प्रभावकगुरून् स्मृतिमानयद्यः ॥

श्रीशासनाऽभ्युदयदप्रथितावदातै-स्तैस्तैश्चमत्कृतिकरैः कुमुदावदातैः ॥४॥

पारावारकरस्मरेपुहिमरुक्वर्षति हर्षाद् व्यधात् ।

विज्ञानां हृदयंगमं च सुगमं क्लृप्तैंदिरासंगमम् ॥ 15

काव्यं नव्यमिदं विदंभहृदयः शिष्यः प्रतिष्ठादिमः ।

सोमः श्रीयुतसोमसुन्दरयुरोर्मेरोगैरिम्णः श्रिया ॥

( रचना वि० सं० १५२४ ) सर्ग १०, श्लो० १, २, ३, ४, ७३,

इति समाप्तमिदम्

विवेकसागरः, श्रीदक्षिणदिग्वादिजेता राजवर्धनः, श्रीचारित्रराजः, वादीश्रीपुण्यराजः,  
श्रीश्रुतशेखरः, श्रीवीरभृत्शेखरः, श्रीमोमशेखरः, श्रीज्ञानकीर्तिः, श्रीशिवमूर्तिः,  
श्रीधर्ममंडनः, ज्योतिर्विद् श्रीहर्षमूर्तिः, श्रीहर्षकीर्तिः, श्रीहर्षभूषणः, श्रीहर्षवीरः,  
गणितज्ञः श्रीविजयशेखरः, संस्कृतजल्पपटुश्रीअमरसुन्दरः, महावैयाकरणो लक्ष्मीभद्रः,  
वादीश्रीसिंहदेवः, प्रवरव्याख्यातारत्नप्रभः, श्रीशीलभद्रः, दुर्गमशास्त्रज्ञनंदिधर्मः, शांति-  
जिनैकस्मरणमहात्पस्वी शांतिचंद्रगणिः, पंचाशत्त्रपणादिदुःस्तपतपःकर्ता विनयसिंह-  
गणिः, महाशब्दैः स्वाध्यायकारको हर्षसेनगणिः, निर्यैरुभक्तपानग्राहक आतापनातत्परः  
श्रीहर्षसिंहगणिः, श्रीप्रतिष्ठासोमः ॥ इति सोमसौभाग्यकाव्ये दशमस्वर्गे

अस्य सुरैः १८०० साधूनां परिवारः ॥ इति तपागच्छपट्टावलीमन्त्रे

## श्रीतपागच्छाफट्टावली सूत्रम्

स्वोपज्ञया वृत्या समलकृतम्

( कर्ता—महोपाध्यायश्रीधर्मसागरगणिः )

॥६०॥ तपागच्छाधिराजश्रीहीरविजयसुरिगुरुभ्यो नम ।

अथ गुरुपरिपाटीकथनाय सगतिमाह ।

सिरिमतो सुहहेज, गुरुपरिवाडीइ आगओ सतो ॥

पजोसवणाकण्यो, वाइज्जइ तेण त वुच्छ ॥१॥ 5

व्याख्या—सिरमतोति, यत्तदोर्नित्याभिसवधात् येन कारणेन श्री-

मान सश्रीक श्रिया मत्रो वा पर्यपणाकल्पो गुरुपरिपाट्या समागत सन्  
वाच्यते । उपलक्षणात् श्रूयते च । किंलक्षणं । शुभहेतु स्वर्गापवर्गकारण ।  
तेन कारणेनाह ता गुरुपरिपाटीं वक्ष्ये इत्यन्वय । श्रीमानिति विशेषण  
तीर्थकरचरित्रस्थविरावलीनामकीर्तनपुरस्सर साध्याचारप्रतिपादनेन सर्वे- 10  
ष्वपि भगलभूतेषु श्रुतेषु सश्रीकत्वमस्यैवेति ख्यापनपरमिति । गुरुपरिपाट्या-  
गत इति च विशेषण । गुरुपरिपाट्यागतयोगाद्यनुष्ठानविविनैव वाच्यमान ।  
णगग्गचित्ताजिण्णमासणम्मि, पभावणापूअपरायणा जे । इत्यादि विधिना  
च श्रूयमाण शुभहेतुमोक्षफलहेतुर्नान्यथेति ज्ञापनपरमिति गाथार्थ ॥१॥

गुरुपरिपाटीमूल, तित्थयरो वध्धमाणनामेण ॥

15

तण्णटोदयपढमो, सुहम्मनामेण ? गणमामी ॥२॥

श्रीवर्धमानतीर्थकर ॥ ? — तत्पट्टेश्रीसुवर्मस्वामी ॥

व्याख्या—गुरुपटिनाडित्ति, गुरुपरिपाट्या मूलभाय कारण वर्धमान  
नाम्ना तीर्थकर । तीर्थकृतो हि आचार्यपरिपाट्या उत्पत्तिहेतवो भवति  
नपुनस्तद्वर्तमाना । तेषा स्वयमेवतीर्थप्रवर्तनेन कस्यापि पट्टधरत्वामावात् ॥ 20

१ तस्मात् श्रीमहावीरस्य पट्टे उदये च प्रथमः श्रीसुधर्मस्वामी पंच-  
मो गणधरः । सच किलक्षणो ? गणस्वामी यत एकादशानामपि गणधर-  
पदस्थापनावसरे श्रीवीरेण श्रीसुधर्मस्वामिनं पुरस्कृत्य गणोऽनुज्ञातः  
दुष्प्रसहं यावत् श्रीसुधर्मस्वाम्यपत्यानामेव प्रवर्तनात् ॥ तत्पट्टोदयेत्य-  
त्रोदयपदं प्रथमोदयस्यापि प्रथमाचार्यः श्रीसुधर्मेति सूचकं ॥ स च पंचाषट्- 5  
र्षाणि ५० गृहस्थपर्याये, त्रिंशद्वर्षाणि ३० श्रीवीरसेवायां, वीरे निवृत्ते वा  
द्वादशवर्षाणि १२ छाद्मस्थये, अष्टौ ८ वर्षाणि केवलिपर्याये चेति, सन्व्यायुः  
शतमेकं १०० परिपाल्य श्रीवीराद्विंशत्या २० वर्षैः सिद्धिं गतः ॥ श्रीवीर-  
ज्ञानोत्पत्तेश्चतुर्दश १४ वर्षे जमालिनामा प्रथमो निहवः । षोडश १६ वर्षे  
तिष्यगुप्तनामा द्वितीयो निहवः ॥ २ ॥ 10

बीओ जंबू २ तईओ, पभवो ३ सिज्जंभवो चउत्थो ४ अ

पंचमओ जस भदो ५, छट्टो संभूय-भद्गुरू ६ ॥३॥

२-तत्पट्टे श्रीजंबूस्वामी ॥ ३-तत्पट्टे श्रीप्रभवस्वामी ॥

४-तत्पट्टे श्रीशय्यंभवस्वामी ॥ ५-तत्पट्टे श्रीयशोभद्रस्वामी ॥

६-तत्पट्टे श्रीसंभूतविजयश्रीभद्रबाहुस्वामिनौ ॥ 1

व्याख्या - २ - बीओ जंबूत्ति, श्रीसुधर्मस्वामिपट्टे द्वितीयः  
श्रीजंबूस्वामी । सच नवनवतिकोटिसंयुक्ता अष्टौ कन्यकाः परित्यज्य  
श्रीसुधर्मस्वाम्यंतिके प्रव्रजितः । स च षोडश १६ वर्षाणि गृहस्थपर्याये,  
विंशतिवर्षाणि २० व्रतपर्याये, चतुश्चत्वारिंशद्वर्षाणि ४४ युगप्रधान-  
पर्याये चेति, सर्वायुरशीतिवर्षाणि ८० परिपाल्य श्रीवीरत् चतुःषष्टि ६४ 20  
वर्षैः सिद्धः ॥ अत्रि कविः -

मत्कृते जंबुना त्यक्ता, नवौढा नवकन्यकाः ।

तन्मन्ये मुक्तिवध्वाऽन्यो, नवृतो भारतो नरः ॥ १ ॥

चित्तं न नीतं वनिताविकारै - वित्तं न नीतं चतुरैश्च चौरैः ॥

यद्देहोहे द्वितयं निशीथे, जंबूकुमाराय नमोस्तु तस्मै ॥ २ ॥

मण १ परमोहि २ पुलाए ३, आहार ४ रत्नग ५ उवसमे ६ कल्पे, ॥  
सजमतिग ८ केवल ९ मि-ज्झणा य १० जवुम्मि बुच्छिण्णा ॥१॥

३-तईओत्ति, श्रोजवूस्वामिपट्टे तृतीय श्रीप्रभवस्वामी । स च  
विंशद्वर्षाणि ३० गृहस्थपर्याये, चतुश्चत्वारिंशत् ४४ वर्षाणि व्रतपर्याये,  
एकादश ११ युग० चेति । सर्वायु पचाशीति ५५ वर्षाणि परिपाल्य, श्रीवीरात् ५  
पचसप्तति ७५ वर्षातिक्रमे स्वर्गभागिति ॥ छ ॥

४-सिज्जभवोत्ति, श्रीप्रभवस्वामिप्रहितसाधुमुखात् "अहोकष्टमहो-  
कष्ट तत्व न ज्ञायते परम्" इत्यादि वचसा यज्ञस्तभादध श्रीशातिनाथ-  
विंशदर्शनादवाप्तधर्मा प्रव्रज्य, क्रमेण मनकनाम्नः स्वसुतस्य निमित्त  
दशवैकालिक कृतवान् । यत्—

10

कृत विकालवेलाया, दशाध्ययनगर्भितम् ।

दशवैकालिकमिति ~ नाम्ना शास्त्र बभूव तत् ॥ १ ॥

अत पर भविष्यति, प्राणिनो ह्यल्पमेधस ।

कृतार्थास्ते मनकवत्, भवतु त्वत्प्रसादतः ॥ २ ॥

श्रुताभोजस्य किंजल्फ, दशवैकालिक ह्यद ।

15

आचम्पाचम्पमोदन्ता—मनगारमधुव्रता ॥ ३ ॥

इति सघोपरोधेन, श्रीशाय्यभवसूरिभि ॥

दशवैकालिको ग्रथो, न सवन्ने महात्मभि ॥४॥ इति ।

स चाष्टाविंशतिर २८ वर्षाणि गृहस्थपर्याये, एकादश ११ व्रते, त्रयो-  
विंशतिर ३३ युगप्र० चेति सर्वायुर्द्वापष्टि ६२ वर्षाणि परिपाल्य । श्रीवीरादष्ट- 20  
नवति ६८ वर्षातिक्रमे स्वर्गभाक् ॥ छ ॥

५ पचमओत्ति, श्रीशाय्यभवस्वामिपट्टे पचम श्री यशोभद्रस्वामी ।  
स च द्वाविंशतिर २२ वर्षाणि गृहे, १४ व्रते, पचाशत् ५० व० युग० सर्वायु  
पडशीति ६५ वर्षाणि परिपाल्य । श्रीवीरादष्टचत्वारिंशदधिके शते १४८-  
ऽतिक्राते स्वर्गभाक् ॥ छ ॥

25

६-छट्टा संभूयति, श्रीयशोभद्रस्वामिपट्टे पट्टौ पदकैदेशे पदसमु-  
दायोपचारात् संभूतेति, श्रीसंभूतिविजयः भद्रत्ति, श्रीभद्रबाहुस्वामीत्युभावपि  
पष्टपदधरावित्यर्थः ॥ तत्र श्री संभूतिविजयो द्विचत्वारिंशत्४२व० गृहे,  
चत्वारिंशत्४०व्रते, अष्टौ न युग० चेति, सर्वायुर्नवति६०वर्षाणि परि-  
पाल्य स्वर्गभाक् ॥

श्रीभद्रबाहुस्वामी तु श्री आवश्यकदिनिर्युक्तिविधाता । व्यंतरीभूतव-  
राहसिहिरकृतसंघोपद्रवनिवारकोपसर्गहरस्तवनेन प्रवचनस्य महोपकारं  
कृत्वा पंचचत्वारिंशत्४५गृहे, सप्तदश १७ व्रते, चतुर्दश१४युगप्र० चेति  
सर्वायुः षट्सप्तति७६वर्षाणि परिपाल्य श्रीवीरात् सप्तत्यधिकशत१७०  
व- स्वर्गभाक् । छ । ॥३॥

10

सिरिथूलभद्र सत्तम ७. अट्टमगा महगिरी-सुहृत्थी ८ अ ॥

सुट्टिअ-सुप्यडिवद्ध, कोडिअकांकांदिगा नवमा ९ ॥४॥

७-तत्पट्टे श्रीथूलभद्रस्वामी ॥ ८-तत्पट्टे श्रीआर्यमहागिरि-  
श्रीआर्यसुहृस्तिनौ ॥९-श्रीआर्यसुहृस्तिपट्टे श्रीसुस्थितसुप्रतिवद्धौ ॥

15

व्याख्या-७-सिरिथूलभद्रत्ति, श्रीसंभूतविजय-भद्रबाहुस्वामिनोः सप्तम-  
पट्टे श्रीस्थूलभद्रस्वामी कोशाप्रतिबोधजनितयशोधवलीकृताखिलजगत्  
सर्वजनप्रसिद्धः । चतुर्दशपूर्वविदां पश्चिमः । क्वचिच्चत्वार्यन्त्यानि पूर्वाणि  
सूत्रतोऽधीतवानित्यपि । स च त्रिंशत् ३० गृहे, चतुर्विंशति२४व्रते, पंच-  
चत्वारिंशत्४५युगप्रधाने, सर्वायुर्नवनवति६६वर्षाणि परिपाल्य श्रीवीरात्  
पंचदशाधिकशतद्वय२१५वर्षे स्वर्गभाक् ॥ अत्र कविः—

20

श्रीनेमितोपि शकटालसुतं विचार्य, मन्यामहे वयमसुं भटमेकमेव ॥

देवोऽद्रिदुर्गमधिरुह्य जिघाय मोहं, यन्मोहनालयमयं तु वशी प्रविश्या ॥१॥

श्रीवीरनिर्वाणात् चतुर्दशाधिकवर्षशतद्वये २१४ आषाढाऽऽचार्यात्  
अव्यक्त नाम तृतीयो निहवः ॥छ॥

८-अट्टमगति, श्रीस्थूलभद्रपट्टेऽष्टनौ पट्टधरौ श्रीआर्यमहागिरि-  
श्रीसुहन्ती चेत्युभावपि गुरुभ्रातरौ । तत्र श्रीआर्यमहागिरिर्जिनकल्पिक-  
तुलनामारुढो, जिनकल्पिककल्प । त्रिंशत् ३० गृहे, चत्वारिंशत् ४० व्रते,  
त्रिंशत् ३० युग०, सर्वायु शत १०० व० परिपाल्य स्वर्गभाक् ॥

द्वितीयेनाऽऽर्यसुहस्तिना पूर्वभवे द्रमकीभूतोपि सप्रतिजीव प्रत्राज्य 5  
त्रिषडधिपतित्व प्रापित । येन सप्रतिना त्रिषडमितापि मही जिनप्रासाद-  
मदिता विहिता साधुवेपधारिनिजगठपुरुषप्रेषणेनाऽनार्यदेशेपि साधुविहार  
कारित ॥ सच आर्यसुहस्ती त्रिंशत् ३० गृहे, चतुर्विंशतिर ४ व्रते, पट्चत्वारि-  
ंशत् ४६ युग प्र० सर्वायु शतमेक १०० परिपाल्य श्रीवीरात् एकनव-  
त्यविक्रगतद्वये २६१ स्वर्गभाक् ॥ 10

यद्यपि श्रीस्थूलभद्रस्य पचदशाधिकशतद्वय २१५ वर्षे स्वर्गो गुर्वा-  
वल्यनुमारेणोक्त । श्रीमहागिरि-सुहस्तिनौ तु त्रिंशत् ३० वर्षगृहस्थ-  
पर्यायाद्यपि शत १०० वर्षजीविनौ दुष्पमासघस्तोत्रयत्रकानुसारेणोक्तौ ॥  
तथा च मति श्रीआर्यसुहस्ती श्रीस्थूलभद्रदीक्षितो न सपद्येत, तथापि गृहस्थ  
पर्यायत्रपाणि न्यूनानि व्रतवर्पाणि वाधिकानीति विभाव्य घटनीयमिति ॥ 15

तथा श्रीसुहस्तिदीक्षिताऽवतिसुकुमालमृतिस्थाने तत्सुतेन देवकुल कारित  
तस्य च " महाकाल " इति नाम सजात ।

श्रीवीरनिर्वाणत् त्रिंशत्यधिकवर्षशतद्वये २२० अश्वमित्त्रात्  
सामुच्छेदिक्रनामा चतुर्थो निहव । तथा अष्टविंशत्यधिकशतद्वये २२८  
गगनाम्ना द्विक्रिय पचमो निहव ॥ छ ॥ 20

९-सुद्विअत्ति, श्री सुहस्तिन पट्टे नवमौ श्रीसुस्थित-सुप्रतिवध्वौ,  
कोटिक-काकदिकौ । कोटिशसूरिमत्रजापात् कोट्यंशसूरिमत्रधारि-  
त्वाद्वा । ताभ्या कौटिक नाम्ना गच्छोऽभूत् अय भाव - श्रीमुवर्मस्वामिनो-  
ऽष्टौसूरीन् यावत् निर्प्रया माधवोऽनगारा इत्यादि सामान्यार्थाभिधायिन्या-  
ख्याऽमीन् नवमे च तत्पट्टे कौटिका इति विशेषार्थावबोधक द्वितीय नाम 25  
प्रादुर्भूत ॥

श्रीआर्यमहागिरेस्तु शिष्यौ बहुल-बलिस्सहौ यमलभ्रातरौ-तस्य बलि-  
स्सहस्य शिष्यः स्वातिः तत्वार्थादयोग्रंथास्तु तत्कृता एव संभाव्यन्ते ।

तच्छिष्यः श्यामाचार्यः प्रज्ञापनाकृत् । श्रीवीरात् पट्टसप्तत्यधिकशतत्रये  
३७६ स्वर्गभाक् ॥ तच्छिष्यः सांडिल्यो जीतमर्यादाकृदिति नंदिस्थविराव-  
ल्यामुक्तमस्ति । परं सा पट्टपरंपराऽन्येति बोध्यं ॥४॥ 5

सिरिइंद्रदिन्नसूरी, दसमो १० इक्कारसो अ दिन्नगुरू १ १ ॥

वारसमो सीहगिरी १२, तेरसमो वयरसामि गुरू १३ ॥५॥

१०-तत्पट्टे श्री इंद्रदिन्नसूरिः ११-तत्पट्टे श्रीदिन्नसूरिः ॥

१२-तत्पट्टे श्रीसीहगिरिः ॥ १३-तत्पट्टे श्री वज्रस्वामी ॥

व्याख्या-१० सिरि इंद्रत्ति, श्री सुस्थित-सुप्रतिबद्धयोः पट्टे दशमः 10  
श्रीइन्द्रदिन्नसूरिः ॥ अत्रांतरे श्रीवीर० त्रिपंचाशदधिकचतुःशतवर्षातिक्रमे  
४५३ गर्दभिल्लोच्छेदी कालकसूरिः ॥ श्री वी० त्रिपंचाशदधिकचतुःशत  
व०४५३ भृगुकच्छे आर्यखपुटाऽऽचार्य इति पट्टावल्यां । प्रभावकचरित्रे  
तु चतुरशीत्यधिकचतुःशत४८४वर्षे आर्यखपुटाचार्यः ॥ सप्तपष्ठयधिक  
चतुःशत४६७वर्षे आर्यमंगुः ॥ वृद्धवादी पादलिप्तश्चात्र । तथा सिद्धसेन 15  
दिवाकरो, येनोज्जयिन्यां महाकालप्रसादरुद्रलिंगस्फोटनं विधाय कल्याण-  
मंदिरस्तवेन श्रीपार्श्वनाथबिंबं प्रकटीकृतं, श्रीविक्रमादित्यश्च प्रतिबोधित-  
स्तद्राज्यं तु श्रीवीर० सप्ततिवर्षशतचतुष्टये ४७० संजातं । तानि वर्षाणि  
चैवम्—

जं रयणिं कालगत्रो, अरिहा तित्थं करो महावीरो ।

20

तं रयणिं अवणिवई, अहिसित्तो पालत्रो राया ॥१॥

सट्टी पालयररणो६०, पणवरणसयं तु होइ नंदाणं १५५॥

अट्टसयं मुरियाणं १०८, तीस च्चित्र पूसमित्तस्स ३० ॥ २ ॥

वलमित्त-भागुमित्तां, सट्टी ६० वरिसाणि चत्त नहवाणे ४० ॥

तह गद्दभिल्लरज्जं, तेरस १३ वरिस सगस्स चउ (वरिसा) ४ ॥ ३ ॥छ्छ् 25

११-इक्कारसोत्ति, श्रीइन्द्रदिन्नसूरिपट्टे एकादशः श्रीदिन्नसूरिः ॥छ्छ्॥

१२-वारसमोत्ति, श्रीदिन्नसूरिपट्टे द्वादशमः श्रीसीहगिरिः ॥छ्छ्॥

१३- तेरसमोत्ति, श्रीसीहगिरिपट्टे त्रयोदश श्रीवञ्जस्वामी । यो वा-  
 ल्यादपि जातिस्मृतिभाग्, नभोगमनविद्यया सघरज्ञाकृत्, दक्षिणस्या  
 वौद्धराज्ये जिनेद्रपूजानिमित्त पुष्पाद्यानयनेन प्रवचनप्रभांवनाकृत् देवा-  
 भिवदितो दशपूर्वविदामपञ्चमो वञ्जगाखोत्पत्तिमूल ॥ तथा स भंगधान्  
 पण्यवत्यधिकचतु शत४६६वर्षाते जात सन् अष्टौ ८ वर्षाणि गृहे, 5  
 चतुश्चत्वारिंशत् ४४ वर्षाणि व्रते, पट्त्रिंशन्३६वर्षाणि युगप्र० सर्वायुर-  
 ट्टाशीति८८वर्षाणि परिपाल्य, श्री वीरात् चतुरशीत्यधिकपचशत५८४  
 वर्षान्ते स्वर्गभाक् ॥ श्रीवञ्जस्वामिनो दशपूर्व-चतुर्यसहस्रनन-सस्थानाना व्यु-  
 च्छेद ।

चतुष्टुलसमुत्पत्ति—पितामहमह विभु

10

दशपूर्वविधिं वदे, वञ्जस्वामिमुनीश्वर ॥१॥

अत्र श्रीआर्यसुहस्तिश्रीवञ्जस्वामिनोरंतराले १ श्रीगुणसुंदरसूरि,  
 २ श्रीकालिकाचार्य ३ श्रीस्कन्दियाचार्य ४ श्रीरेवतीमित्रसूरि ५ श्रीधर्मसूरि  
 ६ श्रीभद्रगुप्ताचार्य ७ श्रीगुप्ताचार्यश्चेति क्रमेण युगप्रधानसप्तक वभूव ।  
 तत्र श्रीवीरात् त्रयस्त्रिंशदधिकपचशत५३३वर्षे श्रीआर्यरक्षितसूरिणा श्रीभद्र- 15  
 गुप्ताचार्यो निर्यामित स्वर्गभागिति पट्टावल्या नश्यते । पर दुष्पमासघस्तघयत्र-  
 कानुसारेण चतुश्चत्वारिंशदधिकपचशत५४४वर्षातिक्रमे श्रीआर्यरक्षित-  
 सूरिणा दीक्षा विज्ञायते तथा चोक्तसवत्सरे निर्यापणं न सभवतीत्येतद्बहुश्रुत  
 गम्य ॥

तथा 5४४चत्वारिंशदधिकपचशतवर्षाते ५४८ त्रिराशिकजित् श्रीगुप्त- 20  
 सूरि स्वर्गभाक् ॥ तथा श्रीवीरात् सणदपचशत५२५वर्षे श्रीशत्रुजयोच्छेद  
 समत्यधिकपचशत५७०वर्षे जावङ्ग्युद्धार इति । ५॥

सिरिवज्जमेणसूरी, १४, चाउदपमो चदसूरि पचदसो १५ ॥

सामतभद्रसूरी, सालसमो १६ रण्यगासरई १६ ॥ ६

१४ - तत्पट्टे श्रीवञ्जसेन ॥ १५ - तत्पट्टे श्रीचद्रसूरि ॥

१६ - तत्पट्टे श्रीसामतभद्रसूरि ( वनवासी ) ॥

25



व्याख्या—१४ सिरिवज्जति, श्रीवज्रस्वामिपट्टे चतुर्दशः श्रीवज्रसेनसूरिः॥  
 स'च' दुर्भित्ते श्री वज्रस्वामिवचसा सोपारके गत्वा जिनदत्तगृहे ईश्वरीनाम्न्या  
 तद्धार्यया लक्षपाकभोज्ये विषनिक्षेपविधानचिंतनश्रावणे सति प्रातःसुकालो  
 भावीत्युक्त्या (क्त्वा) विषं निवार्य, १ नागेंद्र २ चंद्र ३ निर्वृति ४ विद्याधरा-  
 ख्यान् चतुरः सकुटुंबानिभ्यपुत्रान् प्रब्राजितवान् । तेभ्यश्च स्वस्वनामांकितानि ५  
 चत्वारि कुलानि संजातानीति ॥ स च श्रीवज्रसेनो नव ६ वर्षाणिगृहे, षोडशा  
 धिकशत११६व्रते त्रीणि ३ वर्षाण्युग० सर्वायुः साष्टाविंशतिशतं १२८  
 परिपाल्य श्रीवीरात् विंशत्यधिकषट्शत६२०वर्षति स्वर्गभाक् ॥

अत्र श्रीवज्रस्वामिश्रीवज्रसेनयोरंतरालकाले श्रीमदार्यरक्षितसूरिः  
 श्रीदुर्बलिकापुष्पश्चेति क्रमेण युगप्रधानद्वयं संजातं ॥ तत्र श्रीमदार्यरक्षितसूरिः 10  
 सप्तनवत्यधिकपंचशत ५६७ वर्षति स्वर्गभागिति पट्टावल्यादौ दृश्यते । परमा-  
 वश्यकवृत्यादौ श्रीमदार्यरक्षितसूरीणां स्वर्गगमनानंतरं चतुरशीत्यधिकपंच-  
 शत५८४वर्षान्ते सप्तमनिह्वोत्पत्तिरुक्तास्ति । तेनैतद्बहुश्रुतगम्यमिति ॥  
 नवाऽधिक षट्शत ६०६ वर्षान्ते दिगंवरोत्पत्तिः ॥

१५—चंद्रसूरिति, श्रीवज्रसेनपट्टे पंचदशः श्रीचंद्रसूरिः ॥ तस्माच्चन्द्रगच्छ  
 इति तृतीयं नाम प्रादुर्भूतं । तस्माच्च क्रमेणाऽनेकगणहेतवोऽनेके सूरयो  
 बभूवांसः ॥

१६—सामन्तभद्विति, श्रीचंद्रसूरिपट्टे षोडशः श्रीसामंतभद्रसूरिः ॥ स च  
 पूर्वगतश्रुतविशारदो वैराग्यनिधिर्निममतया देवकुलवनादिष्वऽप्यऽवस्थानात्  
 लोके वनवासीत्युक्तस्तस्माच्चतुर्थं नाम वनवासीति प्रादुर्भूतं ॥ छ ॥६॥ 20

सत्तरस बुद्धदेवो १७, सूरी पञ्जोअणो अठारसमो १८ ॥

एगुणवीसइ इमो सूरी सिरिमाणदेवगुरू १६ ॥७॥

१७—तत्पट्टे श्रीवृद्धदेवसूरिः ॥ १८—तत्पट्टे श्रीप्रद्योतनसूरिः ।

१६—तत्पट्टे श्रीमानदेवसूरिः ॥

व्याख्या—१७ सत्तरत्ति, श्रीसामतभद्रसूरिपट्टे सप्तदश श्रीवृद्धदेवसूरि ।  
वृद्धो देवसूरिरिति ख्यात । श्री वीरात् पचनवत्यधिकपचशत५६५वर्षा-  
तिक्रमे कोरटके नाहडमत्रिनिर्मापितप्रासादे प्रतिष्ठाकृत् ॥

श्रीजज्जगसूरिणा च सप्तत्यधिकपट्शतवर्षे ६७० सत्यपुरे नाहडनिर्मित-  
प्रसादे श्रीमहावीर प्रतिष्ठित ॥ 5

१८—सुरिपञ्चोत्तरत्ति, श्रीवृद्धदेवसूरिपट्टे ऽष्टादश श्रीप्रद्योतनसूरि ॥

१९—एगूणत्ति, श्रीप्रद्योतनसूरिपट्टे एकोनविंशतितम श्रीमानदेव  
सूरि ॥ सूरिपदस्थापनाऽवसरे यत्क प्रयोरुपरि सरस्वतीलक्ष्म्यौ साक्षाद्विद्य  
चरित्रादस्यभ्रशो भावीति विचारण्या विपण्णचित्त गुरु विज्ञाय येन भक्तकु-  
लभिन्ना सर्वाश्च विकृतयस्त्यक्ता ॥ तत्तपमा नडुलपुरे १-पद्मा २-जया 10  
३-विजया ४-अपराजिताऽभिधानाभि देवीभि पर्युपासमान दृष्ट्वा कथ  
नारीभि परिकरितोऽय सूरिरिति शकापरायण कश्चित् मुग्धस्ताभिरेव  
शिद्धित इति॥७॥

सिरिमाणतुगसूरी २०, वीसइमो एगवीस सिरिवीरो २१ ॥

वावीसो जयदेवो २२, देवाणदो य तेवीसो २३ ॥ ८ ॥ 15

२०—तत्पट्टे श्रीमानतुगसूरि ॥ २१—तत्पट्टे श्रीवीरसूरि ॥

२२—तत्पट्टे श्रीजयदेवसूरिः ॥ २३—तत्पट्टे श्रीदेवानदसूरिः ॥

व्याख्या—२० सिरिमाणतु गत्ति, श्रीमानदेवसूरिपट्टे विंशतितम  
श्रीमानतु गसूरि ॥ येन भक्तामरस्तवन कृत्वा वाण-मयूरपडितविद्या-  
चमत्कृतोऽपि क्षितिपति प्रत्तिवोधित । भयहरस्तवनकरणेन च नागराजो 20  
पृशीकृत । भक्तिभरेत्यादि स्तवनानि च कृतानि ॥ श्रीप्रभावकचरित्रे प्रथम  
श्रीमानतु गचरित्रमुक्त, पश्चाच्च श्रीदेवसूरिशिष्यश्रीप्रद्योतनसूरिशिष्य-  
श्रीमानदेवसूरिप्रवधा चका । पर तत्र नाऽऽशका यतस्तत्राऽन्येपि प्रवधा  
व्यस्ततयोक्ता दृष्यते ॥

२१—एगवीसति, श्रीमानतुंगसूरिपट्टे एकविंशतितमः श्रीवीरसूरिः ॥

स च श्रीवीरात् सप्ततिसप्तशत७७०वर्षे, विक्रमतः त्रिशती३००वर्षे  
नागपुरे श्रीनमिप्रतिष्ठाकृत् । यदुक्तम्—

नागपुरे नमिभवन—प्रतिष्ठया महितपाणिशौभाग्यः ॥

अभवद्वीराचार्य—स्त्रिभिः शतैः साधिके राज्ञः ॥ १ ॥ 5

२२—बावीसति, श्रीवीरसूरिपट्टे द्वाविंशतितमः श्रीजयदेवसूरिः ॥ ३ ॥

२३—देवाणंदोत्ति, श्रीजयदेवसूरिपट्टे त्रयोविंशतितमः श्रीदेवानंद-

सूरिः ॥ अत्रांतरे श्रीवीरात् पंचचत्वारिंशदधिकाष्टशत८४५वर्षातिक्रमे

वलभीभंगः ॥ द्वयशीत्यधिकाष्टशत८२वर्षातिक्रमे चैत्यस्थीतिः ॥ षड-

शीत्यधिकाष्टशत८८वर्षातिक्रमे ब्रह्मद्वीपिकाः ॥ ८ ॥ 10

॥ चउवीसो सिरिविक्रम २४, नरसिंहो पंचवीस २५ छवीसो ॥

सूरीसमूह २६ सत्ता—वीसो सिरिमाणदेवगुरू २७ ॥ ९ ॥

२४—तत्पट्टे श्रीविक्रमसूरिः ॥ २५—तत्पट्टे श्रीनरसिंहसूरिः ॥

२६—तत्पट्टे श्रीसमुद्रसूरिः ॥ २७—तत्पट्टे श्रीमानदेवसूरिः ॥

व्याख्या—२४ चउवीसोत्ति, श्रीदेवानंदसूरिपट्टे चतुर्विंशतितमः 15

श्रीविक्रमसूरिः ॥

२५—नरसिंहोत्ति, श्रीविक्रमसूरिपट्टे पंचविंशतितमः श्रीनरसिंह-

सूरिः ॥ यतः—नरसिंहसूरिरासीदतोखिलग्रंथपारगो येन ॥

यत्नो नरसिंहपुरे, मांसरतिं त्याजितः स्वगिरा ॥ १ ॥

२६—छवीसोत्ति, श्रीनरसिंहसूरिपट्टे षड्विंशतितमः श्रीसमुद्र-

सूरिः ॥

खोमाणराजकुलजोपि समुद्रसूरि—गच्छं शशास किल यः प्रवणप्रमाणी ॥

जित्वा तदा क्षपणकान् स्ववशं वितेने, नागह्वदे भुजगनाथनमस्यतीर्थ ॥ १ ॥

२७—सत्तावीसोत्ति, श्रीसमुद्रसूरिपट्टे सप्तविंशतितम श्रीमानदेव-  
सूरि ॥ विद्यासमुद्रहरिभद्रमुनीद्रमित्र, सूरिर्वभूव पुनरेवहि मानदेव ॥  
माद्यात्प्रपातमपि योऽनघसूरिमत्र, लेभेऽविकामुखगिरा तपसो-  
ज्जयते ॥ १ ॥

श्रीवीरात् वर्षसहस्रे १००० गते सत्यमित्रे पूर्वव्यवच्छेद ॥ 5

अत्र च श्री १ नागहस्ती २ रेवतीमित्र ३ ब्रह्मद्वीपो ४ नागार्जुनो ५ भूत-  
दिन्न ६ श्रीकालकसूरिशचेति पट्ट युगप्रधाना यथाक्रम श्रीवञ्चसेनसत्यमित्र-  
योरतरालकालवर्तिनो बोध्या ॥ एषु च युगप्रधनशकाभिचदितप्रथमानु-  
योगसूत्रणासूत्रधारकल्पश्रीकालिकाचार्ये श्रीवीरात् त्रिनन्त्यधिकनवशत६६३  
वर्षातिक्रमे पचमीतश्चतुर्ध्या पर्युपणोपर्वाऽऽनीतमिति ॥ श्रीवीरात् पंचपचा-10  
शदधिकसहस्र १०५५वर्षे, वि० पचाशीत्यधिकपचशत५८५वर्षे याकिनी-  
सनु श्रीहरिभद्रसूरि स्वर्गभाक् ॥ पचदशाधिकैकादशशत १११५वर्षे  
श्रीजिनभद्रगणिर्युगप्रधान ॥ अय च जिनभद्रियध्यानशतकादेर्हरिभद्रसूरि-  
भिवृत्तिकरणाद्भिन्न इति पट्टावल्या । पर तस्य चतुरुत्तरशतवर्षायुष्कत्वेन  
श्रीहरिभद्रसूरिकालेपि सभवात्ताऽऽशकावकाश इति ॥ 15

॥ अट्टावीसो विबुहो २८, एगुणतीसे गुरू जयाणदो २९ ॥

तीसो रविप्पहो ३० इग-तीसो जसदेव सूरिवरो ३१ ॥ १० ॥

२८—तत्पट्टे श्रीविबुधप्रभसूरिः ॥ २९—तत्पट्टे श्रीजयानदसूरिः ॥

३०—तत्पट्टे श्री रविप्रभसूरि ॥ ३१—तत्पट्टे श्रीयज्ञोदेवसूरिः ॥

व्याख्या - २८ अट्टावीसोत्ति, श्रीमानदेवसूरिपट्टेऽष्टावीशति- २८ 20

तम. श्रीविबुधप्रभसूरि ॥

२९—एगुणतीसोत्ति, श्रीविबुधप्रभसूरिपट्टे एकोनत्रिंशत्तम जयानंद  
सूरि ॥

३०—तीसोरविति, श्रीजयानदसूरिपट्टे त्रिंशत्तम श्रीरविप्रभसूरि ॥

स च श्रीवीरात् सप्तत्यधिकैकादशशत ११७०वर्षे, वि० सप्तशत ७००वर्षे 25

नडुलपुरे श्रीनेमिनाथप्रासादप्रतिष्ठाकृत् । श्रीवी० नवत्यधिकैकादशशत ११६० वर्षे श्रीउमास्वातिर्युगप्रधानः ॥

३१—इगतीसोत्ति, श्रीरविप्रभसूरिपट्टे एकत्रिंशत्तमःश्रीयशोदेवसूरिः॥

अत्र च श्रीवीरात् द्विसप्तत्यधिकद्वादशशत१२७२वर्षे, वि० द्व्युत्तराष्टशत-  
वर्षे ८०२ अणहिल्लपुरपत्तनस्थापना वंनराजेन कृता ॥ श्रीवीर० सप्तत्यधिक<sup>१</sup> ५  
द्वादशशत१२७०वर्षे, वि० अष्टशत८००वर्षे भाद्रशुक्लतृतीयायां वप्पभट्टे-  
जन्म, येनामराजा प्रतिवोधितः । स च श्रीवी० पंचपठ्यधिकत्रयोदशशत-  
१३६५वर्षे वि० पंचनवत्यधिकाष्टशत८६५वर्षे भाद्रशुक्लपष्ठ्यां स्वर्गभाक्  
॥१०॥

॥ वत्तीसो पजुण्णो ३२, तेतीसो माणदेव जुगपवरो ३३ ॥ 10

चउतीस विमलचंदो ३४, पणतीसूज्जोअणो सूरी ३५ ॥११॥

३२—तत्पट्टे श्रीप्रद्युम्नसूरिः ३३—तत्पट्टे श्रीमानदेवसूरिः ॥

३४—तत्पट्टे श्रीविमलचन्द्रसूरिः ३५—तत्पट्टेश्री उद्योतनसूरिः ॥

व्याख्या—३२ वत्तीसोत्ति, श्रीयशोदेवसूरिपट्टे द्वात्रिंशत्तमःश्रीप्रद्युम्न  
सूरिः ॥ 15

३३—तेत्तीसोत्ति, श्रीप्रद्युम्नसूरिपट्टे त्रयस्त्रिंशत्तमः श्रीमानदेवसूरिः॥

उपधानवाच्यग्रंथविधाता ।

३४—चउतीसत्ति, श्रीमानदेवसूरिपट्टे चतुस्त्रिंशत्तमः श्रीविमलचन्द्र-  
सूरिः ॥ ×

× मधुरातः समागतैः श्रीविमलचन्द्रगणिभिः श्रीवीरसूरिः दीक्षितः अंग-  
विधया भूषितश्च पश्चात्तैः विमलगिरौ अनशनं प्रोपेदे ॥ वीरसूरिस्वर्गमनं तु विक्रम-  
स्य ९९१ वर्षे । इतिप्रभावकचरित्रे वीरसूरिप्रबंधे ।

ततः प्रसिद्धोऽजनि चित्रकूटे, सहेमासिद्धिर्विमलेन्दुसूरिः ।

अपूजयद्यं विपमेपि वादे, सद्योजिते गोपगिरेनरेन्द्रः ॥४४॥

इति गुर्वावल्याम्, क्रियारसनसमुच्चयप्रशस्त्यां च ।

३५—पण्ठीमोक्षि, श्रीविमलचन्द्रसूरिपट्टे पत्रिंशत्तम श्रीउद्योतन  
सूरि ॥ स चाऽर्जुनाचलयात्रार्थं पूवावनित समागत । टेलिग्रामस्य सीम्नि पृथो-  
र्वटस्यद्यायायामुपविष्टो निजपट्टोदयहेतु भय्यमुहूर्तमवगम्य श्रीवीरात् चतुष्प-  
ठ्यधिकचतुर्दशतः १४६४ वर्षे, वि० चतुनवत्यधिकनवशत ६६४ वर्षे निजपट्टे  
श्रीसर्वदेवसूरिप्रभृतानष्टौ सूगेन् स्थापितवान् । केचित्तु सर्वदेवसूरिमेकमेवेति 5  
वदति ॥ वटस्याऽथ सूरिपदकरणात् वटगच्छ इति पचमनाम लोकप्रसिद्ध ।  
प्रधानशिष्यसतत्या ज्ञानादिगुरौ प्रधानचरितैश्च बृहत्वाद्बृहद्गच्छ  
इत्यपि ॥११॥

॥ सिरि सव्वदेवसूरी, छत्तीसो ३६ देवसूरि सगतीसो ३७ ॥

अडतीसइमो सूरी पुणोवि सिरिसव्वदेवगुरू ३८ ॥१२॥

10

३६-तत्पट्टे श्रीसर्वदेवसूरि ३७ तत्पट्टे श्रीदेवसूरिः ॥

३८-तत्पट्टे श्रीसर्वदेवसूरिः ॥

व्याख्या—३६ सिरिमव्वत्ति, श्रीउद्योतनसूरिपट्टे पट्टिंशत्तम  
श्रीसर्वदेवसूरि ॥ केचित् श्रीप्रद्युम्नसूरिमुपानमप्रथमप्रणेतृश्रीमानदेवसूरिं च  
पट्टधरतया न मन्यते तदभिप्रायेण चतुस्त्रिंशत्तम इति ॥ स च गौतम- 15  
वत् सुशिष्यलक्षिणान् । वि० दशाधिकदशशत १०१० वर्षे रामसैन्यपुरे श्री  
चद्रप्रभप्रतिष्ठाकृत् । चद्रावत्या निर्मापिनोत्तु गप्रासाद कुकुरणमत्रिण स्वगिरा  
प्रतिबोध्य प्रात्राजयत् ॥ यदुक्त—

चरित्रशुद्धि विविधजिनागमा—द्विधाय भव्यानमित प्रबोधयन् ॥

चकार जैनेश्वरशासनोन्नतिं, य शिष्यलब्ध्याभिनवो नु गौतम ॥१॥ 20

नृपादशांश्रे शरदां सहस्रे १०१०, यो रामसैन्याहपुरे चकार ॥

नाभेयचैत्येऽष्टमतीर्थराज—विप्रप्रतिष्ठा विधिपत् सदर्थ्य ॥२॥

चद्राप्रतीभूपतिनेत्रकल्प, श्रीकुकुरण मत्रिणमुच्चरुद्धि ॥

निर्मापितोत्तु गविशालचैत्य, योऽदीक्षयत् बुध्वगिरा प्रबोध्य ॥३॥

तथा वि० एकोनत्रिंशदधिकदशशत१०२६वर्षे धनपालेन देशीनाम-  
माला कृता । वि० पण्णवत्यधिकसहस्र१०६६वर्षे श्रीउत्तराध्ययनटीकाकृत  
थिरापद्रगच्छीयवादिवेतालश्रीशांतिसूरिः स्वर्गभाक् ॥

३७—देवसूरिति, श्रीसर्वदेवसूरिपट्टे सप्तत्रिंशत्तमः श्रीदेवसूरिः ॥  
रूपश्रीरिति भूपप्रदत्तविरुद्धधारी ॥ 5

३८—अडतीसइमोत्ति, श्रीदेवसूरिपट्टे ऽष्टत्रिंशत्तमः पुनः श्रीसर्वदेव  
सूरिः यो यशोभद्रनेमिचंद्रादीनष्टौ सूरीन् कृतवान् ॥छ॥१२॥

॥ एगुणचालीसइमो, जसभदो नेमिचंद्रगुरुवंधू ३६ ॥

चालीसो मुणिचंदो ४०, एगुआलीसो अजिअदेवो ४१ ॥ १३ ॥

३९—तत्पट्टे श्रीयशोभद्रसूरि-श्रीनेमिचंद्रसूरी ॥ 10

४०—तत्पट्टे श्रीमुनिचंद्रसूरिः ॥ ४१—तत्पट्टे श्रीअजितदेवसूरिः ॥

व्याख्या—३६ एगुणत्ति, श्रीसर्वदेवसूरिपट्टे एकोनचत्वारिंशत्तमौ  
श्रीयशोभद्र-नेमिचंद्रौ द्वौ सूरी गुरुभ्रातरौ ॥ वि० पंचत्रिंशदधिकैकादशशत  
११३५वर्षे, केचित् एकोनचत्वारिंशदधिकैकादशशत११३६वर्षे नवांगवृत्ति  
कृत श्रीअभयदेवसूरिः स्वर्गभाक् ॥ तथा कूर्ब पुरगच्छीयचैत्यवासीजिनेश्वर15  
सूरिशिष्यो जिनदह्लभश्चित्रकूटे षट्कल्याणकप्ररूपणया निजमतं प्ररूपि-  
तवान् ॥

४०—चालीसोत्ति, श्रीयशोभद्रसूरि-श्रीनेमिचंद्रसूरिपट्टे चत्वारिंश-  
त्तमः श्रीमुनिचंद्रसूरिः ॥ स भगवान् यावज्जीवरोकसौवीरपायी । प्रत्याख्यात  
सर्वविकृतिकः । श्रीहरिभद्रसूरिकृताऽनेकांतजयपताकाद्यनेकग्रंथपंजिकोप- 20  
देशपदवृत्त्यादिदिधानेन तार्किकशिरोमणितया ख्यातिभाक् ॥

यदुक्तम्—सौवीरपायीति तदेकवारि-पाजाद्विधिज्ञो विरुदं बभार ॥

जिनागमांभोनिधिघौतबुद्धिर्यः शुध्धचारित्रिषु लब्धरेखः ॥१॥

सविज्ञमौलिर्मिथुतीरचसर्वा—स्तत्याज देहेप्यमम सदा य ॥

विद्वद्विनेयाभिवृत प्रभाव—प्रभागुणौघै किल गौतमाभ. ॥ २ ॥

हरिभद्रसूरिरचिता , श्रीमदनेकातजयपताकाद्या. ॥

प्रथनगा विबुधानामप्यधुना दुर्गमा येऽत्र ॥ ३ ॥

सत्पजिकादिपद्या—विरचनाया भगवता कृता येन ॥

5

मदधियामपि सुगमा—स्ते सर्वे विश्वहितबुध्या ॥ ४ ॥

अष्टहयेश११७नमिताब्दे, विक्रमकालादिव गतो भगवान् ॥

श्रीमुनिचद्रमुनीन्द्रो, ददातु भद्राणि सघाय ॥ ५ ॥

अनेन चानदसूरिप्रभृतयोऽनेके निजवाधवा प्रम्राज्य सूरीकृता ॥

अथ च श्रीमुनिचद्रसूरि श्रीनेमिचद्रसूरिगुरुभ्रातृश्रीविनयचद्रोपाध्यायस्य 10

शिष्य श्रीनेमिचद्रसूरिभिरेव गणनायकतया स्थापित ॥ यदुक्त—

गुरुबधुविनयचद्राध्यापकशिष्य स नेमिचद्रगुरु ॥

य गणनाथमकार्पात्, स जयति मुनिचद्रसूरिरिति ॥ १ ॥

अत्र च एकोनपञ्चदशिकादशशत११५६वर्षे पौर्णिमीयकमतोत्पत्तिः

तत्प्रतिबोधाग च मुनिचद्रसूरिभि पाक्षिकसप्ततिका कृतेति ॥ 15

तथा श्रीमुनिचद्रसूरिशिष्या श्रीअजितदेवसूरि—वादिश्रीदेवसूरि-

प्रभृतय ॥ तत्र वादिश्रीदेवसूरिभि श्रीमदणहिल्लपुरपत्तने जयसिंहदेव-

राजस्याऽनेकविद्वज्जनकलिताया सभाया चतुरशीतिवादलब्धजयशस

दिगवरचक्रवर्तिन वादलिप्सु कुमुदचद्राचार्यं वादे निर्जित्य श्रीपत्तने दिगवर-

प्रवेशो निवारितोऽद्यापि प्रतीत ॥ तथा वि० चतुरधिकद्वादशशत१२०४ 20

वर्षे फलवर्धिप्राप्ते चैत्यत्रिंबयो प्रतिष्ठा कृता । तत्तीर्थं तु सप्रत्यपि प्रसिद्ध ॥

तथा आरासणे च श्रीनेमिनाथप्रतिष्ठा कृता ॥ चतुरशीतिसहस्र५४०००

प्रमाण स्याद्वादरत्नाकरनामा प्रमाणप्रथ कृत ॥ येभ्यश्च यन्नाम्नैव

ख्यातिमत् चतुर्विंशतिसूरिशाय बभूव ॥ एषा च वि० चतुर्विंशदधिके

एकादशशत११३४वर्षे जन्म, द्विपचाशदधिके११५२ व्रीक्षा, चतु सप्त 25

त्यधिके११७४ सूरिपद, षड्विंशत्यधिकद्वादशशत१२२६वर्षे श्रावणवदि-

सप्तम्या ७ गुरौ स्वर्ग ॥



तत्समये श्रीदेवचंद्रसूरिशिष्यस्त्रिकोटिश्रंथकर्ता कलिकालसर्वज्ञ-  
ख्यातिमान् श्रीहेमचंद्रसूरिः तस्य वि० पंचचत्वारिंशदधिके एकादशशत-  
११४५वर्षे कार्तिकशुदिपूर्णिमायां १५ जन्म, पंचाशदधिके ११५० व्रतं,  
षड्षष्ठ्यधिके ११६६ सूरिपदं, एकोनित्रिंशदधिकद्वादशशत १२२९वर्षे स्वर्गः ॥

४१—एगुआलीसोत्ति, श्रीसुनिचंद्रसूरिपट्टे एकचत्वारिंशत्तमः श्री-  
अजितदेवसूरिः ॥ तत्समये वि० चतुरधिकद्वादशशत १२०४वर्षे खरस्तरो-  
त्पत्तिः ॥ × तथा वि० त्रयोदशाधिके द्वादशशत १२१३वर्षे आंचलिकमतो-  
त्पत्तिः ॥ वि० पट्त्रिंशदधिके १२३६ सार्धयौर्णिमीयकोत्पत्तिः ॥ वि०  
पचाशदधिके १२५० आगमिकमतोत्पत्तिः ॥ श्रीवीरात् द्विनवत्यधिकपोडश-  
त १६६२वर्षे बाहडोधधारः + ॥ छ ॥ १३ ॥ 10

॥ बायालु विजयसीहो ४२, तेआला हुंति एगगुरुभाया ॥

सोमप्पह-मणिरयणा ४३, चउआलीसो अ जगचंदो ॥४४॥ १४ ॥

४२-तत्पट्टे श्रीविजयसिंहसूरिः ॥ ४३-तत्पट्टे श्रीसोमप्रभसूरिः

श्रीमणिरत्नसूरिश्च ॥ ४४—तत्पट्टे श्रीजगच्चन्द्रसूरिः ॥

व्याख्या—४२-बायालुत्ति, श्रीअजितदेवसूरिपट्टे द्विचत्वारिंशत्तमः ॥ 15

श्रीविजयसिंहसूरिः ॥ विवेकमंजरीशुधिवकृत् ॥

यस्य प्रथमः शिष्यः, शतार्थितया विख्यातः ॥

श्रीसोमप्रभसूरिः, द्वितीयस्तु मणिरत्नसूरिः ॥ १ ॥

४३—तेआलत्ति, श्रीविजयसिंहसूरिपट्टे त्रयश्चत्वारिंशत्तमौ श्री  
सोमप्रभसूरि—श्रीमणिरत्नसूरी ॥ 20

× वि० सं० १२०४वर्षे पत्तने पौषशालि-वनवासिनोविवादे कवलांगच्छः  
खरतरंगच्छश्चेति नामनी अभूताम् ।

इति पूरणचंदजी नहार संग्रहित पट्टावल्यां

( श्रीजैन श्वे . को० हे० पु० १४ अं० ४, ५, ६. पत्र १६३ मुद्रितयां )

† श्रीवीरात् १६८१ वर्षे इति प्रवधचित्तामणौ । श्रीवीरात् १६८३ वर्षे इति

पं० नीरविजयगणिविरचित्तायां पूजायां ॥

४४-चउत्रालीसोत्ति, श्री सोमप्रभ-श्रीमणिरत्नसूरिपट्टे चतुरचत्वारिंशत्तम ४४ श्री जगच्चद्रसूरि ॥

य क्रियाशिथिलमुनिसमुदाय ज्ञात्वा गुर्वाज्ञया वैराग्यरसैकसमुद्र  
त्रैत्रगच्छीयश्रीदेवभद्रोपाध्याय सहायमादाय क्रियायामौग्यात् हीरलाजग-  
च्चद्रसूरिरितिख्यातिभाक् वभूव । केचित्तु आघाटपुरे द्वात्रिंशता दिगवराचार्ये १  
सह विवाद कुर्वन् हीरकवदभेद्यो जात इति राज्ञा हीरलाजगच्चद्रसूरिरिति  
भणित इत्याहु ॥ तथा यावज्जीवमाचामाम्लतपोऽभिप्रहीतद्वादशवर्षेस्तपा  
विरुदमाप्तवान् ॥ तत पष्ठ नाम वि० पचाशीत्यधिकद्वादशशत१२८५वर्षे  
तपा इति प्रसिध्ध ॥

तथा च १-निर्मथ २-कौटिक ३-चद्र ४-वनवासि ५-वटगच्छे 10  
त्यपरनामकवृहद्गच्छ ६-तपा इति पण्णा नाम्ना पृवृत्तिहेतव आचार्या  
क्रमेण १-श्रीसुधर्मस्वामि २-श्रीसुस्थित ३-श्रीचद्र ४-श्रीसामतभद्र ५-श्री  
सर्वदेव ६-श्रीजगच्चद्रनामान. पट् सूरय ॥४॥१४॥

॥ देविंदो पणयालो ४५, छायालीसो अ घम्मघोसगुरू ॥ ४६ ॥

सोमपह सगचतो, ४७ अडचतो सोमतिलगगुरू ४८॥१५॥ 15

४५-तत्पट्टे श्रीदेवेन्द्रसूरि. ॥ ४६-तत्पट्टे श्रीधर्मघोपसूरिः

४७-तत्पट्टे श्रीसोमप्रभसूरि. ॥ ४८-तत्पट्टे श्रीसोमतिलकसूरि. ॥

व्याख्या-४५-देविंदोत्ति, श्रीजगच्चद्रसूरिपट्टे पचचत्वारिंशत्तम

श्रीदेवेन्द्रसूरि ॥ स च मालनके उज्जयिन्या जिनभद्रनाम्नो महेभ्यस्य वीरधव-  
लनाम्नस्तत्सुतस्य पाणिप्रहणनिमित्त महोत्सवे जायमाने वीरधव- 20  
लकुमार प्रतिबोध्य, वि० द्वयुत्तरत्रयोदशशत१३०२वर्षे प्रात्राजयत् ॥ तदनु  
तद्भ्रातरमपि प्रत्राज्य चिरकाल मालनके एव प्रिहृतवान् । ततो गूर्जरधरिण्या  
श्रीदेवेन्द्रसूरय श्रीमन्भर्तार्थे समायाता ।

तत्र पूर्वे श्री विजयचद्रसूरय १-गीतार्याना पृवक् पृथक् चम्प्रपुट्टलि-  
फादान, २-नित्यपिकृन्त्यनुज्ञा, ३-चीनरत्नालनानुज्ञा, ४ फलशाकप्रहण, 25

५-साधुसाध्वीनां निर्विकृतिकप्रत्याख्याने निर्वृकृतिकग्रहणं, ६-आयकासना-  
नीताऽशनादिभोगानुज्ञा, ७-प्रत्यहं द्विविधप्रत्याख्यानं, ८-गृहस्थावर्जननिमित्तं  
प्रतिक्रमणकारणानुज्ञा, ९-संविभागिने तद्गृहे गीतार्थेन गंतव्यं, १०-लेपसं-  
निध्यभावः, ११-तत्कालेनोष्णोदकग्रहणं, इत्यादिना क्रियाशैथिल्यरुचीन्  
कतिचिन् मुनीन् स्वायत्तीकृत्य सदोपत्वात् श्रीजगच्चंद्रसूरिभिः परित्यक्ताया- 5  
मपि विशालायां पौषधशालायां लोकाग्रहात् द्वादशवर्षाणि स्थितवंतः । प्रब्र-  
ज्यादिककृत्यमि गुर्वाज्ञामंऽतरेणैव कृतवंतश्च ॥

श्रीविजयचंद्रसूरिव्यतिकरस्त्वेवं—

मंत्रिवस्तुपालगृहे विजयचंद्राख्यो लेख्यकर्मकृत् मंत्र्याऽऽसीन् ॥ क्व-  
चनाऽपराधे कारागारे प्रक्षिप्तः । श्रीदेवभद्रोपाध्यायैः प्रब्रज्याग्रहणप्रतिज्ञया 10  
विमोच्य प्रब्राजितः । स च सप्रज्ञो बहुश्रुतीभूतो मंत्रिवस्तुपालेन नाऽयं साभि-  
मानो सूरिपदयोग्य इत्येवं वार्यमाणैरपि श्रीजगच्चंद्रसूरिभिः श्रीदेवभद्रोपा-  
ध्यायानुराधात् श्रीदेवेन्द्रसूरीणां सहायो भविष्यतीति विचिंत्य च सूरीकृतः ॥  
बहुकालं च श्रीदेवेन्द्रसूरिपु विनयवानेवासीत् ।

15

मालवदेशात्समागतानां श्रीदेवेन्द्रसूरीणां तदा वंदनार्थमपि नाऽऽयातः  
गुरुभिर्ज्ञापितं कथमेकस्यां वसतौ द्वादशवर्षाणि स्थितमिति श्रुत्वा “निर्मम-  
निरहंकारा ” इत्यादि प्रत्युत्तरं प्रेषितवान् ॥ संविज्ञास्तु न तं प्रत्याश्रिताः ।  
श्रीदेवेन्द्रसूरियस्तु पूर्वमनेकसंविज्ञसाधुपरिकरिता ‘उपाश्रय’ एव स्थितवंतः ॥  
लोकैश्च वृद्धशालायां स्थितत्वात् श्रीविजयचंद्रसमुदायस्य “ वृद्धशालिक ”  
इत्युक्तं । तद्दशात् श्रीदेवेन्द्रसूरिनिश्रितसमुदायस्य “ लघुशालिक ” इति ख्यातिः ॥

20

स्तंभतीर्थे च चतुष्पथस्थितकुमारपालविहारे धर्मदेशनायामष्टादशशत  
१८०० मुखवस्त्रिकाभिर्मंत्रिवस्तुपालः चतुर्वेदादिनिर्णयदातृत्वेन स्वसमयपरस-  
मयत्रिदां श्रादेवेन्द्रसूरीणां वंदनकदानेन बहुमानं चकार ॥ श्रीगुरवस्तु विजय-  
चंद्रमुपेक्ष्य विहरमाणाः क्रमेण पाल्हरणपुरे समायाताः । तत्र चानेकजनतान्विताः  
शीकरीयुक्तसुखासनगामिनश्चतुरशीतिरिभ्या धर्मश्रोतारः । प्रल्हादनविहारे च 25  
प्रत्यहं मूढकप्रमाणा अक्षताः, क्रयविक्रयादौ नियतांशग्रहणात् ॥ षोडशमण

प्रमाणानि पूगीकृतानि चायाति । प्रत्यह पचशतीवीसलप्रियाणां भोग ॥  
 एव व्यतिकरे सति श्रीसधेन निज्ञप्ता गुरव यदत्र गणाधिपतिस्थापनेन पूर्य-  
 तामस्मन्मनोरथ । गुरुभिस्तु तथाविधमौचित्य विचार्य प्रह्लादनविहारे वि०  
 त्रयोविंशत्यधिके त्रयोदशशते १३२३ वर्षे, क्वचिच्चतुरधिके १३०४ श्रीविद्यानद-  
 सूरिनाम्ना वीरधवलस्य सूरिपददान । तदनुजस्य च भीमसिंहस्य धर्मकीर्ति- 5  
 नाम्नोपाध्यायपदमपि तदानीमेव सभाव्यते ॥ सूरिपददानावसरे सौवर्णकपि-  
 शीर्षके प्रह्लादनविहारे मडपात् कुकुमवृष्टि ॥ सर्वोपि जनो महाविस्मय  
 प्राप्त । श्राद्धैश्च महानुत्सवश्चक्रे ॥ तैश्च श्रीविद्यानदसूरिभिर्विद्यानदाभिधं  
 व्याकरणं कृतं ॥ यदुक्तम्—

विद्यानदाभिधयेन कृतं व्याकरणं नवम् ॥

10

भाति सर्वोत्तमं खल्प-सूत्रं बह्वर्थसंग्रहं ॥१॥

पश्चात् श्रीविद्यानदसूरीन् धरित्र्यामाऽऽज्ञाप्य, पुनरपि श्रीगुरवो  
 मालवके विहृतवन्तः । तत्कृताश्च प्रथास्त्वेते—

२—श्राद्धदिनकृत्यसूत्र-वृत्ति, २—नव्यकर्मग्रथपचकसूत्र-वृत्ति,  
 २—मिध्यपंचाशिकासूत्र-वृत्ति, १—धर्मरत्नवृत्ति, २—(१) सुदर्शनचरित्र, 15  
 ३—त्रीणि भाष्यानि, “ सिरिउसहवध्वमाण ” प्रभृतिस्तवाद्यश्च । केचित्तु  
 श्रावकदिनकृत्यसूत्रमित्याहुः ॥ विक्रमात् सप्तविंशत्यधिकत्रयोदशशत १३२७-  
 वर्षे मालवक एव देवेन्द्रसूरय स्वर्गं जग्मुः ॥

दैत्रयोगात् विद्यापुरे श्रीविद्यानदसूरयोऽपि त्रयोदशदिनांतरिताः स्वर्ग-  
 भाजः । अतः पद्भिर्मासैः सगोत्रिसूरिणां श्रीविद्यानदसूरिवाक्यानां 20  
 श्रीधर्मकीर्त्युपाध्यायानां श्रीधर्मधोपसूरिरितिनाम्ना सूरिपदं दत्तं ॥

श्रीगुरुभ्यो विजयचन्द्रसूरिप्रथग्भवने क गुरु सेवेऽहमिति सशयानस्य  
 सौवर्णिकसमग्रामपूर्वजस्य निशि स्वप्ने देवतया श्रीदेवेन्द्रसूरिणामन्वयो भव्यो  
 भविष्यतीति तमेव सेत्रस्वेति ज्ञापितं ॥

श्रीगुरुणा स्वर्गंगमनं श्रुत्वा सधाधिपतिना भीमेन द्वादशवर्षाणि 25  
 भान्यं त्यक्तं ॥६॥

४६-छायालीसोत्ति, श्रीदेवेन्द्रसूरिपट्टे षट्चत्वारिंशत्तमः श्रीधर्मघोषसूरिः  
 येन मंडपाचले सा० पृथ्वीधरः पंचमव्रते लक्षप्रमाणं परिग्रहं नियमयन् ॥  
 ज्ञानातिशयात्तद्भंगमवगम्य प्रतिपेधितः । स च मंडपाचलाधिपस्य सर्वलोका-  
 भिनतं प्राधान्यं प्राप्तः, ततो धनेन धनदोपमो जातः ॥ पञ्चात्तेन चतुरशीदि-  
 ८४र्जिन प्रासादाः सप्त च ज्ञानकोशाः कारिताः । श्रीशत्रुंजये च एकविंश- 5  
 तिधटीप्रमाणसुवर्णव्ययेन रैमयः श्रीऋषभदेवप्रासादः कारितः ॥ केचिच्च तत्र  
 षट्पंचाशत्सुवर्णधटीव्ययेनेन्द्रमालायां ( लां यो ) परिहितवानिति वदन्ति ॥

तथा धरित्र्यां केनचित्साधर्मिकेण ब्रह्मचारिवेपदानावसरे महर्षिक-  
 त्वात् पृथ्वीधरस्यापि तद्वेषः प्राभृतीकृतः स च तमेव वेषसादाय ततःप्रभृति  
 द्वात्रिंशद्वर्षीयोऽपि ३२ ब्रह्मचार्यभूत् ॥ 10

तस्य च पुत्र सा० भांभणानाम्ना एक एवासीत् । येन श्रीशत्रुंजयोज्ज-  
 यंतगिर्योः शिखरे द्वादश१२योजनप्रमाणः सुवर्णरूप्यमय एक एव ध्वजः  
 समरोपितः ॥ कर्पूरकृतेराजासारंगदेवः, करयोजनं कारितः ॥

येन च मंडपाऽचले जीर्णटंकानां द्विसप्तत्या क्वचित् षट्त्रिंशता सह-  
 स्रैर्गुरुणां प्रवेशोत्सवश्चक्रे ॥ 15

देवपत्तने च शिष्याभ्यर्थनया मंत्रमयस्तुतिविधानतो येषां रत्नाकरस्तरंगै  
 रत्नढौकनं चकार । तथा तत्रैव ये स्वध्यानप्रभावात्प्रत्यक्षीभूतनवीनोत्पन्न  
 कपर्दियक्षेण वज्रस्वामिमहात्म्याच्छत्रुंजयात्रिंशकाशितं जीर्णकपर्दिराजं मि-  
 थ्यात्वमुत्सर्प्ययंतं प्रतिबोध्य श्रीजैनविंवाधिष्ठायकं व्यधुरिति ॥ एकदा काभि-  
 थ्विद् दुष्टस्त्रीभिः साधुनां विहारिता कर्मणोपेता वटका भूपीठे यैस्त्याजिताः 2  
 संतः प्रभाते पाषाणा अभवन् । तदनु चाभिमंत्र्याऽर्पितपट्टकासनास्ताः स्तंभि-  
 ताः सत्यः कृपया मुक्ता इति ॥ तथा विद्यापुरे पक्षांतरीयतथाविधस्त्रीभिर्गुरुणां  
 व्याख्यानरसे मात्सर्यात् स्वरभंगायकण्ठे केशगुच्छके कृते यैर्विज्ञातस्वरूपास्ता  
 प्राग्वत्स्तंभिताः संत्योऽतःपरं भवद्गणैर्न वयमुपद्रोष्याम इति वाग्दानपुरः-  
 सरं संघाग्रहान्मुक्ता इति ॥ 25

उज्जयिन्या च योगिभयात् माध्वस्थिते गुरव आगता योगिना साधव  
 प्रोक्ता अगागतै स्थिरै स्थेय ? साधुभिरुक्त स्थिता स्म किं करिष्यसि ? तेन  
 साधूना दन्ता दर्शिता, साधुभिस्तु कफोणिर्दर्शिता । साधुभिर्गत्वा गुरूणां  
 विद्मः ॥ तेन शालायामुन्दरवृन्द विकुर्वित । साधवो भीता गुरुभिर्घटमुखं  
 वसेणाऽऽद्या तथा जप्त यथा रटि कुर्वन् स योगी आगत्य पादयोर्लभ ॥ 5

क्वचनपुरे निश्यभिमत्रितद्वारदान, एरुदा अनभिमत्रितद्वारदाने  
 शाकिनीभि पट्टिरूपाटितास्ताभितास्ता वाग्दाने च मुक्ता ॥

यरेकदा सर्पदशे रात्रौ विपेणातरातगामूर्च्छामुपगतैरुपायविधुर सध  
 प्रत्यूचे । प्राचीनप्रतोल्या कस्यचित्पुमो मस्तके काण्डभारिकामध्ये विपापहा-  
 रिणी लता समेप्यति, सा च घृष्य दशे देया इत्येव प्रोक्ते मवेन च तथा विहिते 10  
 तथा प्रगुणीभूय तत प्रभृति यावज्जीव पडपि विकृतमस्त्यक्ता आहारस्तु तेषा  
 सदा युगधर्या एव ॥

तत्कृता अथास्त्वेव - सघाचारभाष्यवृत्ति, सुअधम्मेतिस्तव, काय-  
 स्थित-भवस्थितिस्तवौ, चतुर्विंशतिजिनस्तवा, चतुर्विंशति, प्रस्ताशर्मत्या-  
 दिस्तोत्र, देवैर्द्वैरनिश० इति श्लेषस्तोत्र, यूय यूया त्वमिति श्लेषस्तुतय, 15  
 जय वृषभेत्यादिस्तुत्याद्या ॥

तत्र जय वृषभेत्यादिस्तुतिकरणव्यतिकरस्त्वेव-एकेन मन्त्रिणाऽष्टयमक  
 काव्यमुक्त्वा प्रोचे, इत्गूणाव्यमधुना केनाऽपि कतु न शक्य । गुरुभिरुचेऽन-  
 स्तिर्नास्ति । तेनोक्त त कर्षिं दर्शयत । तैरुक्त ज्ञास्यते ॥ ततो जयवृषभस्तुतयो  
 अष्टयमका एकया निशा निष्पाद्य भित्तिलिखितादर्शिता । स-च चमत्कृत 20  
 प्रतिबोधितम् ॥ ते च वि० सप्तपचाशदधिकत्रयोदशशत १३५७ वर्षे दिवगता ॥

४७—सोमप्यहत्ति, श्रीधर्मघोषसूरिपट्टे सप्तचत्वारिंशत्तम श्रीसोम  
 प्रभसूरि ॥ नमिङ्गण भणइ एवमिन्याद्याराधनामूत्रकृत । तस्य च वि० दशाधि-  
 कत्रयोदशशत १३१० वर्षे जन्म, एकत्रिंशत्यधिके १३२१ व्रत, द्वात्रिंशदधिके १३३२  
 सूरिपद्, कण्ठगतैकादशागसूत्रार्थो गुरुभिर्दीयमानाया मत्रपुस्तिकाया यच्छत 25

चारित्रं मंत्रपुस्तिकां वेत्युक्त्वा न मंत्रपुस्तिकां गृहीतवान् । अपरस्य योग्य-  
स्याऽभावात् सा जलसात्कृता ॥

येन श्री सोमप्रभसूरिणा जलकुंकुणदेशे ऽष्कायविराधनाभयात् मरौ  
शुद्धजलदौर्लभ्यात् साधूनां विहारः प्रतिषिद्धः ॥

5

तथा भीमपल्यां कार्तिके द्वये प्रथम एव कार्तिके एकादशाऽन्यपक्षीया-  
ऽऽचार्याऽविज्ञातं भाविनं भंगं विज्ञाय चतुर्मासीं प्रतिक्रम्य विद्वतवंतः पश्चा-  
त्तद्भंगोऽभवत् । तेचाऽऽचार्या अकृतगुरुवचना भंगमध्येऽपतन्निति ॥

तत्कृता प्रंथास्तु सविस्तरयतिजीतकल्पसूत्रं, यत्राखिलेत्यादि २८  
स्तुतयः, जिनैन येनेतिस्तुतयः, श्रीमद्धर्मेत्यादयश्च ॥

10

तच्छिष्याः, श्रीविमिलप्रभसूरि १ श्रीपरमानंदसूरि २ श्रीपद्मतिलक-  
सूरि ३ श्रीसोमतिलकसूरय ४ इति ॥

यस्मिन् वर्षे श्रीधर्मघोषसूरयो दिवंगताः तस्मिन्नेव वर्षे १३५७ श्री-  
सोमप्रभसूरिभिः श्रीविमलप्रभसूरीणां पदं ददे । ते च स्तोत्रं जीविता ॥ तत  
स्वायुर्जात्वा त्रिसप्तत्यधिकत्रयोदशशत१३७३वर्षे श्रीपरमानंदसूरि-श्रीसोम-  
तिलकसूरीणां सूरिपदं दत्वा, मासत्रयेण वि० त्रिसप्तत्यधिकत्रयोदशशत१३७३ 15  
वर्षे श्रीसोमप्रभसूरयो × दिवं गताः ॥ तदानीं च स्तंभतीर्थे तेषामाऽऽलिग-  
वसतिस्थत्वेन तत्रत्याः प्रत्यासन्ना लोका आकाशोद्योताद्यालोकयोक्तवन्तो  
यदेतेषां गुरुणां स्वर्गादिमानमागादिति ॥ अन्यत्र च कापिपुरे तद्दिने यात्राव-  
तीर्णदेवतयेत्युक्तं “ यत्तपाचार्या सौधर्मेन्द्रसामानिकत्वेन समुत्पन्ना ” इति-  
प्रवादोऽधुना मया मेरौ देवमुखात् श्रुत इति ॥

20

श्रीपरमानन्दसूरिरपि वर्षचतुष्टयं जीवितः ॥६॥

४८—अडचत्तोत्ति, श्रीसोमप्रभसूरिपट्टेऽष्टचत्वारिंशत्तमः श्रीसोम  
तिलकसूरिः । तस्य वि० पंचपंचाषदधिके त्रयोदशशत१३५५वर्षे माघे जन्म,  
एकोनसप्तत्यधिके १३६६ दीक्षा, त्रिसप्तत्यधिके १३७३ सूरिपदं, चतुर्विंशत्य-

त्रिकचतुर्दशशते १४२४ वर्षे स्वर्ग, सर्वायुरेकोनसप्तति ६६ वर्षाणा ॥ x

तत्कृता प्रथा — बृहन्नव्यक्षेत्रसमाससूत्र, सत्तरिसयठाण, यत्रापिल० जयवृषभ० स्रस्ताशर्म० प्रमुरस्तववृत्तय श्रीतीर्थराज० चतुरथास्तुतिस्तद्रुचि, शुभभावानव० श्रीनद्वीरस्तुवे इत्यादि कमलबन्धस्तव शिवशिरसि० श्रीनाभि-सभव० श्रीशैवैय० इत्यादीनि बहूनि स्तवनानि च ॥ 5

श्रीसोमतिलकसूरिभिस्तु क्रमेण श्रीपद्मतिलकसूरि १ श्रीचद्रशेखर-रसूरि २ श्रीजयानन्दसूरि ३ श्रीदेवसुन्दरसूरीणा ४ सूरिपद दत्त ॥  
तेषु श्रीपद्मतिलकसूरय श्रीसोमतिलकसूरिभ्य पर्यायज्येष्ठा एकं-वर्षजीविता पर समित्यादिषु परमयतनापरायणा ॥

श्रीचद्रशेखरसूरे वि० त्रिसप्तत्यधिकेत्रयोदशशत१३७३वर्षेजन्म, 10 पचाशीत्यधिके१३८५ व्रत, त्रिनवत्यधिके १३६३ सूरिपद, त्रयोविंशत्यधिक-चतुर्दशशत१४२३वर्षे स्वर्ग ॥ तत्कृतानि—उपितभोजनकथा, यवराजर्षिकथा, श्रीमद्स्तभनरुहारवधस्तवनानि ॥ यद्भिमतितरजसाप्युपद्रव कुर्वाणा गृहृह-रिका दुर्द्धरमृगगजश्च नेशुरिति ॥

श्रीजयानन्दसूरे वि० अशीत्यधिके त्रयोदशशत१३८०वर्षे जन्म, द्वि- 15 नत्रत्यधिके१३६२ आपाढशु०सप्तमी०शुक्रे धराया व्रत, माजणाख्यो वृद्धभ्राता प्रब्रज्याऽऽदेशदानाऽनभिमुखो देवतया प्रतिबोधितो दीक्षादेशमनुमेने, विंश-त्यधिके चतुर्दशशत१४२०वर्षे चै०शु०दशम्या१० अणहिल्लपत्तने सूरिपद, एकचत्वारिंशदधिके १४४१ स्वर्ग ॥ तत्कृतप्रथा.—श्रीस्थूलभद्रचरित्रं, देया-प्रभोय०प्रभृतिस्तवनानि ॥ १५ ॥ 20

॥ षण्णपण्णो सिरिदेव सुदरो ४९ सोमसुदरो षण्णो ५० ॥

मुनिसुदरेगण्णो ५१, वाचण्णो रयणत्तेहरजो ५२ ॥ १६ ॥

x श्री जिनशरिरेद्येषो जिनप्रमसुरि । येन प्रतिदिन नम्यरतोत्रादिकरथा-नतरमेवाऽऽहारप्रहणामिप्रदेण नैकानि स्तोत्राणि विरचितानि प्रभावतीदेवीवचनात् तपागच्छमम्युदयव त समीक्ष्य श्रीसोमतिलकसूरये ६००स्तोत्राणि समर्पितानि ॥ इति श्रीजनप्रमसुरिश्चत्सिद्धात्तस्वस्य तच्छिष्यादिगुप्तकृतायामवचूर्णा । (जिनरौप्याके) ।



४६--तत्पट्टे श्रीदेवसुन्दरसूरिः ॥ ५०—तत्पट्टे श्रीसोमसुन्दरसूरिः ॥

५१--तत्पट्टे श्रीसुनिमुन्दरसूरिः ॥ ५२—तत्पट्टे श्रीरत्नशेखरसूरिः ॥

व्याख्या—४६ एगुणवर्णोक्ति, श्रीसोमतिलकसूरिपट्टे एकान-  
पंचाशत्तमः श्रीदेवसुन्दरसूरिः ॥ तस्य वि०परणवत्यधिके त्रयोदशशत१३६६-  
वर्षे जन्म, चतुर्वर्षाधिके चतुर्दशशत१४०४वर्षे व्रतं महेश्वरग्रामे, विशन्ध- 5  
धिके १४२० अणहिल्लपत्तने सूरिपदं ॥ यं पत्तने गुंगडीसरःकृतस्थितिः  
प्रधानतरयोगिशतत्रयपरिधृतो मंत्रतंत्रादिसमृद्धिमादिरं स्थावरजंगमविपापहारी  
जलानलव्यालहरिभयगेत्ता अतीतानागतादिव तुवेत्ता राजमंत्रिप्रमुखबहुजन-  
बहुमानभूजितः उदयांपा योगी प्रजासमक्षं स्तुतिं कुर्वाणः प्रकटितपरमभक्ति-  
हंवरः साहंवरं वंदितवान् ॥ तदनु च संवाधियन्तरिआद्यैर्वदनकारणं पृष्ठः 10  
सं धौगी उवाच—“पद्माऽक्षदंडपरिकरचिह्नैरुपलक्ष्ययुगोत्तमगुरवस्त्वया-  
वंदनीया” इतिदिव्यज्ञानशक्तिमतः कलयरीपाजभिधानस्वगुरोर्वचसा वंदित  
इति ॥

श्रीदेवसुन्दरसूरीणा च श्रीज्ञानसागरसूरयः, श्रीकुलमंडनसूरयः,  
श्रीगुणरत्नसूरयः, श्रीसोमसुन्दरसूरयः, श्रीसाधुरत्नसूरयश्चेति पंचशिष्या- 15  
स्तत्र श्रीज्ञानसागरसूरीणां वि०पंचाधिके चतुर्दशशत१४०५वर्षेजन्म, सप्त-  
दशाधिके१४१७दीक्षा, एकचत्वारिंशदधिके १४४१ सूरिपदं, पञ्च्यधिके  
१४६० स्वर्गः ॥ स च चतुर्थः ॥ तदुक्तं गुर्वावल्यां ( श्लो० ३३८, ३३९ )

खरतरपक्षश्राद्धो, मन्त्रिवरो गोत्रलः सकलरात्रिम् ॥

अनशनसिद्धौ भक्त्या, ऽगुरुकर्पूरादिभोगकरः ॥१॥ 20

ईषन्निद्रामाप्या-ऽपश्यत्स्वप्ने सुदिव्यरूपधरान् ॥

तानिति वदतस्तुर्ये, कल्पेस्यः शक्रसमविभवाः ॥२॥ युग्ममिति ॥

तत्कृताग्रंथाश्च—श्रीआवश्यौघनिर्युक्ताघनेकग्रंथावचूर्णयः, श्रीसुनि-  
सुव्रतस्तव—घनौघनवखण्डपार्श्वनाथस्तवादि च ॥

श्रीकुलमण्डनसूरीणां च वि० नवाधिके चतुर्दशशते १४०६ जन्म, 25  
सप्तदशाधिके १४१७ व्रतं, द्विचत्वारिंशदधिके १४४२ सूरिपदं, पंचपंचाश-

दधिके १४५५ स्वर्ग ॥ सिध्मातालापकोद्वार, विप्रवश्रीवरेत्यादिअष्टादशार-  
चक्रवधस्तव—गरीयो०हारवधस्तवाद्यश्च तत्कृतग्रन्था ॥

श्रीगुणरत्नसूरीणा चासाधारणो नियम ॥ तदुक्तम् (गु०श्लो० ३८१)

जगदुत्तरो हि तेषा, नियमोऽवष्टभरोपविकथाना

आसन्ना मुक्तिरमा, वदति चरित्रादिनैर्मल्यात् ॥१॥ इति 5

तत्कृताश्च प्रथा—क्रियारत्नसमुच्चय पददर्शनसमुच्चयवृहद्द्रष्ट्यादय ॥

भीसाधुरत्नसूरीणा कृतिर्यतिजीतकल्पवृत्त्यादिकेति ॥३॥

५०—पणोत्ति श्रीदेवसुन्दरसूरिपट्टे पचाशत्तम, श्रीमामसुन्दरसूरि ॥

तस्य वि० त्रिंशदधिके चतुर्दशशत१४३०वर्षे मा० व० चतुर्दश्या १४

शुके जन्म, सप्तत्रिंशदधिके १४३७ व्रत पचाशदधिके १४५० वाचकपद 10

सप्तपचाशदधिके १४५७ सूरिपद ॥ यमष्टादशशत१८००सावुपरिकरित

सत्क्रियापरायण महामहिमालय गुरं ऽष्टा ऋष्ट्रं व्यलिगिभिरेक पचशतद्व-

विणदानेन सशस्त्र पुमांस्तद्ववायांदीरित । स च दुर्धिया वमतौ प्रविष्टो

यावदनुचितकरणाय यतते तावच्चन्द्रोद्योते जाते सति निद्रालुभिरपि श्रीगुरुभी

रजोहरणेन प्रमृज्य पार्श्वं परावर्तित, तद्दृष्ट्वाऽहो निद्रायामपि क्षुद्रप्राणिरूपा-

परमेनमपराध्य “कस्या गतौ मे गति” रिति विचारण्या परलोकभीतो गुरुपा-

दयोर्निपत्य “क्षमध्व मेऽपराध” मिति वचसा गुरु प्रबोध्य निजऽप्रतिकर क-

थितवान् । सोपि गुरुभिर्मभुरवाचा तथोदीरितो यथा प्रव्रजित इति वृद्धवच ॥

तथा यस्य ज्ञानवैगन्यनिधेर्गुणगणप्रतीति परपक्षेऽपि प्रतीता ।

तदुक्त गुरुगुणरत्नाकरे ( सर्ग १ श्लोक ६० )-- 20

आकर्ण्य यद्गुणगण गृहीण प्रहृष्टा, लेखेन दुःकृतततीरतिदूरदेशात् ॥

विज्ञाप्य केपि कृतिन परपक्षभाजोऽप्यालोचना जगृहुरास्यकृजेन येषा ॥१॥

इति ॥ तत्कृतिश्च—योगशास्त्रोपदेशमालापडावश्यकनवतत्त्वादि-

वालावबोधभाष्याप्रचूर्णिकल्याणकस्तोत्रादिनीति ।

तच्छिष्यास्तु—श्रीमुनिसुन्दरसूरि १, कृष्णमरस्वतीविन्दधारकश्री- 25

जयसुन्दरसूरि २, महाप्रियाविडवनटिप्पनकारकश्रीभुवनसुन्दरसरि ३,

कंठगतैकादशांगीसूत्रधारकदीपावलिकाकल्पादिकारकश्रीजिनसुन्दरसूरिश्चेति चत्वारः ॥ तैःपरिकरितो राणपुरे श्रीधरणचतुर्मुखविहारे ऋषभाद्यनेकशत-  
बिंबप्रतिष्ठाकृत् ॥ अनेकभव्यप्रतिबोधादिना प्रवचनमुद्भाव्य वि०नवनवत्य-  
धिकचतुर्दशशत१४६६वर्षे स्वर्गभाक् ॥

५१—सुनिसुन्दरेगवणोत्ति, श्रीसोमसुन्दरसूरिपट्टे एकपंचाशत्तमः 5

श्रीमुनिसुन्दरसूरिः ॥ येनानेकप्रासादपद्मचक्रपट्टकारकक्रियागुप्तकाऽर्धभ्रम-

सर्वतोभद्रमुरजसिंहासनाऽशोकभेरीसमवसरणसरोवराऽष्टमहाप्रातिहार्यादि-

नव्यत्रिंशतीबं वतर्कप्रयोगाद्यनेकचित्राक्षरद्वयक्षरपंचवर्गपरिहाराद्यनेकस्तवमय

“त्रिदशतरंगिणी” नामधेयाष्टोत्तरशतहस्तमितो लेखः श्रीगुरुणां प्रेषितः ॥

चातुर्वैद्यवैशारद्यनिधिरूपदेशरत्नाकरप्रमुखग्रंथकारकः ॥ स्तंभतीर्थे 10

दफरखानेन ‘वादिगोकुलसंड’ इति भणितः, दक्षिणस्यां “कालीसरस्वती”

ति प्राप्तविरुदः, अष्टवर्षगणनायकत्वानंतरं वर्षत्रिकं “युगप्रधानपदव्युदयी”

ति जनैरुक्तः, अष्टोत्तरशत१०८वर्तुलिकानादौपलक्षकः, वाल्येपि सहस्राभि-

धानधारकः, संतिकरमिति समहिमस्तवनकरणेन योगिनीकृतमार्युपद्रवनिवा-

रकः चतुर्विंशतिवार२४विधिना सूरिमंत्राराधकः ॥ तेष्वपि चतुर्दशवारं 15

यदुपदेशतः स्वस्वदेशेषु चंपकराजदेपाधारादिराजभिरमारिः प्रवर्तिता ॥ सीरो-

हीदिशि सहस्रमहाराजेनाऽप्यमारिप्रवर्तने कृते येन तिड्डकोपद्रवो निवारितः ॥

श्रीमुनिसुन्दरसूरेर्वि० पट्टत्रिंशदधिके चतुर्दशशत१४३६वर्षेजन्म,

त्रिचत्वारिंशदधिके १४४३ व्रतं, षट्षष्ठ्यधिके १४६६ वाचकपदं, अष्टसप्त-

त्यधिके १४७८ द्वात्रिंशत्सहस्र ३२००० टंकव्ययेन वृद्धनगरीयसं०देव- 20

राजेन सूरिपदं कारितं, त्र्युत्तरपंचदशशत१५०३वर्षे का०शु०प्रतिपत् १दिने

‘स्वर्गभाक् ॥ छ ॥

५२—वावणोत्ति, श्रीमुनिसुन्दरसूरिपट्टे द्विपंचाशत्तमः श्रीरत्नशेखर

सूरिः ॥ तस्य वि० सप्तपंचाशदधिके चतुर्दशशत१४५७वर्षे क्वचिद्वा

द्विपंचाशदधिके१४५२जन्म, त्रिषष्ठ्यधिके१४६३व्रतं, त्र्यशीत्यधिके१४८३ 25

पंडितपदं, त्रिनवत्यधिके १४६३ वाचकपदं, द्व्युत्तरे पंचदशशते१५०२वर्षे

सूरिपद, सप्तदशाधिके १५१७ पो०चट्टिपष्टीदिने स्वर्ग ॥ स्तभतीर्थे वावी-  
नाम्ना भट्टेन "वालमरन्वती"ति नाम दत्त ॥

तत्कृताप्रथा —श्राद्धप्रतिक्रमणवृत्ति १, श्राद्धविधिसूत्रवृत्ति २, आ-  
चारप्रदीपश्चेति ॥

तदानीं च लु काख्याल्लेखकात् वि०अष्टाधिकपचदशशत१५०८वर्षे 5  
जिनप्रतिमोत्थापनपर लु कामत प्रवृत्त ॥ तन्मते वेपधरास्तु वि०त्रयस्त्रिंश-  
दधिकपचदशशत१५३३वर्षे जाता । तत्र प्रथमो वेपधारी भाणारयोऽभू-  
दिति ॥ १६ ॥

॥ तेवण्णो पुण लच्छी-सायर सूरिसरो मणेअच्चो ५३ ॥

चउवण्णु सुमइ साहू ५४, पणवण्णो हेमविमलगुरू ५५ ॥१७॥<sup>10</sup>

५३-तत्पट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिः ॥ ५४-तत्पट्टे श्रीसुमतिसाधुसूरिः ॥

५५-तत्पट्टे श्रीहेमविमलसूरिः ॥

व्याख्या ५३-तेवण्णोति, श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे त्रिपचाशत्तम

श्रीलक्ष्मीसागरसूरि ॥ x

x श्रीलक्ष्मीसागरसूरिणामनर्तिसूरिणा गिर्ली मह सख्या चैव—

श्रीसुजनदसूरि शिष्या ०६, श्रीगुभररत्नसूरि १० (१८), श्रीमोमजयसूरि  
२५, श्रीजिनमोमसूरि १५, श्रीजिनहमसूरि ३६, श्रीसुमतिमुन्दरसूरि २३, श्रीसुम-  
तिमापुसूरि ५७, श्रीराजप्रियमूरि १०, श्री इन्द्रनन्दिसूरि ११ । इति नः ॥

उपाध्याया —महोपाध्यायश्रीमहीसमुद्र- २६, उपा० श्रीलक्ष्मिसमुद्र ३१,

उ० श्रीअमरनन्दि २७, उ०श्रीजिनमाणिक्य ३१, उ०श्रीधर्महंन १२, उ०श्रीआ-  
गिममगडन १०, उ०श्रीइन्द्रहम १०, उ० श्रीगुणमोम ११, उ०श्रीअनतहम १२,  
उ०श्रीसधमाधु १४ ॥ अन्येपि पञ्चात्रया । इति पञ्चदश ॥ गीतार्था —२८६ ॥

मुनयस्तु-तिलकविवेक रचि राज महज भूपण कल्याण श्रुत शान्ति कीर्ति  
मूर्ति प्रमोद आनन्द नन्दि साधु रश्मि मगडन नन्दन चर्धन ज्ञान दर्शन प्रभ लाभ धर्म

तस्य वि० चतुष्पञ्च्यधिके चतुर्दशशत१४६४ वर्षे भाद्र० वदि द्विती-  
यारदिने जन्म, सप्तत्यधिके १४७७ दीक्षा, पणवत्वधिके १४६६ पंच्यास  
पदं, एकाधिके पंचदशशत१५०१वर्षे वाचकपदं, अष्टाधिके १५०८ सूरिपदं  
सप्तदशाधिके १५१७ गच्छनायकपदं ॥

५४--वडवण्णुत्ति, श्रीलक्ष्मीसागरसूरिपट्टे चतुष्पंचाशत्तमः ५

श्रीसुमतिसाधुसूरिः ॥

५५--पणवण्णोत्ति, श्रीसुमतिसाधुसूरिपट्टे पंचपंचाशत्तमः

श्रीहेमविमलसूरिः

यः क्रियाशिथिलसाधुसमुदाये वर्तमानोपि साध्याचारानतिक्रान्तः ।  
यतो ब्रह्मचर्येण निष्परिग्रहतया च सर्वजनविख्यातो महायशस्वी संविभ्र- 10  
साधुसान्निध्यकारी । यदीक्षिता यन्निश्चिताश्च बहवः साधवः क्रियापरायणा  
आसन् । एतच्चिह्नं समुदायानुरोधेन क्षमाश्रमणादिविहतं पक्वान्नादिकं  
नात्मना भुक्तवान्

ऋ०हान्ता-ऋ०श्रीपति-ऋ०गणपति प्रमुखा लुङ्कामतमपास्य श्रीहेम-  
विमलसूरिपार्श्वे प्रब्रज्य तन्निश्रया चारित्रभाजो बभूवांसः ॥ 15

सद्युम्नं कंचिद्ब्रतितं ज्ञात्वा गणान्निष्काशयामास ॥

न च तेषां क्रियाशिथिलसाधुसमुदायावस्थाने चारित्रं न संभवतीति  
शंकनीयं, एवं सत्यपि गणाधिपतेश्चारित्रसंभवात् ।

यदागमः--साले नामं एगे एरुडपरिवारे त्ति ॥

तदानीं वि० द्वापञ्च्यधिकपंचदशशत१५६२ वर्षे "संप्रति साधवो 20  
न दृग्पथमायाती"त्यादिप्ररूपणापरकटुकनाम्नो गृहस्थात् त्रिस्तुतिकमतवासि-

सोम संयम हेम चोम प्रिय उदय माणिक्य सत्य जय विजय सुन्दर सार धीर वीर  
चारित्र चन्द्र भद्र समुद्र शेखर सागर सूर मंगल शील कुशल विमल कमल विशाल  
देव शिव यश कलश हर्ष हंस, इत्यादिपदान्ताः सहस्रशः ॥ महत्तरा आर्या १ ।

—इति श्रीसोमचारित्रगणिविरचिते, गुरुगुणरत्नाकरकाव्ये द्वितीये सर्गे ॥

तोत्कटुक्रुनाम्ना मतोत्पत्ति ॥ तथा त्रि सप्तत्यधिकपचदशशत१५७ वर्षे  
 लुङ्कामतान्निर्गत्य वीजाख्यवेप प्ररेण "वीजामता" नाम्ना मत प्रवर्तित ॥ तथा  
 वि० द्विसप्तत्यधिकपचदशशत१५७२ वर्षे नागपुरीयतपागणान्निर्गत्य उपाध्या-  
 यपार्श्वचद्रेण स्वनाम्ना मत प्रादुष्कृतमिति ॥१७॥

सुविहितमणिचूडामणि कुमयतमामहणमिहिरसममहिमो ।

5

आणद विमल सूरि-सरो अ छावण्णपट्टधरो ॥१८॥

५६-तत्पट्टे श्रीआणदविमलसूरि ॥

व्याख्या--५६-सुविहितमिति, श्रीहेमविमलसूरिपट्टे पट्टपचाशत्तमपट्ट-  
 धर सुविहितमुनिचूडामणि-कुमततमोमथनसूर्यनममहिमा श्रीआणदिविमल-  
 सूरि ॥

10

तस्य च वि० सप्तचत्वारिंशदधिके पचदशशत१५४७ वर्षे इलादुर्गे जन्म,  
 द्विपचाशदधिके १५५२ व्रत, सप्तत्यधिके १५७० सूरिपद ॥

तथा यो भगवान् क्रियाशायिलवहुयतिजनपरिकरितोऽपि सदेगरग-  
 भावितमान जिनप्रतिमाप्रतिपेय-साधुजनाभावप्रमुखोत्सूत्रप्ररूपणप्रचलजल-  
 साव्यमान जननिकरमवलोक्य करुणारसाप्रलिप्तचेतो गुर्वाज्ञया कतिचित्स- 15  
 विग्रसाधुसहायो वि० द्वयशीत्यधिकपचदशशत१५८२ वर्षे शायिलाचारपरि-  
 हाररूपक्रियोद्धरणयानपात्रेण तमुद्धृतवान्, X अनेकानि चेश्यानामिभ्यपु-  
 त्राणा च शतानि कुटुबधनादिमोह सत्याज्य प्रव्राजितानि ॥

X ५८ तत्पट्टे श्रीआणदविमलसूरि ५६ तत्पट्टे श्रीविजदानसूरि — ( २ )

स० १५८२ क्रियोद्धार क्रीधो त्रिणगच्छनायक पाटण विसलनगर वारेजार्थी निसरा ॥

६० तत्पट्टे श्रीराजविजयसूरि ६१ तत्पट्टे श्रीरत्नविजयसूरि स० १५८६ लुक्क-  
 तिकेडयो मालवोमालो जीयाजी जीत्यो, साहसलेमने प्रतिबोध्यो, सुगता घाटकर्या  
 स० १६०४ ॥

इति, मोहनलाल दर्लाचद देशाइ इत्यनेन समर्पिताया, रत्नशास्त्रा पट्टावर्याम्  
 (जैनयुग, पु० ३, अ० ११-१२)

“यो वादेजयी स नगरादौ स्थास्यति नान्य” इति सुराष्ट्राधिपतिनामां-  
ऽकितलेखमादाय सुराष्ट्रे साधुविहारनिमित्तं त्रदीयश्रावकः सुरत्राणदत्तपर्यस्ति-  
कावाहनः पातसाहिप्रदत्त “मलिकश्रीनगदल” विरुदः सा० तूणसिंहाख्यः  
श्रीगुरूणां विज्ञप्तिं कृत्वा संप्रतिभूपतिरिव पंन्यासजगर्षिप्रमुखसाधुविहारं  
कारितवान् ॥

5

तथा जेसलमेर्वादिमरुभूमौ जलदौर्लभ्याद्दुष्करोयमितिधिया श्रीसो-  
मप्रभसूरिभिर्यो विहारः प्रतिपिध आसीत् सोपि व्यवहारः कुमतव्याप्तिभिया  
तत्रत्यजनानुकंपया च भूयोलाभहेतवे पुनरप्यनुज्ञातः । तत्रापि प्रथमं  
लेघुवया अपि शीलेन श्रीस्थूलभद्रकल्पो वैराग्यनिधिर्निःस्पृहावधिर्यावज्जिवं  
जघन्यतोऽपि षष्ठतपोभिग्रही पारणकेप्याचान्लादितपोविधायी महोपाध्याय- 1०  
श्रीविद्यासागरगणिर्विहृतवान् । तेन च जेसलमेर्वादौ खरतरान् मेवातदेशे च  
बीजामतीप्रभृतीन् मोरव्यादौ (मोख्यादौ) लुक्कादीन् प्रतिबोध्य सम्यक्त्ववी-  
जमुपसं सद्नेकधावृद्धिमुपागतमद्याऽपि प्रतीतं ॥

तथा पार्श्वचंद्रव्युद्ग्राहिते वीरमग्रामे पार्श्वचंद्रमेव वादे निरुत्तरीकृत्य  
भूयान् जनो जैनधर्मं प्रापितः । एवं मालवकेप्युज्जयिनीप्रभृतिषु ॥ किं बहुना ! 15  
संविग्नत्वादिगुणैर्यत्कीर्तिपताका पुनरद्यापि सज्जनवचोवातेनेतस्ततउद्भूय-  
माना प्रवचनप्रासादशिखरे समुल्लसति ॥

क्रियोद्धारकरणानन्तरं च श्रीआणंदविमलसूरयश्चतुर्दश १४ वर्षाणि  
जघन्यतोपि नियततपोविशेषं विहाय षष्ठतपोभिग्रहिणः चतुर्थषष्ठाभ्यां विंश-  
तिस्थानकाराधनाद्यनेकविकृष्टतपःकारिणश्च वि० पणवत्यधिकपंचदशशतं 2०  
१५६६ वर्षे चैत्रसितसप्तम्यामा०ऽऽजन्मातिचाराऽऽद्यालोच्याऽनशनं विधाय  
च नवभिरुपवासैरहम्मदावादनगरं स्वर्गं विभूषयामासुः ॥ १८ ॥

॥ सिरिविजयदाणसूरी, पट्टे सगवण्णए अ ५७ अडवण्णे ॥

सिरिहीरविजयसूरी, ५८ संपइ तवगणादिणिंदसमा ॥ १६ ॥

५७-तत्पट्टे श्रीविजयदानसूरिः ॥ ५८-तत्पट्टे श्रीहीरविजयसूरिः ॥ 25

दशाख्या—५७-मिरिविजयति, श्रीत्रानन्दविमलसूरिपट्टे सप्तपचाश-  
त्तम श्रीविजयदानसूरि ॥ येन भगवता स्तभतीर्था-ऽहम्मदावाद-पत्तन-मही-  
शानक-गन्धारवदिरादिषु महामहोत्सवपुरस्सरमनेकजिनविंशतानि प्रतिष्ठा-  
नानि ॥

यदुपदेशमवाप्य सूरत्राणमहिभूदमान्येन मन्निगलराजाऽपरनामकम- 5  
लिकश्रीनगदलेनाऽश्रुतपूर्वा पाण्मानी शत्रुजयमुक्तिं कारयित्वा सर्वत्र कुकुमप-  
त्रिकाप्रेषणपुरस्सरसम्मीलिताऽनेकदेश-नगर-ग्रामादिसवसमेतेन श्रीशत्रुंज-  
ययात्रा, मुक्ताफलादिना श्रीशत्रुजयवर्षापन श्रीभरतचक्रिचक्रे ॥

तथा यदुपदेशपरायणैर्गांधारीयसांरामजो अहम्मावादसत्क स०कू-  
अरजोप्रभृतिभिः शत्रुजये चतुर्मुग्नाऽष्टापदादिप्रामादा देवकुलिकाश्चका- 10  
रिता । उजयन्तगिरौ जीर्णप्रसादोद्धारश्च ॥

तथा सूर्यस्यैव यस्योदये तारका इवोत्कटवादिनोऽदृश्यता प्रापु ॥

यो भगवान् मिद्धातपारगामी अरुण्डितप्रतापात्तोऽप्रमत्तया रूपश्रिया  
च श्रोतमप्रतिमो गूर्जर-मालत्र-मरुस्थली-कुकुणादिदेशेष्वशेषेष्वप्रतिवद्ध-  
विहारी पष्ठाऽष्टनादितप कुर्त्रपि यात्रञ्जीव घृताऽतिरिक्तविकृतिपचरुपरि-15  
हारी माहृपामपि शिष्याणां श्रुतादिदाने वैश्रमणाऽनुकारी अनेकवारैकादशा-  
गपुस्तकशुद्धिकारी । किं बहुना । तीर्थकरइव हितोपदेशादिना परोपकारी सर्व-  
जनप्रतीत ॥

तस्य त्रि० त्रिपचाशदधिके पचदशशत१५५३वर्षे जामलास्थाने जन्म,  
द्वापष्ठयविके १५६२ दीक्षा, सप्ताशीत्यधिके १५८७ सूरिपद, द्वाविंशत्य- 20  
धिरुपोडशशत१६२२वर्षे वदपल्लयामनशानादिना सम्यगाराधनपुरस्सर स्वर्ग ॥

५८-अहवणोक्ति, श्रीविजयदानसूरिपट्टेष्टपञ्चाशत्तमा श्रीहीर-  
विजयसूरय ॥ किं विशिष्टा १ सप्रति तपागच्छे आदित्यसदृशास्तदुद्योतक-  
त्मान् । तेषां त्रिकमत त्र्यशीत्यधिके पञ्चदशशतवर्षे १५८३ मार्गशीर्षशुक्ल  
नवमीदिने प्रहादनपुरवास्तव्यऊकेशदातीयसांकराभार्यानावीगृहे जन्म, 25



परणवत्यऽधिके १५६ कार्तिकवहुलद्वितीयायां २ पत्तननगरे दीक्षा, मत्ताऽधिके षोडशशतवर्षे १६०७ नारदपुर्यां श्रीऋषभदेवप्रासादे परिडितपदम् । अष्टाधिके १६०८ माघशुक्लपञ्चमीदिने नारदपुर्यां श्रीचरकाणकपार्श्वनाथसनाथे श्रीनेमिनाथप्रासादे वाचकपदम् । दशाधिके १६१० सीरोहीनगरे सूरिपदम् ।

तथा येषां सौभाग्यवैराग्यनिःस्पृहतादिगुणश्रेणेरैकमपि गुणं वचो- 5  
गौचरीकर्तुं वाचस्पतिरप्यचतुरः । तथा स्तम्भतीर्थे येषु स्थितेषु तत्रत्य श्रद्धा-  
लुभिः टङ्ककानामेका कोटिः प्रभावनादिभिर्व्ययीकृता । येषां चरणविन्यासे  
प्रतिपदं सुवर्णटङ्करूप्यनाणकमोचनं पुरतश्च मुक्ताफलादिभिः स्वस्तिकरचनं  
प्रायस्तदुपरि च रौप्यकनाणकमोचनं चेत्यादि संप्रत्यऽपि प्रत्यक्षसिद्धम् ।

यैश्च सीरोह्यां श्रीकुन्धुनाथविम्बानां प्रतिष्ठा कृता । तथा नारदपुर्या- 10  
मनेकानि जिनविम्बानि प्रतिष्ठितानि । तथा स्तम्भतीर्थाऽहम्मदावाद्पत्तन  
नगरादौ अनेकटङ्कलक्षव्ययप्रकृष्टाभिरनेकाभिः प्रतिष्ठाभिः सहस्रशो विम्बानि  
प्रतिष्ठितानि । येषां च विहारादौ युगप्रधानसमानाऽतिशयाः प्रत्यक्षसिद्धा  
एव ।

तथाऽहम्मदाबादनगरे लुङ्कामनाऽधिपतिः ऋषिमेघजीनामा स्वकी- 15  
यमताऽऽधिपत्यं “दुर्गतिहेतु”रिति मत्वा रज इव परित्यज्य पञ्चविंशति २५-  
मुनिभिः सह सकलराजाधिराजपातिसाहिंश्रीत्रकञ्चरराजाज्ञापूर्वकं तदीया-  
ऽऽतोद्यवाद्नादिना महामहपुरस्सरं प्रब्रज्य यदीयपादाम्भोजसेवापरायणो  
जातः । एतादृशं च न कस्याप्याचार्यस्य श्रुतपूर्वम् । ×

× कुंथरजीऋषिरिष्येण मेवजी ऋषिणा त्रिरता मुनिभिः साकमकञ्चरपाति-  
साहिंदत्ताऽऽगरावास्तव्यरामशाहसूनुस्थानसिंहाऽऽनीततूर्यानिनादपुरस्सरं दीक्षा जगृहे ।

—इति हीरसौभाग्यकाव्ये ॥

सप्तविंशतिशिष्यैर्जगृहे ।

इति विजयप्रशस्तिकाव्यवृत्तौ ॥

तस्य वि० सं० १६२६ वर्षे अहमदाबादे श्रीविजयसेनसूरिहस्तेन दीक्षा, वि०  
सं० १६५६ वर्षे वै० शु० ४ सोमदिने स्तम्भतीर्थे श्राद्धमालदेवकृतविजयदेवसूरि-  
पदमहोत्सवे उपाध्याय पदं ॥ तद्वितीयवर्षे एव शंखेद्वरतीर्थे लुंपाकमतत्यागि श्री-  
नयविजयस्यापि उपाध्यायपदम् ॥

किञ्च । येषामशेषमभिन्नसूरिरोत्तराणामुपदेशात् सहस्रगो गजाना  
लक्षशो वाजिना गूर्जर-मालव-विहार-अयोध्या-प्रयाग-फतेहपुर-दिल्ली-  
जाहूर-मुलतान-क्याबिल-अजमेर-बङ्गालाद्यभिधानानामनेकदेशसमुदा-  
शत्मकानां द्वादशसूत्रानां चाऽधीश्वरो महाराजाधिराजशिरशेखर पाति-  
साहिश्रीअकबरनरपति स्वकीयाऽखिलदेशेषु पाण्मासिकाऽमारिप्रवर्तन, 5  
जीजायाऽभिधानकरमोचन च विधाय सकललोकेषु जाग्रत्प्रभावभजन श्री-  
मज्जिनशासन जनितवान् । तद्व्यतिकरो विस्तरत श्रीहीरसौभाग्यकाव्यादि-  
भ्योऽवसेये । समासतस्त्वेवम—

एकदा कदाचित् प्रधानपुरुषाणां मुखवार्त्तया श्रीमद्-  
गुरूणां निरुपमशमदमसरेगवैराग्यादिगुणगणेश्रवणतश्चमत्कृतचेतसा 10  
पातिमाहिश्रीअकबरेण स्वनामाङ्कित फुरमान प्रेष्याऽतिबहुमानपुरस्सर  
गन्धारवन्दिरात् दिल्लीदेशे आगरारचनगरसन्नश्रीफनेपुरनगरे दर्शनकृते  
समाकारिता सन्तोऽनेकभव्यजनक्षेत्रेषु बोधिबीज वपन्त श्रीगुरव क्रमेण  
विहार कुर्वाणा विक्रमत एकोनचत्वारिंशदधिकषोडशशतत्रये १६३६ ज्येष्ठ-  
बहुलत्रयोदशीदिने तत्र सप्राप्ता । तदानीमेव च तदीयप्रधानशिरोमणिशेषश्री 15  
अवलफजलाख्यद्वारा उपाध्यायश्रीत्रिमलहर्षगणिसमृत्यनेकमुनिनिकरपरि-  
करिता श्रीसाहिना सम मिलिता । तदवसरे च श्रीमत्साहिना सादरं स्वाग-  
तादि पृष्ट्वा स्वकीयास्थानमण्डपे समुपवेश्य च परमेश्वरस्वरूप, धर्मस्वरूप च-  
कीदृश कथं च परमेश्वर प्राप्यत इत्यादि धर्मगोचरो विचार प्रष्टुमारेभे ।  
तदनु श्रीगुरुभिरमृतमधुरया गिराऽष्टादशशतपविधुरपरमेश्वरपञ्चमहाप्रतस्व-20  
रूपनिरूपणादिना तर्था धर्मोपदेशो ददे यथा आगराद्रङ्गतोऽजमेरनगर याव-  
दर्धनि प्रतिक्रोश कृपिकोपेतमनारान्विधाय स्वकीयारसेटककलाकुशलताप्रक-  
टनकृते प्रतिमनार शतशो हरिणनिपाणारोपणनिधानादिना प्राग् हिंसादि-  
करणरतिरपि न भूपतिर्दयादानयतिमङ्गतिकरणादिप्रवणमति सज्जात ।

ततोऽतीवसन्तुष्टमनसा श्रीसाहिना प्रोक्तम् । यन् पुत्रकलत्रधनस्वजन  
देहादिषु निरीहेभ्यः श्रीमद्भ्यो हिरण्यादिदानं न युक्तिमन् । अतो यदस्मदीय-  
मन्दिरे ॥ पुरातनं जैनसिद्धान्तादिपुस्तकं समस्ति, तस्मात्त्वाऽस्माकमनुग्रहो  
विधेयः । पश्चात् पुनः पुनराग्रहवशात् तत्समादाय श्रीगुरुभिः आगराख्यनगरं  
चित्कोशतयाऽमोचि । तत्र साधिकग्रहरं यावद्धर्मगोष्ठीं विधाय श्रीमत्साहिना 5  
समनुज्ञाताः श्रीगुरुवो महताडम्बरेण उपाश्रये समाजग्मुः । ततः सकलेऽपि  
लोके प्रवचनोन्नतिः स्फीतिमती सञ्जाता ।

तस्मिन् वर्षे आगराख्यनगरे चतुर्मासककरणान्तरं सुरीपुरे श्रीनेमिजि-  
नयात्राकृते समागतैः श्रीगुरुभिः पुरातनयोः श्रीऋषभदेव-श्रीनेमिनाथसम्ब-  
न्धिन्योर्महत्सुः प्रतिमयोस्तदानीमेव निर्मितश्रीनेमिजिनपादुकायाश्च प्रतिष्ठा-10  
कृता । तदनु, ॥ आगराख्यनगरे सामानसिंहकल्याणमल्लकारितश्रीचिन्ताम-  
णिपार्श्वनाथादिविम्बानां प्रतिष्ठा शतशः सुवर्णटङ्कव्ययादिना महामहेन  
निर्मिता । तत्तीर्थं च प्रथितप्रभावं सञ्जातमस्ति ।

ततः श्रीगुरवः पुनरपि फतेपुरनगरे समागत्य श्रीसाहिना साकं मि-  
लिताः । तदवसरे च ग्रहरं यावद्धर्मप्रवृत्तिकरणान्तरं श्रीसाहिरवदत् यत् 15  
श्रीमन्तो मया दर्शनोत्कण्ठतेन दूरदेशादाकारिताः । अस्मदीयं च न किमपि  
गृह्यते । तेनाऽस्मत्सकाशात् श्रीमद्भिः सचित्तं याचनीयं येन वयं कृतार्था  
भवामः । तत् सम्यग्विचार्य श्रीगुरुभिस्तदीयाखिलदेशेषु पर्युपगणापर्वसत्काऽष्टा-  
ह्निकायाममारिप्रवर्त्तनं वन्दिजनमोचनं चायाचि, ततो निर्लोभताशान्तताद्य-  
तिशयित्तिगुणगणातिचमत्कृतचेतसा श्रीसाहिना अस्मदीयान्यपि चत्वारि 20  
दिनानि समधिकानि भवन्त्विति कथयित्वा स्ववशीकृतदेशेषु श्रावणवहुलदश-  
मीतः प्रारभ्य भाद्रपदशुक्लपष्टीं यावदमारिप्रवर्त्तनाय द्वादशदिनामारिसत्क-  
नि काञ्चनरचनाञ्चितानि स्वनामङ्कितानि षट् फुरमानानि त्वरितमेव श्रीगुरूणां  
समर्पितानि । तेषां व्यक्तिः—प्रथमं गूर्जरदेशीयं, द्वितीयं मालवदेशसत्कं,  
तृतीयं अजमेरदेशीयं, चतुर्थं दिल्लीफतेपुरदेशसम्बन्धि, पञ्चमं लाहुरमुलता 25

नमण्डलसत्कम्, श्रीगुरुणा पार्श्वे रक्षणाय पट्ट देशपंचकसम्बन्धि साधारण  
चेति । तेषा च तत्तद्देशेषु प्रेषणेनाऽमारिपट्टहोद्घोषणवारिणा सिक्ता सती  
पुराऽज्ञायमाननामाऽपि कृपावल्ली सर्वगार्याऽनार्यकुलमण्डपेषु विस्तारवती

बभूव ।

तथा वन्दिजनमोचनस्याप्यङ्गीकारपुरस्सर श्रीसाहिना श्रीगुरुणा 5  
पार्ष्वाद्दुत्थाय तदैवाऽनेकगव्यूतमिते डावरनाम्नि महासरसि गत्वा साधुसमत्त  
स्वहस्तेन नानाजातीयाना देशान्तरीयजनप्राभृतीकृताना पक्षिणा मोचन  
चक्रे । तथा प्रभाते कारागारस्थबहुजनाना वन्धनभञ्जनमप्यकारि । एवमनेकश  
श्रीमत्साहेर्मिलनेन श्रीगुरुणा धरित्रीमरुमण्डलादिषु श्रीजिनप्रासादोपाश्रया-  
णामुपद्रवनिवारणायानेकफुरमानविधापनादिना प्रवचनप्रभावनादिप्रभावो 10  
यो लाभोऽभवत् स केन वर्णयितु शक्यते ? ।

तदवसरे च सजातगुरुतरगुरुभक्तिरागेण मेडतीयसा०सदारोण मार्ग-  
णगणेभ्यो मूर्त्तिमद्गजदानद्विपशदऽश्वदानलक्षप्रासादविधानादिना, दिल्ली-  
देशे श्राद्धाना प्रतिगृह सेरद्वयप्रमाणरण्डलम्भनिकानिर्माणादिना च श्रीजिन-  
शासनोन्नतिश्चक्रे । तथैका प्रतिष्ठा सा० थानसिंघकारिता । अपरा च सा० 15  
दूजणमङ्गकारिता श्रीफतेपुरनगरे ऽनेकटङ्कलक्षव्ययादिना महामहोत्सवोपेता  
विहिता । किञ्च ।

प्रथमचतुर्मासकमागराख्यद्रङ्गे, द्वितीय फतेपुरे, तृतीयमभिरामावादे,  
चतुर्थं पुनरप्यागराख्ये चेति चतुर्मासीचतुष्टय तत्र देशेकृत्वा गूर्जरदेशस्थश्री-  
विजयसेनप्रभृतिसधस्याऽऽग्रहवशात् श्रीगुरुचरणा धरित्रीपवित्रीकरणप्रव- 20  
णान्त करणा श्रीशेषूजी-श्रीपादजी-श्रीदानीआराऽभिधपुत्रादिप्रवरपरिकराणां  
श्रीमत्साहिपुरन्दराणा पार्श्वे फुरमानादिकार्यकरणत्तरानुपाध्यायश्रीशातिचद्र-  
गणिवरान् मुक्त्वा, मेडतादिमार्गे विहार कुर्वाणा नागपुरे चतुर्मासां विधाय  
क्रमेण सीरोहीनगरे समागता । तत्रापि नवीनचतुर्मुखाप्रासादे श्रीआदिनाथा  
दिविम्बना श्रीअजितजिनप्रासादे श्रीअजितजिनादिविंबाना 25

च क्रमेण प्रतिष्ठाद्वयं विधाय अर्चुदाचले यात्रार्थं प्रस्थिताः तत्र विधिना यात्रां विधाय यावद्धरित्रीदिशि पादावधारणं विदधति तावत् महारा- यश्रीसुलतानजीकेन सीरोहीदेशे पुरा कराऽतिपीडितस्य लोकस्य अथ पीडां न विधास्यामि, मारिनिवारणं च करिष्यामीत्यादिविज्ञप्तिं स्वप्रधानपुरुषमुखेन विधाय श्रीगुरुवः सीरोह्यां चतुर्मासीकरणायाऽत्याग्रहात् समाकारिताः । 5 पश्चात् तद्राजोपरोधेन, तदेशीयलोकानुकम्पया च तत्र चतुर्मासीं विधायक्रमेण रोहसरोतरामार्गे विहारं कुर्वन्तः श्रीपत्तननगरं पावितवन्तः । अथ पुरा श्रीसूरिराजैः श्रीसाहिहृदयाऽऽलवालरोपिता कृपालतोपाध्यायश्रीशान्तिचन्द्र- गाणिमिः स्वोपज्ञेकृपारसकोशाख्यशास्त्रश्रावणजलेन सिक्ता सती वृद्धिमती बभूव । तदभिज्ञानं च श्रीमत्साहिजन्मसम्बन्धी मासः, श्रीपर्युपणापर्व- 10 सत्कानि द्वादशदिनानि सर्वेऽपि रविवाराः, सर्वसंक्रान्तितिथयः नवरोजसत्को मासः सर्वे ईदीवासराः, सर्वे मिहर- वासराः, सोफीआनकवासराश्चेति चाण्मासिकामारिसत्कं फुरमानं जीजी- आधिधानकरमोचनसत्कानि फुरमानानि, च श्रीमत्साहिपार्श्वत्समानीय ध- रित्रीदेशे श्रीगुरुणां प्राभृतीकृतानीति । एतच्च सर्वजनप्रतीमेव । तत्र नव- 15 रोजादिवासराणां व्यक्तिस्तःफुरमानतोऽवसेया । किञ्च । अस्मिन् दिल्ली देशविहारे श्रीमद्गुरुणां श्रीमत्साहिप्रदत्तबहुमानतः निष्प्रतिमरूपादि- गुणगणानां श्रवणवीक्षणतश्चानेकम्लेच्छादिजातीया अपि सद्यो मद्य- मांसाशनजीवहिसनादिरतिं परित्यज्य सद्धर्मकर्मासक्तमतयः, तथा केचन प्रवचनप्रत्यनीका अपि निर्भरभक्तिरतयः अन्य पक्षीया अपि कक्षीकृतसद् 20 भूतोद्भूतगुणततयश्चासन् । इत्याद्यनेकेऽवदाताः षड्दर्शनप्रतीता एव ।

तथा श्रीपत्तननगरे चतुर्मासककरणादनु विक्रमतः षट्चत्वारशङ्क- धिकषोडशशत१६४६वर्षे स्तम्भतीर्थे सो० तेजपालकारिता सहस्रशो रूप्यकव्ययादिनाऽतीवश्रेष्ठां प्रतिष्ठां विधाय श्रीजिनशासनोन्नतिं तन्वानाः श्रीसूरिराजो विजयन्ते ॥१६॥

सिरिविजयसेणसूरि-पुमुहेहि ऽणेगसाहुग्गेहि ॥

परिकलिआ पुहाविअलं, विहरन्ता दिंतु मे भद ॥२०॥

५८ — श्रीहीरविजयसूरि ॥५६—तत्पट्टे श्रीविजयभेनसूरिः ॥

व्याख्या—सिरित्ति, ते च श्री हीरविजयसूरय सप्रति ५६ विजयसेन  
सूरिप्रभृत्यनेकसाधुभि परिकलिता पृथ्वीतले विहार कुर्वाणा मे मम ५  
भद्र प्रयच्छन्तु ॥२०॥

॥ इति तवगच्छपट्टावलीमुत्त सम्मत्त ॥

इति महोपाध्यायश्रीधर्मसागरगणिविरचिता

श्रीतपागच्छपट्टावलीसूत्रवृत्ति ममाप्ता ॥६॥

तथा ऽचेय, श्रीहीरविजयसूरीणा निर्देशात् उपाध्यायश्रीविमल—10

हर्षगणि—उपाध्यायश्रीकल्याणविजयगणि—उपाध्यायश्रीसोमविजय गणि—

५० लब्धिमगारगणिप्रमुग्गगीतार्थे मभूय सप्रत १६४८ वर्षेचैत्रबहुल-

पष्ठी ६ शुके अहम्मद्राजात्नगरे श्रीमुनिसुदरसूरिकृतगुर्वावली-जीर्णपट्टा-

वली—दुष्पमासघस्तोत्रयत्रायनुसारेण सशोधिता । तथापि यत्किंचित् शोध-

नाहं भवति, तत्तमध्यस्थगीतार्थे सशोध्य ॥ 15

किंचाऽस्या पट्टावल्या शोधनात्प्राग् बहव आदर्शा सजाता सन्ति

ते चास्योपरि सशोध्य वाचनीया नत्वन्यथेति श्रीमत्परमगुरुणामनुशिष्टि-

गिति ॥

वाचकशिगेव्रतमश्रीमत्कल्याणविजयगणिशिष्य ।

प्रथमादर्शं सम्यग्निचार्यं शिवविजयगणिरलिरत्त ॥१॥ 20

इतिश्रीगुर्वावलीवृत्ति सम्पूर्णा ॥

पट्टपरपरण्ण वायगामिरिधम्मसायरगुरुहिं ॥

परिसग्नाया सिरिमतसूरिणो दिंतु सिद्धिसुह ॥२॥

इय गाथा शिष्यरुता ॥६॥ ॥६॥

अनुपूर्तिः १—

## श्रीतपागणपतिगुणपद्धतिः

( कर्ता—उपाध्यायश्रीगुणविजयगणिः )



अथाप्रेतना पट्टावली पुरतोऽनुसन्धीयते—

सिरिविजयसेणसूरी, पट्टे गुणसष्टिमे अ ।

व्याख्या ५६—‘सिरिविजयसेणसूरी’ति एकोनपष्ठितमे पट्टे श्रीविजयसे-  
नसूरिः । तच्चरित्रं विस्तरतः श्रीविजयप्रशस्तिकाव्यतोऽवसेयं समासतस्त्वेवम्-  
संवत् १६०४ वर्षे नारदपुर्यां जन्म, सं० १६१३ वर्षे पितृमातृभ्यां सह श्रीविजय-  
दानसूरिहस्ते दीक्षा, ततः श्रीहीरविजयसूरिभिः सर्वशास्त्राणि पाठयित्वा डी-  
साख्यग्रामे ध्यानं कृत्वाः सं० १६२२ वर्षे फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां श्रीअहम्मदावादेऽ  
सूरिपदं प्रदत्तं । तदनन्तरं सर्वप्रकारेण श्रीतपागच्छे ज्ञानदर्शनचारित्रादि  
समृद्धिः शिष्याणां श्रावकाणां च वृद्धिश्च जाता । यतस्तस्मिन् वर्षे ऋषिमेघ-  
जीमुख्या लुङ्गाख्यमतमुख्यास्तत्रत्याधिपत्यं हित्वा सर्पः कञ्चुलिकामिव  
तत्कुमतवासनां त्यक्त्वा श्रीतपागच्छगुरूणां शिष्यतां प्राप्ताः, तत्स्वरूपं तु  
प्राग् निरूपितं । ततः श्रीहीरविजयसूरयः १६३६ वर्षे शाहिश्रीअकब्बरेण 10  
आकारिता यथा सन्मानिताः, तद्व्यतिकरोऽपि पूर्वं प्रकाशितः । ततः क्रमेण  
श्रीहीरविजयसूरयः श्रीविजयसेनसूरिभिः सार्द्धं श्रीराजधन्यपुरे चतुर्मासीमा-  
सीनास्तस्मिन्नवसरे लाहोरनगरस्थेन श्रीअकब्बरसुरत्राणेन श्रीमदाचार्यगुण-  
गणाकर्णनप्रीतान्तःकरणेन तदाकारणाय स्फुरन्मानं प्रैषि । ततः श्रीगुरूणा-  
माज्ञां शेषामिवशीर्षे निधाय ततश्चलन्तः पत्तनप्रभृतिनगराणि बहून् ग्रामांश्च 15  
पवित्रयन्तोऽनेकसङ्घलोकैः पूजिताः परिवृताश्च श्रीअर्बदाचलतीर्थयात्रां

विधाय श्रीसीरोहीनगरे प्राप्तास्तदा तन्नायकेन राज्ञा श्रीसुरत्राणसञ्ज्ञेन,  
 वहाडम्बरपूर्वक सन्मानिता । तत क्रमेण श्रीराणपुर-वरकाणकपार्श्वना-  
 थादियात्रा कृत्वा स्वजन्मनगरी नारदपुरीं च गत्वा क्रमेण मेदनीपुर-डीण्डू-  
 याणक-चैराट-महिमनगरादिषु भव्यलोकान् कोकान् सूर्या इव श्रीसूरिधुर्या  
 द्वौवयन्तो लोधिआणाग्रामे समेयु । तत्र श्रीशाहिमान्यशेखश्रीअवलफजल- 5  
 शतृजन्मा फयजीनामा श्रीसूरोरन्तुमागत । तत्रानेकलोकविधीयमानवहु-  
 तानस्वरूप स्पष्टाष्टावधानादिसाधकशिष्यश्रेणिस्वरूप च द्रष्टाऽतीवचमत्कृत-  
 वेतास्ततस्त्वरित लाहोरनगरे गत्वा श्रीशाहिपुरतस्तमुदन्त यथादृष्टमभ्यधात् ।  
 तच्छ्रुत्वा शाहिरपि घनाघनात्रीलकण्ठ इव श्रीगुरुन् द्रष्टुं सोत्कण्ठोऽभूत् ।  
 तत क्रमेण श्रीसूरयोऽपि शाहिप्रदत्तोद्यद्वाद्यवादनानेकानेकतुरङ्गमविचित्र- 10  
 ज्ञेयन्तीतोरणघोरणीरमणीयमहामहपुरस्सर लाभपुर पुर प्रविश्य तद्दिन  
 इव श्रीशेखजीवरवारीरामदासप्रमुखप्रधानपुरुषद्वारा कारमीरीमहलनाम्नि  
 याम्नि श्रीशाहेर्मिलिता । शाहिरपि गुरुन् वीक्ष्य परमप्रमोदमेदुर सन् श्रीहीर-  
 वेजयसूरीणामुदन्त धर्तमनि कुशलोदन्त च पृष्टवान् । श्रीगुरुभिरपि श्रीहीर-  
 रुरिभिर्भवता वर्माशीर्वादे दत्तोऽर्स्तं त्याग्युक्त । भृशं तुष्टं मन्त्राष्टावधानानि 15  
 द्रष्टुकामोऽस्मीति गुरुनाचष्ट । ततो गुर्वाक्षया गुरुशिष्यश्रीनन्दविजयाभिध-  
 वेवुवसाधिताष्टावधानानि द्रष्टुं वचनागोचरं चमत्कारं प्राप्तं । प्रसन्नं सन्  
 महाऽऽडम्बरपूर्वकं स्वस्थानं प्रापयतामिति स्वजन्मानादिश्य स्व धामागमत् ।  
 अथेष्टवैद्योपदिष्टमितिमन्यमानै राजमान्यैर्वदान्यैस्तत्रत्यास्तिकजनैरष्टदिनानि  
 यावत् केवलं रूप्यकैरेव प्रभाषनायाडम्बरस्तथा कृतो यथा जैन राज्यमेक- 20  
 च्छत्रमिवजातमिति । गुरुणा गौरवमसहमानेन केनचिद् भट्टेन-अमी जैना  
 जगदीश्वर १ भास्कर २ गगा ३ च नमन्यन्ते तेन हे श्रीशाहे ! भवादृशा भू-  
 मुजा नैतेषा दर्शनं योग्यमिति श्रुत्वा गुप्तकोपो भूपोऽन्यदा समायातान् श्री  
 अनूचानपुङ्गवान् तद्द्विजोक्तमुक्त्वान् । ततस्तत्पलविलसितं मत्वा तत्कालो-  
 पन्नस्वसमयपरसमयस्मृतिसूक्तिसुक्तिसमुद्रै श्रीसूरीन्द्रैस्तदीयशासनसम्मत्यैव 25  
 स्वामीष्टजगदीश्वर-स्वरूपं निरूपितं ।



नगरादिषु जीर्णोद्धारान् पुरयोपदेशद्वारा कारापयन्तो हस्तसिद्ध्या च श्रीगौत-  
सावतारा इव, वृद्ध्या चाभयकुमारा इव, विद्यया चाभिनववज्रकुमारा इव,  
कृतज्ञतया श्रीरामचन्द्रा इव. धैर्येण गिरीन्द्रा इव, आज्ञया च सुरेन्द्रा इव,  
एकस्वार्थस्य शतार्थित्वेन श्रीसोमप्रभञ्जुरय इव श्रीविजयसेनसूरयोऽष्टौ वाच-  
कपदानि सार्द्धशतपण्डितपदानि च दत्त्वा द्विसहस्रीमितसंयतिसमुदायस्याशां 5  
पूरयित्वा सवाईहीरविजयसूरिरिति विरुद्धधारका भट्टारकत्वं विंशतिवर्षाणि  
प्रपाल्याकञ्चरपुरे १६७१ वर्षे ज्येष्ठकृष्णैकादश्यां स्वर्गं जग्मुः ।

साष्टिअमे सिरिविजयदेवसूरी संवद् तवगणतरणितुल्लो ॥१॥२१॥

पष्टितमे पट्टे श्रीविजयदेवसूरिः । तद्वृत्तमपि यथादृष्टं कियन्निख्यते यथा  
श्रीराजदेशमण्डले ईडरदुर्गे सम्बत् १६३४ वर्षे जन्म । ततो नवमे वर्षे- 10  
१६४३ वर्षे जनन्या सह दीक्षा । ततः १६५५ वर्षे पण्डितपदं । ततोत्तुक्रमेण  
१६५६ वर्षे स्तम्भतीर्थे सूरिपदं । तद्व्यतिकरो यथा-सर्वव्यवहारिश्रेणिशिरो-  
मणि सा० श्रीमल्लनामा स्वभ्रातृजन्मना सा० सोमाख्येन सह श्रीआचार्यपद-  
स्थापनार्थमर्थव्ययं कर्तुकामः प्रकामप्रमोदेन मरुमेदपाटलाटसौराष्ट्रकच्छकुङ्क-  
णादिदेशेषु गुर्जरदेशे च प्रतिग्रामं प्रतिनगरं कुंकुमपत्रिकाप्रेषणा पूर्वं सङ्घतो- 15  
कान् सहस्रशः समाहूय तपागणयतियतिनीसप्तशतीमितपरिकरमाकारितवान् ।  
अथ सकलसङ्घयितनानन्तरं श्रीमल्लसाधुना बन्धुरताऽधरीकृतसुरमन्दिरे निज-  
मन्दिरे दिव्यदुकूलकमनीयमण्डपं शक्रमण्डपमिव निर्माय विज्ञप्ताः श्रीविज-  
यसेनसूरयो वैसाखशुद्धचतुर्थ्यां चतुर्थे रवियोगे कुमारयोगे मृगांकमृगाशिरः  
संयोगाद् अमृतसिद्धियोगेऽपि च श्रीविजयदेवसूरिरिति नामस्थापनपूर्वकं 20  
सूरिपदं ददुः । अथ श्रीमल्लसाधुना संतुष्टेन सङ्घभक्तिस्तथाचक्रे यथा कल्पवृत्त  
एवायमिति मेने । किञ्चहुना तस्मिन्महे सा० श्रीमल्लेन दशसहस्ररूप्यकव्ययः  
कृतः । ततस्तद्व्रेतनदिने तत्रत्येन ठक्करकीकाख्येन तत्पदोत्सवनिमित्तमेवाष्टस-  
हस्ररूप्यकव्ययपूर्वं प्रतिष्ठा कारिता । एवं सर्वसंख्यया श्रीविजयदेवसूरीणां  
पदमहे पंचाशत्सहस्रप्रमिता महिमुन्दिका व्यथिताः । ततः १६५८ वर्षे पत्तने 25  
पूरी नृकसहस्रवीरसंज्ञेन पञ्चसहस्रमहिमुन्दिकाव्ययपूर्वकं गच्छानुज्ञानन्दिम-

हश्चक्रे । अथ श्रीविजयदेवसूरयोऽहम्मदावादे प्रतिष्ठाद्वयं, पत्तने प्रतिष्ठाचतु-  
 ष्य, स्तम्भतीर्थे प्रतिष्ठात्रय बहुद्रव्यव्ययपूर्वकं कृत्वा स्वजन्मभूमौ श्रीइलादुर्गे  
 चतुर्मासी चक्रुः । तदा तत्रत्यै सवलोकैरनेके महोत्सवा कृता । तन्माहात्म्यद्वष्टो  
 राजा श्रीकल्याणमहानामा [ चिन्ता ] मणिपाठिमहाभट्टचट्टवेष्टित प्रतिश्रय  
 प्राप्तस्तर्कवाचमकारयत् । तदा तेषां सूरीणां पुण्योदयात्पार्श्ववर्तिभिर्वादिदर्प- 5  
 सर्पगरुडरत्नैः पण्डितपद्मसागरगणितार्थशिरोरत्नैरेव सर्वेऽपि भट्टान्तया  
 निर्जिता यथा लज्जिता सन्तोऽहो गुरुणा गुरुतेति स्तुवन्तो राजेन्द्रमुखा स्वा-  
 श्रय प्रापुः । तदा तत्र महती प्रभावना जाता । ततो बृहन्नगरे वीरप्रतिष्ठा कृत्वा  
 राजनगरे चतुर्मासी स्थिता । तत्रावसरे इलादुर्गे श्रीऋषभदेवविम्ब यवनैर्व्य-  
 द्धित ततस्तत्रमाणमेव नवीन विम्ब श्राद्धैर्बिधाप्य नदीपद्रे महत्यां प्रतिष्ठाया 10  
 श्रीसूरीभिः प्रतिष्ठाप्य गिरिशिर स्थचैत्यचैत्योद्धारपूर्वकं स्थापित । ततोऽन्यदा  
 श्रीमण्डपाचले श्रीब्रह्मरपातिशाहिपुत्रजिहागरश्रीसलेमशाहि श्रीसूरीन्  
 स्तम्भतीर्थत सवदुमानमाकार्यं गुरुणां मूर्तिं रूपस्फूर्तिं च वीक्ष्य वचनागोचर  
 चमत्कारमाप्तवान् । ततः समये श्रीगुरुभिः समं धर्मगोष्ठीक्षणे त्रिचित्रधर्मवा-  
 र्त्तां पृष्ट्वा साक्षाद् गुरुस्वरूप निरुपमं दृष्ट्वा च स्वपत्नीयै परैः प्राक् किञ्चिद् 15  
 व्युद्ग्राहितोऽपि शाहिस्तदा तत्पुण्यप्रकर्षेण हर्षितः सन् श्रीहीरसूरीणां श्री-  
 वियसेनसूरीणां च पट्टे एत एव पट्टधरा सर्वाधिपत्यभाजो भवन्तु, नापर  
 कोऽपि कूपमण्डकप्राय इत्यादि भूयः प्रशान्ता सृजन् जिहागीरीमहातपाधि-  
 रुद दत्तवान्, अनुज्ञापितवाश्च तपागच्छश्रावकेन्द्रचन्द्रपालादीन् यदस्मदीय-  
 दक्षिणीयमहावाद्यवादनपूर्वकं गुरुन् स्वाश्रयं प्रेषयन्तु यथा युष्मद्गुरुन् 20  
 वयमपि गवाक्षस्था निरीक्ष्य हृष्टा भवाम । इत्यादिवचनोत्साहितैस्तैः राज-  
 मान्यसचैर्दाक्षिणात्यमालत्रीयसचैश्च तथा महोत्सवा कृता यथा तपागण-  
 सद्गमुत्से पूर्णिमाऽवतीर्णा अन्येषां च गुरुद्विषा मुत्सेऽमावास्येति । किञ्चहुना ?  
 यथा पुराऽरुन्धरेण श्रीहीरसूरयस्ततोऽप्याधिम्येन श्रीविजयदेवसूरयः शाहि-  
 जिहागीरेण सन्मानिता इति । अथ श्रीगुरुजो गुर्जरदेशान्तर्भूत्वा सौराष्ट्रे- 25  
 शमुन्दरे द्वीपवन्दिरे फरङ्गीपातशाहिप्रदत्तव्याख्यानानुज्ञापूर्वं चतुर्मासकद्वयीं

च कृत्वा क्रमेण हलारदेशे श्रीनवानगरे चानेकलोकान बोधिदानेन सुखयन्तः  
 श्रीशत्रुञ्जये यात्रां विधाय स्तम्भतीर्थे चतुर्मासकं च निर्माय सावलीस्थाने  
 सोनीरत्नसीक्रियमाणामारिपटहप्रदाने तीव्रक्रियाकष्टानुष्ठानपूर्वकं सूरिमंत्र-  
 सत्कं मासत्रयध्यानं विधायाक्षयवृत्तीयायां सभामभ्येयुः । ततस्तत्रैव चतुर्मासीं  
 प्रतिष्ठाद्वयीं च कृत्वा श्रीइलादुर्गे प्रतिष्ठात्रयं कृतवन्तः । ततः संघेन साद्धं 5  
 श्रीआरासणादितीर्थयात्रां कुर्वाणाः पोसीनाख्यपुरे पुराणानां पंचप्रासादानां  
 श्राद्धानामुपदेशद्वारेण बहुद्रव्यव्ययसाध्यमपि तदुद्धारं कारितवन्तः । क्रमेण  
 चारासणे मूलनायकाः पुनः प्रतिष्ठाविषयीकृत्य स्थापिताः । कालान्तरेण च  
 इलादुर्गे श्रीकल्याणमल्लनरेन्द्राग्रहादागत्य तत्रस्थ सा०सहजगृहे महामहेन-  
 १६८१ वर्षे वैशाखशुद्धपञ्चम्यां श्रीविजयसिंहसूरीन् स्वपदेऽस्थापयन् । 10

तन्महोत्सवात्तुष्टः कल्याणराजाऽपि रणमल्लचोकीनामके गिरिश्रृंगे  
 श्रीगुरून् समाहूय धर्मगोष्ठीं विधाय तत्स्थानं नवीनचैत्यस्थापनाय गुरुपुरः  
 प्राभृतीकृतवान् । अथ च तत्र चैत्यमद्यापि निष्पाद्यमानमस्ति । ततश्चतुर्मा-  
 सान्ते मरुदेशसङ्घघनाग्रहात् श्रीगुरवोऽनूचानान्विता अनेकलोकपतिवृताः  
 श्रीअर्जुदाचलतीर्थं नमस्कृत्य सा० तेजपालेन विधीयमानां महामहमनोहरां 15  
 श्रीसोरोहीमागत्य चतुर्मासीं तस्थुः । तत्र च श्रीजावलपुरप्रमुखतत्परिसरसङ्घ  
 लोकैर्जङ्गमं तीर्थमागतं मन्यमानैर्बहुतरद्रव्यव्ययपूर्वकमागत्य वन्दिताः ।  
 तत्रावसरे सादडीसत्कलुम्पाकैश्चैत्यार्चाद्यसद्भावविषयिणी महती जिनशास-  
 नाशातना कृता । ततस्तत्रत्यैर्निर्बलैः श्रावकैः सीरोह्यामागत्य श्रीगुरवो विज्ञप्ताः  
 यद्युष्माहशेषु गुरुषु सत्सु वयं वराकैर्लम्पाकैः पराभूताः स्मस्तेनास्मत्सा- 20  
 ह्ययं विधीयताम् । इत्युक्तेः शीघ्रमेव गुरुप्रेपितैर्गीतार्थैरेव तत्र गत्वा तद्वेष-  
 धारिणो भास्करैर्घूका इव मूकतां प्रापिताः । ततोऽप्युदयपुरे मेदपाटदेशाधीश- १-  
 राणाश्रीकर्णसिंहपार्श्वे गत्वा छन्दःकाव्यादिभिस्तं तोषयित्वा सकलराजलो-  
 कपरिकलितायां पर्षदि लुम्पाकान् वादे विजित्य “तपाः सत्या लुङ्गाश्चासत्या”  
 इति श्रोराणाजीसत्कं सहीत्यक्षरद्वयीकुंताङ्कितं स्फुरन्मानमानीय सादडीचतु- 25  
 षष्टे वाचयित्वा गुरूणां प्रसत्तेस्तपागच्छप्रौढिः प्रौढतमा निर्मिता । ततो

योवपुरा श्रीश्वरराजश्रीगजसिंहजीमान्यपरमप्र मानमत्रिजयमल्लेन श्रीजालोर-  
दुर्गे श्रीगुरूनाकार्यं बहुतराडम्बरेण प्रतिष्ठात्र मन्तरान्तरा चतुर्मासकत्रय-  
कारापणपूर्वकं स्वर्णगिरिशिर्षं चैत्यत्रयं च प्रतिष्ठापितम् ।

१६८४ वर्षे पुनर्जयमल्लमत्रिणा सहस्रशो रूप्यकव्ययेन विजयसिंह-  
सूरीणा गच्छानुज्ञानन्दिकारिता । ततो मेढतानगरे प्रतिष्ठात्रय विधाय वि- 5  
न्ध्यपुरे चतुर्मासीस्थितान् गुरून् द्वात्वा गच्छोद्यगीतार्थरञ्जितेन राणाश्रीजग-  
त्सिंहजीकेन श्रीवरकाणके पौषदशम्या समागताना लोकाना शुल्कमोचन  
तदावाटरोपपूर्वं ताम्रपत्रेणोत्कीर्य श्रीगुरूणा पुर प्राभृतीकृत तत्कदाप्यभूत-  
पूर्वं सर्वेषामद्भुतकृतं मञ्जातम् । ततो राणपुरादिषु तीर्थयात्रा कृत्वा भाला-  
श्रीकल्याणजीकेन समुद्रमागत्याकारिता श्रीमेढपाटदेश पवित्रयन्त प्रथम 10  
पमणोरग्रामे प्रतिष्ठाद्वयं ततो देवकुलपाटके प्रतिष्ठामेका, ततो नाहीग्रामे  
अघोटानगरे चेति प्रतिष्ठापचककरणपूर्वकं श्रीउदयपुरे चतुर्मासी चक्रु । तत-  
स्तपारणके गुर्जरत्रा प्रतिचिचिलीपून् दलवादलमहलमध्यस्थितान् श्रीगुरून्  
श्रीजगतसिंहजीसद्वकां राणकोऽपि न्तुमागतश्चिरं गुरूमुपचन्द्रे चकोरी-  
कृतचञ्जुक्षदेशनाऽसमसु ग्रा पीत्वा प्रीत प्रकाम सत्कारसन्मानादि दत्त्वा 15  
गुरूपुरश्चतुर्गे जत्पान् प्रपन्नान् । तथाहि-अद्यप्रभृति पिछोलके  
उदयसागरे च तटाके मौनजालानि निषिध्यति १, राज्याभिषेकदिने  
गुरुवारे जीवामारि कार्या २, स्वजन्ममासे भाद्रपदाभिधे जीवहिंसा  
न कार्या ३, मचिददुर्गे कुम्भलविहारे जीर्णोद्धार कार्यं ४-इति जल्प-  
चतुष्टयीग्रहणाभिग्रहवन्त भूमिकान्त वीक्ष्य सकला अपि लोका भृशमा- 2  
श्चर्यभाजोऽहो ! गुरूणा कोऽपि लोकोत्तरो नहिमातिशय इत्यादिवर्णनपरा  
जाता । किन्तुना श्रीकुमारपालभूपालेन श्रीहेमसूरय इव, श्रीराणाजी-  
केन श्रीगुरवो बहुमेनिरे-इत्यादय क्रियन्तोऽवदाता लिख्यन्ते ।  
यतस्तपसा साक्षाद्वन्यागारा इव, सौभाग्येनाभिनववसुदेवावतारा  
इव, ध्यानमौनक्रियाकृतानुष्ठानादिना- श्रीभद्रबाहुस्वामिन इव, 25  
निर्विकृतिप्रिकृतित्यागेन प्रायो भक्तजनगृहाहारत्यागेन च श्रीमानदेवसूरय

इव श्रीविजयदेवसूरयः सूर्या इव भरतभूमिपद्मिनीं प्रतिबोधयन्तो मालव-  
मण्डले उज्जयिन्यादौ दक्षिणदेशे च बीजापुर—वर्दानपुरादौ कच्छदेशे च  
भुजनगरादौ मरुदेशे च जावालपुर—मैदिनीपुर—घंघाणीग्रामादौ जीर्णो-  
द्धारकारापरणपूर्वकमनेकशतार्हत्प्रतिमाः प्रतिष्ठयन्तोऽनेकपरिडितपदानि पाठ-  
कपदानि स्थापयन्तो दर्शनादेव हीन्दूतुरुष्कादीनामपि चमत्कारं कुर्वन्तो 5  
जीवहिंसादिनिषेधनियमांश्च कारयन्तः—

सिरिविजयसिंहसूरिष्यमुहेहिं णंगसाहुवग्गंहिं ।

परिकलिया पुहविअले, विहरिता दितु मे भदं ॥२॥२२॥

श्रीविजयसिंहसूरि—प्रभृत्यनेकशतसाधुभिः परिवृताश्चिरं पृथ्व्यां वि-  
हरन्तो 'भद्रं दिशन्तु कल्याणं कुर्वन्त्विति गाथार्थः' ॥ 10

तथा स्तम्भतीर्थवासिना सा० देवचन्द्रेण देवीभूय स्वे द्वे  
भाय सं० १६७३ वर्षोत्पन्नोपाधिमतमोचनाय भृशं प्रोक्तमपि तन्मते  
न त्यजतस्तदान्यदा तदीयश्राद्धजेमनवारायां जायमानायां तेन देवेन  
तत्र पाषाणवृष्टिस्तथा कृता यथा भुक्ति त्यक्त्वा सर्वेषु नष्टेषु तं  
देवं प्रकटीभूतं ते प्रोचतुस्त्वं कोऽसि कथं चावां भाषयसि? इति प्रोक्ते सो- 15  
ऽवोचत्—अहं भवद्भर्ता देवचन्द्रो देवीभूतोऽन्यैः सप्तभिर्देवैः सह श्रीविजयदे-  
वसूरीणां सांनिध्यं कुर्वाणोऽस्मीति तेन भवतीभ्यामपि स एव गुरुरङ्गीकार्यो  
येन मद्भयं न भवतीति प्रोक्ते ते अपि श्रीगुरुभक्ते जाते इत्येकं देवसांनिध्यम् १ ।  
तथाऽनयैवरीत्या घोघाख्यबन्दिरवासी सा० सोमजीनामा खं कुटुम्बं प्राक्-  
पराङ्मुखमपि देवीभूय प्रतिबोध्य च श्रीविजयदेवसूरिभक्तं कृतवानिति 20  
द्वितीयम् २ । तथा श्रीविजयदेवसूरिषु मण्डपाचलं प्रतिचलत्सु सेहरषीनाम्-  
ग्रामस्वामिपुत्रः कमाख्यः परमारः । स च पूर्वं भूतार्त्तत्वेन लोकान् मारयन्  
पित्रा निगडितस्तदा गुरुवासन्नेपेणैव सज्जीभूत इति महदाश्चर्यकृज्जातमिति  
तृतीयम् ३ । तथा राजनगरवासी वणिकपुत्रः सप्तवर्षाणियावच्च ग्रथिलोऽभूत्  
तत्पित्रादिभिः श्रीविजयदेवसूरिकरत्नेपः कारितस्तत्कालमेव सज्जो जात-25

श्रेणि महद्दुःखमिति चतुर्थम् ४ । तथा मेढतावासी पीमसरागोत्रीय साथा-  
नाख्यो नवमासा १ याव क्षेत्रपालगृहीतोऽन्यदा श्रीविजयदेवसूरिवासक्षेपेण  
सज्जोऽजनि, इति सर्वलोकप्रसिद्धमिति पञ्चमम् ५ । तथा मरुदेशे गुर्जरदेशे  
दुर्भिक्षे महति सत्यपि श्रीगुरुषु समागतेषु महत् सुभिक्षं जातमित्यादि श्रीविज-  
यदेवसूरीणां देवसानिध्य बहुशो दृष्टमिति ५ ॥२॥ 5

इति गाथाद्वय पूर्वपट्टावल्या प्रयोज्यम् ।

तपागणपतिगुणपद्धति-रेषा गुणविजयवाचकैर्लिखिते ।

गन्धारवन्दिरीय श्रावकसा० मालजीतुष्ट्यै ॥ १ ॥

इति गुर्वावली प्राचीनगुर्वावल्या पुरोऽनुसन्धीय सुधीभिर्वाचनीया ।

॥ श्रीमगलमस्तु ॥

10

× हस्तलिखितम् ये अथ पाठ प्रान्ते लिखितोस्ति, किन्तु अत्र द्वितीय-  
गाथावृत्त्या अन्त एव मुद्रित मुकरत्याय ॥

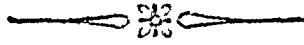
१—श्रीमुनिसुन्दरसूरिशिष्य श्रीलक्ष्मीभद्र । ततो लक्ष्मीभद्राया शाखा  
निर्गता, तस्या श्रीहेमविमलसूरिशामनकाले शुभविमला अभूवन् ।

तच्छिष्यामरविजयस्तच्छिष्यकमलविजया । येषां वाचकौ उ० गुणविजयगणि  
उ० कुगलसारगणेशच प्रज्ञाशा १५ एव गिष्या ७० ॥ तच्छिष्य कप्रिसुर्यो  
हेमविनयो विजयप्रशस्तिकाव्यन्तर्ता, द्वितीय शिष्यो विद्याविजयस्तच्छिष्य उ० गुण-  
विजय विजयदेवसूरिनामिष्यात् वि० म० १६८८ वर्षे ज्ञानपत्रम्यां विजयप्रशस्ति-  
काव्यदीका—विजयदीपिकाकर्ता तपागणपतिगुणपद्धतिकर्ता इति ॥

अनुपूर्तिः—२

श्रीतपगच्छ पट्टावलीसूत्रान्तसंहितगाथात्रयव्याख्या

( कर्ता—उपाध्यायमेघविजयगणिः )



ऐं श्रीवीतरागाय नमः ।

अथ प्राक्तनपट्टावलीसूत्रान्तसंहितगाथात्रयव्याख्या यथा—

श्रीविजयसेणसूरी, पट्टे गुणसट्टिमं सुगुणसिट्ठे ।

षाए साहिसहाए, जेण द्विओ स जिणधम्मो ॥१॥२॥

सिरित्ति । श्रीमज्जगद्गुरुविरुद्धधारिमहाराजाधिराजपातिसाहिश्रीअक-  
व्वरप्रबोधकारिश्रीहीरविजयसूरिपट्टे एकोनपष्ठितमे श्रीविजयसेनसूरिर्भगवान्  
जज्ञे । किं विशिष्टः ? सुगुणैः श्रेष्ठः—गुणाः स्वभावजा ज्ञानादयो विभा-  
वजा औदार्यादयस्तैरतिशयेन प्रशस्यो वर्णनीयः । येन स्वामिना वादे उप-  
स्थिते श्रीसाहिसभायां स जगत्प्रसिद्धो जिनधर्मः अर्हतां शासनं स्थापितं  
प्रामाणिकयुक्त्या साधितः । इत्यनेनास्य भगवतः पाण्डित्यातिशयो ध्वन्यते ॥१॥

तस्य च प्रभोर्विक्रमात् सं० १६०४ वर्षे नारदपुर्यां वृद्धोपकेशशाखीयधोषा-  
गोत्रभृत् सा० कमा तद्धार्या कोडीमा तयोर्गृहे जन्म । सं० १६१३ वर्षे मात्रा  
पित्रा च सह श्रीविजयदानसूरिहस्ते श्रीहीरविजयसूरिनिश्रया दीक्षा । सं०  
१६२६ पंन्यासपदं, सं० १६२८ वर्षे फाल्गुणसितसप्तम्यां श्रीअहम्मदावाद्-  
नगरे उपाध्यायपददानपूर्वं आचार्यपदं, सं० १६५२ वर्षे भाद्रसितैकादश्यां 15  
तिथौ भट्टारकपदम् । ते च श्रीगुरवो भट्टारकत्वं विंशतिवर्षाणि प्रपाल्य श्री  
स्तम्भतीर्थे सं० १६७१ वर्षे ज्येष्ठशुक्लैकादश्यां स्वर्गमलंचक्रुः । एतच्चरितं  
विस्तरतो विजयप्रशस्तिकाव्याद्धेद्यम् । किंचिल्लिख्यते—

श्रीगुरुभिः स० १६३२ वर्षे चापानेरदुर्गे समहोत्सवमनेकार्हतप्रति-  
माशताना प्रतिष्ठा कृता । तथा सूरतिवदिरे श्रीचिन्तामणिप्रमुत्तानेकसभ्य-  
भट्टसमक्ष श्रीभूषणनामा दिगम्बराचार्यो निर्जित । तथा 'नमो दुर्वाररागा-  
दि-' इत्यस्य श्रीयोगशास्त्राद्यश्लोकस्य सप्तशतान्यथा सूक्तावल्यादिग्रन्थारच  
कृता । तथा राजनगरे श्रीग्यानगानालयनयात्रपर्यदि जैनधर्मव्यवस्थापनेन 5  
जयश्रीरत्नकृता । तत्रैव च श्रीविद्याविजयनाम्ना स्वपदयोग्य शिष्य प्रत्राज्य श्री  
साहित्यदेकारिता प्रतिष्ठा चक्रे । ततो गन्धारवन्दिरे सा० इन्द्रजीकारिता  
प्रतिष्ठा श्रीग्रीरस्य कृत्वा स्तम्भतीर्थे श्रीधनार्ङ्कारिता प्रतिष्ठा विनाय श्रीसूरय-  
स्तत्रैव चतुर्मासीं चक्रु ।

अत्रान्तरे श्रीहीरविजयसूरिपु विद्यमानेऽपि एषा श्रीसूरीणा गुणा- 10  
तिगयाकर्णनादुत्कण्ठभाज पातिसाहिश्रीअकब्बरमन्त्राज श्रीसूरीन् लाभपुरे  
आचार्य श्रीहीरमूरीग्ररकुशलप्रश्नपूर्व वर्मवार्ता पप्रच्छु । तत्र गुरुवचश्चा-  
तुर्यरञ्जिता मुख्यशिष्यकृताष्टावधानदर्शनाश्चमत्कृता साहिपादा श्रीगुरूणा  
बहुगौरव चक्रु । तदा केनचिद्भट्टेन 'अमी जैना जगदीश्वर सूर्य गगा च  
न मन्यन्ते' इत्युक्ते श्रीमाहिममक्ष पचशतभट्टै साथै श्रीगुरुभिर्विवाद 15  
प्रारेभे ।

य शैवा समुपामते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो  
बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटव कर्मेति भीमासका ।  
अर्हन्नित्यय जैनशासनरता कर्त्तेति नैयायिका,  
मोऽय वो विदधातु वाञ्छितफल त्रैलोक्यनाथो हरि ॥१॥” 20

इति श्रीहनुमाननाटकोत्तेन, तथा

“अधामधामधामेद्र, वयमेव स्वचेतनि ।

यस्यास्तव्यसने प्राप्ते, त्यजामो भोजनोदके ॥२॥”

तथा गङ्गोदक पिना नास्माक देवप्रतिष्ठा स्यात् । इत्यादि युक्तिभि-  
न्दा भट्टा विजितास्तेन श्रीसाहिपादास्तप्रसादा श्रीगुरूणा 'काली सरस्वती'



इति विरुदं दत्तवन्तः । गो १, वृष २, सहिष ३, महिषी ४, वध-मृतद्रव्यादान  
 ५, बन्धरोध ६, निषेधरूपषड्जल्पस्फुरन्मानं श्रीसाहिभिर्देत्वा लाभपुरे अत्या-  
 ग्रहेण चतुर्मासिकद्वयं श्रीगुरुणां कारितं, ततः श्रीहीरदिजयसूरिभिरचाधाद-  
 शाद् विजयसेनमुखात्रियामनामिच्छद्भिराकारिता । श्रीसाहिपादानापृच्छ्य  
 श्रीसूरयश्चतुर्मासिकमध्येऽपि चलन्तः पट्टननगरं प्रापुः । तदा सं० १६५२ 5  
 वर्षे भाद्रसितएकादश्यां प्रातर्जातं श्रीहीरसूरीश्वरस्वर्गमनं श्रुत्वा तत्रैव तस्थुर्भ-  
 द्वारकत्वेन सुमुहूर्ते समहोत्सवं श्रीगुरुपट्टमलंचक्रुः । ततः क्रमेण श्रीगुरुभिः  
 स्तम्भतीर्थे ५० राजयात्रिजयाख्यकारितां श्रीचिन्तामणिपार्श्वविम्बप्रतिष्ठां  
 कृत्वा सं० १६५४ वर्षे अहम्मदावादे भूमध्यान्निर्गतश्रीविजयचिन्तामणिपा-  
 पार्श्वविम्बस्य शकन्दरपुरे स्थापनां चक्रे, तथा अहम्मदपुरे सा०भोटाकारिता 10  
 तथा सा० लहुयाख्यकारिता च प्रतिष्ठां विदधे । समये च लाडोलिग्रामे सूरि-  
 संत्रध्यानं विधाय श्रोस्तम्भतीर्थे श्रीविजयदेवसूरीणां सूरिपदं दत्त्वा पत्तनन-  
 गरे तेषां गणानुज्ञां नंदिं श्रीगुरवः कृतवन्तः । तत्र च पञ्चसप्तत्याद्यंगुलार्हन्प्र-  
 तिमानां पदप्रतिष्ठाश्च, तदा संघपतिश्रीहेमराजसंघो मरुस्थलीतः श्रीशत्रुंजय-  
 तीर्थयात्रार्थं ब्रजन् सप्तशताश्ववारकटकद्वादशशतशकटसंयुक्तः श्रीगुरुस्तत्रा- 15  
 भ्येत्य वन्दितवान् स्वर्णरूपमुद्राभिरर्चितवांश्च । तद्दर्शनाद्राजनगरवास्तव्य  
 सा० सूरख्यः श्रीगुरूपदेशेन मार्गे प्रतिश्राद्धगृहं महमुन्दिकालभनिकां कुर्वन्  
 श्रीअर्बुदाचलश्रीराणपुरादितीर्थेषु मरुदेशे अनेकनगरसंघेन समं तीर्थयात्रां  
 विधाय निर्विघ्नं प्रत्यागत्य श्रीगुरुन्ननाम । तद्वत्सरे श्राद्धैर्लक्षमहमुन्दिकाव्य-  
 यञ्चक्रे । तदनु श्रीगुरवो राजधान्यपुरे प्रतिष्ठाद्वयं, पुनः स्तम्भतीर्थे प्रतिष्ठात्रयं, 20  
 गन्धारवन्दिरे प्रतिष्ठाद्वयं विधाय सुराप्रादेशे विजहुः । तत्र चतुर्मासकत्रयं प्रति  
 ष्ठाष्टकं श्रीसिद्धाचलश्रीगिरनारिप्रमुखमहातीर्थयात्रास्तत्रत्यसंघेन सह कृतवन्तः  
 ततो हल्लारदेशे नवानगरे चतुर्मासीं विधाय तद्देशपतिजामराजोऽपि धर्मोपदेशैः  
 श्रीगुरुभिः प्रमोदितः । इत्येवं नानादेशविहारैः भूतलं पवित्रयन्तः श्रीगुरु-  
 वोऽनेकजीवान्, प्रत्यवुधन्, पञ्चाशज्जिनप्रतीष्ठांश्चक्रुः । अष्टौ वाचकपदानि 25  
 सार्धशतं पण्डितपदानि ददुः । द्विसहस्रयतिपरिवृताः “सवाईश्रीहीरविजय

सूरय" इति विरुद विभ्राणा श्रीविजयसेनसूरय प्रवचन बहूनि वर्षाणि प्रभा-  
वयामासु । प्रान्ते च विजयदेवसूरीश्वरान् विश्वलनगरे च मघाप्रहात्समनु-  
ज्ञाप्य स्वय श्रीस्तम्भतीर्थे सर्वातिचारलोचनपूर्वं कृतानशना समाधना स०

१६७१ वर्षे ज्येष्ठसितएकादश्या श्रीगुरुव स्वर्गमलचक्रु । तत्राद्यापि बहु-  
वित्तव्ययेन सघकारित स्तूप जयतीति गाथार्थ ॥१॥

तप्यष्टे सूरसप्तमो, साद्वितमोविजयदेवसूरिगुरू ।

साहिजहागीरेण, महातपास्ति चद्र . हो .....॥२॥

ध्या० 'तत्पट्टे' इति— । तत्पट्टे प्रकाशकत्वात्सूर्यसम. तपस्तेजसा  
पष्टितम श्रीविजयदेवसूरिनाम्ना गुरुर्वभूव । किं विशिष्ट ? साहिना-पातिसा-  
हिना—श्रीत्ररुवरभूपालजन्मना श्रीजहागीरेण 'महातपा' इति कृतनामा, 10  
इत्यनेनास्य सूरे तप प्राग्रान्य व्यञ्जितम् । अनेकश पष्ठाष्टमादिभि त्रिंश-  
तिस्थानकाद्युत्कृष्टतपश्चरणात् यावज्जीवमुपावासाचाम्लनिर्विकृतिकस्थानभ-  
क्षपानरूपनित्यतप करणात्तस्य च प्रभोर्विक्रमात्स० १६३४ वर्षे ईडरदुर्गे  
वृद्धोपकेश 'ओद्रतवाल' गोत्रभृत् साधिरा तद्गार्ग्या । तयोर्गृहे जन्म । स०  
१६४३ वर्षे जनन्या सह दीक्षा । स० १६५५ वर्षे पण्डितपदम् । सं० १६५६ 15  
वर्षे वैशाखशुक्लपष्ठ्या उपाध्यायपदपूर्वं आचार्य्यपद । स० १६७१ वर्षे  
भट्टारकपद स० १७१३ वर्षे श्रीडनानगरे आपाडदेवशयनैकादश्या प्रात-  
काले ऽष्टमभक्तेन स्वर्गप्राप्ति तत्र स्तूप भणशालीरायचदकारित, श्रीहीरगुरोर्मु-  
ख्यस्तूपपार्श्वे समुद्रतीरेऽस्ति । तस्य भगवतो द्वितीयस्वर्गोत्तरदिशि देवत्वेनावत-  
रणम् । इष्टदेवेन निजाराधकानामुक्त श्रद्धेयमेव । यतो नाम्ना देव सर्वत्र 20  
नरदेवमान्य । प्रकृत्यापि देवपट्टादर्शादिपु देवाराधक देवसानिध्यवान् । अत-  
स्तदुक्तस्य युक्तत्वात् । अत एव देवशयनैकादश्या देववेलाया स्वर्गतिरिति ।

पुस्तकरित सरतरमतीयश्रीवाचनाचार्यश्रीवल्लभकृत 'विजयदेवमाहात्म्य'  
काव्यात्तया मत्कृतमाघसमस्यारूप'देवानन्द'काव्यात् ज्ञेयम् ।

समासस्त्वेष—

श्रीमतामेपा गुरूणा सूरिपदोत्सवे स्तम्भतीर्थेऽनेकदेशप्रामनगरसवा- 25  
ज्ञानेन सतसतीमुनिपरिवृतान् श्रीविजयसेनसूरीन् बहुधा विज्ञप्य स्वदेशमनि

द्विधापि विमानश्रियं दधाने सुपर्वशोभाभासुरे प्रचण्डमण्डपाडम्बरेण विचित्रराजवादित्रनिर्घोषैर्नभसि गर्जति सति सर्वसंघभोजनपरिधापनादिभिः श्रीमल्लनामश्रेष्ठिना स्वभ्रातृसोमान्वितेन दशसहस्ररूप्यकव्ययेन महती प्रभावना चक्रे सुमुहूर्ते श्रीगुरुभिः सूरिपदं प्रदाय 'श्रीविजयदेवसूरिः' इति नाम संदधे । तदा पुनस्तदुत्सवनिमित्तमेवाष्टसहस्ररूप्यकव्ययेन ठक्करकी- 5 काख्येन प्रतिष्ठा कारिता पुनश्चैषां सं० १६५८ वर्षे परीक्षकसहस्रवीरेण पञ्चसहस्रमहामुन्दिकाव्ययेन कृतोत्सवपत्तने गणानुज्ञानन्दिमहो महान् जज्ञे । तथा श्रीविजयदेवसूरिभिः प्रतिष्ठाद्वयं राजनगरे, प्रतिष्ठाचतुष्टयं पत्तने प्रतिष्ठात्रयं स्तम्भतीर्थे सातिशयमहोत्सवपूर्वं चक्रे ।

इलादुर्गे च श्रीकल्याणमल्लराजप्रबोधनात्तत्समास्थितान्भट्टान् पं० 10 श्रीपद्मसागरगणीनामाज्ञादानेन जापयित्वा राजाग्रहात्तत्र चतुर्मासीं चक्रे । तदा च तत्रत्यगिरिशिरसि प्रभूपदेशात् श्रीऋषभदेवविम्बं नवीनचैत्योद्धारपूर्वं श्राद्धैर्नटीपट्टे महदाडम्बरेण प्रतिष्ठायां श्रीगुरुभ्य एव प्रतिष्ठाप्य स्थापयामास ।

अत्रान्तरे सं० १६७३ वर्षे कतिचिदुपाध्यायैः संभूय कतिचिल्लोकान् स्वायत्तीकृत्य आग्रहदुध्या स्वकीयमतं प्रादुष्कृतमत्तन्मतवासिते च स्वकीये 15 भार्ये द्वे सा० देवचन्द्रेण स्तम्भतीर्थवास्तव्येन मृत्वा देवीभूतेन तन्मत-श्राद्धजेसनवारायां पापाणवृष्ट्या संतर्क्य "अहं भवत्योर्भर्ता देवचन्द्रः सप्तदशभिर्देवैः श्रीविजयदेवसूरीणां सांनिध्यं कुर्वाणोऽस्मि तद्भवतीभ्यामप्ययमेव पारंपर्यागतः श्रीगुरुः सेव्यः" इत्युक्त्वा श्रीगुरुभक्ते कृते, इत्यद्भुतदेवसांनिध्यादनेकशो लोकाः कुमतानि परितत्यजुः । 20

तथा घोघाख्यचन्द्रिरवास्तव्य सा० सोमजीनाम्ना स्वकुटुम्बं पूर्वं धर्मा- 25 द्भ्रष्टं देवीभूय प्रागुक्तवत्प्रबोध्य श्रीगुरोर्भक्तं चक्रे । तदतिशयश्रवणान्महाराजश्रीजहांगीरपातिसाहिः श्रीसूरीन् सबहुमानमाकार्य श्रीमण्डपाचले श्रीगुरुभिः समं धर्मप्रश्नादिवार्तां विदधे । तदा सुधासमानदेशनाश्रवणेन तपस्तेजोमयमूर्तिदर्शनेन भृशं तुष्टः श्रीसाहिराजोऽयं गुरुर्महातपा इति विरुदं 25 दत्तवान् । तदनु लब्धयशोवादा श्रीसूरिपादाः श्रीसाहिना स्वयंमनुज्ञापित

स्तकीयदक्षिणीय महावायुप्रादनादिभि श्रीचन्द्रपालादिसमृद्धश्राद्धे मोत्सव  
प्रतिपद सुवर्णमुद्राणा न्युद्धननेषु क्रियमाणेषु भट्टचारणादिमार्गणाना मार्ग  
यादृच्छिद्रकदानेन सहर्षमुपाश्रये पादप्रवारण चक्रु । किं बहुना, श्रीजिन-  
प्रवचनप्रासादे कलशागेपणमिदमद्भुत प्रामीमरत् । ततो गूर्जरत्रा पत्रित्री-  
कृत्य सुराष्ट्रदेशे द्वीपवन्दिरे फरगीपातिसाहिप्रदत्तव्याख्यानानुज्ञापूर्य चतु- 5  
र्मासकद्वय हस्तारदेशे तद्देशस्वामिभक्त्यनुरोधेन कतिचिदिनावस्थान च कृत्वा  
स्तम्भतीर्थे चतुर्मासक तस्थु ।

अत्रान्तरे उपाध्यायपाक्षिकै मागरपाक्षिकैश्च क्रियमाण जनव्युद्गा-  
हमन्त्रेद्य श्रीमायल्या श्रीगुन्धो ध्यान विदधु । मामत्रय ध्यानेनाधिकप्रवृद्ध-  
धामान परेषा द्राडुमपि दुःप्रेक्षास्तत्रैव प्रतिष्ठाद्वय चतुर्मासा च कृत्वा 'श्ला' 10  
दुर्गे प्रतिष्ठात्रय सधेन सम तद्देशतीर्थयात्रा कृत्वा क्रमेण 'आरासणे मूल-  
नायकप्रतिष्ठा चक्रु ।

कालान्तरे च 'श्ला'दुर्गेऽभ्येत्य सा० 'सहजू'—कृतमहोत्सवेन स०  
१६८१ वर्षे वैशाखसितपष्ठया श्रीविजयसिंहसूरीन् यौवराज्येऽस्थापयत् ।  
तदा तद्देशभूषेन 'रणमल्लचोकी' नामक गिरिशृङ्ग गुरूपदेशान्नव्यचैत्य- 15  
स्थापनाय सवम्य प्रमादीकृतम् ।

तत सीरोद्या चतुर्मासकरणादनु 'जागलक पुरे' समागत्य श्री-  
गुरुराजा 'माडडी'—ग्रामे गीतार्थाननुज्ञाप्य लुम्बाकपाक्षिकान् श्रीउदयपुरे  
राणाश्रीकर्णमिहममज मभाया वादपूर्णं निरुत्तरान कारयामासु ।

तत श्रीतपागच्छप्रौढिर्महता चभूय । तत्र च श्रीयोधपुरा गीश्वरश्री- 20  
गजमिहाराजस्य मुख्यमान्यश्रीजयमल्लनाम्ना 'जालोर' दुर्गे प्रतिष्ठात्रयमन्तरा-  
न्तरा चतुर्मासकत्रय श्रीगुरूणामत्याग्रहेण कारयित्वा स्वर्णगिरौ चैत्य स्वका-  
रित प्रतिष्ठापयामाने ।

स० १६८४ वर्षे सहस्रशो रूप्यकव्ययेन श्रीविजयसिंहसूरीणा गणानु-  
ज्ञानन्दिमहोत्सव कारित । तदनु 'मिदतानगरे' प्रतिष्ठाद्वय त्रिधाय 'चन्ध्य- 25  
नगरे' चतुर्मासोत्थितान श्रीगुरून् श्रुत्वा तन्माहात्म्यश्रवणेन तुष्टो राणाधी-

जगत्सिंहजीनामा श्रीवरकाणकपार्वपात्रार्थागतानां लोकानां पोषदशम्यां शुक्लमोचनं चक्रे । पारणायां च त्यरितमेव स्वप्रधानभालाश्रीकल्याणर्जाकस्य सन्मुखप्रेषणेन श्रीगुरुन् दर्शनोत्कण्ठया चाजुहाव ।

ततः श्रीगुरुपादाः 'पमणोरग्रामे' प्रतिष्ठाद्वयं, देवकुले चैकप्रतिष्ठां, ततो 'नाहीग्रामे आघाटपुरे' चेति प्रतिष्ठापञ्चकं कृत्वा श्रीउदयपुरे राणाजी ०  
...संघाप्रहाच्चतुर्मासीं विदधुस्तदा गुरूपदेशाद् राणाश्रीजगत्सिंहजीनाम्ना चतुरो जल्पाः प्रपन्नास्तद्यथा—

( १ ) अद्यप्रभृति पीवोला-उदयसागरनामसरोद्वये मीनग्रहण-जालनिषेधः ।

( २ ) राज्याभिषेकदिने गुरुवारे जीवामारिः कार्या । 10

( ३ ) जन्ममासे भाद्रपदे च जीवहिंसा न कार्या ।

( ४ ) मचिन्ददुर्गे श्रीकुम्भाराणाकारितजैनचैत्योद्धारश्च कार्यः ।

ततो ऽत्यन्तं श्रीजिनशासनोन्नतिर्जज्ञे ।

तदनुक्रमेण गूर्जरधरायां द्वित्रीणि वर्षाणि विहृत्य सुराष्ट्रदेशेन तत्सिद्धाचलरैवतकादितीर्थयात्रां संवावगमनेन कुर्वाणाः परमगुरवः प्रतिष्ठात्रयं 15 चतुर्मासीद्वयं च कृत्वा हल्लारदेशे नवीननगरे तद्देशेश्वरलाक्षाभिधानयाम (जाम) प्रतिबोधनेन चतुर्मासीं कृतवन्तः ।

अत्रान्तरे दक्षिणप्रदेशे कन्हडदेशे श्रीवीजापुरादिनगरसंघेन श्रीपूज्य-पादानामानयनविज्ञप्तये प्रेषिता महेभ्या श्राद्धी चतुरानाञ्ची श्रीगुरुन्ववन्दे, प्रतिष्ठां चैकां महोत्सवेन कारयामास, वर्षचतुष्टयं यत्र श्रीगुरवां विहरन्ति 20 (सा) तत्र तत्रान्विधाय ।

ततो दक्षिणात्यसंघात्याग्रहात्पुनर्गूर्जरत्रायामभ्येत्य कतिचिद्वर्षाणि तत्र स्थित्वा दक्षिणादेशं विजिहीर्षवः प्रभुपादाः सूरतिवन्दिरे समहोत्सवं समाजगमुः ।

तत्र च सं० १६८७ वत्सरे समुत्पन्नसागरमतवासितैः श्राद्धैः स्वमतस्य 25 श्रीगुरुमुखात्सत्यमिदमिति कथनाय बहुद्रव्यव्ययेन मीरमोजाख्यभूपं स्वव-

श्रीकृत्य स्वपात्रिकगीतार्थानाहूय वाढ प्रारम्भित । श्रीगुरुभिरपि सागरमत-  
प्ररूपणा उत्सूत्रात्र नत्येति प्रामाणिकपर्यदि राजसमन्त गीतार्थाननुज्ञाप्य  
वादेन सागरपात्रिकोस्तिरस्कारयाचक्रिरे । ततो लब्धजयवादा श्रीगुरुपादा-  
सप्रमादाऽवनिनायकेन सम्मानिता परे च परामव प्रापिता इति ।

ततो दक्षिणादेगे विहृतवन्त । तत्र बीजापुरेऽन्तरा चतुर्मासकचतु- 5  
ष्टया चक्रु । तत्र श्रीगुरुपादतपोमाहात्म्यप्रसरद्यश परिमलानुभवनेन तत्र-  
त्यपातिसाहिश्रीईदलसाहिर्दर्शनोत्सुक श्रीगुरूनाहूय सत्रहुमान धर्मस्वरूप  
पप्रच्छ । तत श्रीगुरूणा वच पीयूषमासाद्य माद्यन्मना यावद्गुरुस्थिति  
गोत्रधनिपेध प्रपन्नवान् जिनप्रवचनम नदमेदुर स्फातिमायाति स्म ।

पारणाया च बीजापुराद्यनेकनगरसवेनान्नीयमाना श्रीगुरव पयो- 10  
प्रितटनिकटस्य श्रीकरद्देडपार्श्वनाथ—श्रीकलिकुण्डपार्श्वनाथाद्वितीर्ययात्रा  
कुर्वाणास्तत्तदेशराजप्रभृतीन् लोकान् धर्मे स्थापयाचक्रु ।

ततश्चाऽवरगान्नगरे चतुर्मासकमेक सोत्सव विधाय खानदेगे वर्हा-  
नपुरे चतुर्मासकद्वय सान्तर चक्रु । तत प्रचलय्य सवेन सह श्रीअन्तरीक-  
पार्श्वश्रीमाणिक्यस्वामिनीर्ययात्रा सृजन्तस्तिर्लिङ्गदेशे गलकुण्डप्रत्यासन्नभाग्य 15  
नगरे पातिसाहिश्रीकुतत्रसाहिना सगत्य तत्सभाया तैलिङ्गभट्टान्वादे विजित्य  
जैनधर्मव्यवस्थापनया श्रीपातिसाहिं प्रमोदितवन्तस्तद्वशानुज्ञाश्च । तत्रार्हत्प्र-  
तिमानामनेकासा प्रतिष्ठा चक्रु । एव च विप्रिरोत्सवै प्रतिपद् राजप्रवोधा-  
दिना मर्मत्र दक्षिणामण्डले विहृत्य प्रतिष्ठासप्तक चतुर्मासकसप्तक च कृत्वा  
श्रीमज्जिनशासनमय तन्मण्डल विदधु । 20

बीजापुरे सा० देवचद्रेण प्रथम प्रतिष्ठा कारिता । तत्र षोडशसहस्र-  
रूप्यकव्ययञ्चक्रे । द्वितीयस्या प्रतिष्ठायामष्टसहस्रीरूप्यकव्ययश्च । तत्र पडित  
श्रीवीरप्रिजयाना स० १७०१ वर्षे पन्यासपद् ददु । दक्षिणामण्डले च  
सर्वाणि अशीतिपरिहितवदनि, एकमुपाध्यायपद् च प्रसादितवन्त । तत  
पुन सघाम्ढात गूर्जरत्रा श्रीगुरव पवित्रीचक्रु । 25

इतश्च श्रीविजयसिंहसूरयोऽपि गुर्वाज्ञया मरुमेवातमेदपाटादौ विहृत्य राणाश्रीजगत्सिंहजीनामानं प्रवोष्य विशेषतो जीवदयासु देशस्थिन जैनतीर्थेषु सप्तदशभेदपूजाकरणोपदेशादिभिश्च दृढीकृत्य श्रीजिनधर्मं प्रभावयन्तः । श्रीमरुदेशे एकां प्रतिष्ठां, मेरुतानगरे आगरावास्तव्यपातिशा-  
हिरवव्यवहारिमुख्यसा० हीरानन्दभार्यया श्राविकामनीत्यभिधानवत्या कारितां  
निर्माय, श्रीकृष्णदुर्गे राठौरवंशीयश्रीरूपसिंहमहाराजस्य महामात्वश्रीराय-  
चन्द्रनाम्नोऽत्याग्रहाचतुर्मासकं चक्रुः तत्पारणके सदस्रशो रूप्यकव्ययेन  
मन्त्रिणा कारितप्रतिष्ठायां बहूनि चिन्वानि जिनानां महतोत्सवेन प्रत्यतिष्ठपन्

तत्रैव आह्वणपुरादागतेन श्रीमहेशदासमन्त्रिश्रीसुगुणाहयेन बहुवित्त-  
व्ययपूर्वं सुवर्णमुद्रार्चादिना महोत्सवेन श्रीगुरवो वन्दिताः । ततः क्रमान्मा- 10  
ल्यपुरबुन्दीचत (व) लेरपार्श्वप्रमुखतीर्थयात्रां संघेन सह कुर्वन्तः श्रीजयतार-  
णिनगरे चतुर्मासीं विधाय श्रीस्वर्णगिरौ यात्रां कृत्वा क्रमात् श्रीअहम्मदावा-  
दनगरे श्रीगुरुन्नेमुः ।

तैः सहिताः श्रीपरमगुरवः सं० १७०५ वर्षे श्रीइलादुर्गे पत्तनवास्तव्य-  
भा० श्रीचन्त्याकारितां प्रतिष्ठां विदधुः । तत्र चतुःपष्टिविबुधेन्द्रान्देवसूरय इव 15  
स्थापयामासुः । क्रमेण पत्तनराजनगरादिषु चतुर्मासककरणेन लोकाननुगृह्य  
स्तंभतीर्थे चतुर्मास्यां तस्थुः ।

श्रीविजयसिंहसूरीणां सं० १६४४ वर्षे जन्म, सं० १६५४ व्रतं,  
सं० १६७२ वाचकपदं, सं० १६८१ सूरिपदं, ते सूरयः परमत्तमापात्रं  
यावज्जीवं गुर्वाज्ञाराधकाः विवेकाद्यनेकगुणोद्धयो ऽष्टाविंशतिवर्षाणि 20  
सूरिपदं प्रपाल्य सर्वातीचारालोचनपूर्वमनशनेन सं० १७०८ वर्षे अहम्मदा-  
वादपार्श्वस्थनवीनपुरे आषाढसितद्वितीयायां श्रीविजयसिंहसूरयः स्वर्जग्मुः ।

तत् श्रावणाद्भृशं दुःखार्ताः परमगुरवोऽपि संसारानित्यतां विमृश्य-  
क्रमाद्विगतशोका बभूवुः ।

एषां च श्री गुरुणां तपस्तेजसा देवकृतसान्निध्येन च निरन्तरायतया 25  
भूयांसरतीर्थयात्रासंघाः साडम्बराः श्रीशत्रुजयादितीर्थेषु जीर्णोद्दाराश्च जाताः ।

देवसान्निव्य चैपा स्फुटमेव मण्डपाचलप्रस्थाने कमाख्यपरमारस्य भूतार्त्तस्य  
लोकाना मारणात्पित्रा निगदितस्य श्रीगुरुवासक्षेपेण सज्जीभवनात्, एव रा-  
जनगरवासव्यवणिम्पुत्रोऽपि सप्तवर्षाणि प्राग्रथिल सोऽपि, तथा मेढतान-  
गरे सा० यानाख्यक्षेत्रपालाधिष्ठितश्च वासक्षेपात्प्रादुर्बभूव ।

एव चैते भगवन्त स्वविहारेण गूर्जरत्रामुराश्राहक्षारमरमेढपाटला- 5  
टदक्षिणादेशेषु धर्मजीजानि वपन्त तद्देशसुभिन्नादिभवेनेन स्फुटतरपुगप्र-  
धानातिशया शुद्धाशयाश्चिर भरतशुवि प्रवचन प्रभावयामासु । समये च  
निजायु शेष वर्षचतुष्टय ज्ञात्वा स० १७१० वर्षे स्वपट्टे श्रोवैशाखमित  
दशम्या श्रीविजयप्रभसूरीन् स्थापयामासु ।

तद्द्वयतिकरस्त्वन्तरमेव वक्ष्यते ।

10

“भिरिविजयदेवपट्टे, पढम जाग्रो गुरु विजयसीहो ।

सगगए तम्मि गुरु-पट्टे विजयप्पहो सूरी ॥१॥”इति गाथार्थ

तत्पट्टुजपहकर—सरिसो हरिसेण दरिसणिज्जमुहो ।

[तत्पट्टुजपहकर—सरिसो सिरिविजयसिंह दिव्वगुरू]

इगसट्टियमो ऽणुवमो, विजयप्पहणाम गच्छगुरू ॥३॥२३॥

15

व्याख्या—“तत्पट्टुज” इति, तस्य श्रीविजयदेवगुरो पट्टलचणे  
अन्वुजे, प्रकाशकत्वात्प्रभाकर सूर्य, तत्सदृशस्तुल्य । एकोत्तरपष्ठितम  
श्रीविजयनामा गच्छगुरुर्भगवान् सूरिर्विजयवान् । किं चिणिष्ट ? ‘हरि-  
सेण’—दृष्येण दर्शनीप्रमुख । इत्यनेनास्य नित्यप्रसन्नता ख्यापिता । तथा  
चास्य भगवतो भाग्यविस्फूर्जितस्य नित्योदयत्व प्रशान्तत्व च ध्वन्यते । 20  
कुपाक्षिकाना प्रत्यर्थिना मनसाप्येतस्य गुरोरद्वितचिन्तकाना स्वत एव  
नागात् । घनस्याभ्युदये शरभानामिन्द्र । यद्वा हरि कृष्ण मेनाया यस्य स  
हरिसेनो देवानामिन्द्र । ‘मेनाचरी भवदिभानप्रदानवाग्नि—वामेन यस्य  
जनिता सुग्भी रणश्री ।’ इति नैपथीयकाव्यवचनात् । एवं हृग्गिण्यस्य तुर-  
गगजापथे, हरिसेना नृपा । अहीनामर्थे धरणेन्द्राया नागकुमारा प्राक्षा । 25



तेषामपि दर्शनीयं मुखं यस्य स तथा । इत्यत्रार्थे त्रिजगद्वन्द्वत्वं भगवतो दर्शितम् । पुनः किं विशिष्टम् ? अनुपमः अतुल्यः । एतेनास्य सूरः सर्वसूरिभ्यो धैर्यौदार्यगाम्भीर्यसौभाग्यतानिस्तन्द्रतापाण्डित्यक्षमादिगुणानामधिकता ज्ञाप्यते ।

अस्य च प्रभोः सं० १६३७ वर्षे माघसित्तएकादश्यां श्रीकच्छदेशे 5  
श्रीमनोहरपुरे वृद्धोपकेशवंशघोषागोत्रभृत् सा० सिवगणभार्याभानुमतीगृहे  
जन्म । सं० १६८६ वर्षे दीक्षा । सं० १७०१ वर्षे पन्यासपदं । सं० १७१०  
वर्षे आचार्यपदं । सं १७१३ वर्षे भट्टारकपदं । ते चामी श्रीगुरुपादाः  
सांप्रतमपि प्रत्यक्ष्यलक्ष्यलक्षप्रभावा नितरां ज्ञानाभ्यासपुस्तकशोधनानेक-  
भव्यजनविबोधनविविधक्रियामग्नमनसो दुस्तपस्तपननिर्जीर्यमाणतमसो 10  
गच्छस्य स्मारणवारणादिविधाभिरधिकश्रियं पुष्पान्तःसत्यसंधाः कल्पान्तेऽ-  
प्यविचलवाचः स्वप्रतिपन्नगच्छगीतार्थसंधाभ्युद्यदायिनो विजयन्ते ।

एतेषां महिमातिमहान्न कात्सर्येन वर्णयितुं शक्यः । तथापि किञ्चि-  
दुच्यते—

एकस्मिन् समये परमगुरुतपागच्छाधिपाः श्रीविजयदेवसूरयः स्वा- 15  
मिनो जिनशासनपट्टपरंपराप्रवाहं प्रवर्धयितुं श्रीसूरिमन्त्रेण ध्यानं चक्रुः ।  
यदस्मदग्रे कः शासनाधिनाथो भविष्यतीति । तदा च प्रवर्धमानतपःपूर्वक-  
जपावधानाकृष्टो मंत्राधिराजाधिष्ठायको देशेऽभ्येत्य नमस्कूर्वन् विज्ञप्तवान्  
'स्वामिन्नद्यापि शासनाधीशितुर्न दीक्षापि प्रवृत्ता, भगवतामपि युष्माकं  
चिरायुष्कता तत्किमनया चिन्तयाधुना ? समये च स्वल्पेनापि तपसाहं स्म- 20  
रणीयः, तदैवागत्य वक्ष्यामि' इत्युक्त्वा सुरस्तिरो बभूव ।

कालान्तरे च स्वकीयपट्टे श्रीजिनशासनस्वामिस्थापनावसरं निभा-  
ल्य श्रीगन्धपुरे गत्वा श्रीगुरुभिर्ध्यानं प्रारभे । तदा तत्क्षणादेव मंत्रराजाधि-  
ष्ठायको देवः समेत्य निवेदितवान्—“हे स्वामिनः ! पण्डितः श्रीवीरविज-  
यनामा सौभाग्यनिधिः विद्यामहोदधिः निरुपधिः चारित्रगुणानामवधिः 25  
अजिह्वब्रह्मविधिः विधिरिव सा... भुवनोपकारकः केशव इव पुरुषोत्तमः

नरकान्तकृत् कुमोदक शिव इव महाव्रती कामासहनो दत्तजातिस्त्रिगु-  
 त्रिदशगुरुरिव निर्मलमति सुमनसामप्रणीरसौ स्वपट्टे स्थाप्य , यतोऽस्याग्रे  
 महिमा हि मानाधिको भावी”इत्युक्त्वा देवे तिरोभूते श्रीगुरुभि गाम्भीर्य-  
 शालिभि जनप्रत्ययनाय ब्रहि शकुनगवेपणदावपि देवोक्तानुवादे दृढीभूते  
 सति राजनगरात्त्वरिताभ्यागत सा० रत्नप्रमुखा राजनगरीयसघाप्रहेण श्री- 5  
 स्तभतीर्थ-श्रीपत्तन-श्रीसूरतिवन्दिरप्रमुखानेकदेशप्राप्तनगरसमक्ष श्रीमहा-  
 वीरस्वामिसातिशयमूर्ते पुर पत्रिकाविलोकनादानदित् सकललोके श्रीग-  
 न्धारवन्दिरे विक्रमात्स० १७१० वर्षे वैशाखसितदशम्या भृगुवारं पुष्यन-  
 क्षत्रे सुमुहूर्ते रङ्गदुत्तङ्गमण्डपाखण्डशोभादिदृक्ष्येवाभ्यागतेषु मुक्तानिकरद-  
 म्मान्नक्षत्रपक्षेषु चाद्यमानविचित्रातोद्याडम्बरेण गर्जत्यम्बरे दह्यमानासु 10  
 दुर्जनमन शकटिकास्त्रिव धूपघटिकासु रसेनापूर्यमाणसु सर्वसङ्घप्रमोदत-  
 टिकास्त्रिव घटिकासु प्रसरद्यशोभिरिव पुष्पप्रकरैराकीर्णं भूवलये श्रीवीर-  
 पट्टाधिपत्यज्ञापनायेव श्रीवीरजिनभवनासन्नदेशे मण्डपेऽभ्यागत्य प०श्री  
 वीरविजया श्रीविजयदेवसूरिभि स्वपट्टे स्थापयाचक्रिरे । तदा साधुश्री-  
 अखर्इनाम्न सुतेन श्रीवर्धमानसङ्गेन स्वमातृसाहिबदेवीसहितेन प्रतिगृह् 15  
 सरूप्यमुद्रस्थालिकालम्भनिका चतुर्विधसुघवस्त्रपरिधापनादिना भूरिद्रव्य-  
 व्ययेन महानुत्सवश्चक्रे । श्रीगुरुणा स्वय चिन्तिम् , इष्टोपदेशेन उ० श्रीक-  
 मलविजयगणिभिर्द्वापितमाचार्यपद् प्रदाय “ श्रीविजयप्रभसूरि ” इति  
 नाम निर्ममे ।

विजयी जगदाराध्या, यशस्वी च प्रभाववान् ।

20

भगवानाद्यवर्णस्त्व-न्नाम्नाभूद्विजयप्रभः ॥१॥

तदनु श्रीगुरु श्रीविजयप्रभसूरिणा सह सूरतिवन्दिरे एकं चतुर्मा-  
 सक विधाय श्रीराजनगरे चतुर्मासीं कृतवान् । तत्पारणाय साधुमुख्यसा०  
 सूरपुत्र सा० धनजीनाम्ना श्रीगुरुणा विद्वप्य वन्दनकमहोत्सवः प्रारभे,  
 तत्र च मिलितास्तोकलोकस्थानाय कमनीयप्रकटपटमण्डपैर्माशून्यदर्शनं 25  
 भूत् इतीवाच्छादिने प्रियति सुवर्णगचितनिचितश्रुतिपञ्चवर्णचन्द्रोदयप्रभा-

संकरेण रात्रिदिवातीतविमानोपमानतायामुपनतायां जगति सुस्रीमताकारि-  
शमैकसाम्राज्यविजयमाने तत्र न तापनकरप्रचार इतीव सहस्रकरकरेपु  
भूमिमस्पृशत्सु विविधधवलगानश्रवणैकार्ग्येण चित्रतुल्यनिश्चलनराम-  
रोगैः शोभितेषु पटकुटेषु विश्वविश्रान्तिसश्रान्तिशारदाभ्रपटलेषु इव  
अत्युच्चमण्डपेषु सिंहासने श्रीविजयप्रभसूरिं निवेश्य भगवान् स्वयं स्वतु- ५  
ल्यताज्ञापनार्थं पुरःस्थित्वा सुमुहूर्ते वन्दनकानि दत्तवान् । जातरच महान्  
प्रमोदः । तदनुसर्वसंघसमक्षं श्रीपरमगुरुणाभाणि—“ यथाहंतथाऽयम्,  
सर्वसंघेन सेवनीयः, संसारसागरे प्रवरणभयं कदापि न मोक्तव्यः ” ।

ततः कृतसंस्कारो मणिरिव, घननिर्मुक्तः सूर्य इव, आहुत्युदीपितः  
पावक इव, भावप्रतिविम्बनादर्पण इव, प्रोक्षलितः कनककलश इव, 10  
तैलापूर्णः प्रदीप इव, कृतालंकारः क्षितिपतिरिव, घननिर्धौतः कनकगिरि-  
रिव, शोधितो ग्रन्थ इव, अधिकं संजातवन्दनकोत्सवपरिकर्मा स श्रीवि-  
जयप्रभसूरिर्भूरितेजसा दिदीपे ।

तदा सा० श्रीधनजीनाम्नाष्टसहस्रमहमूदिकानां यशोवीजानामिव  
प्रभावना चक्रे । सर्वसंघपरिधापनिका च । ततश्चैकं चतुर्मासिकं अहम्म- 15  
दपुरे विधाय श्रीपरमगुरुभिः सहैव श्रीविजयप्रभसूरि.....  
युगादिदेवयात्रां द्वीपवास्तव्यभणसालीयसा०रायचन्द्रप्रमुखसंघेन सह  
वि..... नालोच्य सुराष्ट्रासंघाग्रहेण श्री-  
उन्नतपुरमलंचक्रे ।

क्रमेण देवशयनैकादश्यां.....विजयप्रभसूरिभिः कृतनिर्या- 20  
मनाविधयः श्रीविजयदेवसूरयः स्वर्जग्मुः । ततः श्रीवीरनिर्वृते श्रीगौतम-  
स्वामीव श्रीपरमगुरौ स्वर्गतेऽत्यन्तदुःखावेशवशात् श्रीविजयप्रभुरपि कति-  
चिद्दिनानि विमनस्कतया निन्ये ।

तदनु चतुर्विधसंघाग्रहेण संसारस्वभावमनुभाव्य विगतशोकाः  
सुमुहूर्ते श्रीविजयप्रभसूरिपादाः भट्टारकपदोद्भूतशोभाप्राग्भारभासुराः 25  
श्रीगुरुपट्टं विभूषयामासुः । तद्दिन एव शिवपुरीदेशे यतीनां विहारस्य

प्राग्वर्षद्वय चात्रनिपेक्षस्य मुक्तलता जाता, तद्वर्द्धनिका आगता । तद्वर्षे च श्रीद्वीपवास्तव्यसा० नेमीदासनान्ता अष्टमहस्रमहमूढिकाव्ययेन श्रीगुरुन् सार्वमादाय श्रीशत्रुञ्जयतीर्थयात्रामघो महान् चक्रे ।

एव श्रीगुरुभि सुराष्ट्राया चतुर्मासकदशक चक्रे । तत्प्रभावात् स० १७१५ स० १७१७ स० १७२० वर्षसत्काश्रयोऽपि दुष्काला सुराष्ट्रादेशे न 5 प्रसारमापु । तच्चिह्न तु जीर्णदुर्गादिषु गूर्जरत्राया धान्यागमन प्रतीतमेव । स० १७२३ वर्षे घोघावन्दिरे श्रीजसूनाम्न्या कारितानेकजिनप्रतिमाना श्री-सूरिभि प्रतिष्ठा चक्रे ।

एषु च श्रीगुरुषु विपक्षभावमावहन्त केचिद्दालिशा स्वत एव लाकापनाद्विडम्बिता अधुना दृश्यन्ते । तत श्रीअहम्मदावादनगरसघा- 10 ग्रहेण श्रीगुरुषो गूर्जरत्रायामाजग्मु । तत्प्रभावात्लोकाना सुभिक्षेण महान्-हर्षो बभूव । इत्यादि परमर्षिणा एषा महिमा प्रकट एव ॥ तेन निश्ची-यते—एतन्नाज्ञावर्तित्वमेव उभयथापि शिवाय ।

सिरिविजयरणसूरि-पमुदृहि णेगसाहुवग्गेहि

परिकलिजा पुहाविजले, सूरिवरा दिन्न मे गद् ॥४॥२४॥ 15

श्रीगूर्जरमरुमालजमेदपाटमेवातकच्छहस्रारसुराष्ट्रादक्षिणादिदेशेषु श्रीगुरुतपस्तेजसा माप्रत धर्मकर्माणि निरन्तराय जायन्त इति,

सोऽय वीरपरवराप्रणयिनीप्राणप्रिय सत्क्रिय ।

जीयात् श्रीतपगच्छप सुरवरै ससेव्यमानक्रम ।

नाम्ना वीर इति क्षमावरवरप्रोन्नितनृत्यक्रिय । 20

प्रत्यक्ष प्रिजयप्रभो गणपति श्रीवर्धमानग्रभ ॥१॥

श्रीवीरनीर्थातिफलवधराज्य, श्रीवर्धमानेन कृतोत्सवश्री ।

देवाभियुक्तोऽभिधयापि वीर, श्रीवीरनीर्थे गुन्धरेप जीयात् ॥२॥

श्रीप्रिजयप्रभसूरे-रुपामक श्रीकृपादिविजयानाम ।

त्रिदुषा शिष्यो मेघ, मन्धमिम लिलेग्य मुत्ता ॥३॥ 25

इति श्रीपट्टावलिसूत्रोपरिस्त्रिगगायात्रप्रधिवरण सपूर्णम् ।

अनुपूर्तिः—३

## श्रीगुरुमाला

[ तपागच्छपट्टावलीसूत्रवृत्यनुसन्धानम् ]

( कर्त्ता—मुनिवर्यश्रीचारिप्रविजयः )



५८—श्रीविजयदानसूरिपट्टे अष्टपंचाशत्तमः श्रीहीरविजयसूरिः ॥

तस्य वि० त्र्यशीत्यधिके पंचदशशत१५८३ वर्षे मृगाशिर्षशुक्ल-  
नवम्यां ६ प्रह्लादनपुरे जन्म, वि० परणवत्यधिके १५६६ का० कृ०  
द्वितीयायां २ सोमे अष्टभिः सह अणहिल्लपुरे दीक्षा, वि० सप्ताधिके  
षोडशशते १६०७ वर्षे नारदीपुरे पं० पदं, अष्टाधिके १६०८ तत्रैव वाचक-  
पदं, दशाधिके १६१० मृगशुक्लदशम्यां१० शिरोह्यां सूरिपदं, वि० द्विचत्वारिंशदधिके १६४२ फत्तेहपुरे जगद्गुरुपदं X, द्विपंचाशदधिके १६५२  
भाद्रसितेकादश्यां ११ ऊनायां स्वर्गभूगमनं ॥ यैर्दीक्षीश्वरपातिसाहिअकवरं  
मेवाडाधिपतिराणाप्रतापसिंहं च प्रतिबोध्य जैनशासनं स्फातिमद्विदधे ।  
सर्वस्मिन्नार्यावर्ते अमारिपटहघोषः कारितः ॥

10.

तत्तपः—२० चतुर्थभक्ताचाम्लजनितविंशतिस्थानक—८१ अष्टम-  
२२५षष्ठ—३६००चतुर्थभक्त—२०००आचाम्ल—२०००निर्विकृतिक—सूरिमं-

X शुद्धाः सर्वपरीक्षणैर्गुरुवरा ज्ञात्वेति पृथ्वीपतिः ।

सभ्यानां पुरतः स्वपर्षदि गुणांस्तेषां स्वधीरोधितान् ॥

उक्त्वा सर्वयतीशहीरविजयाख्यानामदाद् भक्तितः ।

स्वैर्वाक्यैर्विरुदं “जगद्गुरु”रिति स्पष्टं महःपूर्वकम् ॥१६७॥

(वि०सं०१६४६ द्वि०भा०शु० ११ मंगलपुरे)

—इति, जगद्गुरुकाव्ये ॥

त्राऽऽराधन-गुरु-रत्नत्रयी-द्वादशप्रतिमादिक ॥ जवृद्धीपद्मज्ञप्तिवृत्त्यादि-  
कर्ता ॥ तन्निष्कप्यसततिस्तु-विजय-प्रिमल-सागर-सुन्दर-हर्ष-रत्न-  
कीर्ति-चन्द्र-वल्लभ-हस-कुशल-रुचि-सौभाग्य-उदय-आनन्द-सार एव  
सासायु विभक्ता द्विसहस्रीमीता ॥

ऊन्नतपुरेऽद्यावधि गुरुमदिर श्राद्धीलाडकीकृतस्तूपश्च भव्यानान्द- 5  
यतिस्म । श्रीसूरिचरित्र विस्तररुचिना हीरसौभाग्य-जगद्गुरुकाव्य-  
हीरविजयसूरिरामादिभ्यो ऽवसेय ॥

५६—तत्पट्टे एकोनपाठितमः श्रीविजयसेनसूरिः ॥

तस्य वि० चतुरधिके षोडशशत१६०४वर्षे होलिनादिने १५  
नारदपुरे जन्म, वि० त्रयादशाधिके १६१३ शुक्रशुक्लैकादश्या पितृ-कर्मणि- 10  
वदनान्तर श्रीविजयदानसूरि हस्तेन सुरतिवदिरे दीक्षा, वि० षड्विंशत्य-  
धिके १६०६ फा० शु० दशम्या स्तभनतीर्थे पण्डितपद, वि० अष्टाविंशत्य-  
धिके १६२२ फा० शु० सप्तम्या गोमे अहम्मदावादे सूरिपद, वि० एक-  
सप्तत्यधिके १६७१ ज्येष्ठकृष्णैकादश्या स्वर्ग ॥

यस्मैअकवरेण "काली सरस्वती" ति विन्द पड्जल्पाश्च प्रदत्ता । 15

येन नमोदुर्वाररागादि शतार्थी—सुक्तापल्याद्याकृता, दिग्वासो  
भूषण पराजित, चतुर्दशभिर्दिनै प्रवचनपरीक्षावादिन पराजिता, ।  
अपरे ऽप्यहमदावादे निर्जिता, लाभनगरे ईश्वरकवृत्त्यादिवादे जयो लब्ध ॥

यस्य "मनाई हीरविजयसूरि" रिति विन्द, अष्टौवाचका पर शता  
प्रज्ञाशा द्विसहस्रीमिता शिष्याश्च ॥ ऋषभदासादिकप्रयोपि तत्कृपा- 20  
कक्षप्रफुलिता इति । अस्याशेषचरित्र विजयप्रशस्तिकाव्याद्वेद्य ।

यस्मिन् मर्गेगने तपागच्छे द्वौ सपावभूता । १—श्रीविजयदेवसू-  
रिसत्को "देवसूरसघ" अपर २—श्रीविजयतिलकसूरिसन्क "आनन्द-  
मूरसघ" इति ॥

६०-तत्पट्टे षष्टितमः श्रीविजयदेवसूरिः ।

तस्य वि० चतुस्त्रिंशदधिके षोडशशत१६३४वर्षे पोपशुक्लत्रयोदश्यां  
रवौ इलादुर्गेजन्म, वि० त्रिचत्वारिंशदधिके १६४३ माघे शुक्लदशम्यां  
राजनगरे जनन्यासमं श्रीहीरविजयसूरिहस्तं दीक्षा, वि० पंचपंचाशदधिके  
१६५५ सिकंदरपुरे श्रीशांतजिनप्रतिष्ठायां पं०पदं, वि० षट्पंचाशदधिके  
१६५६ वैशाखसितचतुर्थ्यां सोमप्रचलयोगे स्तंभतीर्थे श्रेष्ठमहत्साधुकृतम-  
हामहोत्सवे वाचकपदं च सूरिपदं, वि० त्रयोदशाधिके सप्तदशशतवर्ष-  
१७१३ आपादशुक्लैकादश्यां ऊन्नतनगरे स्वःप्राप्तिः ॥

अस्मै पातिसाहिजहांगीरेण मण्डपाचलदुर्गे बहुमानेन “जहांगीर-  
महातपा” विरुदं दत्तं । येनाप्रतिबद्धविहारिणा नैकेषु वादेषु जयपताको- 10  
च्छ्रिता, आरासणे ( J. B. A. C. ) स्वर्णगिरौ च तीर्थे प्रतिष्ठा कृता ।  
जगत्सिहराणकाय चत्वारो जल्पाःप्रदत्ताः, बहूनि चमत्काराणि संदर्शितानि,  
नीतनीत वंदु इत्यादिस्वाध्यायाः कृताः ॥

तत्समये लुंपकैरपि शास्त्राध्ययनेन बहुधा प्रतिमा स्वीकृता ॥

अस्यमूरेर्विशिष्टचरित्रसंबंधो विजयदीपिका-देवानंदाभ्युदय-महा- 15  
त्म्यवृत्तिभ्यो ज्ञेयः ॥

तत्समये वि० नवाधिके सप्तदशशत१७०६वर्षे गूर्जरदेशे लुंपक-  
पूज्यस्य वजरंगपतेः शिष्याल्लवजीकात् मुखपट्टीबंधा मूर्तिद्वेषिणो दूढका  
जातास्तस्य प्रथमोपसर्गाऽऽपातिदृष्टपदनुसारेण मतभेदेन वा “वावीशटोला”  
इतिनामान्तरं । तन्मूलभेदौ पडण्टकौटिकौ ॥ 20

६१-तत्पट्टे एकषष्टितमः श्रीविजयसिंहसूरिः ॥

तस्य वि० चतुश्चत्वारिंशदधिके षोडशशतवर्षे १६४४ मेदनीपुरे  
ओसवंशे पितृनत्थुमल्ल-मातृनायकदेगृहेजन्म, चतुःपंचाशदधिके १६५४  
दीक्षा, त्रिसप्तत्यधिके १६७३ वाचकपदं, वि० द्वयशीत्यधिके १६८२ माघ  
शुक्लपष्ठीसोमे इलादूर्गेसूरिपदं, नवाधिके सप्तदशवर्षे १७०६ सूरौ विद्य- 25  
माने एव सुरपदं ॥

६२-तस्यै द्विपष्ठितमः श्रीसत्यविजयगणि ॥

तस्य अशीत्यधिके षोडशशतवर्षे १६८० सपादलक्षदेशे लाडलुग्रामे  
जन्म, पिता वीरचन्द्रो, माता वीरमदेवी, गृहस्थाभिधान शिवराज, चतुर्न-  
वेत्यधिके १६६४ दीक्षा, एकोनत्रिंशदधिके सप्तदशशतवर्षे १७२६  
सोजतग्रामे ५०पद०, पट्पचाशदधिके १७५६ वा सप्तपचाशदधिके ५७  
अणहिस्रपुरपत्तने स्वर्ग ॥

5

तस्य ५० कर्पूरविजयगणि-पकुशलविजयगणिनौ शिष्यौ ।

तस्मिन्काले तस्मिन्समये कालदोषात् निर्ग्रथेषु प्रमादबहुल क्रि-  
याशैथिल्य प्रवर्तित । तद्दृष्ट्वा दूनमनसा परमवैरगिकेण येन घोरतर्पस्विना  
भगवता सुरैराज्ञया उ०विनयविजय-उ०यशोविजयादिसहायेन  
क्रियोद्धारश्चक्रे । “ये क्रियोद्धार शिश्रियुस्ते साववो ऽन्ये तु यतय” इति 10  
तदा ख्यातिरभूत् । साग्वोपि तत आरभ्य यतिभेदचिन्ह कापायिक वस्त्र  
दधुर्या प्रगृत्तिरद्यापि तद्रूपैव । यतयोपि सितवस्त्रधारिण परिग्रहिण  
श्रौपथ-मत्र-तत्रविद्यया ख्याता दृष्टिपथभवतरन्ति ॥

ततो मुनिभि सूरिपदग्रहणाय मतातरेण तु सर्वगच्छनायकपद-  
ग्रहणाय विज्ञप्तो य उवाच-“यस्मिन्नविरूढा गणधरास्तत्र मादृशो लघु- 15  
नार्हो, माभूत्तस्यपूज्यपदस्याशातना अह मुनिरेव श्रेयानिति” कृत्वा न  
स्वीचकार सूरिपदमिति श्रूयते ॥

तस्य विशेषचरित्र श्रीजिनहर्षनिवध्यात् तन्निर्वाणरासतो ज्ञेय ॥

तत्समये प्रभाषका —

१-श्रीग्रानन्दधन । ये तपागच्छे वैराग्यपूर्णा निस्पृहिणस्तत्त्ववे- 20  
दितोऽध्यात्मशास्त्रेण उ०यशोविजयकृतमहुमानस्तथा योगिराजोऽभूवन् ।  
तत्कृति-चतुर्गतिस्तथा द्विममतिपदसप्रदश्च ॥

२-उ० श्रीविनयविजयगणि । य श्रीहीरविजयसूरि-शिष्यवा-  
चनोत्तमकीर्तिविजयस्य शिष्य कारया उ०यशोविजयानामहपाठी परमशा-



तरसः नित्यत्रिशतीश्लोककंठाप्रशक्तिः वि० अष्टत्रिंशदधिके सप्तदशशत  
१७३८ वर्षे रान्देरग्रामे स्वर्गमाक् ॥

तत्कृतयः—लोकप्रकाशः ( श्लो० २०००० ), हेमलघुप्रक्रिया, तद्-  
बृहद्बृत्तिः, नयकर्णिका. शांतसुधारसभावना, सुखबोधिकानामवृत्तिः,  
सूर्यपुरचैत्यस्तवः (वि० सं० १६८६) चतुर्विंशतिस्तवनानि, स्तवाद्याः ७  
विनयविलासः, चत्तारीअट्ट०चैत्यस्तवनं, ऋषभविनति, श्रीपालरासश्च + ॥

३—३०श्रीयशोविजयगणयः ॥ येजगद्गुरुश्रीहीरविजयसूरिशिष्य-  
उ०कल्याणविजयगणि-शिष्यप्रमयेरत्नमंजूपाशुधधिकृतपं०लाभविजयगणि-  
शिष्यश्रीनयविजयस्य शिष्याः ॥ तेषां विक्रमादनुमानतः पंचापदधिके षोड-  
शशतवर्षे १६५० जन्म, अष्टपंचाशदधिके १६५८ दीक्षा, × वि० अष्टाद- 10  
शाधिकेसप्तदशशत१७१८वर्षे वाचकपदं, वि० पंचचत्वारिंशदधिके १७४५  
दर्भावत्यां स्वर्गः ॥ ÷ “न्यायविशारद न्यायाऽऽचार्य महामहोपाध्याय”  
इत्यादिनि विरुदानि ॥ =

+ तेषां शिष्य परंपरा चैवम्—पं० नयविजयः पं०उत्तमविजयः  
पं० नरविजयः पं० मेघविजयः पं० केसरविजयः पं० शांतिविजयः पं० विद्याविजयः  
पं० लक्ष्मीविजयः (यः धोराजीनगरे कालगतः) पं० गुलावविजयः पं०चारित्रविजयः  
(यः वि० सं० १६८५ वर्षे पुण्यपत्तने कालं गतः) ।

× अयं वर्षनिर्णयो त्रिचरणार्हः ।

÷ तत्ररणशिलालेखः—संवत् १७४५ शा० १६१० मार्गशीर्षशुक्लैकादशी ।  
श्रीहीरविजयसूरीश्वर शिष्यपं०श्रीकल्याणविजयगणि शिष्यपं०लाभविजयगणि शिष्य-  
पं०जीतविजयगणि सोदरा सतीर्थ्याः पं० श्रीनयविजयगणि शिष्यश्रीजशविजय-  
गणिनां पादुका कारापिता ॥

= पूर्वं न्यायविशारदत्वविरुदं काश्यां प्रदत्तं बुधै-

न्यायाच्चार्यपदं ततः कृतशतग्रन्थस्य यस्यापितम् ॥

—इति प्रतिमाशतकप्रशस्तौ १७ श्लोकार्धे, ॥

ते च द्विघट्यामेव देवसीप्रतिक्रमणस्मृतिकारका नीत्यपचशतश्लो-  
ककरणबुद्धय सवेगरगिण बालब्रह्मचारिण पंडितदीयमानोद्भिन्नयौवना  
मुखपाकन्याया परित्यागिण परमतार्किका प्रतिक्रमणादेशे एव भगवती-  
स्वाध्याय—समकितसडमट्टीस्वाध्यायरचयितार अनौष्ठ्यवादाः अष्टाधि-  
कगत न्यायप्रथप्रणेतार द्विलक्षप्रमाणप्रथब्रह्माणो युगैकस्तभा सिध्वैका- 5  
रमत्रा अवधानपटव प्रकाण्डशासनरागा श्रुतकेवलिप्रतीतिकारणम् ॥

तेपागुरुभ्राता श्रीपद्मविजयो गणि ।

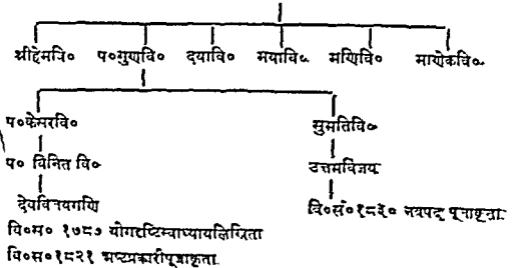
शिष्या श्रीहेमविजयाद्या. यन्नामानि स्पष्टतया नोपलभ्यते + ॥

तत्कृता सस्कृतग्रन्था—अध्यात्मोपदेश, अध्यात्मसार, अ- 10

ध्यात्मोपनिषद्, अध्यात्ममतखण्डनवृत्ती, अध्यात्ममतपरीक्षावृत्ती, अल-  
कारचूडामणिवृत्ति, अष्टसहस्रीवृत्ति, अनेकान्तव्यवस्था, आत्मख्याति,  
आदिजिनस्तवनम्, आराधकविराधकचतुर्भङ्गी, उपदेशग्रहस्यवृत्ती, ऐन्द्र-  
स्तुतिवृत्ती, कर्मप्रकृतिवृत्ति, काव्यप्रकाशवृत्ति, कूपदृष्टान्त, गुरुत्वनि-  
र्णयवृत्ती, छन्दश्चूडामणिवृत्ति, जैनतर्कपरिभाषा, तत्त्वार्थवृत्ति, तत्त्वलोक- 15  
वृत्ति, तत्त्वविचेक, त्रिसूत्र्यालोकविधि, द्रव्यालोक, द्वादशारण्यचक्रो-  
ध्वारवृत्ति, द्वात्रिंशद्द्वात्रिंशिकावृत्ती, देवधर्मपरीक्षा, धर्मपरीक्षावृत्ती,  
धर्मसग्रहटिप्पणकम्, नयप्रदीप, नयोपदेशवृत्ती न्यायरखण्डनखण्डनराद्यम्,

+ तत्राप्तशिष्यपरंपरा ॥

३०श्रीयशोविजयगणि



न्यायालोकः पञ्चनिर्ग्रन्थि, पातञ्जलयोगसूत्रचतुर्थपादवृत्तिः, परमज्योतिः-  
 पञ्चविंशतिका; परमात्मविंशतिका, प्रतिमास्थापनन्यायः, प्रतिमाशतक-  
 वृत्ती; मङ्गलवादः, मार्गशुद्धी, यतिदिनचर्या, यतिलक्षणसमुच्चयः, योगविं-  
 शिकावृत्तिः, विचारबिन्दुः, विधिवादः, वीरस्तववृत्ती, वेदान्तनिर्णयः, वैरा-  
 ग्यकल्पलता, समाचारीप्रकरणवृत्ती, स्याद्वादमञ्जूपा; सिद्धान्ततर्कपरि- 5  
 षकारः, सिद्धान्तमञ्जरीवृत्तिः, श्रीगोडीपार्श्वनाथस्तोत्रम्, श्रीशंखेश्वरपार्श्व-  
 नाथस्तोत्रम्, श्रीसमीपार्श्वनाथस्तोत्रम्, स्तोत्रसंग्रहः, शठप्रकरणम्, षोड-  
 षप्रकरणवृत्तिः, ज्ञानबिन्दुः, ज्ञानार्णवः, ज्ञानसारवृत्ती, रहस्यपदांकित-  
 ग्रन्थानामष्टोत्तरशतम् × ॥

गौर्जरीकृतिः—अध्यात्ममतपरीक्षास्तबक, आनन्दघनस्तुतिअष्टक, 10

उपदेशमाला, जशविलास, जम्बुस्वामीरास, तत्त्वार्थसूत्रस्तबक, द्रव्य-  
 गुणपर्यायरासतथास्तबक, दिग्पटचोराशीबोल, पञ्चपरमेष्ठिगीता, ब्रह्म-  
 गीता, लोकनालितथास्तबक (रचनावि० सं० १६६५) विचारबिन्दुतथा-  
 स्तबक; श्रीपालरासअन्त्यभाग, समाधिशतक; समताशतक, समुद्रवहाण-  
 संवाद, सम्यकत्वचोपाइ साधुवंदनमाला, ज्ञानसारस्तबक इत्यादिग्रन्थाः ॥ 15  
 कुमतिखंडनस्तवन, त्रणचोवीशी, वीशी, दशमतस्तवन, नयगर्भितशान्ति-  
 जिनस्तवन; निश्चयव्यवहारगर्भितस्तवन, पार्श्वनाथस्तवनद्विक, महावीर-  
 स्तवन, मौनएकादशीस्तवन, वीरहुंडीस्तवन श्रीसीमन्धरचैत्यवंदन, श्रीसीम-  
 न्धरविनति, श्रीसीमन्धरस्वामिवृहत्स्तवन आवश्यकस्तवन । इत्यादिस्तवाः

अंगउपांगस्वाध्याय (वि० सं० १७४४) अठारपापस्थानकस्वाध्याय, 20  
 अमृतवेली, आठदृष्टि, आत्मप्रबोध, उपशमश्रेणि, चताडपडतानीस्वाध्याय  
 चारआहार, ज्ञानक्रिया, पांचमहाव्रतभावना, पांचकुगुरु, प्रतिक्रमणगर्भ-  
 हेतु, प्रतिमास्थापन, यतिधर्मवत्रिशी, स्थापनाकल्प, सुगुरु, संयमश्रेणी,  
 समकितनासडसठबोलनीस्वाध्याय, हरियांली, हितशिक्षा इत्यादि स्वाध्यायाः॥

× नयरहस्यम् भाषारहस्यम् स्याद्वादरहस्यम् प्रमारहस्यम् इत्यादि ।  
 वैः वि०सं० १६६५वर्षे हुंगरपुरे धातुसंग्रहो लिखितः, लोकनालिकापि कृता ॥

४—३० श्रीमानविजयगणि ॥ य श्रीहीरविजयसूरि—पट्टधरश्री-  
विजयसेनसूरि—पट्टधरश्रीविजयतिलकसूरि—पट्टधरविजयानन्दसूरि—पट्ट-  
धरविजयराजसूरिराज्यप्रती श्रीविजयानन्दसूरि—शिष्यश्रीशातिविजयस्य  
शिष्यो धर्मसग्रहकर्ता (वि०स०१७३१) ॥

५—श्रीआनन्दविमलसूरीणा शिष्यप०हर्षविमलस्य प्रमेयरत्नमजू 5  
पाशुधिवर्तु सतताप्रनुक्रमेण जयवि० कीर्तिवि० विनयवि० श्रीधीरविम-  
लगणिना शिष्य श्रीज्ञानविमलसूरि ॥ यो साधुवदनरास कल्याणमन्दिरस्त  
वन-चैत्यपरिपाटी-चैत्यवदन-स्तव-स्वाध्याय-स्तुति-शतशोसिद्धाचलस्त-  
वन-आनन्दघनचतुर्विंशतिस्तवक-तीर्थमाला (वि० १७५५) श्रीपालचरि-  
त्रादिक रचयाचकार । य क्वचित्त्वग्रन्थे उ० यशोविजय स्मरतिस्म ॥ 10

६—३० उदयरत्न । ख्यातमहाकवि बहूना गूर्जरग्रथाना  
प्रणेता × ॥

७—३० मेघविजयगणि । लूम्पकमते मेघजीऋपेर्मेघराजनाम्ना  
प्रशियाय, अत्र वि० एकोनपञ्चदशके पोढशगते १६५६वर्षे श्रीविजयसेन-  
सूरिहस्तदीक्षित, श्रीहीरविजयसूरि-शियाउ०कनकविजय-शिष्यशील- 15  
विजय—शिष्यमिधिविजय—शिष्यकृपाविजयाना शिष्य ॥

× तत्वहरपर—५८ श्रीआनन्दविमलसूरि, ५९ श्रीविजयदाससूरि, ६०  
श्रीराजविजयसूरि, ६१ श्रीरत्नविजयसूरि, ६२ श्रीहीररत्नसूरि, ६३ श्रीजयरत्नसूरि,  
६४ भायरत्नसूरि, ६५ दानरत्नसूरि, ६६ कार्तिरत्नसूरि, ६७ मुक्तिरत्नसूरि,  
६८ पुण्योदयरत्नसूरि ६९ अमृतरत्नसूरि, ७० चन्द्रोदयरत्नसूरि, ७१ सुम-  
तिरत्नसूरि (ग्रेडा)

तगुटरपर—६२ श्रीहीररत्नसूरि, लब्धिरत्न मेघरत्न शिवरत्न विद्विरत्न  
उ० उदयरत्न उषमरत्न जिनरत्न छमारत्न राजरत्न अनोपरत्न तेजरत्न  
उ० गुपरत्न (विद्यमान)

—(जैनदुग पु० ३ अ० ११-१२, वि० म० ११८२)

( ६० ) श्रीराजविजयसूरिशिष्यो देवविद्वलगणि पाण्डवचरित्रकृत् ॥

तत्कृतयस्तु—देवानन्दाभ्युदयकाव्यं, श्रीशांतिनाथचरित्रं (काव्यं) विजयदेवमहात्म्यवृत्तिः, दिग्विजयः (श्रीविजयप्रभसूरिचरित्रं), चंद्रप्रभाव्याकरणं (श्रीसिद्धहेमव्याकरणप्रक्रिया वि० सं० १७५७ आगरा) मेघदूतसमस्या, युक्तिप्रबोधः (दि० तेरहपन्थखंडनं), सप्तसन्धानमहाकाव्यम्, त्रिपट्टिशलाकापुरुषचरित्रम्, मेवमहोदयः, ब्रह्मबोधः, मातृका- 5 प्रसादः, श्रीपार्श्वनाथनाममाला, उदयदीपिका, त्रिणि पत्राणि च ÷ ॥

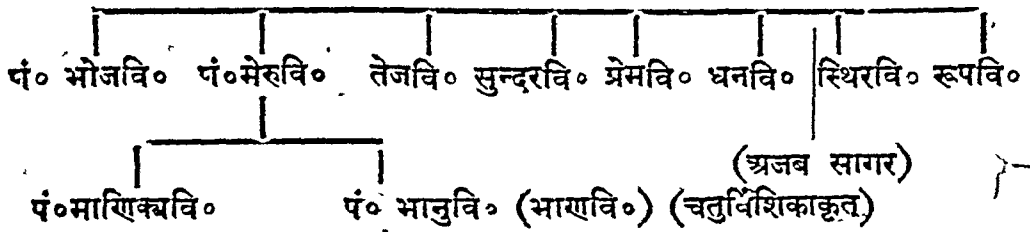
८—श्रीदेवचन्द्रो गणिः—श्रीखतरगच्छे जिनचंद्रसूरि-शिष्योपाध्याय पुण्यप्रधान-शिष्यउ०सुमतिगणि-शिष्यउ०राजसागर-शिष्यज्ञानधर्मजी-शिष्य दीपचंद्रगणिस्तशिष्यश्रीदेवचंद्रोगणिः परमशांतः द्रव्यानुयोगनिष्णातः सर्वगच्छसमानहृदयः x ॥ 10

येन वाचकवर्यश्रीयशोविजयेभ्योध्यात्मरसो पीतश्च येन श्रीजिन-विजय-उत्तमविजयाः पाठिताः ॥ तच्छिष्याः श्रीमतिरत्नाद्याः ॥

तत्कृतयः—ध्यानदीपिका, आगमसार, नयचक्र, ज्ञानमञ्जरीटीका, चतुर्विंशतिः विंशिका, पूजा स्तवाः प्रभंजनाप्रमुखस्वाध्यायाः इत्यादि ॥

यैः पं०क्षमाकल्याणकगणिना सह क्रियोधारश्चक्रे ततः खरतर- 15 गच्छे ऽपि काषायिकवस्त्रप्रवृत्तिरिति श्रूयते,

÷ तत् शिष्यपरंपरा ॥ उ० मेघविजयः ( वि० सं० १७५६ )



(आगरा) पं०कुशलविजयगणिः ( वि०सं० १८१० शीतलजिनप्रतिष्ठाकृत )

x तद्ग्रन्थरचनाकालस्तु वि० सं० १७४३ तः १८०४ पर्यन्त इति तस्मादयं

श्रीउत्तमविजयसमकालीन इति सयुक्तियुक्तं ॥

६३-तत्पट्टे त्रिषष्टीतमः श्रीकपुराविजयगणिः ॥

तस्य पत्तनसमीपस्थवागरोडग्रामे प्राग्घटवशे भीमजीगृहे वीराकुक्षी  
जन्म, कानजीअभिधान, वि० विंशत्यधिके सप्तदशशते १७२० वर्षे जननी-  
जेनकयोर्देवलोकगतयो वीक्षा, विजयप्रभसूरिहस्ते प्रज्ञाशपदं वि०  
पादोनाष्टादशशते १७७५ वर्षे श्रावणत्रयुलचतुर्दश्या १४ स्वर्ग । 5

६४-तत्पट्टे चतुष्पष्टितमः श्रीक्षमाविजयगणिः ॥

तस्य अर्बुदाचलसन्निधौ पोयद्राग्रामे कलोशाह-चनादेगृहे ओसवशे  
चामुण्डागोत्रे त्रि० द्वाविंशत्यधिके सप्तदशशते १७०२ वर्षे सीमचद्रनाम्ना  
जन्म, चतुश्चत्वारिंशदधिके १७४४ वर्षे ज्येष्ठसितत्रयोदशीदिने गुरु  
भ्रातृकवि प० श्रीवृद्धिप्रिजयहस्तेन अहमदाग्रादे वीक्षा, विजयक्षमासूरि- 10  
हस्तेन प० पद, पडशीत्यधिके १७२६ आश्विनमासे स्व प्रयाण ॥ येन  
सप्तशतजिनप्रतिमा प्रतिष्ठापिता ॥

तत्कृतय — पार्श्वनाथजिनस्तवनचैत्यवन्दनस्तुत्याद्या

तस्य शिष्यश्रीयशोविजय श्रीतत्त्वार्थसूत्रस्तत्रकस्तवादिकर्ता ।

६५-तत्पट्टे पचपष्टितमः प० श्रीजिनविजयगणिः ॥ 15

तस्य श्रीमालज्ञाति पिताधर्मग्रामो मातालाडकुमारी चित्रमातृ द्विप-  
चाशदधिके सप्तदशशते १७४२ वर्षे अहमदाग्रादे जन्म, जन्मनाम खुशालचद्र

त्रि० सप्तन्यधिके १५७० वर्षे कार्तिककृष्णपष्टया अहमदाग्रादे  
वीक्षा, त्रि० ग्नाशीत्यधिके १७२१ वर्षे गुरुणा हस्तेन जम्बूसरे  
प्रज्ञाशपद, द्वितीय ण्य वर्षे गन्धानुज्ञान, एकोनाष्टादशशते १७६६ वर्षे 20  
श्रावणशुक्लदशम्या पादराग्रामे स्वर्गगमन ॥

तगौर्जरीरुति—ज्ञानपत्रमाम्ब एकाग्नीम्ब जिनचतुर्विंशिका  
फूर्परिजयगणिग्याध्यायो गुम्ब्याध्यायश्च ( स० १७७१ पट्टेन )

६६--तत्पट्टे एकोनसप्ततितमःपं०श्रीकीर्तिविजयगणिः ॥

तस्य वि०एकपञ्च्यधिकषष्टादशतवर्षे दीक्षा, ब्रह्मचरःशिष्याः ॥

तच्छिष्यो जीवविजयः सकलतीर्थ-शांतिजिनस्तत्रकर्ता ॥

७० — तत्पट्टे सप्ततितमःश्रीपं०कस्तूरविजयगणिः ॥

तस्य वि०सप्तत्रिंशदधिके अष्टादशशतवर्षे १८३७ प्रह्लादनपुरे जन्म, 5

वि० सप्तत्यधिके १८७० दीक्षा ॥

७१ — तत्पट्टे एकसप्ततितमः पं०श्रीमणिविजयगणिः ॥

तस्य वीरमगामसन्निधौ अघारग्रामे द्विपञ्चाशदधिके अष्टादशशत-  
वर्षे १८५२ जन्म, पिता जीवणदास, माता गुलाबबाइ, स्वनाम मोतिचंद,  
त्रयो भ्रातरः पानु भगिनी, सप्तसप्तत्यधिके १८७७ पालीग्रामे दीक्षा, पंचत्रिं- 10  
शदधिके एकोनविंशतिशतवर्षे १९३५ आश्विनधवलाष्टम्यां ८ अहमदाबा-  
दनगरे स्वर्गः ॥ यो महातपस्वी, अप्रतिबन्धविहारी प्रशान्तमूर्तिश्च ॥

तत्सप्तर्षयः शिष्याः-श्रीअमृतविजयः श्रीपद्मविजयः पं०श्रीबुधिवि-  
जयगणिः पं०श्रीगुलाबविजयगणिः श्रीहीरविजयः पं० श्रीशुभविजयः  
पं०श्रीसिद्धिविजयः ॥ प्रज्ञांशगुलाबविजयसिद्धिविजयौ सांप्रतं शासनम- 15  
लंकुरुतः स्म ॥

७२ — तत्पट्टे द्विसप्ततितमः श्रीबुधिविजयगणिः ॥

तस्य सुखान्तसुचितस्य वि०पञ्च्यधिकअष्टादशतवर्षे १८६३ पंचनदे  
जन्म, अष्टाशीत्यधिकेवर्षे १८८८ अजिम्हब्रह्मचर्येणैवादी दुःढकमते बुटेरा-  
यजीनाम्ना व्रतस्वीकारः वि०त्र्यधिके एकोनविंशतिशते १९०३ वर्षे शुद्धधर्म- 20  
श्रद्धानं, वि०द्वादशाधिके १९१२ राजनगरे शिष्याभ्यां समं संवेगदीक्षा, अष्ट-  
त्रिंशदधिके १९३८ फाल्गुनावास्यां राजनगरे स्वराप्तिः, भगुभाइपुत्रदत्त-  
पतभाइ इत्यनेन निर्वाणोत्सवः कृतः ।

यः मुखपट्टीं विना दुःढकसाधुवेपेणैव अष्टौ वर्षाणि शुद्धधर्मदेशकः,  
सिद्धगिरियात्राकृत्, पंचनदे संवेगमतद्योतकेषु प्रथमः, मुहपत्तिचर्चा- 25  
ग्रंथकृत्, परात्मतत्वानंदी, महान्योगी, निःस्पृहः ।

तच्छिष्याष्टकम्—

( १ ) प्रथम श्रीमुक्तिविजयो गणि गणनायक चारित्रधर्मयुग-  
प्रवर्तक ।

( २ ) द्वितीयो मुनिश्रीवृद्धिचंद्र । यस्य पचनदे रामनगरे नवत्यविके  
अष्टादशशतवर्षे त्रयोसवशे जन्म, अष्टाविके एकोनविंशतिशते वर्षे दुःढक- 5  
मते दीक्षा, द्वादशाविके सवेगदीक्षा, एकोनपचाशदविके भावनगरे स्वर्ग ॥

तच्छिष्या — श्रीकेवलविजय प०श्रीगभिरविजय प०चतुरविजय  
श्रीहेमविजय श्रीविजयधर्मसूरि श्रीविजयनेमिसूरि श्रीप्रेमविजय-  
श्रीऋषूरविजय उत्तमविजय ।

( ३ ) तृतीयो मुनिनीतिविजय । यच्छिष्या— 10

प०विनयविजय, श्रीभक्तिविजय, शान्तात्मा सिध्दिविजय,  
तिलकविजय, मोतिविजय, प्रतापविजय, सुदरविजय, दर्शनविजय,  
चारित्रविजय ।

( ४ ) चतुर्थ. प०आनदविजय ।

यच्छिष्या — श्रीहर्षविजय, मानविजय कुमुदविजय । 15

( ५ ) पचमो मोतिविजय । यच्छिष्यौ चद्रविजय-गुणविजयौ ।

( ६ ) षष्ठ श्रीविजयानदसूरि पचापे जैनधर्मस्थापक न्यायाभोनि-  
धिरितिरयातिमान् दयानदसरस्वतीविजेता ॥ यस्य पचनदे लहेराग्रामे गणेश-  
शरामगृहे रूपाकुक्षौ वि०त्रिनवत्यविके अष्टादशशतवर्षे १८६३जन्म, वि०  
एकादशाविके एकोनविंशतिशतवर्षे १९११मृगाशिरपचम्या दुःढकमतदीक्षा, 20  
एकत्रिंशदविके १९३१ राजनगरे जैनदीक्षा, त्रिचत्वारिंशदविके १९४३  
वर्षे कार्तिककृष्णपचम्या सूरिपद, द्विपचाशदविके १९५२ प्रथमज्येष्ठ-  
शुक्लसप्तमीनिशाया गुजरानवालाया स्वर्गमन्त ॥

यत्कृतप्रथास्तत्त्वनिर्णयप्रासाद जैनतत्त्वादर्श-अज्ञानतिमिरमास्कर-  
सम्यक्त्वशल्योद्धार-जैनमतवृत्त-चिकागोप्रश्नोत्तर-जैनप्रश्नोत्तरसंग्रह— 25  
पूजा-चतुर्विंशतिस्तव-स्वाध्याया ।



यच्छिष्याः श्रीमन्तो लक्ष्मी० संतोष० रंग० रत्न० चारित्र० कुशल०  
प्रसाद० उद्योत० सुमति० वाचकवीर० प्रवर्तककांति० जय० शांति०  
अमरविजयाः ।

( ७ ) सप्तमः तपस्वी श्रीखांतिविजयः पंचनदीयः पट्टभक्ततपो-  
ऽभिग्रही उग्रतपस्वी । यच्छिष्याः-मणिक० मोहन० खुशाल० प्रतापविजयाः । 5

( ८ ) अष्टमः श्रीदानविजयः ।

तत्समये श्रीआनंदविमलसूरितो विमलशाखायां क्रमशः ऋद्धि  
विमल-कीर्तिविमल-वीरविमल-महोदयविमल-प्रभोदविमल-मणिविमल-  
उद्योतविमल-दानविमलस्य शिष्यः प्रज्ञांशदयाविमलः ॥ तथा हीर-  
विजयसूरितः क्रमेण विजयशाखायां ऋद्धि० चारित्र० रंग० तेज० 10  
यशवंत० कुशल० पं० जीत० श्री० जय० पं० हर्ष० चंद्रविजयाः तन्  
शिष्यः प्रज्ञांशहेतविजयः ॥ तथा ततएव सागरशाखायां शिष्यक्रमेण  
उ० सहजसागर-उ० जयसागर-पं० जीतसागर-मानसागर-मयगलसागर-  
पद्मसागर-स्वरूपसागर-ज्ञानसागर-मथासागराः तत्शिष्यस्तपस्वीनेम-  
सागरः ॥ श्रीरूपवि० शिष्यअमीवि० शिष्यसौभाग्यवि० शिष्यपं रत्नविजयः ॥ 15  
खरतरगच्छेऽपि आप्रह्लादनपुरात् तपागच्छाचारः सौम्यमूर्तिः श्रीमोहन-  
लालजीमुनिः ॥

तत्समये श्रीनेमसागरशिष्यश्रीरविसागरशिष्यात् शांतिसागरात्-  
स्वेच्छावृत्तिर्ब्रतविधितपोविरोधो मनस्तोषधर्मः “शांतिसागरमतो” निर्गतः ।

तथान्यदर्शनेषु स्वामिनारायण, ब्रह्मसमाज, कुका, अहमदशाह- 20  
फीरका, आर्यसमाज एते मता निर्गताः इति ॥

७३ — त्रिसप्तातितमः श्रीमुक्तिविजयगाणिः ॥

तस्य वि षडशीत्यधिके अष्टादशशतवर्षे १८८६ पंचनदे श्यालकोटे  
जन्म, द्वयधिके एकोनविंशतिशतवर्षे १६०२ श्रीबुटेरायजीहस्तेन दुंडक-  
मतदीक्षा, द्वितीयवर्षे संवेगधर्माभिमुखता, द्वादशाधिके १९१२ गुरुणा सह 25

सवेगदीक्षा, त्रयोविंशत्यधिके १८२३ पञ्चदशविमलगणितहस्तेन गणितपद,  
पञ्चचत्वारिंशदधिके १६४४ मृगशिर्षकृष्णपष्टया६ भावनगरे स्वर्ग, दादा  
वाडीउद्याने अग्निसंस्कार, मोतिशाहू क्रमध्ये सिध्दगिरौ मूर्तिप्रतिष्ठापन ।

य सवेगमुर्तिं शिष्टप्रलाभोदय चारित्रधर्मकदानि एकद्वत्रमुनि-  
साम्राज्याप्रपति मुहपत्तिचर्चायादप्रिजेता शातिसागरमतनिरसन युग 5  
प्रवान । यदुपदेशात् श्रेष्ठिप्रेमाभाइ भगिनीञ्जमवाइ इत्यनया स्वावास  
पौप प्रशालाचै दत्त द्वौमिद्वगिरिमधौ निर्गतौ (वि०१६०१ वि०स० १६४४)  
द्वितीयसवेन सह त्रिहारे घट स्फुटितो बहूना निपेप्रेऽपि विहार कृत पाद-  
लिप्तेपुरे चतुर्भासक्रमपिनात, ततो भावनगरे स्वर्ग युगप्रवाने गते शासने  
कलि समागत ॥ श्रीवृद्धिचन्द्रप्रमुखा गुरुभातरस्तद्वस्तदीक्षिता एव येन 10  
नैके शिष्या गुरुबन्धुभ्यो दत्ता ॥ येन महेशानपुरे सवेगिमुनिप्रचार  
कृत । पादलिप्तेपुरे श्रीदर्शनविजय प्रेय यतिरुद्ध मुनिव्याख्यानमुद्धा-  
टित यदद्यापि निरतराय समस्ति ।

सूरिपदप्रदानतत्पर प्रेमाभाइश्रेष्ठिन येनोक्त—श्रेष्ठिन् अत पर पुन  
रेतन्नवाच्य यदि श्रीमत्यत्रिजयगणिरपि प्रतिष्ठापदमानहानिभिया सूरिपद 15  
न ललौ तदाहकथ तदयोग्य ? मम गणितपदमपि महत् पालनेनैव प्राप्त-  
पदव्या फलाप्तिरन्यथातु सूरयोऽपि नरकगामिन सूत्रे कण्ठिता इति ।

तस्य शिष्या —(१) प्रशस्तागमाभ्यामिदेवत्रिजय (२) गुणविजय  
(३) हसत्रिजय (४) गुलानत्रिजय (५) श्रीत्रिजयकमलसूरि (६)थोभण-  
विजय (७) महावैयाकरणन्यायविशारदो दानत्रिजय इति । 20

तेषु श्रीमद्गुलानत्रिजयस्य शिष्या—मणिविजय भगलविजय,  
नरेन्द्रत्रिजय प्रधानविजय ।

७४—तस्य चतु सप्ततितम श्रीविजयकमलसूरिः ॥

तस्य वि त्रयोदशाधिके एकोनत्रिंशत्तिशते वर्षे १६१३ चैत्रशुक्ल-  
द्वितीयाया = पादलिप्तेपुरे कोरडीयागोत्रे श्रेष्ठिदेवचन्द्रगृहे मेघनादकृष्ण- 25

जन्म, कल्याणचन्द्र नाम, चत्वारो भूतरः, मृतयोर्मातृपित्रोः षड्त्रिंशदधिके १६३६ माघशुक्लाष्टम्यां राजनगरे दीक्षा, द्वितीयवर्षे १६३७ कार्तिकासित-  
द्वादश्यां उपस्थापना, वि० सप्तचत्वारिंशदधिके १६४७ ज्येष्ठशुक्लत्रयोदश्यां  
१३पं० श्रीहेतविजयहस्तेन लींबड़ीनगरे गणपदं पन्यासपदं, वि० त्रिसप्तत्य-  
धिके १६७३ माघ शुक्लषष्ठ्यां ६ रविवारे राजनगरे पं० श्रीदेवविजय-  
गणिः, पं० श्रीमोहनविजयगणिः, प्रवर्तिनिआर्यागुलावश्रीजी, साध्वी-  
प्रेमश्रीजी, नगरश्रेष्ठिकस्तूरभाइ, श्रेष्ठिविमलभाइ, श्रेष्ठिमातागंगामा, श्रेष्ठि-  
नीमुक्ताबाइ, प्रमुखसमप्रसंघेनप्रदत्तं सूरिपदं ॥

तच्छिष्याः—(१) श्रीभावविजयः, (२) पं० श्रीकेसरविजययो गणिः,  
(३) श्रीविनयविजयो गुरुः, × (४) पं० देवविजयगणिः, (५) पं० मोहन- 10  
विजयगणिः व्याख्याता (६) श्रीमोतिविजयः ॥ तथा हेतवि० रामवि०  
नयवि० ज्ञानविजया निरपत्या एव स्वर्गभाजः ॥

यः करुणावत्सलः शांतप्रतिजो महातपस्वी आबालब्रह्मचारी सूरि-  
शेखरो भगवान् क्षुर्विधसंघेन सह समागत्य संप्रति पादलिप्तपुरमलंक-  
रोति, जीवेभ्यो दुःखौषधिरूपं धर्मलाभं ददन् जगत्कल्याणं वाञ्छति स्म ॥ 15

सम्प्रति धुरिणः—श्रीविजयनेमसूरिः श्रीविजयकमलसूरिः श्रीविजय-  
धर्मसूरिः श्रीबुद्धिसागरसूरिः पं० सिद्धिविजयगणिः परमकारुणिकोमुनि-  
सिद्धिविजयः पं० चतुरविजयगणिः परमक्रियारुचिः श्रीजीतविजयः आग-  
मनिष्णातः पं० आणंदसागरगणिः पं० हरखमुनिश्च

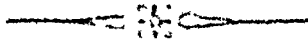
× श्रीविनयविजयस्थविगणां वि० सं० १६१६ वै० शु० ६ जामनगरे जन्म,  
वि० सं० १६२५ जामनगरे लघुदीक्षा, वि० सं० १६२७ महेसानपुरे पोषकृष्ण ११ छेदोप-  
स्थापना, १६८३ का० कृ० ६ जामनगरे स्थविरपदं, वि० सं० १६८८ षोष कृ० ६,  
जामनगरे स्वर्गः ॥

॥ प्रशस्ति ॥

जीयासुन्यायविभवा' यशोविजयवाचद		
गुरुकुलहिते दत्ता स्मृतिप्रत्यक्षमूर्तय	१	
वर्द्धमानात्समारभ्य गुरुमाला गुरुरैर्वरा		
वर्द्धमानात्सहस्राब्द धीसूच्या सूत्रिता नवा	२	5
श्रीमद्द्विजयकमल—सूरीणामाज्ञयाकृता		
गुप्तिध्यानजिनेवर्षे पञ्चम्या श्रावणे सिते	३	
तेषा शिष्यविनय—विजयस्यान्तेवासिना		
चारित्रविजयेनैषा पादलिप्ते पुरे लघु	४	
इति श्रीमती गुरुमालापट्टावली समाप्ता		10
धर्मचारित्रशिष्येण, अमरचन्द्रसूनुना		
प०त्रिभूवनदासेन, शुद्धिकृत्य च चित्रिता	१	

## श्रीमन्महाकविरुद्रपरम्पर

( कर्ता — श्रीदेवदामलगणिः )



अथो पुरासन्भरते वृषाङ्कमुखाश्चतुर्विंशतितीर्थनाथाः ।  
 बाह्यान्यवाह्यानि तमांसि हन्तुं कृतद्विरूपा इव भानुमन्तः ॥१॥  
 इक्ष्वाकुवंशाम्बुविशीतभासां द्वाविंशतिस्तीर्थकृतां वभूव ।  
 यया तमःपङ्कमपास्य पन्था प्राकाशि सिद्धेः शरदेव विश्वे ॥२॥  
 वभूवतुद्रो भुवनप्रदीपौ जिनौ यदूनां पुनरन्यवाये । 5  
 अरिष्टनेमिर्मुनिसुव्रतश्च स्फूर्जद्सुजाविन्द्रियवेशमनीव ३॥  
 सिद्धार्थभूकान्तसुतो जिनानामपश्चिमोऽजायत पश्चिमोऽपि ।  
 शशी व्यभात्पङ्किलपङ्कजास्यकादम्बवद्यस्य यशःसुधावधौ ॥४॥  
 बाल्येपि हेमाद्रिरकम्पि येन प्रभञ्जनेनेव निकेतकेतुः ।  
 श्रीद्वादशाङ्गी च यतः प्रवृत्ता गुरोर्गिरीणामिव जहनुकन्या ॥५॥ 10  
 एकादशासन्गणधारिधुर्याः श्रीइन्द्रभूतिप्रमुखा अमुष्य ।  
 आर्योपयामे पुनराप्तमूर्ति रुद्राः स्मरं हन्तुमिवेहमानाः ॥६॥  
 वभूव मुख्यो वसुभूतिसूनुस्तेपां गणीनामिह गौतमाह्वः ।  
 यो वक्रभावं न वभार पृथ्वीसुतोऽपि नो विष्णुपदावलम्बी ॥७॥  
 यत्पाणिपद्मः सपुनर्भवोऽपि दत्ते नतानामपुनर्भवं यत् । 15  
 शिष्यीकृता येन भवं विहाय शिवं श्रयन्ते च तदत्र चित्रम् ॥८॥  
 सूर्यस्य रश्मीनवलम्ब्य वज्रावलम्बरश्मीनिव यः शयाभ्याम् ।  
 नन्तुं जिनानार्पभिक्लृप्तमूर्तीनष्टापदोर्वीधरमारुरोह ॥ ९ ॥

१—तपः कृशाङ्गास्तं शैलमारोहं न वयं क्षमाः ।

अद्विष्यति कथं प्रौढदेहोऽयं गजराजवत् ॥

कथ लभेतास्य तुलां सुरद्रुयूँद्यस्य नामापि पिपतिं कामान् ।  
 तपस्विनोऽप्यभ्यवहारयन्यो द्विधामृतास्वाद्भुप पुपोप ॥१०॥  
 आसीत्सुधर्मा गणभृत्सु तेषु श्रीवर्धमानप्रभुपट्टधुर्य ।  
 विहाय विश्वे सुरभीतनूज क स्तात्परो धुर्यपदावलम्बी ॥११॥  
 य पञ्चमोऽभूद् गणपुगवाना किं पञ्चमी स्वेन गतिं यियासु । 5  
 यत्रोक्तिभिस्तीर्थकृता दिदीपे शुक्तिव्रजे वारिमुचामिवाङ्घ्रि ॥१२॥  
 सरस्वतीशालिलसज्जिनश्री-रगाधमध्ये रसभासमान ।  
 मिद्धात आस्ते यदुपब्रमुद्यदभङ्गभङ्ग स्मरितामिवेश ॥१३॥  
 गणीन्दुना पट्टरमा गणीन्दु पट्टश्रिया च व्यतिभासते स्म ।  
 निशा निशेगेन निशा निशेश इत्रापि शभो परिचारिचेता ॥१४॥ 10  
 यश श्रियाध कृतकुन्दकम्बु-र्जम्बुकुमारोऽजनि तस्य पट्टे ।  
 लघोरपि स्वस्य यतोऽभिभूतिं पश्यन्हियादृश्य इव स्मरोऽभूत् ॥१५॥  
 उज्ज्वाचकारैप महेभ्यकन्या मदेन्द्ररामूर्तिमतीरिवाद्यौ ।  
 नवाधिका यो नवतिं हिरण्यकोटीर्नु चेटीरिव दोपराजाम् ॥१६॥  
 वशावदीभूतजगत्त्रयस्य न पुस्फुरेऽस्मिन्कमनस्य शक्त्या । 15  
 ह्विर्भुजो भस्मितकाननस्य विस्फुर्यते किं महसाम्बुराशौ ॥१७॥

पश्यसु तेषु मार्तण्डवरानात्तान्य गौतम ।

गणभृत्त्रिलोच्यैवाऽष्टापदोर्ध्वं ययौ ध्रुवम् ॥ इति श्रमिमडलवृत्तौ ॥

सूर्यम्पाशून् मनाधिम्य, तेषामुपन्यतामपि ।

म गरुभानिशोर्द्वीय, ययौ महु गिरे गिर ॥ इतिट्टदारट्टौ, रघिन्द्रिणाचलम्पाम् ।

तथा—“ भयव गायमो जहाचरएलद्धिपनूत्पुडाभिनिम्पाण उदुत्पयड  
 जाय ते पलायन्ति” । इत्याशयकदादिगतिगहन्या । मलयगिरिट्टात्रपि अयमेव  
 पाठ । लूतानन्त्यलम्यनमिति पाठद्वयमपिगाम्यानुवारि ॥ इति म्योपजाया तदुभ्या-  
 म्यायाम् ॥

- पश्यन्तु वैदुष्यममुष्य जम्बू-प्रभोर्वपुर्भर्त्सितमत्स्यक्रेतोः ।  
 विश्वं वृषस्यन्त्यपि पांशुलेव वशीकृता येन शिवस्मतास्या ॥१८॥
- अलंचकार प्रभवप्रभुस्तत्पट्टिश्रियं पुण्ड्र इवेन्दुवक्त्राम् । 5  
 स्तेनोपि सार्थेश इवाङ्गिनो यः श्रेयः श्रियं प्रापयद्त्र चित्रम् ॥१९॥
- किं वर्ण्यते वर्ण्यगुणस्य चौर्यं-चातुर्यमस्य प्रभवस्य भर्तुः । 5  
 अहार्यमप्येप मनोऽभिधानमपाहरच्चत्रिदिवेन्द्रिरायाः ॥२०॥
- शय्यंभवो ऽभूपयदस्यपट्टं सिंहासनं पित्र्यमिवावनीन्द्रः ।  
 कलिन्दिका मौक्तिकमालिकेव यत्कण्ठपीठे विलुठत्यकुण्ठा ॥२१॥
- यूपादघस्तः प्रतिमां जिनेन्दो-र्वाचा स वाचंयमपुङ्गवस्य ।  
 दृक्संज्ञयेव स्वगुरोः किरीटी नाराचगङ्गां प्रकटीचकार ॥२२॥ 10
- वगाह्य शास्त्रं मनकाहसूनोः कृते कृतश्रीदशकालिकं यः ।  
 हरिः सुधामुद्धृतवान्सुपर्ववर्गस्य निर्मथ्य यथाम्बुनाथम् ॥२३॥
- संपूरयन्कीर्तिनभोनदीभिर्दिशो यशोभद्र गणाधिराजः ।  
 व्यभूपयत्पट्टममुष्य भूभृदधित्यकां दस्युरिव द्विपानाम् ॥२४॥
- एतद्यशःक्षीरधिनीरपूरैः संपूरितायां परितस्त्रिलोक्याम् । 15  
 अबुध्यमानोऽम्बुनिधिं स्वशय्यां पद्मेशयो ऽभूदिव पद्मनाभः ॥२५॥
- संभूतिपूर्वो विजयो गुरुस्तत्पट्टं श्रिया पल्लवयांचकार ।  
 कदम्बजम्बूकुटजावनीजकुंजं नभोम्भोद इवाम्बुवृष्ट्या ॥२६॥
- संहर्षरोषात्स्वजिघांसुमेतत्प्रतापमार्तण्डमवेद्यसाक्षात् ।  
 युयुत्सया हैहयवत्सहस्रं सहस्रभासेव करा ध्रियन्ते ॥२७॥ 20
- स तत्सतीर्थोऽजनि भद्रबाहुः सूरिः समग्रागमपारदृशवा ।  
 दशाश्रुतस्कन्धत उद्धार वज्राकराद्वज्रमिवात्र कल्पम् ॥२८॥
- उपस्रवो मन्त्रमयोपसर्गहरस्तवेनावधि येन संघात् ।  
 जनुष्मतो जांगुलिकेन जाग्रद्गरस्य वेगः किल जांगुलीभिः ॥२९॥
- यत्कीर्तिगंगां प्रसृतां त्रिलोक्यामालोक्य किं षण्मुखतां दधानः । 25  
 जगद्भ्रमीभिर्जननीं दिदृक्षुर्गंगासुतोऽध्यास्त मयूरपृष्ठम् ॥३०॥

श्रीस्थूलभद्रेण निजान्वयायस्त्रोतस्विनीनायककौस्तुभेन ।  
 विश्वत्रयी तद्व्यशसेव शोभामलम्भि तत्पट्टपयोधिपुत्री ॥३१॥  
 प्रवालमुक्तामणिमञ्जिमश्रीचित्राप्सर स्वर्द्विरदाश्वहृद्यम् ।  
 कोशाङ्गुह, प्रावृषि य सिपेवे हरिर्धनच्छायमिवाम्बुराशिम् ॥३२॥  
 पण्यागनाया किलकिञ्चितानि न लेभिरे यस्य हृदि प्रवेशम् । 5  
 धनुर्भृत सानुमत शिलाया पृपत्कपन्ते प्रहृतानि यद्वत् ॥३३॥  
 प्राङ्निर्जितश्रीरथनेमिमुत्थवीरावलीनामिव वैरशुद्धे- ।  
 विवित्सयाध्यास्य तदाश्रय यो ध्यानासिनाऽनङ्गनृप जघान ॥३४॥  
 चक्रीव रत्नानि चतुर्दशापि पूर्वाणि धत्तेऽस्म पतिर्यतीनाम् ।  
 यश्च कचिद्देवकुले स्वजामीश्चित्रीयितु सत्य इवास सिंह ॥३५॥ 10  
 येनोपदेशच्छलत स्वपाणिसज्ञाज्ञया स्तम्भतलाद्वदशि ।  
 निधिः स्वनिक्षिप्त इव प्रवासिसुहृद्गृह्णिया सद्ने समेत्य ॥३६॥  
 पट्टेऽथ तस्यार्यमहागिरिश्चापर क्रमाद्वार्यसुहस्तिसूरि ।  
 वभूवतुर्धर्मधुर दधानौऽरथे यथासारथिकस्य ग्भ्यौ ॥३७॥  
 मरुद्गृहादार्यसुहस्तिमूर्तिभूमौ मरुद्वृत्त इवोत्तार । 15  
 कृपाण्वेन द्रमकोऽपि येन त्रिरण्डभूमीप्रभुतामलम्भि ॥३८॥  
 भूसुभ्रुवो भर्तृतया प्रगल्भभूपाविशोपानिय शातकौम्भान् ।  
 सपादलक्षानिह सप्रतिर्यो निर्मापयामास महाविहारान् ॥३९॥  
 य न्मप्रतिक्षोणपति सपादकोटीर्नुपेटी स्वयशोनिधीनाम् ।  
 स्याद्वादिना सद्वासु शिल्पिसधैरचीकरत्पारगतीयमूर्ती ॥४०॥ 20  
 नक्त नलिन्यादि(सु)गुल्मनामविमानमार्ग प्रमुणा च येन ॥  
 स्नेहप्रियेणैत्र महेभ्यसूनोरदर्शयवन्तीसुकुमालनाम्न ॥ ४१ ॥

३१—निज रक्षीयो'यो'नागरनामा द्वाह्यणवग स 'पृ'स्त्रोतस्विनीनायक

नयीपति मसुद तत्र कौस्तुभेन । इतिद्वाख्याया ।

३५—पत्ता, यज्ञदिया, भूता, भूतदिग्वा, सेना, वेना, रेणा । क्वचिद्रेणापि-

नामद्र इम् । एनगाम्नी स्वजामी सजापि निजभगिनी इति तद्वृत्ती ॥



स्थाने स्वप्नुत्रिदिवं गतस्य व्यथादवन्तीमुकुमालसूनुः ।

नाम्ना महाकाल इतीह पुण्यपानीयशालामिव सार्वशालाम् ॥४२॥

श्रीमत्सुहृस्तित्रतिवासवस्य श्रीसुस्थितः सुप्रनिवद्धसूरिः ।

पदं विनेयौ नयतः स्वलक्ष्मीं क्रमं सुरारेरिव पुष्पदन्तां ॥ ४३ ॥

प्रीतिं सृजन्ती पुरुषोत्तमानां दुग्धाम्बुराशेरिव पद्मवासा ।

5

हृदा जिनं विभ्रत आविरासीत्तत्सूरियुग्मादिह "कौटिकारख्या" ॥४४॥

श्रीइन्द्रदिन्नत्रतिसार्वभौमस्तत्पद्मलक्ष्मीतिलकं वभूव ।

निशुम्भ्यते दांभिकता स्म येन कलिन्दकन्येव हलायुधेन ॥४५॥

पद्मद्वयं भिन्नतमोभरेण पित्रोः पवित्रीक्रियते स्म येन ।

कुवेरदिग्दक्षिणयोः पदव्योर्द्वन्द्वं प्रियेणैव पयोजिनीनाम् ॥४६॥

10

श्रीदिन्नसूरिगुणभूरिरस्मात्सप्तर्षिभूरंगिरसो यथासीन् ।

येनानुरागोऽवधि कालनेमिः कल्लोलिनी वल्लभशायिनेव ॥४७॥

पञ्चाशुगान्यः समितीर्विधाय वभञ्ज पञ्चाशुगपञ्चवाणीम् ।

शरेण केनापि न चेत्कदाचित्कस्नान्नृतं स प्रभवेद्वपुष्मान् ॥४८॥

सूरीश्वरः सीहगिरिः क्रमेण व्यभासयत्तत्प्रभुपद्मलक्ष्मीम् ।

15

जिनस्य पदं शिरसा स्पृशन्तीं निकाय्यराजीमिव केतुवारः ॥४९॥

विन्ध्यं निपीताब्धिरिव त्रतीन्द्रो य एवमानं निपिपेव कोपम् ।

यद्वाक्तरङ्गैश्च जिताभ्रसिंधुखपातिरेकादिव निमग्नगासीत् । ५० ॥

तमोभरोर्वीवरभेदवज्रिवज्रोऽथ वज्रप्रभुरेतदीयम् ।

पदं परां प्रापयति स्म भूपां माणिक्यकोटीर इवोत्तमांगम् ॥५१॥

20

आशौशवादेव जहौ निजाम्त्रां बेलामिव क्षीरनिधेः सुधांशुः ।

अध्वैष्ट यः पालनके शयानोऽप्येकादशाङ्गीः स्मृतपूर्वजन्मा ॥५२॥

यः पुष्पदः पल्लवलीलयेव वैराग्यलक्ष्म्यालमकारिवालये ।

प्राग्जन्ममित्रात्त्रिदशान्नभोगाविद्यां पुनर्वैक्रिलब्धिमापत् ॥५३॥

दुर्भिक्षवर्षेषु सुभिक्षुभूर्मीं संवं कृपानीरनिधेर्निनीपोः ।

25

वज्रप्रभोर्यस्य पटः पटीयान्विमानवद्वयोमनि दीप्यतेस्म ॥५४॥

सहैव देहेन समग्रमघ नयत्यसौ सिद्धिपुरीमिवैनम् ।  
जनैरिति व्योमनि तत्र्यमाणे पट प्रभोर्वोद्वपुरीमवाप ॥५५॥  
ध्यातुर्र श्री श्रुतदेवतेत्र यस्यादरात्पद्ममदत्त पद्मा ।  
वनात्पितुर्मित्रहुताशनस्याग्रहाच्च यो विगतिलक्षपुष्पान् ॥५६॥  
मूत्रैरिव स्वस्य गुणै प्रफुल्लत्पुष्पात्करै पर्युपणाक्षणेपु । 5  
समुन्नतिं शाम्भवशामनस्य तस्या सुनन्दातनयस्ततान् ॥५७॥  
प्रावोवयद्वोद्वपुरीप्रभु य सम समग्रैरपि पोरलोकै ।  
साक शकुन्तैरिव पद्मजाना कुञ्ज समुद्रगगनाधरनीन ॥५८॥  
अपास्यति स्माद्व्यसुता मरागा यो रन्मिर्णा काञ्चनकोटिभिश्च ।  
क्रोडन्मृगेन्द्रा स्मितसराकीभिर्निकुञ्जराजीमिव कुञ्जरेन्द्र ॥५९॥ 10  
श्रीवज्रसेनोऽथ तदीयपट्ट व्यभासयत्प्रीणितजन्तुजात ।  
स्फुरन्मदोद्भेद इव द्विपेन्द्रकपोतमानन्दितचञ्चरीक ॥६०॥  
दुर्भिजके पायसमेक्ष्य लक्षपक महेश्वरस्य गृहे प्रभुर्य ।  
दिने द्वितीये कुलदेवतेय न्यरेदयद्वाविसुकालमस्य ॥ ६१ ॥

५६—पर्युपणादिनेषु अष्टान्दिकानहोत्सव कर्तुमिच्छो जेनद्विष्टतया यौध-

नृपतिप्रारितमालिमण्डनात् पुष्पमात्रमध्वनाभ्युजत, सघस्य कृते कुसुमानयार्थं  
प्रस्थितस्य पद्महृदे यातस्य यस्य वज्रस्वामिन पद्मा लक्ष्मी आदरात् भक्तिभरत स्तव-  
नवदनपूर्वकम् पद्म स्वहृत्त महत्प्रपन्नादाय भगवत्पूजाय प्रयान्ती श्रीस्तत्सहस्रदल-  
कमल पद्माजोपगतयाम्ने अदत्त दत्तपती ॥ + + ( विगतिलक्षपुष्पाणि ) मित्र-  
तिथ्येकनृम्भकदेवनिर्मितिविमाने स्थापितवागित्यर्थ ॥ इतितद्व्यारययाम् ॥

५९—क्रोडोमण्डलसचियस्त गुणस्य भरियाण कत्राण । इत्युपदेशमाला-  
वचनात् ॥

किंभूताम् ? मरागा स्वलोचनत्रिधिस्थितसाध्वीगीयमानयद्गुणग्रामाऽऽकर्ण-  
नोद्भूतानुरागवशवद्वतया 'अस्मिन् भजे मम प्राणनाथो वज्रस्वाम्येव नान्य'  
इतिकृतनिरक्षयतया सरोहा जहा । इति तदव्यारययाम् ।

६१—य वज्रसेन प्रभुराणस्वामी दुर्भिजके द्वितीयवार द्वादशहायनजलवाहा  
वृष्टेरुद्भूतदुष्कालसमये श्रीवज्रस्वामिना दक्षिणस्या दिशि प्रेषित सन् अस्य महेश्व-

चत्वार पतत्तनया विनेयाः शाखाभृतस्तस्य विभोर्वभूवुः ।  
 इवामरद्वेषिचमूजयश्रीजुपः सुरेन्द्रद्विरदरय दन्ताः ॥६२॥  
 भर्त्रा सुराणाभिव लोकपालेष्वेतेषु सौदर्ययतीश्वरेषु ।  
 श्रीचन्द्रनाम्ना मुनिपुंगवेन तत्पट्टपूर्वा प्रसदेन भेजे ॥६३॥  
 राजा स्वयं राजन्तं सदेपो निर्दोषमद्वोपगतो निरद्वम् ।  
 सात्तो निरस्तं च निजाधिकं यं समीक्ष्य चिन्ताय शशी किमर्त्या ॥६४॥  
 श्रीचन्द्रसूरेरथ चन्द्रगच्छ इति प्रथा प्रादुरभूद्गणस्य ।  
 भागीरथीनाम भागीरथाख्यमहोमहेन्द्रादिव देवनद्याः ॥६५॥  
 कल्लोलिकारुण्यरसान्वितस्य सामन्तभद्रप्रभुरस्य पट्टम् ।  
 व्यराजयद्वारिरुहाकरस्यमध्यं यथोन्नित्तपुण्डरीकम् ॥६६॥ 10  
 वैमुख्यभाग्यो विपयात्कुरङ्गद्वेषीव जज्ञे विपिने निवासी ।  
 तस्मान्मुनीन्दोर्वनवासिसंज्ञा परा पुनःप्रादुभून्मुनीनाम् ॥६७॥  
 कोरण्टके वीरजिनेन्द्रमूर्तिं दृक्पान्थवृत्तिं कृतपुण्यपाकाम् ।  
 यः प्रत्यतिष्ठत्किमु सत्त्रशालां स वृद्धदेवो ऽजनि तस्य पट्टे ॥६८॥  
 प्रद्योतनाहप्रभुणा ऽप्यमुष्य पट्टं परं वैभवमावभार । 15  
 त्रैलोक्यलक्ष्मीतिलकायितेन पितुः स्वपुत्रेण यथान्ववायः ॥६९॥  
 प्रबोधयन्भव्यसरोजराजीः संशोपयन्दुर्नयकर्दमांश्च ।  
 दोषोदयं निर्दलयन्महस्वी प्रद्योतनो ऽन्यः किमभूद्भवोऽयम् ॥७०॥  
 धिया जयंश्चित्रशिखण्डिसूनुं गङ्गातरंगायितवाग्विलासः ।  
 श्रीमानदेवः पदमेतदीयं सभ्यः सभास्थानमिवाध्युवास ॥७१॥ 20  
 पदप्रदानावसरे समीक्ष्य साक्षात्तदंसोपरिवाणिपद्मे ।  
 राज्यादिव क्षोणिपुरंदरस्य भ्रंशोऽस्य भावी नियमस्थितेर्हा ॥७२॥

भ्यस्य द्वितीये आगामिनि दिने वासरे भावि भविष्यत्सुभित्तं सुकालं न्यवेदयत् कथ-  
 यामास ॥ + + तस्यैव चतुर्नन्दनस्येभ्यस्य दीक्षाग्रहणवाग्वंधपूर्वकं श्वस्तनदिने  
 ग्राममध्ये पञ्चशतीयुगंधरीधान्यभृत्वाहनागमनैर्भाविसुकालमावेदितवान् इत्यर्थः ॥  
 इति तद्च्याख्यायाम् ॥

इत्थ गुरु स्व विमनायमान-मालोक्य लोकेश्वरगीतकीर्ति ।  
तत्याज य पङ्किकृतीर्त्रतीन्द्र पडान्तरारीनिव जेतुकाम ॥७३॥

चमूभिर्बुर्वीन्द्रमिचामरीभिरूपास्यमानं यमवेद्य कश्चित् ।

किं स्त्रीयुतोऽमाविति सगयानो नड्डूलके ऽशिद्यत ताभिरेव ॥७४॥

तदीयपट्टाम्बरभानुमाली श्रीमानतुङ्गश्रमणेन्दुरासीत् ।

5

य श्रौजिदत्साधुजनाग्निजाज्ञा नाथान्पृथिव्या इव सार्वभौम ॥७५॥

भक्तामराहस्तवनेन सूरिर्वभञ्ज योऽङ्गान्निगडानशेषान् ।

प्रवर्तितामन्दमदोदयेन गम्भीरवेदीव करी धरेन्द्रो ॥७६॥

श्रीमानतुङ्ग करणेन भक्तामरस्तुतेस्त क्षितिशीतकान्तिम् ।

चकार नम्र फलपुष्पपत्रभारेण यद्वत्फलद वसन्त ॥७७॥

10

७४—चमूभिर्गजराजिरथपत्तिरुपयाभिश्चतुरङ्गिणीभि सेनाभि उर्वीन्द्र

सौशीगत्रमिन् । पद्मा—जया—विजया—अपराजिताभिधाभिश्चतसृभिर्देवीभि प्रत्यक्ष-  
सुपास्यमान सेव्यमान नड्डूलयनगरोपाश्रयापररक् य मानद्रेःसूरिनवेद्य दृष्ट्वा श्रमौ  
आचार्यं किं स्त्रीयुतो वनितावर्तितोऽन्तीति सगयान सदेह कुर्वाण । कश्चित्  
स्वय सतिष्ठासुतया दुष्टयत्नप्रकरै प्रशुद्धतन्निदृष्टनिर्जरनिर्मितजनमातुं पङ्गवोपट्टतेन  
तिष्ठशिलानगरीसधेन कृतकयोःसगप्रभावादागत ( या ) नड्डूलपुरस्थितश्रीमानदेव-  
सूरयो यत्रायायान्ति तदा गान्तिर्भवेत्, परमत्र ग्लेच्छा आगत्य स्यास्यन्ति, तत सधेन  
त्रिवर्षामध्येऽन्यत्र कुत्रापि गत्वा स्थातव्यमिति जिनशासनदेव्या गिरा श्रीम नदेव-  
सूरीन्द्राकारणार्थं तल्पमय एव भवजनमरकोपद्रवप्रशमनोन्मुनीभूततल्पधेन प्रेषित ।  
अज्ञातसूरिन्बहून् कौऽपि श्राद्ध । ताभिर्विजयाप्रसुग्गसूरीभिरेवाशिक्षि । शिक्षा  
आदयिष्या कुट्टयित्वा दृढग्रन्थनगद्व पृक्तुर्गण कृपापाराधरश्रीगुरवाचैव मुक्त ।  
यत्रैवविधा शक्राभाज श्राद्धान्तर सर्वथापि श्रीपूज्यपादैनं गन्तव्यमिति विजया-  
देवतया निषिद्धा मन्त श्रीगुरुस्त्वस्यधे शान्त्यर्थं 'गान्ति शान्तिनिशान्तम्' इति  
विजयादेरीमन्त्रमयलघुशान्ति विधाय तच्छ्राद्धेन मात्र प्रेषयिष्या तत्र मरकोपद्रव  
निवारितवानिति शेष ॥ इति श्रीमानत्रेऽनुरि ॥ इति तद्वृत्ति ॥

भयादिमेनाथ हरस्तवेन यो दुष्टदेवादिदृष्टानोपनर्गात् ।  
 श्रीभद्रबाहुः स्वकृतोपसर्गहृग्तवेनेव जहार संधान् ॥ ७८ ॥  
 सद्भयाननागेश्वररश्मिसाम्यमन्थाद्रिणालोड्य मद्गन्धुराशिम् ।  
 तत्पट्टलक्ष्मीरथ वीरनाम्नाचार्येण यत्रे चनमालिनेव ॥ ७९ ॥  
 ततोऽजनि श्रीजयदेवसूरिद्वीरीकृताशंपकुचादिवृन्द्रः । 5  
 यद्वाग्विलासैरवहेलितश्रीः सुधा किमु च्छीरनिधौ समज्ज ॥ ८० ॥  
 स्वः कामिनीर्कातितकीतिदेवानन्दश्चिदानन्दमत्ता मुनीन्द्रः ।  
 तारुण्यमेणाङ्गमुखीमिवैतत्पट्टश्रियं वैभवमानिनाय ॥ ८१ ॥  
 श्रीविक्रमः सूरिपुरन्दरोऽभूत्तत्पट्टदुग्धाधिभुधामरीचिः ।  
 तमश्चमूं हन्तुमनाः समग्रां किं विक्रमोऽङ्गोक्तकाययष्टिः ॥ ८२ ॥ 10  
 आसीत्ततः श्रीनरसिंहसूरिः स वाङ्मयान्भोनिधिपारहृश्व ।  
 अत्याजि यक्षः किल येन मांसं स्वार्पं जगद्वारिजवन्धुनेव ॥ ८३ ॥  
 महर्ष्यमाणिक्यमिवांगुलीयं पोमाणभूपालकुलप्रदीपः ।  
 पट्टश्रियं श्रीनरसिंहसूरेरलं करोति स समूद्रसूरिः ॥ ८४ ॥  
 दिग्वाससो येन विजित्य वादे नागहृदे नागनस्यतीर्थम् । 15  
 स्ववश्यमानीयत भूमिभर्त्रा दुर्गः प्रतीपानिव संपराये ॥ ८५ ॥  
 स मानदेवोऽजनि तस्य पट्टे वाग्देवता यन्मुखपद्मसद्व ।  
 तृप्तामृतैश्चारुवचोविलासच्छलादिवोद्गारमिवातनोति ॥ ८६ ॥  
 पदेतदीये विबुधप्रभेण स भूयते सूरिपुरंदरेण ।  
 येनाभिभूतः किल पुष्पधन्वा पुनर्युयुत्सुर्विपमायुधोऽभूत् ॥ ८७ ॥ 20  
 तत्पट्टपंकेरुहमानसौकाः श्रीमाञ्जयानन्दविभुर्वभूव ।  
 यस्याशये ऽमात्समयो ऽप्यशेषः कुम्भोद्भवस्य प्रसृताविवाधिः ॥ ८८ ॥  
 यदाननं चन्द्रति दन्तकान्तिज्योत्स्नायते भ्रूयुगमङ्कतीह ।  
 वाचां विलासोऽपि सुधायते तत्पदे मुनीन्द्रः स रविप्रभोऽभूत् ॥ ८९ ॥  
 वर्धिष्णुयत्कीर्तिसुधारणवेन व्यलुम्पि नामाप्यसितादिभावैः । 25  
 अर्हन्महिम्नेव जगत्यजन्यैः सोऽभूद्यशोदेवविभुः पदेऽस्य ॥ ९० ॥

- प्रद्युम्नदेवोऽथ पदे तदीये प्रद्युम्नदेवोऽभिनवो वभूव ।  
 भिन्नन्भव मुक्तरतिर्द्वीयो भवन्मधुत्रिंश्वविभाव्यमूर्ति ॥६१॥
- श्रीमानदेवेन पुन स्वकीर्तिज्योत्स्नाचदातीकृतप्रिष्टपेन ।  
 एतत्पदश्रीरगमि प्रतिष्ठा शक्तित्रयेणैव नरेन्द्रलक्ष्मी ॥ ६२ ॥
- वाचयमेन्द्राद्विमलादिचन्द्रात्पदाब्जभृङ्गीभवदिन्द्रचन्द्रात् । 5
- अमुत्र पट्ट त्रियम्श्रुते स्म परत्तपाद्भूप उव प्रतापात् ॥६३॥
- रंजे ऽस्य पट्टे स्मररूपधेय सुरीन्दुस्त्वद्योतनरामधेय ।  
 दिग्धारणोऽयं उव सूरिचन्द्रा सज्जिरे यत्पदवारिणोऽष्टौ ॥६४॥
- सुहूर्तमद्वैतमयेत्य टेलीग्रामस्य य गीर्ति बृहद्दटाध ।  
 अस्थापयन्चैत्यनरोन्मलेऽष्टौ पाण्यो गणेन्द्रानिः काशिकुञ्जे ॥६५॥ 10
- शाखाप्रशाखाभिरमुष्य वृद्धिर्बृहद्द्वयैः प्रच्यतो भवित्री ।  
 ततो बृहद्गण्ड्य इतीह नामाऽपर गणस्य प्रकटीवभूव ॥६६॥
- माहात्म्यनम्रीकृतसर्वदेव पदे तदीये ऽजनि सर्वदेव ।  
 तारापतिस्तारकपर्षदेव गुणत्रिया य प्रभुरन्ययायि ॥६७॥
- यो गममेनाहपुरे व्रनीन्दुर्लब्धिश्चि य गौतमवहधान । 15
- नाभेयचैत्ये महसेनसूनोर्जिनस्य मूर्तेर्विदधे प्रतिष्ठाम् ॥६८॥
- चद्रावनीशस्य नृपस्य नेत्र इनास योऽशेषजिरोपदर्शा ।  
 त ऋत्तचैत्य प्रतिमोऽत्र वाचा प्रात्राजयत्कुरुणमत्रिण य ॥६९॥
- कुर्वात्रिवाम गवि गौरवश्रीगिरामरीशो विजुवैरुपाय ।  
 त्रीदेवसूरि किमु देवमूरि पदे तदीयेऽप्यजनि क्रमेण ॥१००॥ 20
- दोषोदयोदीततम प्रपञ्च-व्यापादनव्यापृतिदीचितन ।  
 श्रीमर्षदेवेन पद तदीयमदोपि दीपेन यथा निर्येतम् ॥१०१॥
- श्रीमद्यगोभर्गणावनीन्द्र श्रीनेमिचन्द्रव्रतिपुङ्गवश्च ।  
 तत्पट्टमाकन्दमुभौ भजेते गुणोऽन्यपुष्टश्च यथा विद्मौ ॥१०२॥
- तयो पदे श्रीगुनिचन्द्रमूरिरभूत्ततो निर्मितनैः कशात् । 25
- शास्त्रे न कुत्रापि तदीयपुष्टिश्चम्याल श्रीकृन्नेव ममीरणस्य ॥१०३॥

भूपीडखण्डानिव चक्रयनी यतीभवेत्पट्टविकृतीर्जहौ यः ।  
 कदापि काये न दधन्ममत्त्वं पपौ पुनर्यः सकृदारनालम् ॥१०४॥  
 निर्जीयते स्म कचनापि नायं कृतोपसर्गैरपि देववर्गैः ।  
 इतीव नाम्ना भुवि विश्रुतेन जज्ञेऽस्य पट्टेऽजितदेवसूरिः ॥१०५॥  
 जगत्पुनानः सुमनःस्रवन्तीरयो जटाजूटमिवेन्दुमौलेः ।  
 अमुष्य पट्टं विजयादिसिंहोऽध्यासां वभूवाथ तपस्त्रिसिंह ॥१०६॥  
 सोमप्रभश्रीमणिरत्नसूरी अमुष्य पट्टं नयतःस्म लक्ष्मीम् ।  
 इक्ष्वाकुवंशं भरतश्च बाहुबलिस्तनूजाविव नाभिसूनोः ॥१०७॥  
 श्रीमज्जगच्चन्द्र इदं पदश्रीललामलीलायितमाततान ।

5

येनोज्जि शैथिल्यपथस्तटाको घनाविलो मानसवासिनेव ॥१०८॥ 10  
 द्वात्रिंशदाशावसनैरभेद्यो वादं सृजन्हीरकवद्यदासीत् ।  
 आघाटभूपेन स हीरलाद्यो नाम्ना जगच्चन्द्र इति न्यगादि ॥१०९॥  
 आचान्लकैर्द्वादशहायनान्ते तपेत्यवापद्विरुदं मुनीन्दुः ।  
 महाहवैर्वैरिविनिर्नयान्ते भर्तेव भूमेर्जितकाशिसंज्ञाम् ॥११०॥  
 अस्मात्ततः प्रादुरभूत्तपाख्या नेत्रादिवात्रेर्द्विजराजलेखा । 15  
 अदीपि यस्माच्च मुमुक्षुलक्ष्म्या वसन्तमासादिव भानुभासा ॥१११॥  
 देवेन्द्रकर्णाभरणीभवद्विर्यशोभिरुद्धासितविष्टपेन ।

१०९—यद्यस्मात्कारणाद्यः श्रीजगच्चन्द्रसूरिः द्वात्रिंशत्संख्याकैराशावसनैर्दिग्गम्ब-  
 राचार्यैर्वादिभिः सार्धं वादं सृजन् कुर्वन् हीरकवद्भ्रजमणिरिव अभेद्यो भेत्तुमशक्यः  
 अजेय आसीत् तत्कारणादाघाटनामनगरस्य भूपेन राज्ञा संप्रति लोके आहडनगरमिति  
 प्रसिद्धपुरस्य स्वामिना स सूरिः इदमेतन्न्यगादि प्रोक्तः । इदं किम् । यद्यं सूरिन्द्रो  
 नाम्ना हीरला इतिपदमाद्यं यत्र तादृशो जगच्चन्द्र एतावता हीरलाजगच्चन्द्रसूरिरिति  
 कथितः । इति तद्वृत्तिः ॥

१११—ततस्तपा इति नामकथनान्तरं तद्दिनमारभ्य च अस्माज्जगच्चन्द्रसूरे-  
 र्बृहद्गच्छस्य तपागच्छ इत्याख्या नाम प्रादुरासीत् प्रकटीवभूत् ॥ + + इतिबृहद्-  
 च्छस्य 'तपागच्छ' इति षष्ठं नाम संजातम् ॥ इति व्याख्यायां ॥

देवेन्द्रदेवेन वभेऽस्य पट्टे विष्णोर्यथा वक्षसि कौस्तुभेन ॥११२॥

निजाङ्गनोद्गीतयगीयकीर्तिं शुश्रूपुरक्षिश्रवसामृमुत्ता ।

चक्षु सहस्रे रसिक किमाघात्पट्टे स तस्याजनि वर्मघोष ॥११३॥

१. मिथ्यामतोत्सर्पणवद्धकक्ष प्रेक्ष्य क्षितौ जीर्णकपर्दिन य ।

प्रबोध्य वाचा जिनराजविन्त्राधिष्ठायक पूर्वमिव व्यवत्त ॥११४॥

5

शिष्यार्थनानिर्मितसस्तवस्याऽनुभावतो देवकपत्तनेऽब्धि ।

भूपस्य शुश्रूपुरिवास्य रत्न तरङ्गहस्तैरुपदोचकार ॥११५॥

विद्यापुरे योऽखिलशाकिनीनामुपद्रवं द्रावयति स्म सूरि ।

श्रीहेमचन्द्रो भृगुकच्छमज्ञे पुरे यथा दुर्धरयोगिनीनाम् ॥११६॥

यो योगिन पुष्पकरण्डिनीत्थ दुश्चेष्टितैर्भापनवद्धकक्षम् ।

10

पादोवनम्र विदधे ऽन्तिमोऽर्हन्निवास्थिकप्रामिकशूलपाणिम् ॥११७॥

११६—य श्रीधर्मघोषसूरि प्राक् साधुजनमतापकारिकाणां स्वागमने पट्ट-  
कादिमण्डन मासजोहृदक्रीभूतपायसवटकविहारण च गुरुगयनपट्टिकोत्पाटनचक्ष-  
रानयनमियाद्युपद्रवविधायकानां श्राविकानामधारिकाणामखिलानां सर्वासां शाकि-  
नीनां सिद्धमीकोत्तरिकाणामुपसर्गमुपद्रव द्रावयति स्म । चत्वरे गमनान्तरं  
गुरुभिरुयायाऽभिमन्त्रितचतु सूचीनां पट्टिकाचतु पादोपरिचेपयोनं स्तम्भितानां विभात-  
प्रायविभाजयार्थं विरसनानां तासां बहुविलपनानानाङ्गुलीक्षेपणनृपतिमृतिभीतिनिवेदन-  
प्रह्लादिसप्तवाग्बन्धप्रदाननगरजनविज्ञप्यवधारणालयान्त पट्टिकानयनपूर्वकं निवारितान्  
साधुजनान् निरुपद्रवारचक्रे । इति तद्दृष्टौ ॥

११७—य श्रीधर्मघोषसूरि पुष्पकरण्डिन्यामुज्जयिन्याम् । 'उज्जयिनी  
द्वाराद्विरालावन्तीपुष्पकरण्डिनी' इति हेम्याम् । तिष्ठतीतिपुष्पकरण्डिनीस्यस्त कमपि  
मिद्वचेटकपेटकमत एव दुष्टचेष्टितैर्भयकरप्रकारैः साधूनां भापने भयोत्पादने वद्धकर्षां  
सज्जीभूत कोऽपि साधुन्तं प्रतिकर्तुं न शक्नोति अतएव तद्भयकरणप्रकारमाह—  
प्राक् साधुविहारनिषेधक, गुर्वगमने च गोचरीगतसाधूनां प्रश्ने स्याम्यस्य । गुरुशिषितै-  
स्तैरुत्तम् । स्थिताः स्म । ततो महत्कुडालतुल्यदन्तानदशाययोगी । साधव कपोलिव



अत्रोपदेशान्प्रमन्त्रिषुर्जीवरश्चतुर्भिः सहितामशीतिम् ।

जातीरिवोद्धर्तुमिदंमिताः स्वा व्यधापचत्तीर्थकृतां निहारान् ॥११८॥

दंशातहेर्ग्राहितकाष्ठभारविषौपधीसज्जनतुनिशान्ते ।

जहात्मवद्यो विकृतीर्विद्वाय वृत्तिं व्यधादेव युगंधरीभिः ॥११९॥

यस्मादिदीपे चरणस्य लक्ष्मीर्योस्तेव चान्द्री शरदोऽनुपज्ञान् ।

सोमप्रभाख्यो जनहृक्चकौरासोमप्रभः सूरिरभूपदेऽस्य ॥१२०॥

तेनापि सोमतिलकाभिधसूरिरात्म-पट्टे न्यवेशि वशिलक्ष्मिलसलालामम् ।

वादेपु येन परवादिक्कदम्बकस्या-ऽनभ्यायता प्रतिपदेव मुखे न्यत्रासि ॥१२१॥

संस्थापितो निजपदे गुरुणाय तेन श्री देवसुन्दरगुरुः सुरसुन्दरश्रीः ।

अहोमुखेन तिमिरेण तमस्विनीव येन व्यपात्यत समं मदनेन माया ॥१२२॥ 10

धूकैरर्कमिव द्विषद्विरुदये हन्तुं परैः प्रेषितं ।

कंचिच्चन्द्ररुचा प्रमादविभुखं स्वापेऽपि दृष्टा प्रभुम् ।

दर्शयित्वा गुरुभारवं गताः । तत उवाचयेऽपि अतिभयकरप्रसुरोन्द्रविडालकुनकुर्-  
श्रगालश्वापदवृश्चिन्भुजगदिदर्शनादिना गुरुभपिभापनोद्यतं प्रभुणा च जैनमन्त्रस्फ-  
रणानुभावेन पुरजन्तातच्छिष्यसलबं मंत्रापिष्ठायकेन बध्वा पुरत्रासादशिवरत्नं-ऽतना-  
रफालानपूर्वकं अचवृष्यनाणत्रवहच्छोषितशरीरं शिष्या अहं क्षिये क्षिये कोऽपि माम-  
चत्विति पुनः पुनर्दानभाषिणं वेदनया पुच्छुर्वाणं गगनेलोपाश्रये नीतं योगिनं पद्माव-  
नम्रं स्वचरणयोर्नमनशीलं विदधे कृतवान् । नः इव । अर्हन्निव यथा अन्तिमरच-  
रमश्चतुर्विंशतिसमोऽहं जिनः श्रीमन्महावीरदेवः अस्मिन्प्रामस्याचुकगुलपाणिना-  
मानं अहं स्वचरणसेवापरत्ययं अहो । सोऽपि किंभूतः । दुष्टैर्जीविप्रणारानकरैश्चे-  
ष्टितैरुपसर्गैर्भगवतो भापनोद्यतम् । इति तद्वृत्तिः ॥

११८—नथा तत्रोपदेशाच्च श्रीशत्रुंजयगिरिनारिसंघपतीभवन् रैवतगिरौ

च इदमस्माकं तीर्थमिदमस्माकं तीर्थमिति त्रियो दिगन्तरैः सह विवादे 'य इन्द्र-  
मालां परिधत्ते तस्येदं तीर्थम्' इति लंजशृङ्गैः प्रोक्ते सुदूर्णतिसद्व्याघ्रायेन स्वकृत-  
पुत्रार्णपुत्रञ्चाशद्वृटीभिः इन्द्रमालां परिहितवान्, तथा शत्रुंजयोऽजयन्तमूलप्रासाद-  
शिवरदयदयोरेकसौवर्णध्वजाधिरोपणादिना चाष्टौ धर्तीर्न्ययितव्यंरचेति शेषः । तद्वृत्तौ

क्षाम्यन्त गदितासिलव्यक्तिकर सचोच्य योऽर्जुनक्षय—  
 त्स श्रीमानव सोमसुन्दरगुरुर्भजे तदीय पद ॥१२३॥

पट्टश्रियास्य मुनिसुन्दरसूरिणः सप्राप्तया कुवलयप्रतिबोधदत्ते ।  
 कान्तेव पद्ममुद्दह शरद्विन्दुविम्बे प्रीति परा व्यग्रचिलोचनयोर्जनानाम् ॥१२४॥  
 योगिनीजनितमार्युपप्लव येन शानिकरसस्तवादिह । 5  
 वर्षणादित्र तपतु तपयो नीरवाहनिवहेन जघ्निरे ॥१२५॥  
 बाल्येऽपि रश्मीन्सर्गसीजत्रन्धुरिवावगानानि वहन्महसूम् ।  
 अष्टोत्तर वतु लिकानिनादशत स्म वेवेक्ति विद्या निर्विर्य ॥१२६॥  
 अलम्बि याम्या दिशि येन काली सरस्वतीव विरुद् बुधेभ्य ।  
 रपेरुदीन्यामिव तत्र तेजोऽतिरिच्यते यत्पुनरत्र चित्रम् ॥१२७॥ 10  
 सूरैस्ततोऽजायत रत्नशेखर श्रीपुण्डरीको वृषभध्वजादिव ।  
 याम्नीति नाम्ना द्विजपुङ्गवेन न्यगादि यो बालसरस्वतीति ॥१२८॥  
 लक्ष्मीसागरसूरिशीतमहमा लक्ष्मीरवापे ततो  
 दीपेनेव गुणोदय कलत्रना ज्योतिर्वृ हङ्गानुत् ।  
 गायन्ती सुरमुन्नीगुणगणान्यस्याष्टदिकसङ्गिनी- 15  
 विजायाष्ट विनिर्ममे किमु विप्रि शान्तु सुतीरात्मन ॥१२९॥  
 सुमति साधुरभूदथ तत्पदे त्रिजगतीजननेत्रसुधाञ्जनम् ।  
 समकुचत्त्रपया हृदि यद्गिरा मधुरिमावरिता किमु गोस्तनी ॥१३०॥

१०६—यो मुनिसुन्दरसूरिर्जात्यपि जैश्वे शुक्लपत्रेऽपि अष्टाभिरधिव  
 वतुं लिङ्गा कबालिकात् 'वाटका कचोली' इति प्रसिद्धात् निगादाना शब्दाना  
 शत वृत्तिसहस्रमपि वेवेक्ति पृथक् पृथक् पृथा त्वयति च । पत्तासमागतैरभुक्त-  
 ३ शोपेतपरिडनठिज पत्रात्रलम्बन विप्रय प्रतिपत्तनपरिडनम्बान जलभृतसुखदलक  
 तृणपुत्र न्यगिष्येमोचयन्त तच्छिष्यगिर्वाङ्मूर्खे मुनिसुन्दरगिश्चुत्ता राजमभारण  
 स्वेन साध समगतधनुरशातिर्पापवगलावकाचार्यैर्वादेजायमाने परमात्यन्ते  
 राजन्यव्यास स्वच्छाष्टोत्तरगतनुं लिङ्गा पृथक् पृथक् गजान् कवयिषा त  
 विजिग्ये । इति तद्गृत्ती ॥

शीलेन जम्बुगणनाथ इवान्न वज्र-स्वामी परः किमथ वा महिमोदयेन ।  
जज्ञे नवद्वयशत१५००त्रतिसेव्यमानो नान्नाय हेमविमलः प्रमुरस्य पट्टे ॥१३१॥

विभूपामद्वैतामकलयदथाऽऽनन्दविमले

प्रतीन्द्रे विद्राणाखिलकुट्टशि तत्पट्टकमला ।

वसन्ते वासन्तीततिरिव पुनर्धर्मजयिनि

क्षितीन्द्रे राज्यश्रीरिव विजितविश्वप्रतिभटे ॥१३२॥

त्यक्त्वाशेषकुपक्षिकांश्च कुट्टशः किंपाकभमीरुहा—

न्रोलम्बैरिव पारिजातशिखरी यो जन्मिभिः शिश्रिये ।

येनात्मा शिथिलीभवन्मुनिपथादप्युद्धृतः सूरिणा

संसाराम्बुनिधेरिवोद्धतकुट्टग्यादोत्रजव्याकुलात् ॥१३३॥

शुद्धां क्रियामुद्धरतोऽस्य भाविनीमद्वत्प्रवृद्धिस्तमितीव शंसितुम् ।

स्वप्नेऽनुयुक्तेन कस्यचिज्जिनध्यातुर्दितीयेन्दुरदर्शयन्निजम् ॥१३४॥

जैनार्चाश्रमणाद्यभावभणानाम्भःसाव्यमानात्मनां ।

जज्ञे द्वीप इयं प्रतीशितुरिहोद्धारः क्रियाया नृणाम् ॥

विद्यासागरनामवाचकवरो यस्याथ दुर्हृग्गणा—

न्सेनानीरिव चक्रिणो रिपुनृपान्प्राक्स्वस्यवश्यान्व्यधात् ॥१३५॥

१३४—तथा—क्रियोद्धारविधित्सुना सूरिन्द्रेण कश्चित्सिद्धश्रीपार्श्वनाथमन्त्रः

श्राद्धः प्रथमं पृष्टस्तेन च न्यायं निदधता किञ्चिन्निद्रामुद्रितनेत्रेणाभ्युदयमानं

द्वितीयाचन्द्रं दृष्ट्वा समेत्य प्रभुपुरः प्रोचे । बह्वयं द्वितीयाचन्द्र इव दिने दिने वर्ध-

मानाभ्युदयभाजो भविष्यथ, तत्वरितमेव क्रियोद्धारं कुत्त, विलम्बो नैव विधेयः ।

ततः श्रीआनन्दविमलसूरिणा श्रीहेमविमलसूरिशसनपूर्वं शुद्धक्रिया उद्धृता इति-

वादः । इति, तद्ग्याख्यायां ॥

१३५—जैनार्चानां तीर्थकृत्संबन्धिनीनां प्रतिमानां, तथा श्रमणानां साधु-

नामभावमसत्तां, सिद्धांति क्वापि प्रतिमा प्रोक्ता नास्ति गुर्जरादिदेशेषु साधवः सर्वथा

न सन्तीति भणनं लुम्पाकक्रुद्धकृतीनां कथनम् ॥ इति तद्बुद्धौ ॥

- प्रात साधुवृत्तस्त्वदापणपुरो यो याति सूरीशिता  
सम्यक्सयमवान्स पूर्वागणिवत्सेव्यस्त्वयाहर्निशम् ।  
स्वप्ने ऽस्वप्नगिरेति य निजगृहे नीत्वातिभक्त्या प्रभु  
- श्राद्ध फण्चन मण्डपाद्विवसतिर्भजे सगोत्रै समम् ॥१३६॥
- तम स्तोमप्राये कुनयुनगणैर्दारुणतमे  
कलौ श्रीसूरीन्दु शरणमभयो जनिमत्ताम् ।  
मृगारातिव्यालद्विरदशचरव्यूहवहुले  
गिरेर्दु सचारे गहन इव सार्ध पथिजुपाम् ॥१३७॥
- गभीरिम्णा पायोनिधिरिव महिम्नापरमरुद्—  
गिरिश्चेतोजन्मप्रतिभटतया चा गगनजित् ।  
प्रसारै रश्मीना सरसिरुद्दिणीनामिव पति  
पवित्रीचक्रे यो विह्वतिभिरशोपा अपि दिश ॥१३८॥
- यो दक्षिणावर्त इव स्रवन्तीपतिस्रवे कम्बुकदम्बकेन ।  
वाचयमाना निग्रहेन पृथ्वीपीठे परितो मिजहार सूरि ॥१३९॥
- भागीरथीव यद्ब्राह्मी पुनीते भुवनत्रयम् ।  
पर विशेष क्रोऽप्यस्या निम्नगा न कदाचन ॥१४०॥
- ये कर्णाभरणीनभ्रवुरनिश विश्वत्रयीजन्मिना ।  
सान्द्रोन्निद्रितचद्रिका इव शुचीचक्रुस्त्रिलोकीमपि ।  
यान्सस्तोतुमिवाभवद्भुजगराट् जिह्वामहद्वय—  
स्तेषा सूरिपुरदर स समम्भूदेको गुणाना निधि ॥१४१॥

१३६—हे वत्स, त्व तु दुर्वादिप्रातविविधपिरद्गालपनाकर्णनाकलितानेककल्प-

नाजनितसर्शातिव्याकुलीकृतनैमलोमकलियुगानुभावात्कडुमतिरसि । तथापि प्रातं  
प्रभाते यामानन्तरमष्टभि साधुभि श्रमणै परिकलित य सूरीशिता सुरीन्द्र त्वदा-  
पणस्य तत्र हृदस्य पुरोऽग्रे याति गच्छति, स सूरिरस्मिन् कलियुगे सम्यक् सयम-  
वान् । विशुद्धचारित्रकलित तया भवताहर्निश निरन्तर पूर्वगणिवत् प्रार्चनाचार्यं  
इव सेव्य उपासनीय । इति तद्वृत्तौ ॥

अश्रोत्रैः श्रोतुकामैर्गुं जगपरिवृढैर्यज्जगद्गीतकीर्तिं  
 शब्दाधिष्ठानसृष्ट्यै रातदलनिलयो याचितत्तां चिकीर्षुः ।  
 न्याय्या नासौ मयातिक्रमितुमिह जगन्सर्गभङ्गीव्यवस्था  
 शक्तिं शब्दं ग्रहीतुं किमिति स कृतवानेव तदृष्टिसर्गे ॥१४२॥ 5  
 भूरेषा किमु चंद्रचन्दनरसैरालिप्यते सर्वतो  
 दुग्धाविधप्रसरत्तरङ्गितपयःपूरैरिवाप्लाव्यते ।  
 क्षोदैर्माँक्तिकजैर्बिलीनतुहिनैः कुन्दैरतापूर्यते  
 यत्कीर्तिं प्रसृतां विभाव्य त्रिवुधैरित्यन्तरारेक्यते ॥१४३॥  
 विजयदानसुमुत्तुपुरन्दरः पदसमुष्य ततः समभूपयन् ।  
 उदयभूनिभृतः शिखरं शरद्विशददीप्तिरिवास्वरकेतनः ॥१४४॥ 10  
 आज्ञां यस्य विधाय मूर्धनि सुदा शीर्षाभिवाहप्रभोः  
 तौराष्ट्रेषु जगर्पिनामबिबुधाधीशा विहारैर्निजैः ।  
 लुम्पाकान्परिवर्तमारुत इव प्रोन्मूल्य मूलाद्दुमा—  
 न्सम्यक्त्वाख्यकृपिं सुखं कुलवतीं चक्रे नभोम्भोदवत् ॥१४५॥  
 प्रावोधयद्दुष्करनैकतीव्रतपोभिराप्तोक्तिकृतोक्तियुक्तिभिः । 15  
 स तत्र लुम्पाकजनं यनीन्द्रो आस्वानिवाऽम्भोजवनं मरीचिभिः ॥१४६॥  
 यद्वाचा गलराजमंत्रिमुकुटो निर्माप्यपाण्मासिकीं  
 मुक्तिं सिद्धगिरौ व्यधाद्भरतवद्यात्रां तमं यात्रिकैः ।  
 पञ्चाङ्गीं दमितुं च पञ्चविकृतीस्तत्याज यः सर्वेदा  
 प्राणश्र्यन्तरणैर्ब्रह्मा इव पुनर्यस्योदये दुर्दृशः ॥१४७॥ 20

१४७ — यस्य श्रीविजयदानसुरैर्वाचा अर्थाद्भुपदेशेन कृत्वा गलराज इति नामा  
 मंत्रिषु प्रधत्नेषु मुकुटः कोटीरः गलराजः । अथवा गलो महतो इति लोके प्रसिद्धः  
 स षट्सु मालेषु भवा षाण्मासीकी । पञ्जालान् यावदित्यर्थः । मुक्तिं 'मुगतउ' इति  
 ऋत्विष्टां "केनापि कस्यापि पश्ये" शुल्कद्वीणां न मार्गशीयम् अहमेव श्रीमदुवर्त  
 यथेप्सितं द्रव्यं दत्स्यामि" इत्यधिपत्या प्रोक्त्वा या यात्रिकाणां यात्रा कार्यते सा  
 मुक्तिरिति । तां निर्माप्य कारयित्वा सिद्धगिरौ श्रीशत्रुंजये भरतवत् ऋषभदेवनन्दन-

रत्नानामिव रोहणोऽम्बुरुहिणीप्रेयानिव ज्योतिषा  
विंध्याद्रि करिणामिवामरगिरि स्वर्भूरुहाणमिव ।  
लब्धीना वसुभूतिनन्दन इवाम्भोधि सुधानामिव  
श्रीमत्सूरिशतक्रतुर्भुवि चिर जीयाद् गुणाना गृहम् ॥१४८॥

यं प्रासूत शिवाङ्गमाधुमघवा सौभाग्यदेवी पुन  
पुत्रं कोविदसिंहसीहविमलान्तेवासिनामप्रिमम् ।  
तद्ब्राह्मीक्रमसेविदेवविमलव्यावर्णिते हीरसु—  
क्सौभाग्याभिधहीरसूरिचरिते सर्गश्चतुर्थो ऽभवत् ॥१४९॥

5

इतिश्रीसीहविमलगणिशिष्य—पण्डितदेवविमलगणिविरचते हीरसौ-  
ग्यनाम्नि महाकाव्ये श्रीमन्महावीरदेवपट्टपरम्परावर्णनो नाम चतुर्थ सर्ग + 10

प्रथमचक्रवर्तिमघपतेरार्पभिरिव यात्रिकैर्यात्रा क्रतुं मागतै सचजनं समं सार्धं यात्रा-  
व्यधाञ्चकार ॥ इति तद्ब्रह्मव्यायाम् ॥

+ प० श्रीपति । तस्याष्टौ शिष्या । तेषु ध्रुवो बालप्रह्लाचारी कवि  
पद्भित्कृतिन्यागी यावर्जीवमापठतपोविधायी तपस्वी देवसानिष्य श्रीविजयदानसूरी-  
शाज्ञया सौराष्ट्रे विहारेण लुम्पाकमतोच्छेदके योत्रपुरे यद्विवदमयेन नृपमालदेव-  
पृष्ठ श्रितवाचकपार्वचन्द्र एकादशागीधर श्रीजगर्पिगणि ॥ तच्छिष्यो गौतमवादिविजेता  
नारायणदुर्गादिनृपप्रतिबोधक कायस्थमण्डलिकचन्द्रभाणस्यानर्लिहादिश्रावककारक  
बहुप्रतिष्ठा विधायक आदिदेवममवसरणप्रकरविधाता प० श्री सीहविमलो गणि ।  
तच्छिष्य प० देवविमलो येन विक्रमाब्दात् १६३३ त प्रारभ्य १६७१ अवधिवर्षेषु  
स्वोपज्ञ श्रीहीरमौभाग्यकाव्य विदधे, यत् उ०कस्याणविजयशिष्यधनविजयेन  
समशोधि ॥ इति श्रीहीरमौभाग्यप्रगन्तौ ॥

अनुपूर्तिः १—

सूरीन्द्रहीरविजयः प्रतिपद्य पट्ट—लक्ष्मीं गुरोरनु विशिष्य पुषोप भूपाम् ॥  
 वप्तुर्जिनस्य युवराज इवाधिपत्यं क्रान्तारिचक्रमखिलाऽम्बुधिमेखलायाः ॥  
 मण्डयत्यमरमन्दिरं गुरौ, दीप्यते स्म मुनिवासवो ऽधिकम् ॥ ५  
 यामिनीप्रियतमे पराम्बुधेर्मध्यभागमिव पद्मिनीपतिः ॥२॥ 5  
 श्रीहीरसौभाग्यकाव्ये सर्ग—६, श्लोकौ—१८७—१८८ ।

अनुपूर्तिः २—

अथसाहिः (अकच्चरं) मनसा श्रीगुरूनेवं प्रशशंस  
 प्रावीण्यमन्यहितकर्मणि पश्यतैपां, तथ्यं यतो व्यवसितिर्महतां परार्था ॥  
 विश्वं शशीव धवलत्यखिलं कलाभिरंभोभरैर्जलधरोऽपि धरां धिनोति ॥१॥ 10  
 मुध्ना दधाति वसुधां भुजगाधिराजो, नैःस्थ्यं निहन्ति मणिरध्वरभागभाजाम् ॥  
 आमोदयन्ति हरितो हरिचन्दनानि, भिन्दन्ति संतमसमंवरकेतवो ऽपि ॥२॥  
 साला दिशन्ति च फलानि पचेलिमानि, वार्धेर्वशा अपि वहन्ति पयःप्रवाहान् ।  
 विश्वोपकारकरणैकनिबद्धकक्षै—रोभिर्वभूव वसुधा किमु रत्नगर्भा ? ॥३॥  
 श्रीहीरसौभाग्यकाव्ये सर्ग—१४, श्लोकाः १८३, १८४, १८५ । 15

अनुपूर्तिः — ३

श्रीसूरिहीरविजये भजति द्युलोकमभ्युद्गते विजयसेनगणावनीन्द्रे ॥  
 प्रीतिं जना दधति शीतरुचौ प्रयाते, क्षेत्रांतरं समुदितं ऽशुमतीव कोकाः ॥१॥  
 तत्पट्टोदयभूधरभास्वान्श्रीविजयदेवसूरीन्द्रः ॥  
 भजते तपगणराज्यश्रियमुर्वीसार्वभौम इव ॥२॥ 20  
 सीहगिरेरिव वज्रस्वामी तस्येष पदपयोधिविधुः ॥  
 श्रीविजयदेवसूरिज्ञोणीन्द्रः पर्वतायुः स्यात् ॥३॥  
 श्रीहीरसौभाग्यकाव्ये सर्ग—१७, श्लोकाः २०८, २०९, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६, २२७, २२८, २२९, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३५, २३६, २३७, २३८, २३९, २४०, २४१, २४२, २४३, २४४, २४५, २४६, २४७, २४८, २४९, २५०, २५१, २५२, २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७, २६८, २६९, २७०, २७१, २७२, २७३, २७४, २७५, २७६, २७७, २७८, २७९, २८०, २८१, २८२, २८३, २८४, २८५, २८६, २८७, २८८, २८९, २९०, २९१, २९२, २९३, २९४, २९५, २९६, २९७, २९८, २९९, ३००, ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ३०५, ३०६, ३०७, ३०८, ३०९, ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३१५, ३१६, ३१७, ३१८, ३१९, ३२०, ३२१, ३२२, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२७, ३२८, ३२९, ३३०, ३३१, ३३२, ३३३, ३३४, ३३५, ३३६, ३३७, ३३८, ३३९, ३४०, ३४१, ३४२, ३४३, ३४४, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३५८, ३५९, ३६०, ३६१, ३६२, ३६३, ३६४, ३६५, ३६६, ३६७, ३६८, ३६९, ३७०, ३७१, ३७२, ३७३, ३७४, ३७५, ३७६, ३७७, ३७८, ३७९, ३८०, ३८१, ३८२, ३८३, ३८४, ३८५, ३८६, ३८७, ३८८, ३८९, ३९०, ३९१, ३९२, ३९३, ३९४, ३९५, ३९६, ३९७, ३९८, ३९९, ४००, ४०१, ४०२, ४०३, ४०४, ४०५, ४०६, ४०७, ४०८, ४०९, ४१०, ४११, ४१२, ४१३, ४१४, ४१५, ४१६, ४१७, ४१८, ४१९, ४२०, ४२१, ४२२, ४२३, ४२४, ४२५, ४२६, ४२७, ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४३५, ४३६, ४३७, ४३८, ४३९, ४४०, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४, ४४५, ४४६, ४४७, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१, ४५२, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६, ४५७, ४५८, ४५९, ४६०, ४६१, ४६२, ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८, ४६९, ४७०, ४७१, ४७२, ४७३, ४७४, ४७५, ४७६, ४७७, ४७८, ४७९, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४८५, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९०, ४९१, ४९२, ४९३, ४९४, ४९५, ४९६, ४९७, ४९८, ४९९, ५००, ५०१, ५०२, ५०३, ५०४, ५०५, ५०६, ५०७, ५०८, ५०९, ५१०, ५११, ५१२, ५१३, ५१४, ५१५, ५१६, ५१७, ५१८, ५१९, ५२०, ५२१, ५२२, ५२३, ५२४, ५२५, ५२६, ५२७, ५२८, ५२९, ५३०, ५३१, ५३२, ५३३, ५३४, ५३५, ५३६, ५३७, ५३८, ५३९, ५४०, ५४१, ५४२, ५४३, ५४४, ५४५, ५४६, ५४७, ५४८, ५४९, ५५०, ५५१, ५५२, ५५३, ५५४, ५५५, ५५६, ५५७, ५५८, ५५९, ५६०, ५६१, ५६२, ५६३, ५६४, ५६५, ५६६, ५६७, ५६८, ५६९, ५७०, ५७१, ५७२, ५७३, ५७४, ५७५, ५७६, ५७७, ५७८, ५७९, ५८०, ५८१, ५८२, ५८३, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ५९०, ५९१, ५९२, ५९३, ५९४, ५९५, ५९६, ५९७, ५९८, ५९९, ६००, ६०१, ६०२, ६०३, ६०४, ६०५, ६०६, ६०७, ६०८, ६०९, ६१०, ६११, ६१२, ६१३, ६१४, ६१५, ६१६, ६१७, ६१८, ६१९, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५, ६२६, ६२७, ६२८, ६२९, ६३०, ६३१, ६३२, ६३३, ६३४, ६३५, ६३६, ६३७, ६३८, ६३९, ६४०, ६४१, ६४२, ६४३, ६४४, ६४५, ६४६, ६४७, ६४८, ६४९, ६५०, ६५१, ६५२, ६५३, ६५४, ६५५, ६५६, ६५७, ६५८, ६५९, ६६०, ६६१, ६६२, ६६३, ६६४, ६६५, ६६६, ६६७, ६६८, ६६९, ६७०, ६७१, ६७२, ६७३, ६७४, ६७५, ६७६, ६७७, ६७८, ६७९, ६८०, ६८१, ६८२, ६८३, ६८४, ६८५, ६८६, ६८७, ६८८, ६८९, ६९०, ६९१, ६९२, ६९३, ६९४, ६९५, ६९६, ६९७, ६९८, ६९९, ७००, ७०१, ७०२, ७०३, ७०४, ७०५, ७०६, ७०७, ७०८, ७०९, ७१०, ७११, ७१२, ७१३, ७१४, ७१५, ७१६, ७१७, ७१८, ७१९, ७२०, ७२१, ७२२, ७२३, ७२४, ७२५, ७२६, ७२७, ७२८, ७२९, ७३०, ७३१, ७३२, ७३३, ७३४, ७३५, ७३६, ७३७, ७३८, ७३९, ७४०, ७४१, ७४२, ७४३, ७४४, ७४५, ७४६, ७४७, ७४८, ७४९, ७५०, ७५१, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६, ७५७, ७५८, ७५९, ७६०, ७६१, ७६२, ७६३, ७६४, ७६५, ७६६, ७६७, ७६८, ७६९, ७७०, ७७१, ७७२, ७७३, ७७४, ७७५, ७७६, ७७७, ७७८, ७७९, ७८०, ७८१, ७८२, ७८३, ७८४, ७८५, ७८६, ७८७, ७८८, ७८९, ७९०, ७९१, ७९२, ७९३, ७९४, ७९५, ७९६, ७९७, ७९८, ७९९, ८००, ८०१, ८०२, ८०३, ८०४, ८०५, ८०६, ८०७, ८०८, ८०९, ८१०, ८११, ८१२, ८१३, ८१४, ८१५, ८१६, ८१७, ८१८, ८१९, ८२०, ८२१, ८२२, ८२३, ८२४, ८२५, ८२६, ८२७, ८२८, ८२९, ८३०, ८३१, ८३२, ८३३, ८३४, ८३५, ८३६, ८३७, ८३८, ८३९, ८४०, ८४१, ८४२, ८४३, ८४४, ८४५, ८४६, ८४७, ८४८, ८४९, ८५०, ८५१, ८५२, ८५३, ८५४, ८५५, ८५६, ८५७, ८५८, ८५९, ८६०, ८६१, ८६२, ८६३, ८६४, ८६५, ८६६, ८६७, ८६८, ८६९, ८७०, ८७१, ८७२, ८७३, ८७४, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८, ८७९, ८८०, ८८१, ८८२, ८८३, ८८४, ८८५, ८८६, ८८७, ८८८, ८८९, ८९०, ८९१, ८९२, ८९३, ८९४, ८९५, ८९६, ८९७, ८९८, ८९९, ९००, ९०१, ९०२, ९०३, ९०४, ९०५, ९०६, ९०७, ९०८, ९०९, ९१०, ९११, ९१२, ९१३, ९१४, ९१५, ९१६, ९१७, ९१८, ९१९, ९२०, ९२१, ९२२, ९२३, ९२४, ९२५, ९२६, ९२७, ९२८, ९२९, ९३०, ९३१, ९३२, ९३३, ९३४, ९३५, ९३६, ९३७, ९३८, ९३९, ९४०, ९४१, ९४२, ९४३, ९४४, ९४५, ९४६, ९४७, ९४८, ९४९, ९५०, ९५१, ९५२, ९५३, ९५४, ९५५, ९५६, ९५७, ९५८, ९५९, ९६०, ९६१, ९६२, ९६३, ९६४, ९६५, ९६६, ९६७, ९६८, ९६९, ९७०, ९७१, ९७२, ९७३, ९७४, ९७५, ९७६, ९७७, ९७८, ९७९, ९८०, ९८१, ९८२, ९८३, ९८४, ९८५, ९८६, ९८७, ९८८, ९८९, ९९०, ९९१, ९९२, ९९३, ९९४, ९९५, ९९६, ९९७, ९९८, ९९९, १०००

॥ इति समाप्ता परम्परा ॥

## श्रीयुगप्रधानः

( कर्ता—महोपाध्यायश्रीविनयविजयगणिः )

- पूर्वर्ष्यपेक्षयैव च, हीनहीनगुणैरपि ॥  
 मोक्षमार्गाद्यवाप्ति स्या—त्रिर्ग्रन्थैरेव नापरै ॥६८॥  
 विपमेपि च कालेस्मिन्, भवत्येव महर्षय ॥  
 निर्ग्रन्थै सद्यशा केचिच्चतुर्थारकवर्तिभिः ॥६९॥  
 यथास्यामवसर्पिण्यामेतस्मिन् पचमे ऽरके ॥ 5  
 त्रयोविंशतिरादिष्टा, उदया सततोदयै ॥१००॥  
 विंशति १प्रथमे तत्र, युगप्रधानसूरय ॥  
 उदये स्युर्द्वितीयस्मिन्, त्रयोविंशतिरेव ते ॥१०१॥  
 तृतीये ऽष्टाह्यनवति ३, चतुर्थे चा ऽष्टसप्तति ॥  
 पचसप्तति ५ रेकोननवति ६ शतमेव ७ च ॥१०२॥ 10  
 सप्ताशीति ८ स्तथापच-नवतिश्च ९ तत पर ॥  
 सप्ताशीति १० षट्सप्तति ११—रष्टसप्ततिरेव च १२ ॥१०३॥  
 चतुर्नवति १३ रेवाष्टौ १४, त्रय १५ सप्त १६ चतुष्टय १७ ॥  
 शत पचदशोपेत १८, त्रयविंश शत १९ शत २० ॥१०४॥  
 पचाधिका ऽय नवति २१—नवतिश्च नवाधिका २२ ॥ 15  
 चत्वारिंशत् २३ क्रमादेते, यथोक्तोदयसूरय ॥१०५॥  
 श्री सुधर्मा १ च वज्रश्च २, सूरि प्रातिपदाभिध ३ ॥  
 हरिस्सहो ४ नन्दिमित्र ५, सूरसेनस्तथापर ६ ॥१०६॥  
 रविमित्र ७ श्रीप्रभश्च ८, सूरिर्मणिरथाभिध ९ ॥  
 यशोमित्रो १० धनशिरः ११, सत्यमित्रो १२ महामुनिः ॥१०७॥ 20



धम्मिल्लो १३ विजयानंद १४-स्तथा सूरिः सुमंगलः १५ ॥

धर्मसिंहो १६ जयदेवः १७ सुरदित्राऽभिधो गुरुः १८ ॥१०८॥

वैशाखश्चाऽथ १९ कोडिन्यः २०, सूरिः श्रीमाथुराह्वयः २१ ॥

वणिकपुत्रश्च २२ श्रीदत्त २३, उदयेष्वाद्यसूरयः ॥१०९॥

स्यात्पुष्पमित्रो १ ऽर्हन्मित्रः २, सूरिवैशाखसंज्ञकः ३ ॥

सुकीर्ति ४ स्यावर ५ रथ-सुताश्च ६ जयमंगलः ७ ॥११०॥

ततः सिद्धार्थ ८ ईशानो ९, रथमित्रो १० मुनीश्वरः ॥

आचार्यो भरणीमित्रो ११ दृढमित्राऽह्वयो ऽपि १२ च ॥१११॥

संगतिमित्रः १३ श्रीधरो १४ मागध १५ आऽमराभिधः १६ ॥

रेवतीमित्र १७ सत्कीर्ति-मित्रौ १८ च सुरमित्रकः १९ ॥११२॥

फल्गुमित्रश्च २० कल्याण-सूरिः २१ कल्याणकारणं ॥

देवमित्रो २२ दुष्प्रसह २३, उदयेष्वंत्यसूरयः ॥११३॥

श्रीसुधर्मा च जम्बूश्च, प्रभवः सूरिशेखरः ॥

शय्यंभवो यशोभद्रः, संभूतिविजयाऽह्वयः ॥११४॥

भद्रबाहुत्थूलभद्रौ, महागिरिसुहृस्तिनौ ॥

घनसुंदरश्यामार्यौ, स्कंदिलाचार्य इत्यपि ॥११५॥

रेवतीमित्रधर्मो च, भद्रगुप्ताभिधो गुरुः ॥

श्रीगुप्तवज्रसंज्ञार्य-रक्षितौ पुष्पमित्रकः ॥११६॥

प्रथमस्योदयस्येति, विंशतिः सूरिसत्तमाः ॥

त्रयोविंशतिरुच्यन्ते, द्वितीयस्याऽथ नामतः ॥११७॥

श्रीवज्रो नागहस्ती च, रेवतीमित्र इत्यपि ॥

सिंहो नागार्जुनोऽभूत्-दित्रः कालकसंज्ञकः ॥११८॥

सत्यमित्रो हारिलश्च, जिनभद्रो गणीश्वरः ॥

उमास्वातिः पुष्पमित्रः, संभूतिः सूरिकुंजरः ॥११९॥

तथा माढरसंभूतो धर्मः श्रीसंज्ञको गुरुः ॥

ज्येष्ठांगः फल्गुमित्रश्च, धर्मघोषाह्वयो गुरुः ॥१२०॥

सूरिर्विनयमित्रारव्य . शीलमित्रश्च रेवति ॥

स्वप्नमित्रो हरिमित्रो, द्वितीयोदयसूरय ॥१२१॥-

स्युखयोविंशतिरेव—मुदयाना युगोत्तमा ॥

चतुर्युके सहस्रे द्वे, मीलिता सर्वसख्यया ॥१२२॥

एकावतारा सर्वेभ्यो, सूरयो जगदुत्तमा ॥

5

श्रीसुधर्मा च जवूश्च, ख्यातौ तद्भवसिद्धकौ ॥१२३॥

अनेकातिशयोपेता, महासत्त्वा भवत्यमी ॥

घ्नन्ति सार्धद्वियोजन्या, दुर्भिक्षादीनुपद्रवान् ॥१२४॥

एकादशसहस्राश्च लक्षाश्च षोडशाऽधिका ॥

युगप्रधानतुल्या ऽस्यु, सूरय पचमारके ॥१२५॥

10

तथोक्त, दुष्पमारकसंघस्तोत्रे (गाथा १८)—

जुगपवरसरिससुरी दूरीक्यभविमोहतमपसरे ॥

वन्दामि सोलसुत्तर इगदस लक्खे सहस्ते य ॥१॥

सतु श्रीचर्द्धमानस्येत्यादि ॥ दीवालीकल्पे तु (१११६०००)—

जुगप्पहाण समाणा, एगारसलन्त्त सोलससहस्सा ॥

15

सूरिओ हुँति अरए, पचमे जाव दुप्पसहे ॥२॥ +

कोटीना पचपचाश—लक्षास्तावन्त एव च ॥

सहस्राश्च शता पच, सर्वे स्वाचारसूरय ॥१२६॥

त्रयस्त्रिंशच्च लक्षाणि, सहस्राणा चतुष्टयी ॥ ३३०४४६१

चतु शत्येकनवति, सूरयो मध्यमा गुणै ॥१२७॥

20

अस्मिन्नेमारकेऽभूवन्, पूर्वाचार्या महाशया ॥

श्रीजगच्चन्द्रसूर्याद्या—स्तपागच्छाऽन्वयक्रमे ॥१२८॥

सूरयो वप्पभट्टाख्या, अभयदेवसूरयः ॥

हेमाचार्याश्च मलय—गिर्याद्याश्चाऽभवन्परे ॥१२६॥

विजयन्तेऽधुनाऽप्येवं, मुनयो नयकोविदाः ॥

अत्युग्रतपसश्चारु—चारित्रमहिमाऽद्भुताः ॥१३०॥

एवं मध्यस्थया दृष्ट्या, पर्यालोच्य विवेकिभिः ॥

5

न कार्यः शुद्धसाधूनां, संशयः पंचमेऽरके ॥१३१॥

दुष्पमारकपर्यन्ता—वधि संघञ्चतुर्विधः ॥

भविष्यत्यव्यवच्छिन्न इत्यादिष्टं जिनैः श्रुते ॥१३२॥

तथोक्तं भगवत्यां—जम्बूद्वीवेणं दीवे भारेह वासे इमीसे उसप्पिणीए

देवाणुप्पियाणं केवइयं कालं तित्थे अणुसज्जिस्सति ?

10

गो० ? जंबु० भारहे इमीसे उस० मम एकवीसवाससहस्साइं तित्थे

अणुसज्जिस्सति । इति, भगवती श० २० उ० न (सू०६७८) ॥

दीवाली कल्पे तूक्तं—

वासाण वीससहस्सा नवसय तिम्मास पंचदिण पहरा ॥

इक्का घडिया दोपल अक्खरअडयाल जिणधम्मो ॥१३३॥

15

( अथ दुष्प्रसहसूरेरधिकारः )—x

पर्यन्ते त्वरकस्यास्य, सूरिर्दुष्प्रसहाभिधः ॥

रत्निद्वयोच्छिन्नो विंशत्यब्दजीवी भविष्यति ॥१३४॥

स्वर्गाच्च्युत्वा समुत्पन्नो, गृहे द्वादशवत्सरीं ॥

स्थित्वा सामान्यसाधुत्वे, चत्वार्यब्दान्यसौ शुचिः ॥१३५॥

20

चत्वार्यब्दानि सूरित्वे, स्थित्वाष्टाऽब्दानि च व्रते ॥

स्वर्गमेज्यति सौधर्म—मंते कृत्वाऽष्टमं कृती ॥१३६॥

दशवैकालिकं जीत—कल्पमावश्यकं च सः ॥

अनुयोगद्वारं नदिं, नतेंद्रो धास्यति श्रुतम् ॥१३७॥

साध्वी तदा च फल्गुश्रीः, श्रावको नागिलाभिधः ॥

25

सत्यश्रीः श्राविका चेति, ज्ञेयः संघञ्चतुर्विधः ॥१३८॥

यत —एगो साहू एगा य, साहुणी सडूओ य सडूी वा ॥

आणाजुत्तो सघो, सेसो पुण अट्टिसघाओ ॥१३६॥

उत्कष्ट श्रुतमेतेपा दशवैकालिकावधि ॥

पाएमासिकतपस्तुल्य, पष्ठभक्त भविष्यति × ॥१४०॥

मंत्रीश सुमुखाभिल्यो, राजा विमलवाहन ॥

5

भविष्यतस्तदा लोके, नीतिमार्गप्रवर्तकौ ॥१४१॥

अय दुष्प्रसहाचार्यो—पदेणेन करिष्यति ॥

चैत्यस्याऽन्तिममुद्धार, राजा श्रीविमलाचले ॥१४२॥

कोट्यैकैकादशलक्ष सहस्राणि च षोडश ॥ ११११६०००

उत्तमाना द्वितीशाना, सख्यैषा दुष्पमारके— ॥१४३॥

10

कोटय पञ्चपञ्चाश ५५-लक्षत्वा ५५५चापि सहस्रका ५५ ॥

तावतो ऽथ शता पच, पचपचाश ५५५दन्विता ॥१४४॥

इयन्तो दुष्पमाकाले निर्दिष्टा सर्वसख्यया ॥

नवभि पचकैर्नाम-वारिणो ऽधमसूरय ॥१४५॥ इत्यर्थतो दीपिका कल्पे

इतिश्रीलोकप्रकाशे काललोके चतुस्त्रिंशत्तमे सर्गे

15

युगप्रधानसवध समाप्त

× श्रौघनंधोष सूरिकृताया कालमप्ततिकाया गाथा '५०, ५१, ५२, ५३,

५४ गाथास्वपि एषोधिमारो दर्शितोस्ति ॥ तस्यामेव ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९

गाथासु कल्की नृपाधिकारोस्ति ॥

— ४५गाथायां तु १११६००० लैगनृपा इति मत्तम् ॥

## श्रीसूरिपरंपरा

[ कर्त्ता—महोपाध्यायः श्रीविनयाविजयगणिः ]



श्रेयः श्रीवर्द्धमानो दिशतु शतमखश्रेणिभिः स्तूयमानः ।

सत्त्वमाभृत्सेव्यपादः कृतसदुपकृतिर्गोपतिर्नूतनो वः ॥

कालेऽप्यस्मिन्प्रदोषे कटुकुमतिकुहूकल्पितध्वांतपोषे ।

प्रादुष्कुर्वन्ति गावः प्रसृमरविभवा युक्तिमार्गं यदीयाः ॥१॥

तत्पट्टेऽथेंद्रभूतेरनुज उदभवच्छ्रीसुधर्मा गर्गाद्रौ ॥

जंबूस्तत्पट्टदीपः प्रभव इति भवांभोधिनौस्तस्य पट्टे ॥

सूरिः शश्वंभवोऽभूत्स मनकजनकस्तत्पदांभोजभानु—

स्तत्पट्टैरावतेंद्रो जनविद्वितयशाः श्रीयशोभद्रसूरिः ॥२॥

तत्पट्टभारधूर्यो, गणधरवर्यो श्रियं दधाते द्वौ ।

संभूतविजयसूरिः सूरिः श्रीभद्रबाहुश्च ॥३॥

श्रीस्थूलभद्र उदियाय तयोश्च पट्टे, जातौ महागिरिसुहृस्तिगुरु ततश्च ।

पट्टे तयोः श्रियमुभौ दधतुर्गर्गाद्रौ, श्रीसुस्थितो जगति सुप्रतिवद्धकश्च ॥४॥

तत्पट्टभूषणमणिर्गुरुर्दिद्रिन्नः, श्रीदिन्नसूरिरथ तस्य पदाधिकारी ॥

पट्टेर राज गुरुसिंहगिरिस्तदीये, स्वामी च वज्रगुरुरस्य पदे बभूव ॥५॥

श्रीवज्रसेनसुगुरुर्विभरांबभूव, पट्टं तदीयमथ चंद्रगुरुः पदेऽस्य ।

सामन्तभद्रगुरुरुन्नतिमस्य पट्टे, चक्रेऽस्य पट्टमभजद्गुरुदेवसूरिः ॥६॥

प्रद्योतनस्तदनु तस्य पदे च मान-देवस्तदीयपदभृद्गुरुमानतुङ्गः ।

वीरस्ततोऽथ जयदेव इतश्च देवा-नन्दस्ततश्च भुवि विक्रमसूरिरासीत् ॥७॥

तस्माद्बभूव नरसिंह इति प्रतीतः, सूरिः समुद्र इति पट्टपतिस्तदीयः ।

सूरिः पदेऽस्य पुनरप्यजनिष्टमान-देवस्ततश्च विबुधप्रभसूरिरासीत् ॥८॥

5

10

15

20

जयानन्द पट्टे श्रियमपुपदस्याऽस्य च रवि—  
प्रभस्तपट्टेश समजनि यशोदेवमुनिराट् ॥

तत्त प्रद्युम्नाख्यो गुरुर्दयति स्मा ऽथ पुनर—  
प्यभून्मानादेवो गुरुविमलचन्द्रश्च तदनु ॥६॥

तस्मादुद्योतनाख्यो गुरुरभवदित सर्वदेवो मुनीन्द्र—  
स्तस्माच्छ्रीदेवसूरिस्तदनु पुनरभूत् सर्वदेवस्ततश्च ॥  
जज्ञाते सूरिराजौ प्रगुणगुणयशोभद्र-सन्नेमिचद्रौ  
विख्यातौ भूतलेऽस्मिन्नविरतमुदितौ नूतनौ पुष्पदतौ ॥१०॥

5

मुनिचद्रमुनिस्ततो ऽद्भुतोऽथा-ऽजितदेवश्च तदन्तिपद्वरेण्य ।  
अपर पुनरस्य शिष्यमुख्यो, भूवि चादी विदितश्च देवसूरि ॥११॥

10

अजितदेवगुरोरभवत्पदे, विजयसिंह इति प्रथित क्षितौ ।  
तदनु तस्य पदं दधतावुभा—उभवता गणभारधुरप्ररौ ॥१२॥

सोमप्रभस्तत्र गुरु शतार्थी, सतामणि श्रीमणिरत्नसूरि ।  
पट्टे मणि श्रीमणिरत्नसूरे—र्जत्रे जगच्चन्द्रगुरुर्गरीयान् ॥१३॥

तेषामुभाजतिपदावभूता, देवेंद्रसूरिर्विजयाच्च चद्र ।

15

देवेंद्रसूरेरभवच्च विद्या—नन्दस्तथा श्रीगुरुधर्मघोष ॥१४॥  
श्रीधर्मघोषादजनिष्ट सोम --प्रभो ऽस्य शिष्याश्च युगप्रभेया ।

चतुर्दिगुत्पन्नजनावनाय, योधा इव प्राप्तनिशुद्धयोधा ॥१५॥  
श्रीविमलप्रभसूरि, परमानन्दश्च पद्मतिलकश्च ।

सूरिवरो ऽप्यथ सोम-प्रभपट्टेशश्च सोमतिलकगुरु ॥१६॥

20

शिष्यान्त्रयन्तस्य च चद्रशेखर, सूरिर्जयानन्द इतीह सूरिराट् ।  
स्वपट्टसिंहामनभूमिवामव, शिष्यस्तृतीयो गुरुदेवसुन्दर ॥१७॥

श्रीदेवसुन्दरगुरोरथ पञ्च शिष्या, श्रीज्ञानसागरगुरु कुलमहन्श्च ।  
चचद्रगुणश्च गुणरत्नगुरुर्महात्मा, श्रीसोमसुन्दरगुरुर्गुरुमाधुरत्न ॥१८॥  
श्रीदेवसुन्दरमुनीश्वरपट्टेनेतु, श्रीसोमसुन्दरगुरोरपि 'पञ्च' शिष्या ।

25

तत्र स्वपट्टविद्यगणभानुमाली, मुख्योऽतिपद्गणवरो मुनिसुन्दरात्प ॥१९॥

अन्ये श्रीजयचंद्रः, सूरिः श्रीभुवनसुंदराहश्च ।

श्रीजिनसुन्दरसूरि-र्जिनकीर्तिश्चेति सुरीन्द्राः ॥२०॥

मुनिसुंदरसूरिपट्टभानु-गुरुरासौदथ रत्नशेखराऽऽख्यः ।

दधदस्य 'पदं' बभूवलक्ष्मी-पदयुक्सागरसूरिरीश्वराचार्यः ॥२१॥

सुमतिसाधुगुरुस्तदनुप्रभा—मुदवहदधदस्य पदं प्रभुः । 5

पदमदीदिपदस्य च हेमयुग्-विमलसूरिरुदात्तगुणोदयः ॥२२॥

पट्टे तस्य बभूवुस्प्रतपसो वैरंगिकाप्रेसराः ।

आनंदाद्विमलाऽऽह्वया गणभृतो भव्योपकारोद्घुराः ॥

ये नेत्रेभशराऽमृतद्युतिमिते (१५८२) वर्षे क्रियोद्धारत—

श्चक्रुः 'स्वां' जिनशासनस्य शिखरे कीर्तिं पताकामिव ॥२३॥ 10

प्रमादाऽभ्रच्छन्नं चरणतरणिं मंदकिरणं ।

पुनश्चक्रे दीप्तं रुचिररुचिरब्दात्यय इव ॥

सृजन्पद्मोक्लासं सुविशदपथश्चन्द्रमधुरो ।

दिदीपे निष्पंकः स इह गुरुरानंदविमलः ॥२४॥

विजयदानगुरुस्तदनुद्युतिं, तपगणे ऽधिकभाग्यनिधिर्दधौ । 15

श्रुतमहोदधिरोधितसद्विधि--विधुयशा जिनधर्मधुरंधरः ॥२५॥

अभूत्पट्टे तस्योक्लसितविजयो हीरविजयो ।

गुरुर्गीवाणौघप्रथितमहिमा ऽस्मिन्नपि-युगे ॥

प्रबुद्धो म्लेच्छेशां ऽप्यकवरनृपो यस्य वचसा ।

दयादानोदारो व्यतनुत महीमार्हतमयीम् २६॥ 20

तदनुविजयसेनसूरिराज-स्तपगणराज्यधुरं दधार धीरः ।

अकवरनृपतेः पुरो जयश्री-र्यमवरीदुरुवादिदृन्दत्ता ॥२७॥

जयति विजयदेवः सूरिरेतस्य पट्टे, मुकुटमणिरिवोद्यत्कीर्तिकांतिप्रतापः-

प्रथितपृथुतपःश्रीः शुद्धधीरिंद्रभूतेः, प्रतिनिधिरधिदक्षो जंगमः कल्पवृक्षः ॥२८॥

तेन श्रीगुरुणाहितो निजपदे दीपोपमो ऽदीदिपत् । 25

सूरिः श्रीविजयादिसिंहसुगुरुः प्राज्यैर्महोभिर्जगत् ॥

भूमौ स प्रतिबोध्य भव्यनिवहान् स्वर्गेऽप्यथ स्वर्गिणः ।  
 प्राप्तो बोधयितुं गुरौ विजयिनि "प्रेमाण" मुत्सृज्य नः ॥२६॥  
 तदनुपट्टपतिर्विहितो ऽधुना, विजयदेवतपागणभृता ।  
 गुणगणप्रगुणो ऽनणुभाग्यभू—विजयते गणभृद्विजयप्रभ ॥३०॥  
 निर्ग्रथं श्रीसुधर्माऽभिधगणधरत कोटिक सुस्थिताऽऽर्या— 5  
 चन्द्र श्रीचन्द्रसूरेस्तदनु च वनवासीति सामतभद्रात् ॥  
 सूरे श्रीसर्वदेवाद्द्वटगण इति य श्री जगच्चन्द्रसूरे—  
 विश्वे ख्यातस्तपा ऽऽत्यो जगति विजयतामेपगच्छो गरीयान् ॥३१॥

अथ प्रशस्ति

तत्र—श्रीहीरविजयसूरीश्वर—शिष्यौ सोदरावभूता द्वौ । 10  
 श्रीसोमविजयवाचक—वाचकवरकीर्तिविजयाख्यौ ॥३२॥  
 तत्र कीर्तिविजयस्य, किंस्तुम सुप्रभावममृतद्युतेरिव ।  
 यत्कराऽतिशयतो ऽजनि—ष्ट मत्प्रस्तरादपि सुधारमो ऽसकौ ॥३३॥  
 प्रतिक्रिया का यदुपक्रियाणा, गरीयसीनामनुसर्तुमीशे ।  
 ज्ञानादिदानैरुपचर्य सो ऽय, यै कल्पित कीटकणो ऽपि कुमी ॥३४॥ 15

विजयविजयनामा वाचकस्तद्विनेयः

समदृढदणुशक्तिप्रथमेन महार्थं ॥

तदिह किमपितत्स्यात्तुण्यमुत्सूत्रकाऽऽद्य ।

मयि विहितकृपैस्तत्करोविदै शोधनोय ॥३५॥

(रचना वि० स० १७०८ वर्षे राधोज्वलपचम्या जीर्णदुर्गे ॥) 20

इति लोकप्रकाशानाम्न सप्तत्रिंशद्सर्गबन्धन्य । जिनराजकोशस्य

श्रीसूरिपरम्परा—प्रशस्ति ॥



## श्रीफट्टावलीसारेद्वारः

( कर्ता — उपाध्यायश्रीरविवर्द्धनगणिः )

पंडितश्रीऽश्रीखिमाविजयगणिगुरुभ्यो नमः ॥

( १ ) ऐनमः श्रीवर्द्धमानतीर्थकरः । तत्पट्टे “श्रीसुधर्मस्वामी” ॥  
पंचाप५०द्वर्षाणि गृहस्थपर्याये त्रिंशद्वर्षाणि ३० श्रीमहावीरसेवायां श्रीवीरे  
मोक्षं गते च द्वादशवर्षाणि छाद्मस्थे अष्टौ ८ वर्षाणि केवलिपर्याये चेति  
सर्वायुः शतमेकं परिपाल्य श्रीवीरात् त्रिंशत्या वर्षैः २० सिद्धिं गतः । 5

श्रीवीरकेवलज्ञानोत्पत्तेः चतुर्दश१४वर्षे जमालीनामा प्रथमनिहवः  
१ स च निहवःसमुत्पन्नाध्यवसायविशेषेण भगवतीसूत्राद्यनुसारेण नराम-  
रतिर्यग्योनिपु प्रत्येकं पंचभवकरणे पंचदशभवान् भ्रात्वा उपदेशमाला  
हेयउपादेयवृत्त्याद्यनुसारेणाप्यनंतं भवं भ्रात्वा महाविदेहे सेत्स्यतीत्यत्रनि-  
र्णयः केवलीगम्यइति १ । 10

षोडश१६वर्षे तिष्यगुप्तनामा द्वितीयो निहव २ जातः ॥१॥

( २ ) श्रीसुधर्मस्वामिपट्टे द्वितीयः श्रीजंबूस्वामी ॥ स च षोडश-  
वर्षाणि १६ गृहस्थपर्याये त्रिंशति२०वर्षाणि व्रतपर्याये चतुश्चत्वारिंश४४-  
द्वर्षाणि केवलिपर्याये चेति सर्वायुरशीति८०वर्षाणि परिपाल्य श्रीवीरात्-  
चतुःषष्टि६४वर्षे सिद्धिं गतः ॥२॥ 15

( ३ ) श्रीजम्बूस्वामिपट्टे तृतीयः श्रीप्रभवस्वामी ॥ स च त्रिंश३०  
द्वर्षाणि गृहस्थपर्याये चतुश्चत्वारिंश४४द्वर्षाणि व्रतपर्याये एकादश११-  
वर्षाणि युगप्रधानत्वे चेति सर्वायुः पंचाशीति८५वर्षायुः परिपाल्य श्री-  
वीरात् पंचसप्तति७५वर्षातिक्रमे स्वर्गं प्राप्तः ॥३॥

( ४ ) श्रीप्रभवस्वामिपट्टे चतुर्थः श्रीशय्यंभवस्वामी ॥ स चाष्टा- 20  
२८वर्षाणि गृहस्थपर्याये एकादश११वर्षाणि व्रतपर्याये त्रयोविं-

शक्तिवर्षाणि २३ युगप्रधानत्वे सर्वायु द्वापष्टि ६२ वर्षाणि परिपाल्य श्रीवीरादष्टनवती ६८ वर्षाण्यतिक्रम्य स्वर्गभाग् ॥४॥

( ५ ) श्रीशय्यभद्रस्वामीपट्टे पचम श्रीयशोभद्रसूरि ॥ स च द्वाविंशति २२ वर्षाणि गृहे चतुर्दश १४ वर्षाणि व्रते पचाशद्वर्षाणि ५० युगप्रधानत्वे सर्वायु पडशीति ६८ वर्षाणि परिपाल्य श्रीवीरादष्टचत्वारिंशदधिके ५ शते १४८ वर्षातिक्रान्ते स्वर्गभाग् । ॥५॥

( ६ ) श्रीयशोभद्रसूरिपट्टे षष्ठौ श्रीसभूतिविजयश्रीभद्रवाहुस्वामिनौ ॥ तत्रमभूतिविजय द्विचत्वारिंशत् ४२ वर्षाणि गृहे चत्वारिंशत् ४० वर्षाणि व्रते अष्टौ वर्षाणि ८ युगप्रधानत्वे सर्वायुर्नवति ९ वर्षाणि परिपाल्य स्वर्गभाग् । श्रीभद्रवाहुस्वामी तु पचचत्वारिंशत् ४५ वर्षाणि गृहे सप्तदश १७ वर्षाणि व्रते चतुर्दश १४ वर्षाणि युगप्रधानत्वे सर्वायु पट्मत्तति ७६ वर्षाणि परिपाल्य श्रीवीरात्सप्तत्यधिकशत १७० वर्षातिक्रमे स्वर्गभाग् ॥६॥

( ७ ) श्रीसभूतिविजयश्रीभद्रवाहुस्वामिनो पट्टे मत्तम श्रीस्थूलभद्रस्वामी ॥ स च त्रिंशद्वर्षाणि ३० गृहे चतुर्विंशति २४ वर्षाणि व्रते पचचत्वारिंशत् ४५ वर्षाणि युगप्रधानत्वे सर्वायु नवनवति ९ वर्षाणि परिपाल्य श्रीवीरात् पचदशाधिकशतद्वय २१५ वर्षातिक्रमे स्वर्गभाग् ॥

अत्रातरे वीरात् चतुर्दशाधिकद्विशत २१४ वर्षे आपाढार्च्यार्यव्यक्तनामा तृतीय निहव ॥७॥

( ८ ) श्रीस्थूलभद्रस्वामिपट्टे अष्टमौ श्रीआर्यमहागिरि-श्रीआर्यसुहस्ती सूरि ॥ तत्र आर्यमहागिरि त्रिंशद्वर्षाणि ३० गृहे चत्वारिंशत् ४० वर्षाणि व्रते त्रिंशत् ३० वर्षाणि युगप्रधानत्वे सर्वायु शतमेक १०० परिपाल्य स्वर्गभाग् ॥

श्रीआर्यसुहस्तिस्वरिणा त्रिंशत् ३० वर्षाणि गृहे चतुर्विंशति २४ वर्षाणि व्रते पट्चत्वारिंशत् ४६ वर्षाणि युगप्रधानत्वे सर्वायु शतमेक १०० परिपाल्य श्रीवीरात् एकनवत्यधिकशतद्वये २६१ स्वर्गभाग् ॥ पर श्रीआर्यसुहस्तिस्वरिणा पूर्वभवे द्रमकीभूतोपि सप्रतिराजाजीव प्रत्राज्य त्रिपं-

डाधीपत्यं प्रापितः । तथा श्रीआचार्यसुहस्तिसूरिदीक्षितश्रीअचंतीसुकुमाल-  
मृतस्थाने तत्सुतेन देवकुलं कारितं तस्य महाकाल इति नाम संजातं ॥

तथा श्रीवीरात् विंशत्यधिकवर्षे शतद्वये २२० अश्वभिन्नात्सामुद्धेदि-  
कनामा चतुर्थोनिहवः । अष्टाविंशत्यधिक वर्षशतद्वये गंगनामा द्विक्रियवादी  
पंचमो निहवः ॥८॥

5

( ६ ) श्रीआर्यमहागिरि-श्रीआर्यसुहस्तिसूरिपट्टे नवमौ श्रीसुस्थित  
श्रीसूप्रतिवद्धसूरी ॥ काकंदिकनगर्यां जातत्वात् कोटिशःसूरिमंत्रजापाच्च  
एतो कोटिककाकंदिकतयाख्यातौ ॥ आभ्यां "कौटिक" नामा गच्छो ऽभूत् ।

अयं भावः श्रीसुधर्मस्वामिनोऽष्टसूरीन् यावन्निग्रंथा साधयो अन-  
गारा इतिसामान्यार्थाभिधायिन्याख्याभूत् नवमे पट्टे कौटिका इति विशे- 10  
पार्थावबोधकं द्वितीयं नाम प्रादुर्भूतं, अत्रांतरे प्रज्ञापनासूत्रकृत्श्रीआर्यश्या-  
माचार्यः श्रीवीरात् षट्सप्तत्यधिकशतत्रये ३७६ वर्षे स्वर्गभाग् ॥६॥

( १० ) श्रीसुस्थित-सुप्रतिवद्धपट्टे दशमः श्रीइददिन्नसूरिः ॥

अत्रांतरे श्रीवीरात्पंचाशदधिकवर्षचतुःशता४५०तिक्रमे गर्दभिल्लो-  
च्छेदकारी श्रीकालिकसूरिः ॥

15

तथा श्रीसिद्धसेनदिवाकरोपि जातो येनोज्जयिन्यां महाकालप्रासादे  
रुद्रलिंगस्फोटनं कृत्वा कल्याणमंदिरस्तवनेन श्रीपार्श्वनाथविंबं प्रकटीकृत्य  
श्रीविक्रमादित्यराजापि प्रतिबोधितः श्रीवीरनिर्वाणात् सप्ततिवर्षाधिकशतः  
चतुष्टये४७०ऽतिक्रमे श्रीविक्रमादित्यराज्यं संजातं ॥१०॥

( ११ ) श्रीइन्द्रदिन्नसूरिपट्टे एकादशः श्रीदिन्नरत्नसूरिः ॥११॥

20.

( १२ ) श्रीदिन्नरत्नसूरिपट्टे द्वादशः श्रीसीहगिरिः ॥१२॥

( १३ ) श्रीसीहगिरिसूरिपट्टे त्रयोदशः श्रीवज्रस्वामी ॥ स च वज्र  
शाखोत्पत्तिमूलं दशपूर्वविदांसपश्चिमः अष्टौऽवर्षाणि गृहे चतुश्चत्वारिंशद्  
४४ वर्षाणि व्रतेः षट्त्रिंशद्वर्षाणि युगप्रधानत्वे सर्वायुरष्टाशीति ८८ वर्षा-  
णि परिपाल्य श्रीवीरात् चतुरशीतिवर्षाधिकपञ्चशतवर्षाणि ५८४ अति- 25  
क्रमे स्वर्गभाग् ॥ तथा श्रीवीराद्दृष्टचत्वारिंशदधिकपञ्चशत५४८वर्षाणि त्रैरा

शिकमतजित् "श्रीसुगुप्तसूरि" स्वर्गभाग् ॥

तथा श्रीवीरात् सपादपचशत५२५वर्षे "श्रीशत्रुजयतीर्थोच्छेद" ।  
सप्ततिवर्षाधिकपञ्चशत५७०(५७८)वर्षे जावडकृतोद्धार ॥१३॥

(१४) श्रीवज्रसेनसूरिपट्टे चतुर्दश "श्रीवज्रदिज्ञसूरि" (वज्रसेनसूरि) ॥  
स च नववर्षाणि गृहे षोडशाधिकशतवर्षाणि व्रते त्रीणि वर्षाणि युगप्रधानत्वे 5  
सर्वायुसाष्टाविंशतिशत परिपाल्य वीरात् विंशत्यधिक पट्शतवर्षे स्वर्ग-  
भाग् । नत्राधिकपट्शतवर्षाते ६०६ दिगम्बरोत्पत्ति ॥१४॥

(१५) श्रीवज्रसेनसूरिपट्टे पञ्चदश "श्रीचन्द्रसूरि" तस्मात् "चंद्र-  
गच्छ" इति तृतीय नाम प्रादुर्भूत ॥१५॥

(१६) श्रीचन्द्रमूरिपट्टे षोडश "श्रीमामन्तभद्रसूरि" स च वैराग्य- 10  
वान् निर्ममतया देवकुले वनादिष्ववस्थानात् लोके वनवासीप्युक्तस्तस्माद्यतुर्थं  
नाम "वनवासी"तिप्रादुर्भूते ॥१६॥

(१७) श्रीमामन्तभद्रसूरिपट्टे सप्तदश "श्रीवृद्धदेवसूरि" ॥१७॥

(१८) श्रीवृद्धदेवसूरिपट्टे अष्टादश "श्रीप्रद्योतनसूरि" ॥१८॥

(१९) श्रीप्रद्योतनसूरिपट्टे एकोनविंशतितम "श्रीमानदेवसूरि" १९ 15

(२०) श्रीमानदेवसूरिपट्टे विंशतितम 'श्रीमानतुङ्गसूरि' ॥

येन श्रीभक्तामरस्तयन कृत्वा बाणमयूरपण्डितप्रिद्याचमत्कृतो ऽपि  
चित्तिपति प्रतिप्रोधितः ॥२०॥

(२१) श्रीमानतुङ्गसूरिपट्टे एकोविंशतितम "श्रीगीरसूरि" ॥

स च श्रीवीरात्सप्तत्यधिकसप्तशतवर्षे विक्रमात् त्रिंशतिवर्षे श्रीनाग-20  
पूरे श्रीनेमिनाथप्रतिष्ठाकृत ॥२१॥

(२२) श्रीगीरसूरिपट्टे द्वाविंशतितम "श्रीजयदेवसूरि" ॥२२॥

(२३) श्रीजयदेवसूरिपट्टे त्रयोविंशतितम श्रीदेवानदसूरि ॥

अत्रावरे श्रीगीरात् पचचत्वारिंशदधिकाष्टशतवर्षान्ते ८४५ बलभी-  
पुरभग । द्वयशीत्यधिकाष्टशतवर्षातिक्रमे चैत्यस्तीति ॥२३॥ 25

(२४) श्रीदेवानदमूरिपट्टे चतुर्विंशतितम श्रीविक्रमसूरि-॥२४॥

( ४१ ) श्रीमुनिचंद्रसूरिपट्टे एकचत्वारिंशत्तमः “श्रीअजितदेव-  
सूरिः” ॥४१॥

तत्समये सं०१२०४वर्षे “खरतरमतोत्पत्तिः” संवत् १२१३ वर्षे  
“आंचलकमतोत्पत्तिः” संवत् १२२६ वर्षे “सार्द्धपौर्णमास्यकमतोत्पत्तिः”  
संवत् १२५० वर्षे “आगमियकमतोत्पत्तिः” वीरात् द्विनवत्यधिकपोडश 5  
शत१६६२वर्षे चाहडदेमंत्रिकृतोद्धारः ॥४१॥

(४२) श्रीअजितदेवसूरिपट्टे द्विचत्वारिंशत्तमः “श्रीविजयसिंहसूरिः”

( ४३ ) श्रीविजयसिंहसूरिपट्टे त्रिचत्वारिंशत्तमौ “श्रीसोमप्रभ-  
सूरिः” “श्रीमणिरत्नसूरिः” ॥४३॥

(४४) श्रीमणिरत्नसूरिपट्टे चतुश्चत्वारिंशत्तमः “श्रीजगच्चंद्रसूरिः” 10

स च क्रियापरायणः सन् “हीरलाजगच्चंद्र”सूरिरिति ख्यातिभा-  
ग्जातः तथा यावज्जीवमाचाम्लतपोभिग्रही द्वादशवर्षे तपाविरुदमाप्त-  
वान्, ततो लोके पष्टं नाम संवत् १२८५वर्षे “तपा” इति प्रसिद्धं जातं ॥

तथा च निर्ग्रथ १ कोटिक २ चंद्र ३ वनवासि ४ वडगच्छ ५ तपा  
६ इति षण्णां नाम्नां प्रवृत्तिहेतवः आचार्याः क्रमेण श्रीसुधर्मस्वामि १ श्रीसु- 15  
स्थितसूरि २ चंद्रसूरि ३ श्रीसामंतभद्रसूरि ४ सर्वदेवसूरि ५ श्रीजगच्चं-  
द्रसूरि ६ नामानि पट् आसन् ॥४४॥

(४५) श्रीजगच्चंद्रसूरिपट्टे पंचचत्वारिंशत्तमः “श्रीदेवेन्द्रसूरिः” ।

स च चिरकालं मालवके एव विहृतवान् ॥ क्रमेण श्रीदेवेन्द्रसूरयः श्रीस्थंभ-  
तीर्थे समायाताः तत्र च श्री विजयचंद्रसूरयः एकस्यां पौषधशालायां लोका- 20  
ग्रहात् द्वादश वर्षाणि पूर्वं स्थितवंतः प्रब्रज्यादिकृत्यमपि गुर्वाज्ञामंतरेणैव  
कृतवंतश्च, तथामालवदेशादागतानां श्रीदेवेन्द्रसूरीणां वंदनार्थमपि ना-  
याताः, ततो लोकैश्च वृद्धशालायां स्थितत्वात् श्रीविजयचंद्रसूरिसमुदायस्य  
‘वृद्धशालिक’ इति प्रोक्तं, तथा लघुशालायां स्थितत्वात् श्रीदेवेन्द्रसूरि  
निश्रितसमुदायस्य “लघुशालिक” इति ख्यातिर्जाता ।

तत्समये मन्त्रिवस्तुपालेन श्रीदेवेन्द्रसूरीणा बहुमान कृतं, क्रमेण विहार कुर्वन्तश्च श्रीसूरय प्रल्हादपुरनगरे समायाता, तत्र च सवत् १३२३ वर्षे विद्यानदसूरि स्वपदे सस्थाप्य पुनरपि मालवदेशे विहृतवत् तत्र मालवके एव स० १३२७ वर्षे श्रीदेवेन्द्रसूरयो दिव गता ।

तदा दैवयोगाद्विद्यापुरे श्रीविद्यानदसूरयोऽपि त्रयोदशदिनातरिता ६ स्वर्गभाज ॥ तथा श्रीगुरूणा स्वर्गगमन श्रुत्या स०भीमेन मतातरे सोनीस-  
ग्रामेण द्वादशवर्षाणि धान्य त्यक्त ॥४५॥

( ४६ ) श्रीदेवेन्द्रसूरिपट्टे पट्टचत्वारिंशत्तम श्रीधर्मधोपसूरि ॥  
येन मडपाचले सा० पेथडदेव सौख्यभाग् कृत सोऽपिमडपेशप्राधान्य  
प्राप्तस्तेन ८४ श्रीजिनप्रसादा सप्तज्ञानकोशाश्च कारिता पट्टचाशत् स्वर्ण- 10  
धटीव्ययेनेन्द्रमाला श्रीशत्रुजयोपरि परिहिता, तथा सा०पेथडदेव द्वात्रिंश  
द्वर्षीयोपि ब्रह्मचार्यभूत् तस्य पुत्रो भ्राह्मणदेनामा एक एवासित् येन च श्री-  
शत्रुजयोजयत्तगिर्यो शिरसरे द्वादशयोजनप्रमाणस्वर्णरूप्यमय एक एव  
ध्वज समारोपित तथा येन मडपाचले जिर्णटक्राना पट्टत्रिसत्सहस्रैः  
श्रीगुरूणा प्रवेशोत्सव कृत ॥ 15

तथा एकदा श्रीगुरुभि काभिश्चित् दुष्टस्त्रिभिः कार्मणोपेता वटका साधूना विहरिता भूपीठे त्याजिता प्रभाते ते पापाणमया अभवन् तदा वासाभिमन्त्र्यार्पितपट्टकासनस्थादुष्टस्त्रिय स्थम्भिता । ताश्च कृपया मुक्ता, एव महा प्रभावका श्रीगुरव सवत् १३५७ वर्षे दिव गता ॥४६॥

( ४७ ) श्रीधर्मधोपसूरिपट्टे मत्तचत्वारिंशत्तम श्रीसोमप्रभसूरि ॥ 20  
तस्य च सवत् १३१० वर्षे जन्म सवत् १३२१ वर्षे व्रत सवत् १३३० वर्षे  
सूरिपट्टे । य कठगतकादशागसूत्रार्थ समासीत्, येन जलवहुलशुक्लदेशे  
अपकायविराधनाभयात् मरुदेशे शुद्धजलदौर्लभ्याश्च साधूना विहार-  
प्रतिपिद्ध क्रमात् सवत् १३७३ वर्षे ते श्रीसूरयो दिव गता ।

( ४८ ) श्रीसोमप्रभमूरिपट्टे अष्टचत्वारिंशत्तम श्रीसोमतिलकमूरि 25  
तस्य च सवत् १३५५ वर्षे जन्म सवत् १३६६ वर्षे दीक्षा स० १३७३ वर्षे  
सूरिपट्टे संवत् १४२४ वर्षे एकोनसप्ततिवर्षायु परिपाल्य स्वर्ग ॥४८॥

(४६) सोमतिलकसूरिपट्टे एकोनपंचाशत्तमः “श्रीदेवसुंदरसूरिः” तस्य च सं०१३६६वर्षे जन्म, सं०१४०४वर्षे व्रतं, सं०१४२० वर्षे सूरिपदं । श्रीदेवसुंदरसूरीणां च श्रीज्ञानसागरसूरयः श्रीकुलमंडनसूरयः श्रीगुणरत्नसूरयः श्रीसोमसुंदरसूरयः श्रीसाधुरत्नसूरयः अनेकग्रंथकर्तारः शिष्याश्चाऽभवन् ४६ ।

5

( ५० ) श्रीदेवसुंदरसूरिपट्टे श्रीसोमसुंदरसूरिः ॥ तस्य च संवत्- १४३०वर्षे जन्म, सं०१४३७वर्षे व्रतं, सं०१४५०वर्षे वाचकपदं १४५७ वर्षे सूरिपदं ॥ तथा १८शतसाधुपरिकरितं सत्क्रियापरं श्रीगुरुं- विलोक्य रुष्टैर्द्रव्यलिङ्गिभिरेकः शस्त्रधारिपुमान् पंचशतद्रव्यदानेन श्रीसूरिवधार्थं उदीरितः स च दुर्धिया वसतौ प्रविष्टो यावदनुचितकरणाय 10 यतते तावच्चन्द्रोद्योते जाते निद्रालुभिरपि श्रीगुरुभिः रजोहरणेन प्रमृज्य- पार्श्वं परावर्तितं तत्तद्दृष्ट्वा ऽहोनिद्रायायपि जुद्रप्राणिषु कृपापरमेतं विराध्य कस्यां गतौ मे गतिरिति विचारणया परलोकभीतो गुरुपादयोर्निपत्य क्षमध्वं- मेऽपराधमिति वचसा गुरुं प्रबोध्य निजव्यतिकरं प्रोक्तवान्, सोपि श्रीगुरु- भिस्तथोदीरितो यथा स प्रवर्जितः इति वृद्धवचः । स च राणकपुरे श्रीधरण- 15 विहारोपदेशकः संयममाराध्य सम्वत् १४६६ वर्षे स्वर्गभाक् ५० ।

( ५१ ) श्रीसोमसुंदरसूरिपट्टे एकपंचाशत्तमः “श्रीमुनिसुंदरसूरिः” येनाष्टोत्तरशतहस्तमितो लेखः श्रीगुरूणां प्रेषितः, तथा च अष्टोत्तरशतवर्तु- लिकानादोपलक्षकः वाल्येपि सहस्राविधानधारकः सप्रभावं संतिकर मितिस्तवकरणेन योगिनीकृतमार्युपद्रवनिवारकः तस्य सम्वत् १४३६ वर्षे 20 जन्म, सं १४४३ वर्षे व्रतं सम्वत् १४६६ वर्षे वाचकपदं सम्वत् १४७८ वर्षे ३२००० हेमटंकव्ययेन वृद्धनगरीय संदेवराजेन सूरिपदं कारितं । सम्वत् १५०३ वर्षे स्वर्गः ॥५१॥

(५२) श्रीमुनिसुंदरसूरिपट्टे द्विपंचाशत्तमः “श्रीरत्नशेखरसूरिः” ॥ तस्य च संवत् १४५७वर्षे जन्म, संवत् १४६३वर्षे व्रतं, सं०१४८३वर्षे 25 पंडितपदं सं०१४६३वर्षे वाचकपदं सं०१५०२वर्षे सूरिपदं सं०१५१७

वर्षे स्वर्गं तदानीं लुङ्कारयातो लेखकात् सप्त१५०८वर्षे श्रीजिनप्रति-  
मोत्थापनपर "लुङ्कामत" प्रवृत्त, तद्वेपथरस्तु म०१५३८वर्षे जात,  
तत्प्रथमो वेपथरी ऋषिभाण्डार्यो ऽभूदिति ॥५२॥

(५३) रत्नशेखरमूरिपट्टे त्रिपचाशत्तम श्रीलक्ष्मीसागरसूरि ॥

तस्य च स०१४६४वर्षे जन्म, म १४७०वर्षे दीक्षा स०१४८६-५  
वर्षे पंडितपद स०१५०१ वर्षे वाचकपद स०१५०८वर्षे सूरिपद स०१५१७-  
गच्छनायकपद ॥५३॥

(५४) श्रीलक्ष्मीसागरसूरिपट्टे चतुपचाशत्तम "श्रीसुमतिसाधुसूरि"

(५५) श्रीसुमतिसाधुसूरिपट्टे पचपञ्चाशत्तम "श्रीहेमविमलसूरि"

य क्रियाशिक्षितसाधुसमुदाये वर्तमानोपि माध्वाचार नातिक्रान्त तथाऋ- 10  
षिहानर्षिश्रोपति ष्टपिगणपतिप्रमुग्ना लुङ्कामतमप.स्य श्रीहेमविमलसूरिपार्थ-  
प्रव्रज्य तन्निश्रया चारित्रभाजा वभुवास । तथा सवत्१५६२वर्षे सप्रति  
साधनो न ह्यपथमायातीत्यादिरुपणपर "कटुकनाम्ना मत" प्रवर्तित, गृह-  
स्थात् त्रिस्तुतिक्रमतवासितात् ऋदुकमतोत्पत्ति । तथा १५७०वर्षे लुङ्का-  
मताभिर्गन्ध विजयवेपथारिणा प्रिजामतिनाम्ना मत प्रवर्तित । तथा सवत्- 15  
१५७२ वर्षे नागोरीतपागणाटुपाध्यायपार्श्वचन्द्रेण स्वनाम्ना मत प्रकटिता ॥५५॥

(५६) श्रीहेमविमलसूरिपट्टे षट्पचाशत्तम "श्रीआण्डविमल-

सूरि" तस्य च सवत्१५४७वर्षे ईलादुर्गे जन्म स०१५५२वर्षे व्रत

स०१५७०वर्षे सूरिपद । य क्रियाशिक्षितवहसाधुजनपरिकरितोपि

सत्रेगरगभावितमति उत्सुत्रप्ररपणापरायणजनसमूह समालोक्य करुणा- 20

रसावल्लभमना गुर्वाज्ञया कतिचित् सविद्वन्साधुमहाय स०१५८२वर्षे शिथि-

लाचारपरिहाररूपक्रियोद्धारयानपात्रेण त भव्यजन समुद्भूतवान् ।

यो वादे जयो स नगरादौ स्थाम्यति नान्य इति सुराप्र्राधिपतिनामाकित

लेखमादाय सुराष्ट्रे साधुविहारनिमित्तं यदित्राचक सुरत्राणदत्तपर्यस्तिका

रोह पातमादिप्रदन् "मल्लिकश्रीनगदल" प्रिरुत् मा०तूणमिह श्रीआण्ड- 25

विमल मूर्गीणा प्रिज्ञप्तिं त्रिधाय पन्यासजगर्षिप्रमुग्गसाधुविहार कारितवान् ।



तथा जेसलमेर्वादिमरुभूमौ जलदोर्लभ्यान् दुष्करोयमिति श्रीसोमप्रभ-  
 सूरिभिर्विहारः पूर्वं सन्प्रतिपिद्ध आसित् सोपि विहारः कुमतव्याप्तिभिया  
 जनानुकंपया च भुयो लाभहेतवे पुनरप्यनुज्ञातः श्रीसूरिणा तत्रापि प्रथमं  
 वैराग्यनिधि निस्पृहावधिर्जावज्जीवजघन्यतोपि षष्ठतपोऽभिगृही पारण्यकेया-  
 चाम्लादितपोविधायी उपाध्याय श्रीविद्यासागरगणिविद्वत्त्वान् तेन च 5  
 जेसलमेर्वादौ खरतरान् मेवातदेशे च वोजामतिप्रभृतीन् मरुदेशादौ  
 लुम्पकादीन् प्रतिबोध्य वीरग्रामे पासचंद्रव्युद्ग्राहितं जनं च प्रतिबोध्य  
 भूयान् जनो जैनधर्मं प्रापितः, एवं मालवकादिवहुदेशेषु विद्वृत्य वैराग्यवा-  
 सिनो जनाः कृताः । तथाक्रियोद्धारकरणानन्तरं च श्रीआणंदविमलसूरयः  
 चतुर्दशवर्षाणि जघन्यतोपि नियततपोविशेषं विहाय षष्ठतपो अभिग्रहेण 10  
 चतुर्थषट्पाभ्यां विंशतिस्थानकाराधनाद्यनेकविक्रष्टतपःकारिणश्च सं०  
 १५६६ वर्षे चैत्रशुदिसप्तम्यामाजन्मातिचाराद्याआलोच्य नवभिरुपवासै-  
 रहमदावादनगरोपकंठे निजां पूरे (?) स्वर्गं प्राप्तः ॥५६॥

(५७) श्रीआणंदविमलसूरिपट्टे सप्तपंचाशत्तमः “ श्रीविजयदान-  
 सूरिः” येन स्थंभतीर्थमहानगरेषु महामहोत्सवपुरस्सरमनेकजिनत्रिवशतानि 15  
 प्रतिष्ठितानि यदुपदेशेन पातसाहिमुहिम्मुदमान्येन मंत्रिगलराजेन पा-  
 रमासिकां शत्रुंजयमुक्तिं कारयित्वा सकलनगरसङ्घसहितेन श्रीशत्रुंजययात्रा  
 कृता, तथा यदुपदेशपरायणैः गंधारीयसा० रामजी—अहम्मदावादसत्कसं०  
 कुंअरजीप्रमुखैः श्राद्धैः श्रीशत्रुञ्जयोज्जयन्तगिर्योः जीर्णोद्धारो देवकुलिकाच-  
 तुर्मुखादयः कारिताः । तथा यः श्रीसूरिः जावज्जीवं वृतातिरिक्तविकृतिपंचप- 20  
 रिहारी अनेकवारैकादशांगपुस्तकशुद्धिकारः सर्वजनप्रसिद्धोभूत् तस्य च  
 सं० १५५३ वर्षे जांमलाख्यनगरे सा० भामोसा—मातृभ्रमादे गृहे जन्म,  
 त्रयो भ्रातरः, भागिनेयो विजयः x x लक्ष्मणकुंअर, सं० १५६२ वर्षे दीक्ष-  
 सं० १५८७ वर्षे सूरिपदं, संवत् १६२२ वर्षे वडालीनगरेऽनशनेन स्वर्गः ५७

(५८) श्रीविजयदानसूरिपट्टे अष्टपंचाशत्तमः “श्रीहीरविजयसूरिः” सं० 25  
 १५८३ वर्षे प्राह्लादनपुरवास्तव्यउकोशह्लातीयसा० कुंअरजीभार्यानाथीगृहे

जन्म, सवत् १५६६ वर्षे कार्तिकचतुर्दिने दीक्षा, स० १६०७ नारदपूर्णा पङ्क्ति  
 पद स० १६०८ वर्षे माघशुद्धि ५ दिने नारदपूर्णा वाचकपद, स० १६१०  
 वर्षे सीरोहीनगरे सूरिपद । तथा चैरनेकनगरेषु सहस्रशो विंशानि प्रतिष्ठितानि  
 तथा अहम्मदावादनगरे ऋषिर्मेजजीनामा स्वयं मत परित्यज्य पचविंशति-  
 मुनिभि सह श्रीगुरुचरणमेवापरो जात । तथा श्रीगुरव पातसाहि अक- 5  
 व्वरेण स्त्रनामाकित फुरमान प्रेष्य गगरवदिरात् श्रीआगरानगरासन्न  
 फत्तेपुरनगरे समाहूता सन्त विहार कुर्वन्त क्रमेण सम्बत् १६३६ वर्षे  
 ज्येष्ठशुद्धि ३ त्रयोदशीदिने तत्र सम्प्राप्ता श्रीसाहिना सम मिलिता  
 साधिकप्रहर यावत्तत्र धर्मगोष्ठी कृत्वा श्रीसाहिना अनुजाता  
 सन्तो महताडम्बरेणोपाश्रये समायाता । तदानीं सकलोपि 10  
 लोक श्रीहीरसूरिसेवापरो जात । तस्मिन् वर्षे श्रीआगरानगरे चा-  
 तुर्मासक कृत तदनुश्रीगुरुभि श्रीशोरीपुरयात्रा च कृत्वा आगरानगरे सा०  
 मानसिंघकल्याणमल्लकारितश्रीचिंतामणिपार्श्वनाथविव प्रतिष्ठित पुन-  
 रपि फत्तेपुरनगरे समागत्य श्रीसूरय पातसाहिना साक मिलिता तदवसरे  
 धर्मवार्तया रजित पातसाहि द्वादशदिवसामारिसत्क फुरमान स्वनामा- 15  
 क्ति श्रीगुरूणा वृत्तान्, तदा च श्रीजिनधर्मोन्नतिर्महती जाता । तदवसरे  
 श्रीमेडतीयसदारगेण याचकेभ्यो मूर्तिमद्गजदानद्विपचाशदश्वदानादि-  
 ना दील्लिमडले श्राद्धना प्रतिगृह्णः मेरद्वयप्रमाणजडलभनिकाकरणादि-  
 ना च श्रीगुरूणा प्रतिष्ठा महती सजाना । तथा प्रथम चातुर्मासीक श्रीआगरा-  
 नगरे द्वितीय फत्तेपुरे तृतीय अभिरामावादे, चतुर्थपुनरपि आगरानगरे 20  
 एव चतुर्मासकचतुष्टय तत्र देशे कृत्वा, गुर्जरदेशसपाप्रहात् मेडतादिनगरे  
 विहार कुर्वन्तो नागोरनगरे च चतुर्मासक कृत्वा क्रमेण सूरय श्रीसीरोही-  
 नगरे समागता तत्रापि प्रतिष्ठाद्वय श्रीश्रवृंशचलतीर्थयात्रा च कृत्वा रा-  
 जश्रीसूलतानजीकन्याग्रहवशात् श्रीसीरोहीनगरे चातुर्मासीक स्थिता ।  
 तदनु विहार कुर्वन्त श्रीपाटणनगरे चातुर्मासक चक्रु

25

श्रीहीरमूरय क्रमेण भव्यजीवान् प्रतिबोध्य च श्रीदीवप्रदीरास  
 नजाननगरे गन्त १६५२ वर्षे भाद्रवाशुद्धि ११ दिने स्वर्गं प्राप्ता ॥५८॥

( ५६ ) हीरविजयसूरिपट्टे एकानपष्टितमः “श्रीविजयसेनसूरिः” तस्य च संवत् १६०४ वर्षे नारदपूर्वा उकेशजातीयसा०कमाभार्याकोडम-  
देगृहे जन्म, संवत् १६१३ वर्षे दीक्षा, सं० १६२८वर्षे पंडितपदं, सं०  
१६२८ वर्षे फाल्गुन शुक्ल ७ दिने श्रीअहमदाबाद नगरे उपाध्याय  
पददानपूर्वकं सूरिपदं । तैश्च सं०१६३२वर्षे चांपानेरदुर्गे प्रतिष्ठा ०  
कृता, तथा श्रीसूरतिवन्दरे श्रीभूषणनामा दिगंबरार्चार्थो निर्जितः ॥

तथा श्रीहीरविजयसूरिपु विद्यमानेषु आचार्यगुणगणान्तरण्य  
पातसाहिश्रीअकव्वरः श्रीआचार्यान् श्रीलाहोरनगरे समाकार्य श्रीहीरमूरी-  
णांश्च कुशलप्रश्नं प्रपृच्छ, तत्र च श्रीसूरिचचनचातुरीरंजितः श्रीसाहिः  
श्रीसूरीणां “कालिसरस्वती” विरुद्धं दत्तवान् । श्रीसाहेरत्याग्रहात् चातुर्मासक- 10  
द्वयं विधाय शरीरत्राधावशात् श्रीहीरसूरिभिराकारिता श्रीसाहिपादानापृच्छथ  
श्रीसूरयः चातुर्मासकमध्येपि चलंतः श्रीपाटणनगरे समागतास्तदा च  
संवत् १६५२ वर्षे श्री उंनानगरे श्रीहीरविजयसूरेश्च निर्वाणं समाकर्ण्य  
तत्रैवस्थिताः तत्र क्रमेण संवत् १६५४वर्षे श्रीशकंदरपुरे श्रीविजयचिंतामणि  
पार्श्वनाथविंश्यापनां विधाय लाडोलग्रामे सूरिमंत्राराधनं विधाय च 15  
श्रीस्थंभतीर्थे श्रीविजयदेवसूरिभ्यः सूरिपदं दत्त्वा श्रीपाटणनगरे गणाऽनुज्ञा-  
नेदि श्रीसूरयश्चक्रुः, तदा राजनगरवास्तव्यसा०सूराकेन प्रतिश्राद्धगृहं सहं-  
मूदिकालंभनिका चक्रे तस्मिन् संवत्सरे श्राद्धैर्लक्ष्महंमुंदिकाव्ययश्च कृतः  
एवमनेकभव्यजनान् प्रतिबोध्य पंचाशज्जिनप्रतिष्ठां च कृत्वा अप्रवाचक-  
पदानि दत्त्वा सार्द्धशतषण्डितपदानि च दत्त्वा द्विसहस्रपरिकराः श्रीविज- 20  
यसेनसूरयः स्थंभतीर्थे संवत् १६७१ वर्षे ज्येष्ठवदि११दिने स्वर्गं  
प्राप्ताः ॥५६॥

( ६० ) श्रीविजयसेनसूरिपट्टे षष्ठितमः “श्रीविजयदेवसूरिः” तस्य  
च संवत् १६३४वर्षे ईडरदुर्गे उकेशजातीय सा०थिरा-भार्यारूपागृहे जन्म,  
संवत् १६४३ वर्षे दिक्षा, संवत् १६५५ वर्षे पन्यासपदं, संवत् १६५६ वर्षे 25  
सूरिपदं, तस्य च पदमहोत्सवे स्थंभतीर्थवासि श्रीमल्लकेन दशसहस्ररूप्यक

व्ययश्चक्रे, सवत् १६५८ वर्षे पाटणनगरवासिपारित्तमहम्नवीरेण पच-  
महस्रमहमु दिक्काव्ययेन गणानुज्ञानदिमहोत्सव कृत ॥

अत्रातरे पातसाहि श्रीजिहागिर श्रीमटपाचले समाकार्य  
श्रीजैनवर्मचर्चाश्रवणान् सतुष्ट सन श्रीसूरीणा "महातपा" विरुद्ध दत्तवान् ,  
तन्महोत्सव सा० चद्रकेन कृत क्रमेण विहारकुर्णन् मात्रलीनगरे मूर्गिभत्रा- 5  
राधन कृत्वा च कालातरे ईडरनगरवामि सा० सहजूकृतमहोत्सवेन सवत्-  
१६८२ वर्षे श्रीत्रिजयमिहस्रि श्रीगुरु स्थापयामाम । तदनु सवत् १६८४-  
वर्षे जालोरनगरे म० जयमल्लजीकेन श्रीविजयसिंहसूरीणा गणानुज्ञानदि-  
महोत्सवश्चक्रे, क्रमेण श्रीउदयपुरे राणाश्रीजगमिपजीअत्याग्रहात चातु-  
र्मासक कृत्वा श्रीगुर्जरदेशे श्रीआचार्यसहिता श्रीसूर्य समागता । श्रीशतु- 10  
जयतीर्थ-यात्रा प्रतिष्ठा च कृत्वा, क्रमेण दक्षिणदेशे वर्डानपुरवीजापुरनग-  
रादिसवकृतमहोत्सवेन चातुर्मासचतुष्टय श्रीसूरि कृतवान् , तदनु सवाग्र-  
हात् श्रीगुर्जरदेशमलचकार ।

तस्मिन् समये "श्रीविजयसिंहसूरयोपि" मन्देशादायाता श्रीअ-  
हम्नदावादनगरे श्रीविजयदेवसूरिचरणान्नेमु क्रमेण भव्यजीवान् प्रति- 15  
वोप्यत श्रीसूर्य स्थमतीर्थे चातुर्मासक स्थितवाम तस्मिन् समये श्रीत्रि-  
जयमिहसूरि शरीरवावावशान् अहमदावादनगरामन्नवीनपुरे तस्थि-  
वान् , तस्य च सवत् १६४४ वर्षे श्रीमेडतानगरे उकेगजातियसा० नथ-  
मल्ल-भार्गनायकदेगृहे जन्म । सवत् १६५४ वर्षे दीक्षा, सवत् १६७३  
वर्षे वाचकपद, सवत् १६८२ वर्षे सूरिपद अष्टात्रिंशत्तिवर्षाणि गुरुमे- 20  
वाया, सवत् १७०६ वर्षे आपादशुद्धिदिने स्वर्गगति ।

तदनु श्रीपरमगुरु गधारवदिरे समेत्य श्रीराजनगगदिमात्राग्रहात्  
ग्रेपट्टे श्रीत्रिजयप्रभमूर्ति गस्थाप्य श्रीगुग्गुत्तिरे चातुर्मासक तस्थो, क्रमेण  
भव्यजीवान् प्रतिवोप्यत श्रीआचार्यसहिता श्रीगुग्गु मौराष्ट्रेशमवा  
ग्रान् श्रीशतुनपतीर्षयात्रा कृत्वा श्रीदीवन्दिगान्नडनानगरे समेता 25  
तत्र च सवत् १७१३ वर्षे आपादशुद्धिदिने स्वर्ग प्राप्त ।

( ६१ ) श्रीविजयदेवसूरिपट्टे एकपष्टितमः श्रीविजयप्रभसूरिः ॥  
 तस्य च संवत् १६७७ वर्षे कच्छदेशे मनोहरपुरे उकेशज्ञातीयसा० शिव-  
 गण भार्याभाणवाङ्गूहे जन्म, संवत् १६८६ वर्षे दिक्षा, संवत् १७०१ वर्षे  
 पन्यासपदं संवत् १७१० वर्षे गंधारवंदरे सूरिपदं, श्रीराजनगरीय सा० अ-  
 षड्देवचंद्रभार्यासाहिवदेनाम्न्या श्राविक्रया पदमहोत्सवः कृतः, श्रीसूरिभिः ६  
 देवतोपदेशात् “श्रीविजयप्रभसूरि” रितिनाम सप्रत्ययं प्रदत्तं । तदनु सूरयः  
 श्रीआचार्यसहिताः संवत् १७११ वर्षे श्रीराजनगरे समागतास्तत्र चतुर्मा-  
 सके समुत्तिर्णे सा० सूरारतन-सूरासाधनजीकेन बहुद्रव्यव्ययकरणपूर्वकं  
 गणानुज्ञानंदिमहोत्सवः कृतः । क्रमेण संवत् १७१३ वर्षे श्रीपरमगुरुचरण-  
 सेवां कुर्वतः श्रीविजयप्रभसूरयः सौराष्ट्रदेशं समलंचक्रुः, सत्र चातुर्मास- 10  
 द्दशकं कृत्वा सं० १७२२ वर्षे गुर्जरदेशे समायाता स्तत्र चातुर्मासत्रयं  
 कृत्वा सं० १७२६ वर्षे श्रीउदयपुरनगरे समागताः ।

उदयपुरवास्तव्यसा० जीवोजावरीओ (ए) प्रासाद कराव्यो, तेनी  
 प्रतिष्ठा करावी, बहुद्रव्यव्ययः कृतः ।

ततस्तद्देशे चतुर्मासद्वयं कृत्वा श्रीमरुदेशं समलंचक्रुः । श्रीसूरयः 15  
 संवत् १७३२ वर्षे श्रीनागोरनगरे पालणपुरवास्तव्यउकेशज्ञातियसा० हीरा-  
 भार्याहीरादेपुत्ररत्नं श्रीविजयरत्नसूरिं स्वपट्टे संस्थाप्य श्रीमेडतानगरे  
 चातुर्मासकं तस्थौ । तदनु क्रमेण भव्यजीवान् प्रतिबोध्य मेवाडमेवातमरुदेशे  
 विहृत्य च संवत् १७३६ वर्षे गुर्जरदेशसंघाप्रहात् श्रीपाटणनगरे चातु-  
 र्मासं समागताः । संप्रतिकाले अभिनवगौतमावताराः साक्षात्कल्पतरुरूपाः 20  
 सकलपरिवारविराजमानाश्च सकलसंघकल्याणमालाभ्युदयप्रदा भवतु ।

आचार्यश्रीविजयरत्नसूरिसिंहानां द्विधापि स्वभ्रातृ पं० श्रीविम-  
 लविजयगणिवाचनाकृते षट्पावलीसारोद्धारः समुद्धृत उ० श्रीरविवर्द्धनग-  
 णिभिरिति मंगलं । इति श्रीषट्पावलीसंपूर्णं लिखितं श्रीपाटणनगरे श्रीपार्श्व-  
 नाथप्रसादात् श्रीरस्तु । अथ अनुपूर्तिः — 25

५६—श्रीविजयसेनसूरिः ॥ ६०—राजसागरसूरिः ॥ ६१—वृद्धिसागरसूरिः ॥

६२—लक्ष्मीसागरसूरिः ॥ ६३—कल्याणसागरसूरिः ॥

## श्रीगुरुपट्टावली

[ कर्ता ]

]

श्रीमगसीश्वराय नम । अथाऽत्र श्रीपर्यूपणापर्वणि समागते चतुर्मास-  
कस्या मुनयो मागलिक पर्यूपणकल्पनामाध्ययन पचटिनानि वाचयन्ति ।  
तद्वाचनादनु च सर्वं हि कार्यं मुरत्तम्याऽन्त्यकृतमगल सत् सुराय भवति  
ततोऽत्रापश्चिममगलार्थं गुरुपरिपादो वर्णनीया एतद्वर्णनस्योत्कृष्टतम-  
मगलत्वात् । अत एव सर्वं धर्मानुष्ठानादि गुर्वाज्ञासयुक्त मोक्षफलदं 5  
स्यादतो गुरुपर्वक्रमलक्षणसम्बन्धज्ञापनाय पट्टावली वाचनीयैः ॥

तत्रार्हता चरम श्रीवर्द्धमानो भगवान् तीर्थंकर एव गुरुपाटीमूल ॥  
तस्मात्पूर्वं भगवत स्वयनुद्धत्वात् अन्यस्य गुरोरभावात् ॥ स च भगवान्  
त्रिंशद्वर्षाणि ३० गृहस्वपर्याये, सार्द्धद्वादश१२वर्षाणि छद्मस्थावराया,  
त्रिंशत्३०वर्षाणि केवलित्वे, सर्वायु साधिरुद्वासप्तति७२वर्षाणि प्रपाल्य, 10  
सिद्ध परिनिवृत इति ॥

तत्पट्टे १ श्रीसुधर्म्मास्वामी पञ्चमगणधर प्रथमोदयस्य प्रथमाचा-  
र्यो बभूव । स च पचाशत् ५० वर्षाणि गृहे त्रिंशद्वर्षाणि ३० वीरसेवाया  
तत श्रीवीरनिर्वाणात् द्वादशवर्षाणि छाद्मस्थ्ये अष्टौ वर्षाणि केवलित्वे  
सर्वायु शतमेक प्रपाल्य श्रीवीरात् त्रिंशतिवर्षं सिद्ध ॥ 15

तत्पट्टे २ श्रीजबूस्वामी । येन राजगृहे ऋषभदत्तधारिण्यो सुतेन  
सजातवैराग्यान्नवनवति६६कोटि सयुक्ता अष्टौ कन्यकान्त्यक्ता पचशतचौरा  
प्रभवादि अष्टौ कन्यास्तन्मातृपितर स्वमातृपितरौ एव पंचशतसप्तविंशति  
५२७ जनसमे दीक्षा गृहिता । षोडश१६वर्षाणि गृहे, विंशति २० वर्षाणि  
व्रते चतुरचत्वारिंशत् ४४ वर्षाणि युगप्रधानभावे । सर्वायु ८० रशीति 20  
वर्षाणि प्रपाल्य श्रीवीरात्तु पष्टि६४वर्षाणि सिद्ध ।

तदा मनःपर्यवज्ञानं १ परमावधिज्ञानं २ पुलाकलद्विधः ३ आहारक शरीरं ४ क्षपकश्रेणिः ५ उपशमश्रेणिः ६ जिनकल्पिमार्गः परिहारविशुद्धि-  
चारित्र १ सूक्ष्मसम्पराय २ यथाख्यात ३ रूपसंयमत्रयं ८ केवलज्ञानं  
६ मोक्षगमनं १० एते दशपदार्था अत्र भरते व्युद्धिन्नाः ।

तत्पट्टे ३ श्रीप्रभवस्वामी । स च त्रिंशद्वर्षाणि ३० गृहे चतुश्चत्वारिंशत् ४४ वर्षाणि व्रते एकादश ११ वर्षाणि युगप्रधानभावे सर्वायुः पञ्चा-  
शीति ८५ वर्षाणि प्रपाल्य श्रीवीरात् ७५ पंचसप्ततिवर्षे स्वर्ग्यौ ।  
( नवनन्द इणांकै वारै )

तत्पट्टे ४ श्रीशाय्यंभवस्वामी । स च स्वगृहे यज्ञं कुर्वाणः पंचशत-  
द्विजैः “अहोकष्टमहोकष्टं तत्त्वं न ज्ञायते कचिदिति”साधुवचः श्रुत्वा यज्ञस्तं 10  
भाधःस्थितश्रीशांतिजिनविन्दर्शनाद् बुद्धः । अष्टाविंशतिवर्षाणि गृहे स्थि-  
त्वा व्रतं ललौ । एकादश ११ वर्षाणि व्रते त्रयोविंशतिवर्षाणि युगप्रधानत्वे  
सर्वायुर्द्वापष्टि ६२ वर्षाणि प्रपाल्य श्रीवीरात् ९८ वर्षातिक्रमे स्वर्ग्यौ ।  
अनेन भगवता मनकनाम्नः स्वसुतस्य पठनाय दशवैकालिकं कृतं ।

तत्पट्टे ५ श्रीयशोभद्रस्वामी । स च २२ वर्षाणि गृहे १४ वर्षाणि 15  
व्रते ५० वर्षाणि युगप्रधानत्वे सर्वायुः पडशीति ६६ वर्षाणि प्रपाल्य  
श्रीवीरात् १४८ वर्षांते स्वर्ग्यौ ।

तत्पट्टे ६ श्रीसम्भूतिविजयस्वामि-श्रीभद्रवाहुस्वामिनौ एतौ द्वौ  
पष्टपट्टधरौ वभूवतुः तत्र प्रथमः ४२ वर्षाणि गृहे ४० वर्षाणि व्रते अष्टौ  
वर्षाणि युगप्रधानत्वे सर्वायुर्नवति ६० वर्षाणि परिपाल्य स्वर्ग्यौ । 20

भद्रवाहुस्वामी पुनः श्रीआवश्यकदिनिर्युक्तिकृत् । तद् भ्राता वराह-  
मिहरस्त्यक्तव्रतो राज्ञःपुरोहितो राज्ञः पुरोनिमित्तप्रकाशाद्यैः प्राप्तप्रतिष्ठः तद्  
भ्रातुःपराजयकरणे सभासमक्षं ५१ पलप्रमाणो मत्स्यः कुण्डप्रान्ते पतिष्यति  
गुरुर्वक्ति ५२ पलप्रमाणो मत्स्यः कुण्डमध्ये पतिष्यति जिनशासनप्रभावात्  
गुरुवाक्यमेव सञ्जातं राजाऽपि शासनोत्सवं चकार । ततोऽसौ वराहमि- 25  
हिरो मानभ्रष्टो मृत्वा व्यंतरीभूतः श्रीसङ्घमुपदद्राव, तज्ज्ञात्वा च भगवता

उपसर्गाहरस्तोत्रकरणेन स उपद्रवो निवारित । स भगवान् १५ वर्षाणि  
गृहे सप्तदश१७वर्षाणि व्रते चतुर्दश१४वर्षाणि युगप्रधानत्वे सर्वायु पङ्-  
सप्तति७६वर्षाणि प्रपाल्य श्रीवीरात् १७० वर्षे स्वयंयौ ।

तत्पट्टे ७ श्री स्थूलभद्रस्वामी पूर्वपाठी १० पूर्वाणि अर्धत ४ पूर्वा-  
णि सूत्रतो अवीतवान् । ३० वर्षाणि गृहे २४वर्षाणि व्रते ४५ वर्षाणि युग- 5  
प्रधानत्वे सर्वायुर्नवनवति६६वर्षाणि प्रपाल्य श्रीवीरात् २१५वर्षे स्वयंयौ ।

तत्पट्टे ८ श्रीआर्यमहागिरि-आर्यसुहस्तिनामानौ उभौ अष्टमपट्ट-  
धरौ जातौ । तत्र प्रथमस्य त्रिंशद्वर्षाणि गृहे चत्वारिंशद्व्रते त्रिंशत् युगप्रधा-  
नत्वे सर्वायु शतवर्षाणि ।

द्वितीयेनाऽऽर्यसुहस्तिना पूर्वभने कश्चिद्द्रुमक प्रात्राजित स च 10  
मृत्वा सम्प्रतिराजस्त्रिरजडपतिर्जज्ञे न प्रतिबुद्ध सन् सपादकोटिविंश—सपा-  
दलक्षनव्यजिनप्रसाद—३६सहस्रजीर्णोद्धार—६५मट्टपित्तलमयविंश—  
७००सप्तशतदानशालाप्रभृतिसुकृतकृत्यै श्रीजिनशासन प्राभाषयत् ।

श्रीसुस्थितसूरि त्रिंशद्वर्षाणि गृहे चतुर्विंशति२४वर्षाणि व्रते ४६व०  
युगप्रधानत्वे चेऽति सर्वायु शतमेक परिपाल्य श्रीवीरात् २६१ वर्षे 15  
स्वयंयौ +

तत्पट्टे ९ श्रीसुस्थितसूरि-श्रीसुप्रतिपद्वसूरी जातौ । नममे पट्टे को-  
टिवार सूरिमत्रजापात् तदा कोटिकनान्ता द्वितीय नाम गच्छस्य जात, पूर्वं  
निग्रथ इति नाम आसीत् ।

एतद्वारके पलिस्सहशिष्य स्वातिनाचकस्तत्त्वार्थसग्रहग्रन्थकारी । 20  
तच्छिष्य कालकाचार्य प्रज्ञापनासूत्रकृत् । श्रीवीरात् ३७६ वर्षे स्वयंयौ ।

तत्पट्टे १० श्री इन्द्रदिन्नसूरि  
अत्रातरे वीरात् ४५३वर्षे शृगुकच्छे आर्यरूपसूरि ।

+ टिप्पनकन्—अवर्तामुकुमालदीपाभृतिस्थाने देवकुल क्रमेण महाकालेति

नाम मनात् ।



वीरात् ४५३ वर्षे कालिकाचार्यः सर्वसङ्गमान्यः गर्दभिल्लविद्याभे-  
दकारी येन पंचमीतः चतुर्थ्यां पर्युपणापर्वं स्थापितं ।

४६७ वर्षे आर्यमंगुवृद्धवादिपादलिप्तश्रीसिद्धसेनाद्याचार्या बभूवुः ।  
संवत्सरकृद्विक्रमराजोपि । तद्राज्यं चैवं—यदा श्रीवीरः सिद्धस्तदा  
तद्दिन एव पालकराजा राज्येऽभिपिक्तः । तद्राज्यं ६०वर्षाणि, ततो ६ नन्द- 5  
राज्यं १५५वर्षाणि, १००वर्षाणि ततो मोरिअराजराज्यं, ततः पुष्पमि-  
त्रस्य त्रिंशद्वर्षाणि ३० राज्यं, ततो बलमित्रयोः पष्टि ६०वर्षाणि राज्यं,  
ततः ४०वर्षाणि नभःसेनराज्यं, ततः १३वर्षाणि गर्दभिल्लराज्यं, ततः  
शकस्य ४वर्षाणि राज्यं । एवं सर्वमीलने श्रीवीरात् ४७० वर्षे विक्रमा-  
दित्यराज्यं । तथा श्रीसिद्धसेनदिवाकरेणोज्जयिनीनगर्यां महाकालप्रसादे 10  
लिंगस्फोटनं विधाय स्तुत्या ११ काव्ये श्रीपार्श्वविम्बं प्रगटीकृतं, कल्याण-  
मन्दिरस्तोत्रं कृतं ।

तत्पट्टे ११ दिन्नसूरिः । तत्पट्टे १२ श्रीसिंहगिरिसूरिः ।

तत्पट्टे १३ श्रीवज्रस्वामी । यो वाल्येपि जातिस्मृतिभाक् अधीतैकाद-  
शांगः नभोगमनविद्यया संघरक्षाकृत् दक्षिणस्यां बौधराज्ये जिनपूजार्थं 15  
पुष्पानयनेन तीर्थप्रभावको देवाभिवन्दितो दशमपूर्वविदामऽपरिचमो  
बभूव । स च वीरात् ४६६वर्षान्ते विक्रमात् षडविंशतिवर्षे जातः सन् अष्टौ  
वर्षाणि गृहे ४४व्रते ३६वर्षाणि युगप्रधानत्वे सर्वायुरष्टाशीति००वर्षाणि  
परिपाल्य वीरात् ५०४वर्षान्ते विक्रमात् चतुर्दशाधिकशतवर्षे स्वर्ग्यो । दश-  
मपूर्वं तूर्यसंहननतूर्यसंस्थानव्युच्छेदस्तदाऽजनिष्ट । वज्रशाखाप्यऽतः प्रवृत्ते 20  
तदा ५७० वर्षे जावडिकृतोद्धारः ।

तत्पट्टे १४ श्रीवज्रसेनसूरिः स च दुर्भिक्षे श्रीवज्रस्वाम्याज्ञया  
सोपारके परवने गत्वा जिनदत्तगृहे ईश्वरीनाम्न्या भार्यया दुर्भिक्षभया-  
क्षत्तपाकभोज्ये विषक्षेपादिकारणे निवेदिते प्रातः सुकालो भावीत्युक्त्वा  
विषनिक्षेपं निवार्य नागेन्द्र १ चन्द्र २ निवृत्ति ३ विद्याधरा ४ ख्यान् चतुरः 25  
सकटुवेभ्यपुत्रान् प्रात्राजितवान् तेभ्यश्चत्वारि कुलानि जज्ञिरे ।

स वज्रसेनो ६ वर्षाणि गृहे ११६व्रते त्रीणि वर्षाणि युगप्रधानत्वे  
 स्वर्वायु साष्टात्रिंशतिशत प्रपाल्य वीरात् ६२० वर्षा ते स्वर्गभाक् वभूव ।  
 तदा ६०६ वर्षे त्रिक्रमात् १३६ वर्षे दिगम्बरसम्प्रदायोत्पत्ति ।  
 तत्पट्टे १५ श्रीचन्द्रसूरिस्तस्माच्चन्द्रकुल, “चन्द्रगच्छे”ति तृतीय  
 गच्छनाम संजातं क्रमादनेकगुणहेतवो अनेकसूरयो वमुवु । 5

तत्पट्टे १६ श्रीमामतभद्रसूरि । अस्य देवकुलादिष्वप्रस्थानाल्लो-  
 कैर्जनवासीति नाम कृत ततो गच्छनाम तूर्यं “वनवासी”ति प्रवृत्त ।  
 तत्पट्टे १७ श्रीवृद्धदेवसूरि । तत्पट्टे १८ श्रीप्रद्योतनसूरि ।  
 तत्पट्टे १९ श्रीमानद्वेषसूरि । अस्य सूरिपदे स्क गोपरिवाग्देवी-  
 लक्ष्म्यौ वीक्ष्य, चारित्र्यादस्य भ्र शो भावीति विपण्ण विपवाढप्राप्त गुरु 10  
 विज्ञाय, भक्तकुलभिन्ना सर्वा विकृत्यश्च येन त्यक्ता । तत्तपसा नडुलपुरे  
 पद्मा १ जया २ त्रिजया ३ अपराजितास्या ४भिर्देवीभि सेवित गुरु दृष्ट्वा  
 सर्वे जना धर्मप्रणसा चक्रु ।

तत्पट्टे २० माननुद्गसूरि । येन वाणमयूरपडितप्रियातिशयेन रजित-  
 जनात् जैननिन्दा श्रुत्वा प्रभापनायै अष्टचत्वारिंशद्गुप्तातिगुप्ततमपरक्रम 15  
 ध्यस्येनाऽऽकठशृत्तलपट्टेन भक्तामरन्प्रनकरणात् गतवन्प्रनेन बहिरागत्य-  
 चमत्कृतो नृप प्रतिप्रोथित । नमिऊण इत्यादिस्त्वेन नागराजो वशीकृत ।

तत्पट्टे २१ धीरसूरि ॥ तत्पट्टे २२ जयदेवसूरि ॥

तत्पट्टे २३ श्रीदेवानन्दसूरि ॥ तत्पट्टे २४ श्रीविक्रमसूरि ॥

तत्पट्टे २५ श्रोनरसिंहसूरि ॥ तत्पट्टे २६ श्रीममुद्रसूरि ॥ 20

तत्पट्टे २७ श्रीमानदेवसूरि । तदा श्रीवीरात् वर्षसहस्रे गते मत्य-

भिसूरे पूर्वाग्र्याव्यवच्छेदोभूत् तथा त्रिक्रमान् ५८५ वर्षे चतुश्चत्वारिंश-  
 दुत्तरचतुर्दशशत १४४४ प्रकरणकृत् श्रीहरिभद्रसूरि स्वर्गत । तत्काले  
 च श्रीकालिकाचार्योपि वभूव, येन ६६३ वर्षे पचमीतश्चतुर्ध्या पर्वाणि-  
 त्मिति ।

तत्पट्टे २८ श्रीविबुधप्रभसूरि ।

- तत्पट्टे २६ जयानन्दसूरिः देवाप्रभोऽग्नौत्र कोषो(कृतं) ॥ तत्पट्टे  
 ३० श्रीरविप्रभसूरिः । वीरात् १२७२ वर्षे अणहिलपुरपाटणस्थापना कृता ।  
 तत्पट्टे ३१ श्रीचशोदेवसूरिः ।  
 आमराजप्रबोधकश्रीवपभट्टसूरिः विक्रमात् ८८५ वर्षे स्वयंयौ ।  
 तत्पट्टे ३२ प्रद्युम्नसूरिः । तत्पट्टे ३३ श्रीमानदेवसूरिः लघुशान्तिकर्ता । 5  
 तत्पट्टे ३४ विमलचन्द्रसूरिः ।  
 तत्पट्टे ३५ उद्योतनसूरिस्मिन्नावुद्गाचले विस्तीर्णवटवृक्षाधः श्रीस-  
 र्वदेवसूरीणां खनट्टे स्थापनं कृतं वडगच्छ इति पंचमं नाम गणस्य जातं ।  
 तत्पट्टे ३६ सर्वदेवसूरिः । उत्तराध्यनटीकाकृता (श्रीशांतिमूरिभिः)  
 विक्रमात् १०६८ वर्षे धर्मघोषसूरिः (धिन) विमलमंथीश्वरःप्रवाधितः । 10  
 धनपालःशोभनन्तुति(टीका)कर्ता श्रीवीरात् १४६६ वर्षे स्वर्गं ययौ ।  
 तत्पट्टे ३७ श्रीदेवसूरिः । तत्पट्टे ३८ सर्वजयदेवसूरिः ।  
 तत्पट्टे ३९ यशोभद्रसूरिः । नहुजाईमध्ये जिनालयं लात्वा स्थितः ।  
 तत्पट्टे ४० सर्वदेवसूरिः विक्रमात् ११३६ वर्षे नवांगवृत्तिकृद्  
 अभयदेवसूरिः स्वर्गं गतः × ततःमुनिचंद्रसूरिः ÷ एतद्वारके स्वगुरुभ्राता श्री- 15

÷ टिप्पणकम्:—श्रीवीरात् + + राज्ये सं० १,३३ साल में काल पडियो ।

सं० + + लगे कोइ अ.चार्य हुयो नहीं । फिर मुनिचंद्रसूरि हुये, जिनागे सिद्धान्त देखकर प्रवर्ते ॥

× “श्रीअभयदेवसूरिः” चंद्रकुलावतंसानां श्रीजिनेश्वरसूरीणां श्री-  
 बुधिसागरसूरीणां शिष्यः तस्य वि० १०७२ वर्षे जन्म, वि०सं०१०८८वर्षे सूरि-  
 पदं वि०सं०११३५ मत्तानरेण ११३६ वर्षे स्वर्गमनं । तत्कृतग्रन्थाः—नवांगानां वृत्तयः  
 (सं०११२०-११२८), श्रीरघुपतिकवृत्तिः, प्रह्लयना तृतीयचन्द्रसंग्रहणी (गा०१३३-  
 वृत्तिः, पंचाशकवृत्तिः (सं० ११२४) जिनाचंद्रगणिकृत्तनवतन्त्रप्रकरणभाष्यं.(वृत्तिः)  
 देवेंद्रसूरिकृतसत्तरीग्रन्थभाष्यं (पद्यटीका), पंचनिग्रन्थप्रकरणं, जगतिहुअए स्तोत्रं,  
 आराधनाकुशलं इत्याद्याः—अयंसूरिः कस्य अग्रवतःशिष्यः तस्मिन्नेतुं न शक्यते ॥  
 तद्यथा—

- प्रद्युम्नदेवोऽथ पदे तदीये प्रद्युम्नदेवो ऽभिनवो वभूव ।  
 भिन्दन्भव मुक्तरतिर्दवीयो भवन्मधुर्विश्वविभाव्यमूर्ति ॥६१॥
- श्रीमानन्देवेन पुन स्वकीर्तिज्योत्स्नावदातीकृतविष्टपेन ।  
 एतत्पदश्रीरगमि प्रतिष्ठा शक्तित्रयेणैव नरेन्द्रलक्ष्मी ॥ ६२ ।  
 वाचयमेन्द्राद्विमलादिचन्द्रात्पदाब्जभृङ्गीभवदिन्द्रचन्द्रात् । 5
- अमुष्य पट्ट श्रियमश्नुते स्म परतपाद्भूष इव प्रतापात् ॥६३॥  
 रेजे ऽस्य पट्टे स्मररूपधेय सुरीन्दुरुद्द्योवननामधेय ।  
 दिग्धारणेंद्रा इव सूरिचन्द्रा सज्जिरे यत्पदधारिणोऽष्टौ ॥६४॥  
 मुहूर्तमद्वैतमवेत्य देलीग्रामस्य य सीन्नि बृहद्वटाध ।  
 अस्थापयच्चैत्यतरोस्तलेऽष्टौ पार्श्वो गणोन्द्रानिव काशिकुञ्जे ॥६५॥ 10
- शाखाप्रशाखाभिरमुष्य वृद्धिर्बृहद्वटस्यैव यतो भग्नित्री ।  
 ततो बृहद्गच्छ इतीह नामाऽपर गणस्य प्रकटीवभूव ॥६६॥  
 माहात्म्यनश्रीकृतसर्वदेव पदे तदीये ऽजनि सर्वदेव ।  
 तारापनिम्तारकपर्पदेव गुणश्रिया य प्रभुरन्वयायि ॥६७॥  
 यो रामसेनाहपुरे व्रतीन्दुर्लक्ष्मिश्रिय गौतमवदधान । 15  
 नाभेयचैत्ये महसेनमूनोर्जिनस्य मूर्तेर्विष्टे प्रतिष्ठाम् ॥६८॥  
 चद्रावतीशस्य नृपस्य नेत्र इवास योऽशेषविशेषदर्शी ।  
 त क्लृप्तचैत्य प्रतिबोध्य घाचा प्रात्राजयत्कुण्डमत्रिण य ॥६९॥  
 कुर्वन्निवास गवि गौरवश्रीगिरामधीशो विबुधैरूपास्य ।  
 श्रीदेवसूरि किमु देवसूरि पदे तदीयेऽप्यजनि क्रमेण ॥१००॥ 20  
 दोषोदयोदीततम प्रपञ्च-व्यापादनव्यापृतिदीक्षितेन ।  
 श्रीसर्वदेवेन पद तदीयमदीपि दीपेन यथा निकेतम् ॥१०१॥  
 श्रीमद्यशोभद्रगणावनीन्द्र श्रीनेमिचन्द्रव्रतिपुङ्गवश्च ।  
 तत्पट्टमाकन्दमुभौ भजेते शुकोऽन्यपुष्टश्च यथा विहगौ ॥१०२॥  
 तयो पदे श्रीमुनिचन्द्रसूरिरभूत्ततो निर्मितनैकशास्त्र । 25  
 शास्त्रे न कुत्रापि तदीयद्विष्टश्चस्त्राल व्रीह्येव ममीरणस्य ॥१०३॥  
 १७

भूपीडखण्डानिव चक्रवर्ती यतीभवञ्चपङ्क्तिर्जहौ यः ।

कदापि काये न दधन्ममत्वं पपौ पुनर्यः सकृदारनालम् ॥१०४॥

निर्जीयते स्म कचनापि नायं कृतोपसर्गैरपि देववर्गैः ।

इतीव नाम्ना भुवि विश्रुतेन जज्ञेऽस्य पट्टेऽजितदेवसूरिः ॥१०५॥

जगत्पुनानः सुमनःस्रवन्तीरयो जटाजूटमिवेन्दुमौलेः ।

अमुष्य पट्टं विजयादिसिंहोऽध्यासां वभूवाथ तपस्त्रिसिंह ॥१०६॥

सोमप्रभश्रीमणिरत्नसूरी अमुष्य पट्टं नयतःस्म लक्ष्मीम् ।

इदवाकुत्रंशं भरतश्च बाहुवलिस्तनूजाविव नाभिसूनोः ॥१०७॥

श्रीमज्जगच्चन्द्र इदंपदश्रीललामलीलायितमाततान ।

येनोज्झि शैथिल्यपथस्तटाको घनाविलो मानसवासिनेव ॥१०८॥

द्वात्रिंशदाशावसनैरभेद्यो वादं सृजन्हीरकवद्यदासीत् ।

आघाटभूपेन स हीरलाद्यो नाम्ना जगच्चन्द्र इति न्यगादि ॥१०९॥

आचाम्लकैर्द्वादशहायनान्ते तपेत्यवापद्विरुदं मुनीन्दुः ।

महाहवैर्वैरिविनिर्नयान्ते भर्तेव भूमेर्जितकाशिसंज्ञाम् ॥११०॥

अस्मात्ततः प्रादुरभूत्तपाख्या नेत्रादिवात्रेर्द्विजराजलेखा ।

अदीपि यस्माच्च मुमुक्षुलक्ष्म्या वसन्तमासादिव भानुभासा ॥१११॥

देवेन्द्रकर्णाभरणीभवद्विर्यशोभिरुद्धासितविष्टपेन ।

१०६—यद्यस्मात्कारणाद्यः श्रीजगच्चन्द्रसूरिः द्वात्रिंशत्संख्याकैराशावसनैर्दिग्म्ब-  
राचार्यैर्वादिभिः सार्धं वादं सृजन् कुर्वन् हीरकवद्यजमणिरिव अभेद्यो भेत्तुमशक्यः  
अजेय आसीत् तत्कारणादाघाटनामनगरस्य भूपेन राज्ञा संप्रति लोके आहडनगरमिति  
प्रसिद्धपुरस्य स्वामिना स सूरिः इदमेतन्न्यगादि प्रोक्तः । इदं किम् । यदयं सूरिन्द्रो  
नाम्ना हीरला इतिपदमाद्यं यत्र तादृशो जगच्चन्द्र एतावता हीरलाजगच्चन्द्रसूरिरिति  
कथितः । इति तद्वृत्तिः ॥

१११—उतस्तथा इति नामकथनान्तरं तद्दिनमारभ्य च अस्माज्जगच्चन्द्रसूरे-  
र्द्धहृद्गच्छस्य तपागच्छ इत्याख्या नाम प्रादुरासीत् प्रकटीकभूव ॥ + + इतिवृद्ध-  
च्छस्य 'तपागच्छ' इति घट्टं नाम संजातम् ॥ इति व्याख्यायां ॥

देवेन्द्रदेवेन वभेऽस्य पट्टे विष्णोर्यथा वक्षसि कौस्तुभेन ॥११२॥  
 निजाङ्गनोद्गीतयदीयकीर्तिं शुश्रूपुरक्षिश्रवसामृमुत्ता ।  
 चक्षु महस्त्रे रसिक किमाधात्पट्टे स तस्याजनि धर्मघोष ॥११३॥  
 मिथ्यामतोत्सर्पणवद्रकक्ष प्रेक्ष्य क्षितौ जीर्णकपर्दिन य ।  
 प्रबोध्य वाचा जिनराजविम्बाधिष्ठायक पूर्वमिव व्यधत्त ॥११४॥ ६  
 शिष्यार्थनानिर्मितसस्तवस्याऽनुभावतो[देवकपत्तनेऽब्धि ।  
 भूपस्य शुश्रूपुरिवास्य रत्न तरङ्गहस्तरुपदीचकार ॥११५॥  
 विद्यापुरे योऽखिलशाकिनीनामुपद्रव द्रावयति स्म सूरि ।  
 श्रीहेमचन्द्रो[भृगुरुच्छसत्रे पुरे यथा] दुर्धरयोगिनीनाम् ॥११६॥  
 यो योगिन पुष्पकरण्डिनीस्थ दुश्चेष्टितैर्भापनवद्रकक्षम् । 10  
 पादावनम्र विदधे ऽन्तिमोऽर्हन्निनास्थिकप्रामिकशूलपाणिम् ॥११७॥

११६—य श्रीधर्मघोषसूरि प्राक् साधुजनसतापकारिकाणा स्वागमने पट्ट-

कादिमण्डन मासलोहकटरीभूतपायसत्रकविहारण च गुरुशयनपट्टिकोत्पाटनचय-  
 रानयनमियाद्युपद्रवविधायकानां श्राविकानामघारिकाणामखिलाना सर्वाणां शाकि-  
 नीना सिद्धसीकोत्तरिकाणामुपमगंमुपद्रव द्रावयति ख । चररे गमनान्तर  
 गुरभिस्त्रयायाऽभिमन्त्रितचतु सूचीना पट्टिकाचतु पादोपरिचेपणोन् स्तम्भिताना विभात-  
 प्रायविभावर्था प्रिस्रगानां तामा यद्दुखिलपनाननान्नुलीषेपणनृपतिमृतिभीतिनिवेदन-  
 द्रव्यादिससवाग्बन्धप्रदाननगरजनप्रिञ्ज्यवधारणालयान्त पट्टिकानबनपूर्वक निवारितान्  
 साधुजनान् निरुपद्रवारचक्रे । इति तद्बृत्तौ ॥

११७—य श्रीधर्मघोषसूरि पुष्पकरण्डिन्यामुज्जयिन्याम् । 'उज्जयिनी

स्याद्विशालानन्तांशुष्पकरण्डिनी' इति हैम्याम् । तिष्ठतीतिपुष्पकरण्डिनीस्थस्त क्त्वापि  
 सिद्धचेष्टकपेटकमत एव दुष्टचेष्टितैर्भयकरप्रकारै साधूनां भापने भयोप्याटने यद्रकक्षां  
 गजनीभूत कोऽपि साधुन्तं प्रतिन्दु' १ शङ्कोति अतएव तद्भयकरप्रकारमाह—  
 प्राक् साधुविहारिषेधक, गुर्वागमने च गोचरीगतमाधूना प्रग्ने स्यास्यग्य । गुरशिषितै-  
 रक्षरत्तम् । स्थिता ख । ततो महकुप्राजगुल्यदतानदर्शयद्योगी । साधव कपोणिक

यस्योपदेशान्नृपमन्त्रिपृथ्वीधररत्ननुभिः सद्गितामशीतिम् ।

ज्ञातीरिवोद्धर्तुसिद्धमिताः स्या व्यधापयतीर्थकृतां विदारान् ॥११८॥

दंशादहंघ्राहितकाप्रभारविषौपर्धामञ्जननुनिशान्ते ।

महात्मवद्यो विकृतीर्विहाय वृत्तिं व्यधादेव युगंधरीभिः ॥११९॥

यस्मादिदीपे चरणस्य लक्ष्मीर्ज्योत्स्नेव चान्द्री शग्दोऽनुपदान् ।

सोमप्रभाख्यो जनहृक्चकोरीसोमप्रभः सूरिरभूत्पदेऽस्य ॥१२०॥

तेनापि सोमतिलकाभिधमूरिरात्म-पट्टे न्यवेशि वशिलादिमलमल्ललामम् ।

वादेपु येन परवादिक्दम्बकस्या-ऽनध्यायता प्रतिपदेव मुग्धे न्यवासि ॥१२१॥

संस्थापितो निजपदे गुरुणाथ तेन श्री देवसुन्दरगुरुः सुरसुन्दरश्रीः ।

अहोमुखेन तिमिरेण तमस्विनीव येन व्यपास्यत समं मदनेन माया ॥१२२॥ 10

धूकैरर्कमिव द्विपद्मिरुदये हन्तुं परैः प्रेषितं ।

कंचिच्चन्द्ररुचा प्रमादविमुखं स्वापेऽपि दृष्टा प्रभुम् ।

दर्शयित्वा गुरुपाश्वे गताः । तत उपाशयेऽपि अतिभय करप्रचुरोन्द्रविडालकुक्कुर-  
शृगालशवापदवृश्चिकभुजगादिदर्शनादिना गुरुमपिभापनोद्यतं प्रभुणा च जैनमन्त्रस्म-  
रणानुभावेन पुरजननृपतच्छिष्यसमरुं मंत्राधिष्ठायकेन बध्वा पुरप्रासादशिखरसंघटना-  
स्फालनपूर्वकं घनपृष्यमाणप्रबहच्छोणितशरीरं शिष्या अहं म्रिये म्रिये कोऽपि माम-  
वत्विति पुनः पुनर्दानभाषिणं वेदनया पूकुर्वाणं गगनेनोपाश्रये नीतं योगिनं पदाव-  
नत्रं स्वचरणयोर्नमनशीलं विदधे कृतवान् । कः इव । अर्हन्निव यथा अन्तिमश्च-  
रमश्चतुर्विंशतितमोऽर्जुनः जितः श्रीम महावीरदेवः अस्थिकग्रामस्थायुकशूलपाणिनां-  
मानं यत् स्वचरणसेवापरायणं चक्रे । सोऽपि किंभूतः । दुष्टैर्जीवप्रणाशनकरैश्चे-  
ष्टितैरुपसर्गैर्भंगवतो भापनोद्यतम् । इति तद्वृत्तिः ॥

११८—तथा तस्योपदेशाच्च श्रीशत्रुंजयविरिनारिसंघपतीभवन् रैवतगिरौ

च इदमस्त्राकं तीर्थमिदमस्त्राकं तीर्थमिति त्रिथो दिगम्बरैः सह विवादे 'य इन्द्र-

मालां परिधत्ते तस्येदं तीर्थम्' इति संघट्टनैः प्रोक्ते सुवर्णविद्धयाम्नायेन स्वकृत-

सुवर्णपट्टपञ्चाशद्धटीभिः इन्द्रमालां परिहितवान्, तथा शत्रुंजयोऽज्यन्तनूलप्रासाद

शिखरदण्डयोरैकसौवर्णध्वजाधिरोपणादिना चाष्टौ धटीर्न्ययि तवांश्चेति शेषः । तद्वृत्तौ

क्षाम्यन्त गदिताखिलव्यक्तिकर सत्रोद्य योऽदीक्ष्य—

त्स श्रीमानथ सोमसुन्दरगुरुर्भजे तदीय पद ॥१२३॥

पट्टश्रियास्य मुनिसुन्दरसूरिशक्रे सप्राप्तया कुवलयप्रतिबोधदत्ते ।

कान्तेव पद्मसुहृद शरदिन्दुविम्बे प्रीति परा व्यरचिलोचनयोर्जनानाम् ॥१२४॥

योगिनीजनितमार्युपप्लव येन शातिकरसस्तवादिह । 5

घर्षणादिव तपतु तप्तयो नीरवाहनिवहेन जघ्निरे ॥१२५॥

वाल्येऽपि रश्मीन्सरसीजबन्धुरिवावधानानि वहन्सहस्रम् ।

अष्टोत्तर चतुर्लिकानिनादशत स्म वेवेक्ति धिया निविर्य ॥१२६॥

अलम्भि याम्या दिशि येन काली सरस्वतीद विरुद् बुधेभ्य ।

रवेरुदीच्यामिव तत्र तेजोऽतिरिच्यते यत्पुनरत्र चित्रम् ॥१२७॥ 10

सूरेस्ततोऽजायत रत्नशेखर श्रीपुण्डरीको वृषमध्यजादिव ।

वाम्बीति नाम्ना द्विजपुङ्गवेन न्यगादि यो वालसरस्वतीति । १२८॥

लक्ष्मीसागरसूरिशीतमहमा लक्ष्मीरवापे ततो

दीपेनेव गुणोदय कलयता ज्योतिर्बृहद्भानुत ।

गायन्ती सुरसुन्दरीगुणगणान्यस्याष्टदिव्सङ्घिनी- 15

विंदायाष्ट त्रिनिर्ममे किमु विधि श्रोतु श्रुतीरात्मन ॥१२९॥

सुमति साधुरभूदथ तत्पदे त्रिजगतीजननेत्रमुधाञ्जनम् ।

समकुचत्रपया हृदि यद्गिरा मधुरिमावरिता किमु गोस्तनी ॥१३०॥

१२६—यो मुनिसुन्दरसूरिर्नात्येऽपि शैशवे क्षुल्लकन्वेऽपि अष्टाभिरधिकं

चतुर्लिकाना षड्चोलिकाना 'वाटका कचोली' इति प्रसिद्धाना निनादाना शब्दानां

शत षड्चिन्महन्मपि वेवेक्ति पृथक् पृथक् कृत्वा कथयति स्म । पत्तनसमागतैरमुक्त-

देशोपेतपरिद्वन्द्विज पत्रावलम्बन विधाय प्रतिपत्तनपरिद्वन्द्वस्थान जलमृतकुण्डलक

नृणपुलक च स्वशिरसोऽयन्त तच्छिष्यनिर्वाहनपूर्वम् मुनिसुन्दरशिषुना राजसमायां

न्वेन सार्धं ममागतचतुरस्रातिपापवशालसन्वाचर्यैर्वादेनायमाने परमात्मते

राजकथनपूर्वं न्यादष्टाष्टोत्तरशतचतुर्लिकाना पृथक् पृथक् शब्दान् कथयित्वा त

विजिग्ये । इति तद्दृष्टौ ॥



शीलेन जम्बुगणनाथ इवात्र वज्र-स्वामी परः किमथ वा महिमोदयेन ।  
जज्ञे नवद्वयशत१८००त्रतिसेव्यमानो नाम्नाथ हेमविमलः प्रभुरस्य पट्टे ॥१३१॥

विभूपामद्वैतामकलयदथाऽऽनन्दविमले

व्रतीन्द्रे विद्राणाखिलकुट्टशि, तत्पट्टकमला ।

वसन्ते वासन्तीततिरिव पुनर्धर्मजयिनि

5

चितीन्द्रे राज्यश्रीरिव विजिनविश्वप्रतिभटे ॥१३२॥

त्यक्त्वाशेषकुपक्षिकारच कुट्टशः किंपाकभृमीरुहा—

न्रोलम्बैरिव पारिजातशिखरी यो जन्मिभिः शिश्रिये ।

येनात्मा शिशिलीभवन्मुनिपथादप्युद्धृतः सूरिणा

संसाराम्बुनिधेरिवोद्धतकुट्टग्यादोत्रजव्याकुलान् ॥१३३॥

10

शुद्धां क्रियामुद्धरतोऽस्य भादिनीमद्वत्प्रवृद्धिस्तमितीव शंसितुम् ।

स्वप्नेऽनुयुक्तेरनु कस्यचिजिनध्यातुर्द्वितीयेन्दुरदर्शयन्निजम् ॥१३४॥

जैनार्चाश्रमखाद्यभावभणनान्भःसाव्यमानात्मनां ।

जज्ञे द्वीप इव व्रतीशितुरिहोद्धारः क्रियाया नृणाम् ॥

विद्यासागरनामवाचकवरो यस्याथ दुर्दृग्गणा—

15

न्सेनानीरिव चक्रिणो रिपुनृपान्प्राक्स्वस्यवश्यान्व्यधात् ॥१३५॥

१३४—तथा—क्रियोद्धारविधित्सुना सूरिन्द्रेण कश्चित्सिद्धश्रीपार्वनाथमन्त्रः

श्राद्धः प्रथमं पृष्ठस्तेन च ध्यानं दिदधत् किञ्चिन्निद्रामुद्रितनेत्रेणाभ्युदयमानं

द्वितीयाचन्द्रं हृष्टा समेत्य प्रभुपुरः प्रोचे । यद्युयं द्वितीयाचन्द्र इव दिने दिने वर्ध-

मानाभ्युदयभाजो भविष्यथ, तत्त्वरित्तमेव क्रियोद्धारं कुरुत, विलम्बो नैव विधेयः ।

ततः श्रीआनन्दविमलसूरिणा श्रीहेमविमलसूरिशासनपूर्वं शुद्धक्रिया उद्धृता इति

वादः । इति तद्व्याख्यायां ॥

१३५—जैनार्चनां तीर्थकृत्संबन्धिनीनां प्रतिमानां, तथा श्रमणानां साधु-

नामभावमसत्तां, सिद्धांते क्वापि प्रतिमां प्रोक्तं नास्ति गुर्जरादिदेशेषु साधवः सर्वथा

न सन्तीति भणनं लुम्पाककडुकभरीनां कथनम् ॥ इति तद्वृत्तौ ॥

प्रात साधुवृत्तस्त्वदापणपुरो यो याति सूरीशिता  
सम्यक्सयमवान्स पूर्वगणिवत्सेव्यस्त्वयाहर्निशम् ।  
स्वप्ने ऽस्वप्नगिरेति य निजगृहे नीत्वातिभक्त्या प्रभु  
श्राद्ध कञ्चन मण्डपाद्रिवसतिर्भजे सगोत्रै समम् ॥१३६॥

तम स्तोमप्राये कुनयनगणैर्दारुणतमे

5

कलौ श्रीसूरीन्दु ईशरणमभद्यो जनिमताम् ।

मृगारातिव्यालद्विरदशबरव्यूहबहुले

गिरेर्दु मचारे गहन इव सार्य पथिजुषाम् ॥१३७॥

गभीरिष्णा पाथोनिधिरिव महिम्नापरमरुद्—

गिरिश्चेतोजन्मप्रतिभटतया वा गगनजित् ।

10

प्रसारै रग्मीना सरसिरुहिणीनामिव पति

पवित्रीचक्रे यो मिहृतिभिरशोपा अपि दिश ॥१३८॥

यो दक्षिणावर्त इव स्रवन्तीपतिसत्रे कम्बुकदम्बकेन ।

वाचयमाना निवहेन पृथ्वीपीठे परीतो विजहार सूरी ॥१३९॥

भागीरथीच यद्ब्राह्मी पुनीते भुवनत्रयम् ।

15

पर विशेष कोऽप्यस्या निम्नगा न कदाचन ॥१४०॥

ये कर्णाभरणीभ्रूद्युगनिश विश्वत्रयीजन्मिना ।

सान्द्रोन्निद्रितचट्टिका इव शुचीचक्रुन्निलोकीमपि ।

यान्सस्तोतुमिवाभवद्भुजगराट् जिह्वासहद्वय—

स्तोषा सूरीपुरदर स समम्भूटेको गुणाना निधि ॥१४१॥

20

१३६—हे यम, त्व तु दुर्वादिप्रातविषेवमिन्द्रालपनाकर्णनाकलितानेककल्प-

नाजनिनसर्शातिव्याबुलीकृतर्नरुक्तीकलियुगानुभावाच्चट्टमतिरभि । तथापि प्रात  
प्रभाते यामानन्तरमाटमि मःपुभि ध्रमर्ष परिकलित य सूरीशिता सुरीन्द्र स्वदा-  
पणस्य तत्र दृष्ट्य पुरोऽग्रे याति गच्छति, स मूरिरभिन्न कलियुगे सम्यक् सयम-  
वान् । विशुद्धचारित्रकलिता तथः भयनाहर्निश निरन्तर पूर्वगणिवन् प्रार्थनाचार्य  
इव मेव्य उपामर्नाय । इति सङ्घत्तौ ॥

श्रीकुमारानगरसंतानयित्वेन विख्यानिमंतो जगति जतिरे । ततः प्राप्सू-  
रिमंत्राः ससत्तंत्रा रमणीयाऽतिशयतिचयाः स्वकीयनिस्तुपशेमुखीप्राग्भार-  
संभारात् ज्ञातत्रिदशसूरयः श्रीमच्छ्रीरत्नप्रभसूरयः कियति गते काले वि-  
हरंतः संतः श्रीआंसिकानगर्यां समवसृताः । तस्यां च सर्वे लोकाः पार-  
तीर्थिकधर्मधारिणो संति । न कोपि जैनधम्मधारी । ततः साध्वाचारं  
प्रतिपालयद्भिः सिद्धान्तोक्ततीर्थकरधम्मशुभकर्मप्ररूपणां कुर्वद्भिः सद्भिः  
श्रीरत्नप्रभसूरिभिः पारतीर्थकानेकच्छेकविवेकिलोकाः प्रतिबोधितास्तत  
एते ओकेशा इति विरुदो विख्यातो जातः । इति तृतीयो अर्थः ॥ ३ ॥  
अः कृष्णः, आः ब्रह्मा, उः शंकरः, एपां द्वंद्वे आवस्ततः ओभिः कृष्णब्र-  
ह्मशंकरैर्देवैः कायते स्तूयते देवाधिदेवत्वादिति ओकः प्रस्तावात् श्रीवर्ध- 10  
मानस्वामी कचिदिति ड प्रत्ययः, ओकेश्चासौ ईशश्च ओकेशस्तस्यायं  
ओकेशः वर्तमानतीर्थाधिपतिश्रीवर्धमानजिनपतितीर्थाश्रयणादिति चतु-  
र्थोऽर्थः ॥ ४ ॥

अः अर्हन्, अः स्यादर्हति सिद्धे चेत्युक्तेः । प्रस्तावादिह अ इति  
शब्देन श्रीवर्धमानस्वामी प्रोच्यते । ततः अस्य ओको गृहं चैत्यमिति यावत्, 15  
ओकः श्रीवर्धमानस्वामिचैत्यमित्यर्थः । तस्मादीशः ऐश्वर्यं यस्य स ओकेशः  
यतोयं गणः श्रीमद्गावीरतीर्थकरसान्निध्यतः स्फातिमवापेति पंचमोऽर्थः ॥५॥  
एव नस्य पदस्यानेकेष्वर्थाः संबोभुवति परं किं बहुश्रमेणेति ॥

अथ उपकेशशब्दस्य कियंतोऽर्था लिखितेः उप समीपे केशाः  
शिरोरूहाः सत्यस्येति उपकेशः । श्रीपार्श्वीपत्नीयकेशिकुमारानगरः । एत- 20  
दुत्पत्तिवृत्तांतस्तुः श्रीस्थानांगवृत्त्यादौ सप्रपंचः प्रतीत एवास्ति । तत एवा-  
वगंतव्यः । ततः उपकेशः श्रीकेशिकुमारानगरः पूर्वजो गुरुर्विद्यते यस्मिन्  
गणो स उपकेशः । अभ्रादित्वाद् प्रत्ययः । अस्मिन् गच्छे हि श्री केशिकुमा-  
रानगरः प्राचीनो गुरुरासीत् । ततो यथार्थमुपकेश इति नाम जातमिति  
प्रथमोऽर्थः ॥ १ ॥ उपवर्जितास्त्यक्ताः केशा यत्र सः उपकेशः ओसिका- 25  
नगरी तस्यां हि सत्यिका देव्याश्चैत्यमस्ति । तदर्धे च घनैर्जनैः प्रथमजात-

बालकाना सुदिने दिने मु ढन कार्यते तत उपकेश इति यथार्थं नाम श्रो-  
सिकानगर्या प्रत्यात जात । तत्र भवो यो गच्छ स उपकेश प्रोद्यते  
सद्विर्विद्वद्धि । अत्र हि भवे इत्यनेन सूत्रेण अणि प्रत्यये मज्ञापूर्वकस्य  
विवेरनित्यत्वाद्वृद्धेरभाव । श्रीरत्नप्रभसूरितो अनेकश्रावकप्रनिबोधवि-  
धानानतर लोके गच्छस्य उपकेशेति नाम प्रसिद्ध जातमिति द्वितीयोऽर्थ 5  
॥ २ ॥ को ब्रह्मा, अ कृष्ण, अ शक्र, ततो द्व द्वे का । तैरीष्टे ऐश्वर्य-  
मनुभवति य स केशकाना ईश ऐश्वर्यं यस्माद्वा केश पारतीर्थिकधर्म  
स उपवर्जितस्त्यक्तो यस्मात्स उपकेशस्तीर्थकृदुक्तविशुद्धधर्म स वि-  
द्यते यस्मिन् गच्छे स उपकेश । अत्रापि अत्राद्रित्वादप्रत्यय । इति तृती-  
योऽर्थ ॥ ३ ॥ क च सुख ई च लक्ष्मी कयौ ते ईशे स्वायत्ते यत्र यस्मा- 10  
द्वा स केश —अर्थात् जैनो धर्म । स उपसमीपे अधिको वाऽस्माद्गच्छा-  
त्स उपकेश इति चतुर्थोऽर्थ ॥ ४ ॥ कश्च अश्च ईशश्च केशा —ब्रह्म-  
विष्णुमहेशा । तद्धर्मनिराकरणात्ते उपहृता येन स उपकेश । प्रकरणा-  
द्दत्र श्रीरत्नप्रभसूरि गुरु तस्याय उपकेश । अत्रापि तस्येदमित्यणि प्र-  
त्यये पूर्ववद्गृहे अभावो न दोषपोषायेति पचमोऽर्थ ॥ ५ ॥ 15

इत्यमन्येऽप्यनेके अर्था ग्रन्थानुसारेण विधीयते परमल बहुश्रमे-  
णेति । एवमुक्तव्यक्तयुक्तिव्यक्तिशक्त्या ओकेशोपलक्षणे उभे अपि नास्ती  
यथार्थे घटा प्राचत ।

इति ओकेशोपकेशपदद्वयदर्शार्थी समाप्ता ॥

सवत् १६५५ वर्षे ॥ श्रीमद्विक्रमनगरे सकलवादिबृद्धकदकुदाल- 20

श्रीकम्कुदाचार्यसत्तानीयश्रीमद्धीसिद्धसूरीणा आप्रहृत श्रीमद्बृहत्परतर-  
गच्छीयवाचनाचार्यश्रीज्ञानविमलगणिशिष्यपंडितश्रीवल्लभगणिविरचिता  
धेयम् । श्रीरस्तु ॥

श्रीष्महेमतिकान् मासान्, अष्टौ भिज्नु प्रचक्रमे ।

रक्षार्थं सर्वजंतूना वर्षास्वैकत्र सचसेत् ॥ १ ॥ 25

मनुष्याणां सर्वेषु पदार्थेषु सारो धर्म एव । मनुष्यत्व धर्मैव  
वर्ष्यते ॥ न धर्मो वर्षासु मुनिपार्श्वात् श्रोतव्यः । यतयो वर्षास्वैकत्र-

तिष्ठन्ति, किमर्थं ? सर्वजंतूनां रक्षार्थं । धर्मस्य सारं सर्व्व जीवेषु दया ।  
वर्षासु पृथ्वी जीवाकुला भवति संयमो विराध्यते । अतो जीवरक्षार्थं च-  
तुर्मासकल्पं तिष्ठन्ति ।

शिवशासने पि जीवदयास्वरूपमेवं व्यावर्णितं—

पश्यन् परिहरन् जंतून् मार्जन्या मृदुसूक्ष्मया ।

5

एकाहविचरेद्यस्तु चन्द्रायणफलं भवेत् ॥ १ ॥

महाभारते कृष्णद्वीपायनेनाप्युक्तं—

यो दद्यात्कांचनं मेरुः कृत्वा चापि वसुंधरां ।

एकस्य जीवितं दद्यात् न च तुल्य युधिष्ठिरः ॥ २ ॥

परेष्वेवं वदन्ति जैनवाक्यस्य किं वाच्यं । मुनयः क्षेत्रस्य त्रयोदश 10  
गुणान् वीक्ष्य तिष्ठन्ति

चखिल १ पाण २ थंडिल ३ वसहि ४ गोरस ५ जणा ६ उले ७ विज्जे ८  
ओसह ९ धन्ना १० हिवइ १० पासंडा ११ भिखु १२ सिज्जाय ॥ १३ ॥

एते त्रयोदश गुणाः । तत्र स्थिता दशधा समाचारी पालयन्ति—

इच्छा १ मिच्छा २ तहकारो ३ आवस्सिया ४ निसीहिया ५ 15  
आपुच्छणाय ६ पडिपुच्छ ७ छन्दणा य ८ निमंतणा य ९ उपसंपयाकाले  
१० समाचारी भवे दसहा ॥ १ ॥ पुनः धर्मशास्त्रायुपदिशन्ति । श्राद्धा  
वासनावासितचित्ताः शृण्वन्ति ॥

परं चातुर्मासकात्पञ्चाशदिने व्यतिक्रांते कल्पावसरं ।

वीसहि दिणेही कप्पो पञ्चगहाणीय कप्पठवणायं ।

20

नव (९) सय तेणू(९३) एहिं बुच्छिन्ना संघआणाए ॥ १ ॥

अधुना कल्पावसरे अन्यग्रन्थादरो न । यथा दिव्यकौस्तुभाभरणं  
प्राप्य अन्यरत्नाभरणेषु निरादरत्वं जायते । यथा च कुंडपातालामृतं प्राप्या-  
बुजलास्वादो न रोचते । भारतीभूषणकविजनवचनरचनामासाद्य सामा-  
न्यजनवचांसि न रोचते । चक्रवर्तिन अग्रे सामान्यराजानोऽपसरन्ते देवानां 25  
नन्दीश्रवणेनान्यशब्दा हीनतां व्रजन्ति । गन्धहस्तिनो गंधे अन्यगजेन्द्रा मद-

जलत्रिकला भवन्ति । केवलज्ञानागमने अन्य ज्ञाना अपमरन्ति । कल्पवृ-  
क्षाग्रेऽन्ये तरवा न राजते । सूर्योदये रात्रोत्स्य का प्रभा । मुक्तिसौख्याग्रे  
कानि सौल्यानि । सिंहध्वने पुरो यथा अन्ये शब्दा न राजते तथा कल्पा-  
वसरे अन्यानि शास्त्राणि आदरो न । स कल्पो अनेकविध श्रीशत्रुजय-  
कल्प गिरनारगिरिकल्प कदम्बगिरिकल्प अर्जुनाचलकल्प अष्टापदकल्प 5  
सम्भेतगिरिकल्प हस्तिनापुरकल्प मथुरानगरीकल्प सत्यपुरकल्प शरसे-  
सरकल्प स्तभनतीर्थकल्प यतीर्ना विहारकल्प वस्त्रस्य कल्पसङ्घा ।  
अनेन प्रकारेणातेके कल्पमज्ञा एके कल्पा एव विधा वर्तते, यस्य प्रमाणेन  
श्रीपादलिप्ताचार्यो यावदायाति साधनो विहृत्य तावत् पचतीर्थनमस्कार  
विधायागच्छति । एके कल्पास्ते उच्यते येषा प्रमाणेन अन्तर्शीकरण आका- 10  
शगमन स्वर्णसिद्धि लक्ष्मीप्राप्ति मित्रपुत्रवाधवस्वजनप्राप्ति प्रभृतिलब्धय  
सपद्यते । परमय कल्पो ऽमेयमहिमानिधि इह लोकाभीष्टसौख्यकारण ।  
अथ कल्पो दशाश्रुतस्कन्धस्याष्टममध्ययन । नमपूर्वात् श्रीभद्रवाहुस्वामि-  
नोद्धृत अमेयमहिमानिधान सर्व पापक्षय कर ।

यथा धूयमान द्रुमेषु कल्पद्रु सर्वकामफलप्रद , यथौपधीषु पीयूष  
सर्वरोगहर, पर गत्नेषु गुरुडोद्गार यथा, सर्वत्रिपापहार मन्नाधिराजो 15  
मंत्रेषु यथा सर्वार्थसागर, यथा पर्वसु दीपाली मार्गात्मासुखावहा, तथा  
कल्प मन्त्रेषु शास्त्रेषु सर्वपापहर । तथा सर्वसिद्धान्तमध्ये श्रीकल्पो गुरु-  
तर, यथा पर्वताना मध्ये मेरु तीर्थमार्हि शत्रुजय दानमध्ये अभयदान  
अक्षरमध्ये अकार देवविन्द्र ज्योतिषीषु चन्द्र गजेंद्रेऽप्यैरावण मन्त्रेषु  
स्वयमुरमण तुरङ्गमेषु रेवत षट्पुषु चमन्त मृतिकाया तृगे मुगवीषु कस्तुरी 20  
धातुषु पीत मोहनेषु गीत काष्ठेषु चन्दन इद्रियेषु नेत्र व्यवहारपर्यसु दीपा-  
लिका धर्मशास्त्रेषु कल्प सर्वपापहार सर्वदुग्मक्षयकर ।

यथा जनमेजयगजा अष्टाश्वपर्वध्वजणा १८ विप्रहत्यायाग  
यथनिता श्यामन्य जान । यथा एकस्मिन् स्थिते जागेजयरातामे पुगेदि-  
तेन स्थित पूर्वे प्रेतासुगे पाटयैश्च पौरुषे कृता अष्टाश्वानादिदिशिभृताः 26

अहं यद्वेद्मि तद्गुरूणां प्रसादः ।

टालो रोलो रुलंतो अद्वियं वित्राण नाण परिहीणो ।

दिव्बुव वंदणिज्जो विहिओ गुरुमुत्तहारेण ॥ ४ ॥

ते गुरवः श्री पार्श्वनाथसंतानीयाः ।

१ श्रीपार्श्वनाथशिष्यः प्रथमोगणधरः श्रीशुभदत्तः । २ तत्पट्टे श्रीहरिदत्तः । ५

३ तत्पट्टे श्रीआर्यसमुद्रः । ४ तत्पट्टे श्रीकेशीगणधरः तेन परदेशीनृपः

प्रतिबोधितः । राजप्रश्नीयउपांगे प्रसिद्धः ।

५ तत्पट्टे श्रीस्वयंप्रभसूरिः । (स्वयंप्रभसूरिशिष्य वृद्धकीर्तिसुं वौ-  
धनत नीकल्यो, आचारांग टीकासु जाणनां) अन्यदा स्वयंप्रभसूरि देशनां

ददतां उपरि रत्नचूडविद्याधरो नन्दीस्वरे गच्छन् तत्र विमानः स्तंभितः । 10

तेन चिंतितः मदीयो विमानः केन स्तंभितः । यावत् पश्यति तावद्गुरुं

देशनाद्दंतं पश्यति । स चिंतयते मयाऽविनयः कृतः यतः जंगमतीर्थस्य

उल्लंघनं कृतं । स आगतः गुरुं वंदति धर्मं श्रुत्वा प्रतिबुद्धः । स गुरुं

विज्ञपयति मम परंपरागता श्रीपार्श्वजिनस्य प्रतिमास्ति तस्या वंदने मम

नियमोऽस्ति सा रावणलंकेश्वरस्य चैत्यालये अभवत् । यावत् रामेण 15

लंका विध्वंसिता तावद् मदीयपूर्वजेन चंद्रचूडनरनाथेन वैताढ्ये आनीता ।

सा प्रतिमा मम पार्श्वेऽस्ति । तथा सह अहं चारित्रं ग्रहीष्यामि । गुरुणा

लाभं ज्ञात्वा तस्मै दीक्षा दत्ता । क्रमेण द्वादशांगी चतुर्दश पूर्वी बभूव

गुरुणा स्वपदे स्थापितः । श्रीमद्वीरजिनेश्वरात् द्विपंचाशतवर्षे (५२) आ-

चार्यं पदे स्थापितः पंचशतसाधुभिसह धरां विचरति । श्रीलक्ष्मीमहास्थानं 20

तस्याभिधानं १ पूर्व नाम गुजरातिसध्ये कृतयुगे रयणमाला २ त्रेतायुगे

रयणमाला ३ द्वापरे श्रीवीरनयरी ४ कलियुगे भीममाल ५ तत्र श्रीराजा-

भीमसेन तत्पुत्रश्रीपुंज तत्पुत्र उत्पलकुमार अपरनाम श्रीकुमार तस्य वां-

धव श्रीसुरसुन्दर युवराज्य राज्यभार धुरंधर । तयोरमात्य चांद्रवंशीय

द्वौ भ्राता तत्र निवासी सा० ऊहड -१ उद्धरण २ लघु भ्राता गृहे सुवर्ण 25

संख्या आष्टादश कोट्यः संति । वृद्धभ्रातुर्गृहे ६६ नवनवति लक्षा संति ।

ये कोटीश्वरास्ते दुर्गमध्ये वसन्ति ये लक्षेश्वरास्ते बाह्ये वर्सति । तत  
ऊड्डेन एकलक्ष भ्रातु पार्श्वे उच्छीर्णं याचित । ततो बाववेन एव  
कथित भवते मिना नगर उध्वसमस्ति, भवता समागमे वासो भविष्यति ।  
एव ज्ञात्वा राजकुमार ऊड्डेन आलोचितवान् नूतन नगर वसेय ततो  
सम वचन अग्रे आयात । डीलीपुरे राजा श्री साधु तस्य ऊड्डेन ५५ 5  
तुरगमा भेटिकृता उच्येसा सतुष्टो वगै । तता भीनमालात् अष्टादश १८  
सहस्र कुटुम्ब अगात् । द्वादश योजना नगरी जाता । तत्र श्रीमद्रत्नप्रभ-  
सुरीपचमयासीप्य समेत लुणद्रही समायाति । मासकल्प अरण्ये स्थिता ।  
गोचर्या मुनीश्वरा व्रजति पर भिक्षा न लभते । लोका मिथ्यात्व वासिता  
यादृशा गता तादृशा आगता मुनीश्वरा । पात्राणि प्रतिलेप्य मास यावत् 10  
सतोपेण स्थिता पश्चात् विहार कृत । पुन कदाचित् तत्रायात । शासन-  
देव्या कथित भो आचार्य अत्र चतुर्मासक कुरु । तत्र महालाभो भविष्यति ।  
गुरु पचत्रिंशत् मुनिभि सह स्थित । मासी द्विमासी तृमासी चतुर्मासी  
उप्पोसित कारिका । अथ मन्त्रीश्वर ऊड्ड मुत मुजगेन वष्ट । अनेक  
मन्त्रवादिन आहूता पर न कोपि समर्थस्तै कथित अय मृत दाघा 15  
दीयता । तस्य स्त्री काष्ठभक्षणे स्मशाने आयाता । श्रष्टस्य महान् दु स्रो  
जात । वादित्रान् आकर्ण्य लवुशिष्य तत्रागत । ऋपाणो दृष्ट्वा एव कथा-  
पयति भो । जीवित कथ ज्वालयत तै श्रेष्ठिने कथित एष मुनीश्वर एव  
कथयति । श्रेष्ठिना ऋपाणो वालित लुप्तक प्ररष्ट गुरु पृष्ठे स्थित ।  
मृतकामानीय गुरु अग्रे मुञ्चति श्रेष्ठि गुरुचरणे शिर निवेशय एव कथयति 20  
भो दयालु मम देवो रुष्ट मम ग्रहो शून्यो भवति । तेन कारणेन मम पुत्र-  
भिक्षा देहि । गुरुणा प्राप्तु जलमानीय चरणौ प्रक्षाल्य तस्य छटित । सह-  
मात्कारेण सज्जो वभूव हर्ष वादित्राणि वभूव । लोकै कथित श्रेष्ठि सुत  
नूतन जन्मो आगत । श्रेष्ठिना गुरुणा अग्रे अनेकमणि मुक्ताफल सुवर्ण  
वस्त्रादि आनीय भगवान् गृह्यता । गुरुणा कथित मम न कार्यं पर भवद्भि 25  
जिन धर्मो गृह्यता । सपाद लक्ष शावकाना प्रति बोधि कारक । पूर्व श्रेष्ठि-



ना नारायण प्रासादं कारयितुमारब्धं । स दिवसे करोति रात्रौ पतति सर्वे  
दर्शनिनः पृष्टा न कोपि उपायो कथितं तेन रत्नप्रभाचार्यो प्रष्टः—भगवान्  
मम प्रासादो रात्रौ पतति । गुरुणा प्रोक्तं कस्य नामेन कारयतः । नारायण  
नामेन । एवं नहि महावीर नामेन कुरु मंगलं भविष्यति । प्रासादस्यविघ्नं  
न भविष्यति श्रेष्ठिना तथैव प्रतिपन्नं । अथ शासनदेव्या गुरुणां कथितं 5  
हे भगवन् अस्य प्रासाद योग्यं मया देव गृहात् उत्तरस्यां दिशी लूणद्रहा-  
भिधानं डुङ्गरिकायां श्री महावीर विवं कारयितुमारब्धं । तत्र तेन श्रेष्ठिना  
गोपाल चचनात् गोदुग्ध स्नावकारणं ज्ञात्वा सर्वेपि दर्शनिनः पृष्टाः तैः  
पृथक् पृथक् भाषया अन्यदन्यदुक्तं । ततः श्रेष्ठिना स आचार्योऽभिव्यञ्च  
पृष्टः ततः शासन देव्या वाक्यात् आचार्यो ज्ञात्वा एवं कथयति तत्र त्वत्प्रा-10  
साद योग्य विवो भविष्यति परं पट् मासैः सार्द्धं सप्त दिनैः निष्कासनीयं ।  
श्रेष्ठि उच्छ्रुक संजातः । किञ्चिदूनैर्दिनैः निष्कासितः निवु फल प्रमाण हृद्-  
यस्य ग्रन्थी द्वय सहितं । आचार्यैः प्रोक्तं अद्यापि किञ्चित् असंपूर्णं विवं  
विलंबस्व श्रेष्ठिना प्रोक्तं गुरुणां कर प्रासादात् संपूर्णं भविष्यति । तेनावसरे  
कोरंटकस्य श्राद्धानां आव्हानं आगतं । भगवन् प्रतिष्ठार्थमागच्छ । गुरुणा 15  
कथितं सुहूर्त वेलायां आगच्छामि ।

सप्तत्या ७० वत्सराणां चरम—जिनपतेर्मुक्तजातस्य वर्षे

पञ्चम्यां शुक्लपक्षे सुरगुरुदिवसे ब्रह्मणः सन्मूहुर्त्ते ।

रत्नाचार्यैः सकलगुणयुतैः सर्वसंघानुज्ञातैः

श्रीमद्वीरस्य विवे भवशतमथने निर्मितेयं प्रतिष्ठाः ॥१॥ 20

उपकेशे च कोरंटे तुल्यं श्री वीरविंशयोः

प्रतिष्ठा निर्मिता शक्त्या श्रीरत्नप्रभसूरिभिः ॥ २ ॥

निजरूपेण उपकेशे प्रतिष्ठा कृता वैक्रिय रूपेण कोरंटके प्रतिष्ठा  
कृता श्राद्धैर्द्रव्यव्ययः कृतः । ततस्तेन श्रेष्ठिना श्रीत्रौपकेश पुरस्थ श्रीम-  
हावीर विंश पूजा आरात्रिका स्नात्रकरण देव वंदनादिविधिः श्रीरत्नप्रभाचा-25  
र्यात् शिचिता । तदनंतरं मिथ्यात्वाभावात् श्रावकत्वं केषांचित् श्रेष्ठिसम्ब-

न्विना सज्जात । तत आचार्येण ते सम्यक्तवधारी कृता । एकदा प्रोक्त भो  
 यूय श्राद्धा तेषा देवीना निर्दयचित्ताया महिष वोत्कटादि जीववधास्थि  
 भगशब्द श्रवण कुतुहलप्रियया अविस्ताया रक्ताकितभूमितले  
 आर्द्रचर्ममद्वयदनमाले निष्टुरजनसेवितर्धर्मध्यानविद्यापके महावीभ-  
 त्सरोद्रे श्री सच्चिकादेवि गृहे गतु न बुध्यते । इति आचार्यवच श्रुत्वा ते 5  
 प्रोचु प्रमोयुक्तमेतत् पर रौद्रा देवी यदि छलिस्याम तदा सा कुटुम्बान्  
 मारयति । पुनराचार्ये प्रोक्त अहं रक्षा करिस्यामि । इत्याचार्यवाच्य श्रुत्वा  
 ते देवी गृहे गमनात् स्थिता । आचार्याणां प्रत्यक्षीभूय देव्या सकोपमि-  
 त्युक्त आचार्य मम सेवकान् मम देवगृहे आगच्छमानान् निवारणाय त्व  
 न भविष्यति । इत्युक्त्वा गता देवी पर सातिशय कालभावात् महाप्रभा- 10  
 वात् अनेकसुरकृतप्रातिहार्ये आचार्ये देवी न प्रभवति । एकदा छल लब्ध्वा  
 देव्या आचार्यस्य कालवेलाया किञ्चित् स्वाध्यायादि रहितस्य वामनेत्रभ्रू-  
 विष्टिता । वेदाना जाता । आचार्य यावत् सावधानीभूय पीडाया कारण  
 चिन्तित तावत् देवी प्रत्यक्षीभूय इति प्रोक्त मया पीडा कृता । अह स्वश-  
 क्त्या त्वा स्फेदयिष्यामि इति सावष्टभ आचार्योक्त श्रुत्वा समयाकृत सा 15  
 विनय प्रोक्त भवादृशाना ऋषीणा विग्रह विवादो न युक्त । यदि त्व कड-  
 डमडड ददासि तदाह वेदना अपहरामि । आचन्द्रार्कं त्वत्किंकरी भवामि  
 इति श्रुत्वा आचार्ये प्रोक्त कडडमडड दापयिष्यामि । यत्युक्ता गता देवी ।  
 प्रभाते श्रावकानामाकार्यं तै पक्वान्न सज्जकादि सुडकद्वय कर्पूरकुङ्कुमादि-  
 भोगश्च आनीय श्रीसच्चिकादेवी देवगृहे श्रीरत्नप्रभाचार्यं श्रावकै सार्धं 20  
 गत । तत श्रावकै पार्श्वान् पूजा कराप्य वामवक्षिणहस्ताभ्या पक्वान्नसुड-  
 कादि चूर्णयद्भि आचार्यं प्रोक्त देवी कडडमडड दत्तमस्ति । अत पर  
 ममोपामिका त्व इति वचनानन्तर एव समीपस्थकुमारिका शरीरे आवेश-  
 कृत । तत प्रोक्त प्रभो मया अन्य कडडमडड याचित अन्य दत्त । आचार्यं  
 प्रोक्त त्वया वचो याचित, स तु लातु दातु-न बुध्यते इत्यादिमिद्वान्तवाच्य 25  
 कुमारी शरीरस्था श्रीसच्चिकादेवी सर्वलोक प्रत्यक्ष श्रीरत्नप्रभाचार्यं प्रतिवो-  
 विता । श्रीउपकेशपुरस्था श्रीमहावीरभक्ता कृता सम्यक्तवधारिणी सजाता ।

का गुरो अग्रे स्थितास्ति । द्वारो दत्तोस्ति तेन विकल्पं कृतं । शच्यका  
 शिखा दत्ता मुखे रुधिरौ वसति । मुनीश्वरा आगता । वृद्धगणेशेन ज्ञातं  
 भगवन्-द्वारे सोमकश्रेष्ठि पतितोस्ति । आचार्यैः ज्ञातं अयं सच्चिकाकृतं ।  
 सच्चिका आहूता कथितं त्वया किं कृतं । भगवन् मया योग्यं कृतं । रे  
 पापिष्ठ यस्य गुरुनामग्रहणे बन्धनानि शृङ्खलानि त्रुटितानि संति स अणा- 5  
 चारे रतो न भविष्यति । परं एतेन आत्मकृतं लब्धं । गुरुणा प्रोक्तं कोपं  
 त्यज शांतिं कुरु । तथा कथितं यदि असौ शान्तिर्भविष्यति तदा अस्माकं  
 आगमनं न भविष्यति प्रत्यक्षं । गुरुणा चिंतितं भवितव्यं भवत्येव स सज्जी-  
 कृतः । सच्चिकावचनात् द्वयोर्नाम भंडारे कृताः श्रीरत्नप्रभसूरि अपरश्री  
 यक्षदेवसूरि एते सप्रभाया एतदनेहसि अस्य उपकेशगणस्य द्वाविंशति 10  
 शाखा नामानि दत्तानि—

१ नागेन्द्र २ चन्द्र ३ निर्वृत्ति ४ विद्याधराणां स्थाने १ सुंदर २ प्रभ  
 ३ कनक ४ मेरु ५ सार ६ चंद्र ७ सागर ८ हंस ९ तिलक १० कलस ११  
 रत्न १२ समुद्र १३ कल्लोल १४ रंग १५ शेखर १६ विशाल १७ राज १८  
 कुमार १९ देव २० आनंद २१ आदित्य २२ कुंभ इति । ततः तेनैव कक्क- 15  
 सूरिणा अबूदाचलमेखलायां पृषार्तस्य संघस्य डंड स्थापनने जलं प्रगटि  
 कृतं । तेनैव साधर्मिक वात्सल्ये जेसलपुरात् भरुकच्छे घृतो आनीतः ।

३५ तत्पट्टे श्रीदेवगुप्तसूरि । तत्पदमहोत्सवे पाठकाः पंच स्थापिता  
 जयतिलकादि । तेन जयतिलकेन श्रीशान्तिनाथचरित्रं निर्मितं ।

३६ तत्पट्टे सिद्ध सूरि । ३७ तत्पट्टे कक्क सूरि । ३८ तत्पट्टे देवगुप्तसूरि 20

३९ तत्पट्टे सिद्धसूरि । ४० तत्पट्टे कक्क सूरि । ४१ तत्पट्टे देव-  
 गुप्तसूरि । सं० ६६५ वर्षे बभूव ।

४२ क्षत्रीयवंशोत्पन्नत्वात् वीणावादने तत्परं क्रियाविषयं सिधिलः ।  
 ततः चतुर्विधसंघेन तत्पट्टे वीस विस्वोपकारकः स्थापितः श्रीसिद्धसूरिः ।

४३ तत्पट्टे कक्कसूरिः पंचप्रमाणग्रन्थकर्ता । ४४ तत्पट्टे संवत् 25  
 १०७२ वर्षे श्रीदेवगुप्तसूरि ।

पारिशिष्टम्—? [ मुद्रिते षोडशतमे पत्रे अनुपूर्ति ]

## दुष्पमाकालश्रीश्रमणसंघस्तोत्र-संबंधः

(सूचना—ह्येतत्स्तोत्र मुद्रितम्, पश्चात् पूज्यतमप्रवर्तकानां श्रीमता  
कातिप्रिजयानां प्रतिर्मिलिता यस्या विशिष्टता शुद्धिश्चाऽस्ति, अतस्तस्या  
१६ श्लोकेभ्यः “परत” सर्वासां गाथानामत्र पुनर्मुद्रणं क्रियते )

( तित्तीस लम्बाओ, चउरसहस्माइ चउसयाइ च ॥

इगनवइ दुसमाए, “सूरिण” मज्झिमगुणाण ॥ २० ॥ )

5

( पचावन्नाकोडी, लम्बाण हुति तह सहस्साण ॥

चउपन्न कोडिसया, चउयालीसा य कोडीओ ॥ २१ ॥ )

( इति उपाध्याय—वाचनाचार्यसत्या ),

तइ सत्तरि कोडिलम्भा, नत्रकोडि सहस्सकोडिमयमेग ॥

इगवीसकोडि इगलम्ब, सद्विसहस्मा सु “साहूण” ॥ २० ॥

10

समणीण कोडिमहस्मा, दस नवकोडिसय वार कोडिओ ॥

छप्पन्नलम्भ वत्तीस—सहस्स ण्गूण दुन्निसया ॥ २१ ॥

तह सोलकोडिलम्भा, तियकोडिसहस्म तित्तिकोडिसया ॥

सत्तरकोडि चुलमी—लम्बा सुमावगाण ॥ २२ ॥

पण्णतीसकोडिलम्बा, सु “साविचा” कोडिसहसवाणउई ॥

15

पण्णकोडिसया वत्तीस, कोडि तह वारसम्भहिजा ॥ २३ ॥

एव देविन्दनय, सिरि निज्जाणद “धम्मकित्ति” पय ॥

वीरजिणपवयणठिय, दूसमसय नमइ निच्च ॥ २४ ॥

इति दुष्पमाकालश्रीसंघस्तोत्र ॥

लिखित पूज्यप० “लक्ष्मीमद्र” गणेशिष्येण । श्रीस्तंभतीर्थमहानगरे ॥20

स० १५१६ वर्षे । वदि१०दिने ॥ ज्ञानमाणिक्यगणिना ॥

टिप्पणकम्—२००४ एतावन्तो युगप्रधानाः ( १६ ) । युगप्रधान-  
समानाः १११६००० ( १८ ) मुचारित्रसूरयः ५५५५५५०००००००००  
( १९ ) मध्यमगुणसूरयः ३३०४४६१ पाठांतरे ५५५५५५४४, । ४३३-  
२६४६१ ( २० ) उपाध्यायवाचनाचार्यसंख्या ५५६०४४४०००००००  
( २१ ) सुसाधवः १७०६१२१०१६०००० ( २२ ) श्रमण्यः १०६१२५६- 5  
३२१६६ ( २३ ) सुश्रावकाः १६०३३१७८४०००० ( २४ ) सुश्राविकाः  
३५६२५३२०००००१२ ( २५ ) ॥ उक्ताधिकं, उत्तमनृपाः १११६००० ॥  
निर्गुणसूरयः ५५५५५५५०५ ॥ छ ॥

इदं गाथाद्वयं विंशत्येकविंशतितमसंख्यं दीपालिकाकल्पादत्र लि-  
खितं ॥ अधिकारत्वादिति ज्ञेयं ॥ 10

एत्थं चायरियाणं, पणपन्नं होंति कोडिलक्खाओ ॥

कोडिसहस्से कोडि—दसए तह एत्तिए चेव ॥ १ ॥

इति श्रीमहानिपिथे ॥

पारीशीष्टम् — २

कालिकात्तास्थश्रीतपागच्छसंघग्रंथभांडागारस्य श्रीकल्पसूत्रस्थविरा-  
वलीभाषापुस्तकान्ते एता गाथा लिखिताः सन्ति— 15

रहवीरपुरे नयरे सिद्धिगयस्स वीरजाहस्स ।

छसै नवहुत्तरीए खिमणा पाखंडिया जाया ॥ १ ॥

दुब्भिक्खंमि पणट्टे पुणरवि मिलित्त समणसंघाओ ।

मिहुराए अणुओगो पवईओ खंदिलो सूरि ॥ २ ॥

वारसवाससएसुं पुणिमदिवसाओ पक्खियं जेण । 20

चाउइसी पठवेसुं पकप्पीओ साहिसूरिहिं ॥ ३ ॥

पणपण वारसएहीं हरिभदोसूरि आसिं पुवकए ।

तेरस वीसअहिए अहए वपभट्टपहू ॥ ४ ॥

इति धविरावली समाप्तं ॥ सं० १८५० वर्षे शाके १७१५ प्रवर्त-  
माने मागसिरंशुदि४थशनौ । श्रीनवानगरमध्ये । श्रीसंतनाथजीप्रसादात् । 25  
बृहत्खरतरगच्छे बृहत्खेमशाखायां । पं० रूपचंदमुनिलिखितं । श्रीः ॥

४५ तत्पट्टे नवपद प्रकरण-स्वोपज्ञटीकाकर्ता सिद्धसूरि । ४६

तत्पट्टे कक्क सूरि ।

४७ तत्पट्टे देवगुप्तसूरि । ४८ तत्पट्टे सिद्धसूरि । ४९ तत्पट्टे कक्कसूरि

५० तत्पट्टे सवत् ११०८ वर्षे देवगुप्त सूरिर्बुभूव । भीनमाल नगरे  
साह भईसाक्षेन पद महोत्सवे सप्तलक्ष धन व्ययो कृत । ततो गुरुणा 5  
पादप्रक्षाल्येन जले विपापहार लब्धी येन भईसाक्ष श्रेष्ठिना श्रीदेवगुप्त सूरि  
पद महोत्सव कृत । स पूर्वं डिंडुवाण पुरे भईसा भार्या छगणाणि स्वा-  
प्यते ततो गुरूपदेशेन ज्वालितानि छगणानि रूप्यमयानि भवन्ति ततो  
तेन रूप्येन गदहिया मुद्रा पातिता । भइसाक्ष माता श्री शशुजय यात्रागता  
स्मरच तुष्ट्यते पत्तन मध्ये ईश्वरश्रेष्ठिन पार्श्वे स्मरचो याचिता । तेन - पृष्ट 10  
भवती कस्य माता तेन कथित अह भइसाक्ष माता । तेन हसित अस्माक  
गृहे पानीयमानयति तेषा माता इति वितर्कित । ततोऽन्तर पश्चात् धन  
गृहीत्वा यात्रा कृत्वा मधमक्ति कृत्वा गृहे जगाम । पुत्रेण प्रष्ट मात मम  
कियद्भूमौ नाम वर्तते । माता कथित भवता प्रतोली द्वार यात्राममस्ति ।  
तेन वचनेन असन्तोपो जात । श्रेष्टि हास्यवचन कथित । तद्वचन वाल- 15  
यिस्यामि तदा द्वितीय वेला भोजयिष्यामि । एव प्रतिज्ञा कृत्वा पत्तने  
सामान्यपेपे द्वार हट्टे गत । भो श्रेष्टि रूप्य ग्रहिष्यसि । तेन कथित रोष-  
भरेण यत्किञ्चिदानयिष्यसि तत्सर्वे गृहामि । सचकारो याचित तेन युष्मा-  
भिर्दीयते सवालक्ष मुद्रिका दत्ता । ततो गर्दभयानि भारयत्वा पत्तने जगाम ।  
पृष्ट एतर्किं रूप्य वर्तते एव श्रुत्वा श्रेष्टिन चमत्कृता स श्रेष्टि समग्र पत्तन 20  
श्रेष्टि मेलयित्वा चरणे पपात । भइसाक्षस्तदेव कथित गुर्जरधरीत्रीमध्ये  
महिषेण पानीयमानयेतु तदा भोजयामि । तद्धन देशे सप्तक्षेत्रे व्ययो कृत ।  
ततो गाढिया इति शाखा जाता ।

५१ तत्पट्टे श्री सिद्धसूरि । ५२ तत्पट्टे श्री कक्कसूरि सवत् ११५४

वर्षे वभूव । येन हेमसूरि कुमारपाल वचसा कृपाहीना मुनिवरा निष्का- 25  
सिता ।

५३ तत्पट्टे देवगुप्तसूरि येन लक्षद्रव्यं त्यजितं । ५४ तत्पट्टे श्रीसिद्धसूरि ।  
५५ तत्पट्टे संवत् १२५२ श्रीककसूर्निर्वभूत् येन मरोट कोटः प्रगटी कृतं ।

५६ तत्पट्टे श्रीदेवगुप्तसूरि । ५७ तत्पट्टे श्रीसिद्धसूरि । ५८ तत्पट्टे  
श्रीककसूरि ।

६० तत्पट्टे श्रीसिद्धसूरि । ६१ तत्पट्टे श्रीककसूरि । ५९ तत्पट्टे ५  
श्रीदेवगुप्तसूरि । ६२ तत्पट्टे श्रीदेवगुप्तसूरि । ६३ तत्पट्टे श्रीसिद्धसूरि ।  
६४ तत्पट्टे श्रीककसूरि । ६५ तत्पट्टे श्रीदेवगुप्तसूरि ।

६६ तत्पट्टे संवत् १३३० वर्षे चीचट गोत्रेऽतपत्र उवरगाय स्थि-  
पितः श्री अर्जुंदाचल तलहटीकालंकारो वरणीनगरतः शा० देशलेन श्री  
शत्रुंजयादि सप्त तीर्थेषु चउदश १४ कोटि द्रव्य व्ययेन चउदश यात्रा कृता 10  
चतुर्दश चारान् । प्रथमं देवगुप्तसूरि तत्पट्टे सिद्धसूरि प्रमुख समग्र  
सुविहित सूरि हस्तेन संघपति तिलकः कारितं । उक्तं च

श्रीदेशलः सुकृत पेसल वित्त कोटी । चंचचतुर्दश जगज्जनितावदातः  
शत्रुंजय प्रमुख विश्रुत सप्त तीर्थः । यात्रा चतुर्दश चकार महामहेना॥१॥

तत्पुत्र समरसहजाभ्यां विमलचसत्युद्धारः कारितः संवत् १३७१ 15  
वर्षे । तथा एवमपरेरपि तिर्थयात्रा कृत्वा संघपते पदं स्वीकीरितं इत्युक्त-  
मुपदेशरसाले । साह देशलेन पाल्हाणपुरे श्री सिद्धसूरि पद महोत्सवो कृतः  
तेन सिद्धसूरिणा समराग्रहेण शत्रुंजये पट्टोद्दारे श्रीआदिनाथस्य प्रतिष्ठा कृता

६७ तत्पट्टे संवत् १३७१ वर्षे साह सहजागरेण श्री ककसूरि पद  
महोत्सवो कृतः । येन गच्छप्रबन्धः कृतः । तत्र देसल पुत्राः समर—सह- 20  
जानां चरित्रमस्ति । एवं उपकेश गच्छे अनेक प्रभावका ग्रन्थकर्तारो निरीहा  
सूरयो अभूवन् तेषां कियद् गण्यते एवं—

६८ तत्पट्टे श्री देवगुप्तसूरि बभूवः । कवि सार्वभौम विद्वच्चक्रचू-  
डामणि सिद्धान्तपारगामी सर्वशास्त्रपारंगत । श्री सारङ्गधरेण सं० १४०६  
वर्षे ढिल्यां मध्ये पद महोत्सवो विहितः सुवर्ण सहस्र पंचक व्ययेन । 25

६९ तत्पट्टे श्री सिद्धमूरि सवत् १४७५ वर्षे गुणभूरय अण्डिल-  
पाठक पत्तने चोरवेडीया गोत्रे साह मावा नीवागरेण पद महोत्सव कृत  
गुरूणा ।

७० तत्पट्टे सवत् १४६८ वर्षे श्री कक्कसूरय चित्रकूटे चौरवेडीया  
गोत्रे साह सारग सोनागर राजाभ्या पद महोत्सवो कृत येन चतुर्दश 5  
शत चतु चत्वारिसत् अधिक १४४४ कच्छ मध्ये अमारी प्रवर्ताविता ।  
याम श्री वीरमद्र प्रतिबोधित । सस्कृतप्राकृतपरमामृतप्रवाहा विरचित  
निसिलशास्त्रावगाहा वाणीविलासवाचस्पतितुल्या सकलकलारजितको-  
विदा धर्मबुद्धिपुरधरा सकलपुरन्दरा ।

७१ तत्पट्टे स० १५२८ वर्षे जोधपुरे श्रेष्ठि गोत्रे मत्रीश्वर जयता- 10  
गरेण श्री देवगुप्तसूरे महोत्सवे नव महोत्सवो कृत । श्री पार्श्वनाथस्य  
प्रासाद कारित पौषशालाया च । श्री शत्रुजय यात्रा कृता । पच पाठक  
स्थापिता । तेषा नामानि श्री धनसार १ उ० देवकलोल २ उ० पद्मति-  
लक ३ उ० हसराज ४ उ० मतिसागर ५ ।

७२ तत्पट्टे श्री सिद्धमूरयो गुणभूरय । श्री श्रेष्ठि गोत्रे मत्रीश्वर 15  
दशरथात्मजेन मत्रीश्वर लोलागरेण सवत् १५६५ वर्षे मेदिनीपुरे पद महो-  
त्सव कृत ।

७३ तत्पट्टे श्री कक्कसूरय श्री जोधपुरे सवत् १५६६ वर्षे गच्छा-  
धिपो जात श्रेष्ठि गोत्रे मत्रि जगात्मजेन मत्रीश्वर धरमसिंहेन पद  
महोत्सवो कृत ।

20

७४ तत्पट्टे श्री देवगुप्त सूरय श्री श्रेष्ठी गोत्रे मत्रि सहसवीर  
पुत्रेण सवत् १६३१ मत्री देदागरेण पद महोत्सव कृत ।

७५ तत्पट्टे प्रियमान मवत् १६५५ वर्षे चैत्रसुदि १३ सिद्धसूरि-  
र्वभूव श्री श्रेष्ठी गोत्रे मत्रि मुगुट मत्रि शेखर सर्वत्रिश्च विख्यात राज्यभार  
धुरधर मत्रीश्वर महामत्रि श्री ठाकुरसिंह विक्रमपुरे महा महोत्सवेन पत्र 25  
महोच्छवो कृत ।

७६ सवत् १६८६ वर्षे फातगुण शुद्धि ३ श्री कक्कसूरिर्वभूव । श्री



श्रेष्ठि गोत्रे मंत्रि सुगुट मंत्रि ठाकुरसिंह तत्पुत्र सं० सावलकेन तत्पत्नी  
साहिवदेन पद महोत्सवो कृतः ।

७७ संवत् १५२७ वर्षे मृगशिर सुद ३ दिने श्री देवगुप्तसूरिर्वभूव  
श्रेष्ठि गोत्रे मंत्रि ईश्वरदासेन पद महोत्सवो कृतः ।

७८ तत्पट्टे श्री सिद्धसूरि संजातः । श्रेष्ठि गोत्रे मंत्रि सगतसिंहेन ७  
पट्टाभिषेकः कृतः संवत् १७६७ वर्षे मृगशिर सुदि १० दिने जातः ।

७९ तत्पट्टे श्री ककसूरिर्वभूव । मंत्रि दोलतरामेन सं० १७८३ वर्षे  
आसाढ वदि १३ दिने महोत्सवो कृतः ।

८० तत्पट्टे देवगुप्तसूरि सं० १८०७ वर्षे वभूव । सुहता दोलत-  
रामजीना पद महोत्सवो कृतः ।

10

८१ तत्पट्टे श्री सिद्धसूरिर्वभूव । संवत् १८४७ वर्षे महासुदि १०  
दिने पट्टाभिषेकः संजातः । मुं० श्री खुशालचंद्रेण पदमहोत्सवो कृतः ।  
तेषां प्रासादात् अहं कल्पवाचनं करोमि । पुनः दीक्षा गुरुप्रसादात् ।

८२ तत्पट्टे श्री ककसूरिर्वभूव । संवत् १८६१ रा वर्षे चैत्र सुद ८  
अष्टमीदिने पट्टाभिषेकः संजातः । वैद्य मुं० ठाकुर सुत मुं० खिरदारसिंह 15  
गृहे समस्त श्रीसंघेन वीकानेर मध्ये पदमहोत्सवः कृतः ।

८३ तत्पट्टे श्री देवगुप्तसूरिर्वभूव । संवत् १९०५ वर्षे भाद्रवा सुदि  
१३ चंद्रवासरे पट्टाभिषेकः संजातः । श्रेष्ठि गोत्रे वैद्य सुहता शाखायां प्रेम-  
राजो तस्य परिवारे हठीसिंघजी ऋषभदासजी मेघराजजीकानां उस्संगे  
गृहीत्वा श्रीफलोधीनगरमध्ये समस्त वैद्य सुहता पट्टाभिषेको कृतः । तेषां 20  
प्रासादात् कल्पवाचनां करोमि ।

८४ तत्पट्टे श्रीसिद्धसूरिर्वभूव । संवत् १९३५ वर्षे माघ कृष्ण ११  
दिने पट्टाभिषेक संजातः श्रेष्ठि गोत्रे वैद्यसुहता शाखायां ठाकुर सुत,  
महरावजी श्रीहरि सिंहजी पद महोत्सवः कृतः वृद्ध गृहे मध्ये धांसीवाला  
सुरजमलजी हस्तात् समस्त श्रीसंघसहितेन विक्रम पुर मध्ये देवदुष्य 25  
रंजित छटिका राज्य द्वारात् समागता । तेषां प्रासादात् अहं कल्पवाचनां  
करोमि इति ॥

परिशिष्टम्—३

राजवंशः

(A) नृपकालगणना ( तित्थयोगालीयपडन्नय )

ज रयणिं सिद्धिगञ्जो, अरहा तित्थकरो महाभीरो ।

त रयणिं अवतीए, अभिसित्तो पालञ्जो राया ॥ ६२० ॥

१ पालगरण्णो सट्ठी ६०, पुण्ण पण्णसय १५० वियाणि नन्दाण ।

= मुरियाण सट्ठिसय १६०, पण्णतीसा ३५ पुसमित्ताण + ॥ ६२१ ॥ 5

-वलमित्ता-भाण्णमित्ता, सट्ठा ६० चत्ता ४० य होंति × नहसेणे ।

गद्दभसयमेग १०० पुण्ण, पडिवन्नो सो सगो राया ॥ ६२२ ॥

पचय ५ मासा पचय—वासा द्दच्चेव होंति वाससया ६०५ ।

परिनिब्बुअस्सऽरिहन्तो, तो उप्पन्नो सगो राया ॥ ६२३ ॥

(B) अस्मिन्नेव ग्रथे १७-४६तमे पत्रे ( विचारश्रेणौ पावापुरीरूपे च ) 10

१—महन्तिच्चाश्च निम्माए, गोयम ? पालयनित्रो अवतीए ।

होहीइ पाढलीअपह्ण, सो असुयवदाडनिवमरये ॥१॥ युग० यत्र० ।

पालकस्य भ्राता गोपालको दंक्षित पालकपुत्री अरन्तिअर्धनराष्ट्रवर्धनी ।  
राष्ट्रवर्धनपुत्री अवन्तीपेण—मण्णिअभौ उज्जयिनीकौशात्रीनृपौ इति आ० नि० ६६६ ।

= वी० नि० स० २१४ राजगृहे मौर्यवशी बलभद्रो नृप । इति आ०  
नि० प० ३१५ ॥

+ पुष्यमित्रो यावन्सघाराम भिच्छच्च प्रधातयन् प्रस्थित स यावत्  
शाकल ( श्यालकोट ) अनुप्राप्त । तेनाभिहित यो मे धमणशिरो दास्यति तस्याद्  
दीनारशत दास्यामि ॥ इति दिव्यादाने २६॥ सुद्धित्तो आयरितो सुहृग्भाण्यो, तस्स  
पुग्गमित्तेण ऋण्य विग्वकत ।—इति, ध्ववहार सूत्र उ० ६ अवचूर्णां ।

कलिंगनृपेण यस्मात् जिनमूर्तिं प्रापि । इति हार्थीगुफालेखे ।

+ उज्जयिन्या भगिनीभोगी दर्पणराजा, सरम्बर्ताहरणेन आजीविक्काप्पिमि-  
त्तपाठिकालिकाचार्यं प्रेरिते पण्णवतिशाहिनृप—भृगुऋष्यपतिबलमित्र—भानुमित्राद्यै

## (C) राज्यत्व कालगणना

श्रीवीरनिर्वाणात् विशालायां पालकराज्यं २० + वर्षाणि । एतेन सहितं सर्वनन्दराज्यं १७८ । १०८ वर्षाणि मौर्यराज्यं, वर्ष ३० पुष्यमित्रा-

हतः । मुख्यशाहीरजा बभूव, तस्य शकवंशः, ततो बलमित्रो राजा-भानुमित्रो युव-  
राजा जातः । तत्समये तन्मातुलाः कालकाचार्या उज्जयिन्यां समागताः वि० सं० ४५३ ।  
येन प्रतिष्ठानपुरे शातवाहननृपानुरोधतः पंचमीतश्चतुर्थ्यां पर्युपणापर्वानितं, सर्व-  
संधेन तत्प्रमाणीकृतं ॥ —इति, बृहत्कल्पभाष्य-चूर्णिः, पंचकल्पचूर्णिः निपीथ चूर्णिः  
अ० १०, कथावली, व्यवहारचूर्णिः उ० १०, कालिकाचार्यकथा, वीरनिर्वाण०  
कालगणना, श्रीप्रभावकचरित्रे विजयसिंहप्रबन्धः पादलिप्तप्रबन्धः ।

÷ चत्वारः कालिकाचार्याः तद्यथा-प्रथमः १ शकप्रतिबोधकः प्रज्ञापनासूत्र-  
कृत् श्रीस्वातिसूरिशिष्यः श्यामान्चार्यः वी० सं० ३२० तः ३३५ ॥ द्वितीयः २—  
अविनीतशिष्यत्यागी आजीवाकाञ्चिमित्तपाठी गर्दभिल्लोच्छेदकः इंद्रप्रश्नोत्तरदाता,  
चतुर्थीपर्युपणाकारकः श्रीखपटाचार्य—श्रीपादलिप्तसूरिसमकालीनः वी० सं० ४५३ ॥  
तृतीयः ३—आर्य विष्णुसूरिशिष्यः वी० सं० ७२० ॥ ४—श्रीदेवद्विगाणिसमका-  
लीनः, भूतदिन्नशिष्यः, माधुरीवाचनासहायकः आनन्दपुरे कल्पसूत्रव्याख्यानरूपेण  
चतुर्विधसंधे चतुर्थ्यां पर्वप्रवर्तकः वी० सं० ११३, वाचनाभेदात् वी० सं० १८१ ॥  
इति उत्तराध्ययननिर्युक्तिः, विचारश्रेणिः, रत्नसंचयप्रकरणः, कालसप्तिका गा० ४१ ॥

+ एतत्संख्याभेदस्तु श्रीभद्रबाहुस्वामि-पश्चाज्जातचंद्रगुप्तयोः कालैक्य-  
साधनार्थं । अतएव श्रीहेमचंद्रसूरिभिरपि परिशिष्टपर्वणि सर्ग ३, श्लो० २४३  
सर्ग ८ श्लो० ३८६ गणनायां पालकस्य षष्टिः वर्षाणि न स्वीकृतानि । एवं बौद्धगण-  
नायामपि अजातशत्रुतः नवनन्दावधि १७० वर्षाणि ॥ वायुपुराणेषु अ० ६६ श्लो०  
३६८ महापद्मानंदस्य ८८स्थाने २८ वर्षाणि दत्तानि, तानि च शूरावंशे नव्यनामयुग्मेन  
पूर्णीकृतानि ॥

× भृगुकच्छे नहपानः प्रतिष्ठाने सालवाहन एतौ समकालिनौ, सालवाहनेन  
नहपानः पराजितः । इति आवश्यकनिर्युक्तिपत्रं ७१२ ॥

णा, बलमित्रभानुमित्रराज्य ६० वर्षाणि । दधिवाहनराज्य ४० । तदा  
४१६ । तदा च देवपत्तने चद्रप्रभजिनभूवन भविष्यति । अथ गर्दभिल्लराज्य  
वर्ष ४४, तदनु वर्ष ५० शकवशा राजानो जीवदयारता जिनभक्ताश्च  
भविष्यन्ति । श्रीवीरात् ४७०

कालतरेण केणवि, उप्पाडित्ता सगाण त वसं ।

5

होही मालवराया, नामेण विक्रमाइच्चो ॥ १ ॥

तो सत्तनवइ ६७ वासा, पालेहि विक्रमो रज्ज ।

अरिणत्तणेण सो विहु, विहए सवच्छर नियय ॥ २ ॥

सवच्छर तुलत्त तम्मि सययमि गणनाह ।

श्रीवीरात् ५५० विक्रमवशा तदनु वष ३८ शून्यो वशा ।

10

श्रीवीरात् ६०५ शकसवत्सर. ॥—इति, श्रीमेरुतुङ्गीयविचारश्रेणौ ॥

(D) राजगृही-पाटलिपुत्र-राजवशा

अधर्मि × प्रद्योतवशानन्तर, शिशुनाग । काकवर्ण शकवर्णो वा ।  
क्षेत्रवर्मा क्षेत्रवर्मा वा । क्षेमजित् क्षेत्रज्ञ ( प्र ) सेनजीत् वा ॥ विधिसारो  
विन्ध्यसेनो विधिसारो वा व० २८ । अजातरात्रु ( कोणिक ) व० २७ ॥ 15  
वशाको दर्शको र्भको वा, व० २४ वा व० २५ ॥ अजय उदासी उदायी  
वा व० ३३—॥ नन्दिवर्धन व० ४० वा व० ४२ ॥ महानन्दि व० ४३ ॥  
इतिक्षत्रवाधप्राना × शिशुनागाना ३६० वा ३६२ वर्षाणि राज्यम् ॥

महानन्दिसूनु शूद्राया जात महापद्मपति व० ८८ । अष्टौ नन्दा  
व० १२ ॥ इतिशूद्रयोर्नाना × नन्दाना १०० वर्षाणि राज्यम् ॥

20

मौर्य चद्रगुप्त व० २४ वा० । वारिसारो भद्रमारो विंदुसारो वा,  
व० २५ वा .. । शोक अशोको वा व० २६ वा व० ३६ । दशरथ

× प्राय इदं परधर्माऽपहिष्णुनापर अ-शैरनृपनिदावचनम् ॥

— येन गगाया दक्षिणे कुले पाटलिपुत्र स्थापितं तत्रैव च राज्यं कृतं जिन-  
भूवनमपिनिष्पादितं इति प्राग्व्यक्तवृत्तं ६८७-६६० पत्रेषु, आदरयकचूर्णं, परि-  
शिष्टपर्वणि, अष्टिकापुत्रचरित्रे च ॥ तद्द्वितीयं नाम कुमुमपुरः इति वायुपुराणे  
अ० ६६ श्लो० ३१६, अज्ञादपुराणे म० ना० उपा० ३ अ० ७४ श्लो० १३७ ॥

सुयशा कुशालः कुणालो, वा व० ८ ॥ वन्धुपालितः संगतः सप्ततिः संप्रतिः  
वा, व० ८ वा व० ९ । इंद्रपालितः शालिशूको वा, व० १० वा... । सोम-  
शर्मा देववर्मा वा, व० ७ वा... । शतधन्वा शतधरः शतधन्वापुत्रो वा,  
व० ८ वा व० ९ ॥ बृहद्रथः व० ७ वा व० ७० ॥ इति ६ (१०) मौर्याणां  
१३७ वर्षाणि राज्यम् ॥

5

पुण्यमित्रः व० ३६ वा व० ६० । सुज्येष्ठप्रमुखाः नव वा दश  
शूंगाः व० ६६ वा व० ७५ ॥ येषूपान्त्यो राजा समाभागो विक्रममित्रो  
( बलमित्रो ) विक्रमादित्यो वा ॥

इति धार्मिकाणां + शूंगानां १०२ वा ११२ वर्षाणि राज्यम् ॥

इति—भागवतं, स्कंध १२, अ० १, श्लो० ५-१८ ॥ 10

मात्स्यं, अ० २७२, श्लो० ६-३२ । आ० सं० ग्रं० ग्रं०, ५४ प० ५५३ ॥

वायुपुराणं, अ० ६६, श्लो० ३१५-३४३ ॥ आ० सं० ग्रं० ४६, प० ३८३ ॥

ब्रह्मांडपुराणं, म० भा० उ० ३, अ० ७४, श्लो० ३११-३३७ ॥

तथा विष्णुपुराणं ॥

(E) बौद्धगणानायां राजवंशाः

15

अजातशत्रुः व० ३२, उदायी व० १६, अनुरुद्धमुण्डः व० ८,  
नागदासक० व० २४, सुसुनागः व० १८ कालाशोकः व० २८, तत्पुत्राः  
व० २२ ॥ नवनन्दाः २२, चंद्रगुप्तः २४, विन्दुसारः २८, अनभिषिक्त  
अशोकः ४ ॥ अशोक..... ॥

इति, महावंशः परिच्छेद-४ श्लो० १-८ तथा परि० ५ श्लो० १४-२२ ॥ 20

तस्मिंश्च समये कुनालस्य सम्पदीनाम पुत्रो युवराज्ये प्रवर्तते । × ×  
पृथिवीं निष्क्रिय संपदी राज्ये प्रतिष्ठापितः ॥ इति दिव्यादानं २६ ॥

तथा—तत्पौत्रः ( अशोकपौत्रः ) सम्पदी नाम,.....

इति क्षेमेन्द्रकृता बोधिसत्त्वावदानकल्पलता पल्लव-७४

+ तदा शैवधर्महिता राज्यक्रान्तिर्जाता, विप्रसाहायात् सेनानी पुष्पमित्रो  
नपं हत्वा नृपो बभूव, यं पौराणिकाः प्रशंसन्ति, बौद्धाश्च निन्दन्ति ॥

परिशिष्टम्: — ४

[ श्रैतिहासिकं पत्रं ]

(कलकत्तामाला वायु पुरणचवजी नहारना भडारमाथी)

- स० १११५ नागोरकोट मडाणो वैशाखसुद ३ ( ) ठे वासिदाहिमौ  
 स० १२१२ रावल जेसे "जेसलमेर" वसायो, श्रावण शुद १२  
 स० ११८१ फन्नोदी "पार्सनाथ" देवलरी स्थापना हुइ  
 स० १००२ अजैयासार "अजमेर" वसायो सही 5  
 स० ७०३ दिलि तुवर वसाइ अनङ्गपाल तुअर  
 स० १३१३ अलावदी पातमाह जालोरगढथी लडीयो, वीरमदे काम आयो  
 स० १५०० राणा उदैसघ उदैपुर वसायो  
 स० १२१५ सहसमल देवडै सीरोइ वसाइ  
 स० १५१५ जोधपुर वसायो, जोधैराव जेठ सुद ११ 10  
 स० १५४५ वीकानेर वसायो राध वीकै जोधारै वेटै  
 सं० १५४५ फलोदीरो कोट करायो हमीर नरावत  
 स० १६४५ नवो कोट वीकानेररो करायो, राजारासघजी कामदार  
 करमचन्द बद्धावत करायो  
 स० १६१६ अकवरपातसाह अकवरावाड कोट करायो, आगरो जमुना 15  
 नदीरै उपरै हुतो,  
 स० १६२४ चितोडगढ पालटीयो पालटीयो पातसाही अकवर पालटीया,  
 जै(जय)मल इसर मेडतीयो काम आयो  
 सं० ११०० नाहडराव मडोवर वसायो  
 स० १४७१ अहमद पातस्याह अहिमदावाद वसाइ 20  
 स० १६४४ पातिमाह अकनर अहमदानाद लीघो,  
 सं० १६६६ किमनमघ राजा ( कितनमघ राजा ) कितनगढ वसायो,  
 सं० १०५० राजा कुमारपाल हुअो जडनधर्म राग्नीयो,  
 २६

सं० ११६३ विमल मंत्रीसर हुआ आवु देहरा कराया

सं० १२६३ वस्तुपाल तेजपाल हुआ आवुजात्राकरनै आवु उपर देहरा  
कराया, वीरधवलवाघेलारा कामदार हुआ पगे पगे निधानहुआ  
वरस ३६ नो आउखो हुआ

सं० १५६६ दुद्वैजी मेडतो वसायो, आगै सांनधातारो हुआ ।

सं० १५५(?) जांस नवोनगर वसायो हलारमै

सं० १७३५ औरंगाबाद वसायो औरंगसा पातस्याह

सं० १७८३ सवाइ जेसंघ जैपुर वसायो

सं० ७०४(?) राजूवीरनारायण सिवांणो गढ करायो

सं० ६०६ चित्रांगद सोरीयो चित्रोड वसाइ

10

इति श्री गावोटरी वीगत संपुरणं सं० १८२२ गांव दीयावड नागो-  
ररी पटी कुपावतराज श्रीठाकुरसीवकरणजी लुणकरणोत केसरसंघोत  
केसरसंघ सब भए मोत सबलसंघ दलपतसंघोतरी सीवकरणजी दैकवर-  
राचैनसंघजी कुवार कनजी, दुवार सेरसंघ कुवारप्रथीराज

( श्रीजैनश्वेताम्बरकान्फरन्सहेरल्ड पु० १४ अं० ४, ५, ६, वीर 16

सं० २४४४.सं० १६७४ )

परिशिष्टम् — ५

८४ गच्छाः ( जैनसाहित्यसंशोधकः खं०३ अं०१ )

धोसवाल	मलधार	कुनगपुरा	सिद्धपुरा	
जीरावला	भाघराज	काछेलिया	घोघा(घ)रा	
वडगच्छ	पल्लीवाल	रुद्रोली	नीगम	
पुनमिया	(नागराल)	(रुद्रपालीय)	सजना (ती)	
गनेसरा	कोरडवाल	महु(देव)करा	वारैजा	5
कोरटा	नागेंद्र	कपुरसीया	(वरडेवा)	
आनपुरा	धर्मघोष	पूर्णतल	मुरडवाल	
भरु प्रच्छा	नागोरी	रेवइया	(सुरडवाल)	
उदवीया	उड्डितवाल	धुधुका	नागउला	
शुदविया	नाणावाल	धभणा		10
उ(द)काउआ	साडेरवाल	पचवलहीया	? २ मतानि	
भीत्रमाल	मडोवरा	पालणपुरा	आचलिक	
भुडासीया	सुराणा	गधारा	पायचद	
दासवि(रु)आ	रभती	गुवेलिया	वीजा	
गच्छपाल	वडोदरीया	सार्धपुनमीया	आगमिक	15
घोपवाल	सोपारा	न(म)गरकोटीया	काजा	
मगोडी	माडलीया	हीसारीया	तपा	
ब्राह्मणीआ	कोठी(त्यो)पुरा	भटनेरा	[वडगच्छ]	
जालोरा	जागला(डा)	जीनहरा	लुद्धा	
वोकडिया	झापरीया	(सोरठीया)	पाटणीया	20
मुडा(मा)हरा	(बावरावाल)	जगायन	साकर	
चित्तो(त्रो)डा	घोरसडा	भीमसेन	कोथला	
साचोरा	द्विवंदनीक	आ(ता)गडीया	कडुआ	
कुचडीया	चित्रवाल	रुत्रोजा	आत्ममती	
सिद्धातीया	वेगडा	सेवतरीया		25
रामसेनीया	वायड	वाघेरा	( ) मतानराणि	
आगमीक	विजाहरा	वा(व)हेडीया		



परिशिष्टम्—६

## ॥ लघुपद्मावली ॥

[ जय लघुपद्मावली लिख्यते ]

विदितसकलशास्त्रान् पार्श्वचंद्रान् कर्वांद्रान्,  
 भजत समरचंद्रान् भव्यराजीव सूर्यान्,  
 नमत विशदमूर्तीन् राजचंद्रान् मुनींद्रान्,  
 विमलविमलचंद्रान् सर्वसुरीन्द्रमुख्यान् ॥ १ ॥ मालिनी छंदः ॥  
 तत्पदे जयचंद्रसूरिमुनिपा जीता जगत् विश्रुताः, 5  
 तत पट्टोदयभास्करा गणिवराः श्रीपद्मचंद्रा वसुः,  
 तत्पट्टे मुनिचंद्रसूरिगणिनो नंदंतु भट्टारका—  
 स्तत्पट्टाब्जविभाकरा गणिवराः श्रीनेमिचंद्राह्वयाः ॥ २ ॥ शार्दूलः ॥  
 तत्पट्टे कनकेंद्रसूरिगणिपा जाता जगत्युज्वलाः,  
 तत्पट्टे शिवचंद्रसूरिमुनिपा विख्यातकीर्तिव्रजाः 10  
 तत्पट्टे विमलप्रबोधसहिताः श्रीभानुचंद्राभिधाः  
 तत्पट्टे च विवेकचंद्रयतिपा जाता जगत्पूजिताः ॥ ३ ॥ शार्दूलः ॥  
 तत्पट्टमानससरोवरराजहंसाः,  
 श्रीलब्धिचंद्रमुनिपाः प्रबभूवुरेवं,  
 तत्पट्टभास्करनिभा विलसद्गुणौघाः 15  
 श्रीहर्षचंद्रमुनिवृन्दवरा अजैपुः ॥ ४ ॥ वसंततिलका ॥  
 तस्मिन्पट्टे प्रजयतितरां हेमचंदो मुनींद्रः  
 सुश्लोकौघैर्विदितमहिमा गांगमंभश्चलोके,  
 जैने धर्मे चरिततपसा श्रावकैर्गीतकीर्ति—  
 र्मान्यो धीमान् विमलकविताकोमलोद्गीर्णवाणिः ॥ संदाक्रांता ॥ 20  
 संवत् १६३३ मिति जेठ सुदी १२ शनिवासर  
 श्रीमकसूदाबाद अजीमगंज में मुन्नीलाल के वास्ते +

+ श्रीसुतपूरणचंद्रजी नाहर इत्येतेषां भंडारतः प्राप्तं

जैनश्वेताम्बरकान्फरन्स हेरल्ड पु० १४ अंक ४-५-६ वीर सं० २४४४

परिशिष्टम् ७

पल्लीवालगच्छ-सत्क ऐतिहासिकसंग्रह

स० ११४४ माघशुक्ल ११, साप्रत नि शेषनयसजुते प्रद्योतनाचार्य-  
गच्छे, ऐंद्रदेवसूरिणा, अ० वाववै, पालीग्रामे वीरमन्दिरे सन्नके प्र० का० ।

स० ११५१ आ० शु० ८ गुरु, पल्लकीये प्रद्योतनाचार्यगच्छे, लक्ष- 5  
मलेन ( पालीग्रामे ) वीरचैत्ये देवकुलिका कारिता ॥

स० १२१३ आ० व० १, म० देवभद्रसूरि-शिष्यसिंहसेनसूरिणा,  
म० देवा, पल्लिकाया ऋषभचैत्ये, प्रतिमा कारापिता ॥

स० १३०० वै० व० ११ पुष्य, चद्रगच्छीय हर्षभद्रसूरिशिष्ययशो  
भद्रसूरिणा, सहजिगपुरवास्तव्य-पल्लीवाल ज्ञातीयठ० रतनपालेन वि० का० 110

स० १३२७ फा० शु० ८ वडगच्छे कुत्रडे माणिस्यसूरिणा, पल्ली-  
वाल ज्ञातीय ठ० प्रतिष्ठा कारापिता ॥ ( अहमदाबाद )

स० १३३८ वै० शु० २ शनि, पल्लीवालज्ञातीय ठ० मल्लि विंवा  
कारापित, पूर्णभद्रसूरिभि प्रतिष्ठित ॥

स १३४० ज्ये० व० १० शुक्र, कोरदीयगच्छे x x सूरिणा, 15  
पल्लीवाल ठ० प्रतिष्ठित ॥

स० १३५६ ज्ये० शु० १५ शुक्र, कुलगुरु आदेशेन, पल्लीवाल  
ज्ञातीय देवकुलिका कारिता । ( ली० अ० रि० इ० ब्रा० प्रे० पृ० ३६३ )

स० १३७१ आ० शु० ८ रवि, पल्लीवालज्ञातीय० प्रतिष्ठा ॥

स० १३८३ वै० व० ५ सोम, पल्लीवाल-कीकमेन, प्रतिष्ठा० ॥ 20

स० १३९७ मा० शु० १० शनि, धर्मघोषगच्छे मानतुङ्गसूरि-शिष्य

हसरराजसूरिणा, पल्लीवालज्ञातीय ठ० छाडा, विंवा कारित ॥

स० १४५८ फा० व० १ शुक्र, पल्लीगच्छे शातिसूरिणा, उपके-  
शीय-हट्टचायी जो० प्रतिष्ठा ॥

स० १५०७ फा० व० ३ पल्लीवालगच्छे यशोदेवसूरिभि, उपकेश-25  
धाकृगोत्र प्रतिष्ठा कारिता ॥

सं० १५०८/ज्ये० शु० १०, श्रीपल्लिगच्छे, श्रीमालीज्ञाती-भंडाव-  
तगोत्रे शा० भोजा.....कारितं ॥

सं० १५१० फा० व० ३ शुक्रः, अत्रलगच्छे जयकेसरसूरिणा,  
पल्लीवाल ज्ञातीय-सं० मंडलिक.....प्रतिष्ठा०

सं० १५११ मा० व० ५ शुक्रः, पल्लीवालगच्छे यशोदेवसूरिणा, 5  
जिनपट्टः प्रतिष्ठितः ॥ ( वामणवाडा ) ॥

सं० १५१३ वै० शु० २ सोमः, श्रीपल्लिगच्छे श्रीयशःसूरिउपदेशेन,  
ओसवाल—छाजडगोत्रे माधा इत्यनेन प्रतिष्ठा कारापिता ॥

सं० १५२८ मा० व० ५ बुधः, पल्लीवालगच्छे नन्नसूरिभिः, ओस-  
वाल—धनेरियागोत्रे विंवं कारापितं ॥ 10

सं० १५२८ चै० व० १३ सोमः, पल्लीगच्छे नन्नसूरिपट्टे उज्जोयण  
सूरिभिः, उपकेशज्ञातौ वर्द्धनगोत्रे जिणदासकेन विंवं कारापितं ॥

सं० १५३६ आ० शु० ६ श्रीपल्ली० भ० श्रीउजोअणसूरिभिः विं० प्र० ॥

सं० १६६७ भा० शु० ५ (६) शुक्रे पल्लीगच्छे भ० यशोदेवसूरि-  
राज्ये तेजसोजी विजयराज्ये उ० देवशेखरविजयराज्ये श्रीवीरमपुर ( ना- 16  
कोडा ) संघेन कारितं । श्रीसुमतिशेखरेण लिपीकृतं ॥

सं० १६७८ द्वि० आ० शु० २ रविः, श्रीपालकीयगच्छे भ० यशो-  
देवसूरिदिजयमाने छाजड.....संघेन नाकोडातीर्थे वीरचैत्ये चतुष्कि-  
का कारिता ॥ पं० सुमतिशेखरेण लिखितं ॥

आपाढादि सं० १६८१ चै० व० ३ सोमः, पल्लीवालगच्छे भ० 20  
यशोदेवसूरिविजयमाने, श्रीपल्लीगच्छसंघेन ( वीरमपुरे ) पार्श्वचैत्ये निर्ग-  
मचतुष्किका कारापिता ॥ उ० हरशेखर—शिष्य उ० कनकशेखर—शि०  
उ० देवशेखर शि० उ० कनकशेखर—शि० उ० सुमतिशेखरेण लिखितं ॥

इति श्वेतांबरीयःपल्लीवालगच्छः वडगच्छ—कोरंटगच्छसमाचारः ॥

तस्य क्षेत्रं—पाली, सहजिगपुरं, कोरंटा, वामणवाडा, वीरमपुर, नाकोडा ॥ 5-

तद्गच्छाऽन्यनामानि—प्रद्योतनाचार्यगच्छ, पल्लकीय, पालकीय,  
पल्ली, पल्लीवाल ॥

एवं जयपुरराज्येपि पल्लीवालसंस्थापितं श्वेतांबर-दीगंबरैरुपास्यमानं  
“श्रीमहावीरजी” नाम्ना श्वेतांबरतीर्थमद्यापि वर्तते ।

पट्टावली-समुच्चयान्तर्गत-शब्दानां

अकाराद्यनुक्रमः ॥

# अकाराद्यनुक्रमस्य सूचिः

A श्रीतीर्थकर-गणधराणां नामानि ॥

(अस्मिन्ननुक्रमे आदिस्थैः श्रीभगवदादिभिः अन्तस्थैः स्वामिगण-धरादिभिश्च सामान्यपदै रहितानि केवलानि तीर्थकर-गणधरनामानि दर्शितानि सन्ति, एवं सर्वत्र ज्ञेयं) ।

B श्रीजैनश्वेतांबरश्रमण-श्रमणीनां नामानि ॥

(प्रारंभस्थिताज्ञाचार्येत्यादिभिः प्रान्तस्थसूरिगणिविजयप्रमुखैः सामान्यपदै रहितानि शुद्धानि जैनश्वेतांबरोचार्यापाध्यायपं०पन्यास-साधुसाध्वीनामानि) ।

C पद्धर्शन-ज्ञाति-गच्छ-कुलानां नामानि ॥

(विविधदर्शन-ज्ञाति-मतानां, जैनीयगणगच्छकुलवंशगोत्रशाखा-प्रशाखादीनां नामानि) ।

D गृहस्थानां नामानि ॥

(राजा-मंत्रि-मंडलिक-संघपति-श्रेष्ठि-कवीनां नामानि) ।

E देश-नगरादीनां नामानि ॥

(देश-ग्राम-नगर-गिरि-नदी-सरः-स्थान-तीर्थाणां नामानि) ।

F ग्रन्थ-स्तोत्राणां नामानि ॥

(निर्युक्ति-भाष्य-चूर्णि-टीका-टिप्पनक-विवरण-पञ्जिका-सार-स्तवक (टव्वा) प्रमुखवैशेष्यरहितानि केवलमूलग्रन्थानां नामानि) ।

G इतरधर्माचार्य-ऋषि-देव-विरुदानां नामानि ॥

(जैनस्थानकमार्गि-दिगंबरसाधूनां, निन्हवानां, जैनेतरधर्माचार्याणां, विरुदानां च नामानि) ।

तथा—अत्र नाम्नां अक्षरभेदः चंद्र ( ) बन्धे दर्शितोस्ति, यथा अज्जवयर-अज्जवईर अनयोः स्थाने “वय (इ) र” इति ॥

नाम्नामधिका अक्षराश्रतुष्क [ ] बन्धे दर्शिताः सन्ति ॥

कानिचिन्नामानि एकस्मिन्पत्रे बहुश उल्लेखितानि प्राप्यन्ते, तानि सर्वाण्यत्र एकपत्रांके एव न्यासीकृतानि, यथा-१६२तमेपत्रे “कक्कसूरिः” इति ॥

A श्रीतीर्थकर-गणधराणा नामानि ॥

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
अकम्पिय-१, १२,		पार्व [ नाथ ]-४६, १०८, ११०,	
अग्निभूर्ई-१, १२,		१११, १२६, १३४, १५०, १६२,	
अजित (य)-१२, ७५,		१६६, १७७, १७८, १८४, १६३,	
अणत-१२		२०६	
अभिनदण-१२		अतरीक पा०-६५	
अयलभाया-१, १२,		करहेड पा०-६५	
अर-१२,		कलिकुण्ड पा०-६५	
अरिष्टनेमि-१२०,		गोडी पा०-१०८	
आदिदेव-१३७,		चत्त ( व ) लेर पा०-६६	
आदिनाथ-७५, १०७, १६२,		चिंतामणी पा०-७४, ८१, ६०	
इन्दभूर्ई-१, १२, १२०,		१५६, १७४	
उसभ-१२,		फलौदी पा०-२०१	
ऋषभदेव-६०, ६६, ७२, ७४, ८३		चरकाण [ क ] पा०-७२, ७६	
६२, १०६, १२६, २०५,		६४, १७४	
कुथु-१२, ७२,		विजयचिंतामणि पा०-८१,	
केशी-१७७, १७८, १८४,		६०, १६०	
गोयम-१७, १६७,		शाखेश्वर पा०-८१, १०८	
गौतम-३८, ५३, ५५, ७१, ८२,		समी पा०-१०८	
१००, १२०, १२१, १२६, १६२,		नवखण्ड पा०-६४	
चन्द्रप्रभ-५३, १६६,			
धम्म-१२		पास-१२	
नमि-१२, ५०		पुढरिक-१३३	
नाभिसुनु-१३०		पुण्ड्रदत्त-१२	
नाभेय-५३, १२६		मगसीश्वर-१६३	
नेमि-१२, ४४, ५२, ५५, ७२,		मडितपुत्त-१	
७४, १५१, १५३, ( १२० )		मडिय-१२	
पभास-१		मल्लि-१२, २०५	
पहाम-१२			
२७			

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
महावीर-१, २, ३३, ४२, ४६, ४६, ६६, १०८, १२०, १३२, १३७, १४८, १६६, १७८, १८६, १८७, १८८, १६७, २०६		१७४, १८४, १८६, १८६, १६५, १६६, १६८, २०५, २०६	
माणिक्यस्वामी-६५		वृषभध्वज-१३३	
मुनिसुव्वय-१२		वृषांक-१२०	
मेत्रज-१२		शान्ति-४०, ४३, १०४, १०८, ११०, ११४, १६४, १६६	
मेईज-१		शीतलनाथ-११०	
मोरिअपुत्त-१, १२		शुभदत्त--१८४	
युगादिदेव-१००		संति-१२	
वद्धमाण-१२, १८, ४१		संभव-१२, ६३	
वर्द्धमान-४१, ११६, १२१, १४१, १४४, १४८, १६३, १७३, १७८		ससि-१२	
वसुभूति-१२०		सिज्जंस-१२	
वाउभूर्ई-१, १२		सीमंधर-४०, १०८	
वासुपुज-१२		सीयल-१२	
विमल-१२		सुधर्मा-२१, २३, २५, ३३, ३५, ४१, ४२, ४५, ५७, १२१, १३६, १४०, १४१, १४४, १४७, १४८ १५०, १५४, १६३	
वियत्त-१, १२		सुपास-१२	
वीर-१२, १५, १६, १७, १६, २५ ४२, ८१, ८३, ८६, ६६, १०१, १०८, १२६, १४८, १६३, १६६,		सुप्पम-१२	
		सुमई-१२	
		सुहम्म-१, २, १२, १५, १६, १७, ४१	

B श्रीजैनश्वेतास्वरश्रमण-श्रमणीनां नामानि ॥

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
अग्निदत्त-३,		अजितसिंह १६६,	
अजवसागर ११०,		अणन्तहंस ६७,	
अजित (य) देवसूरि २७, ३४, ५४, ५५, ५६, १३०, १४५, १५४, १७०,		अनोपरत्न १०६,	
		अभयदेवसूरि-५४, १४२, १५३, १६८, १६६	

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
अमरनन्दि ६७		इसिदत्त ७	
अमरविजय-८७, ११३, ११६		इसिदिन्न ७	
अमरसुन्दर-४०		इसिपालिअ ७	
अमरसूरि १५, २२, १४०		ईशान ( साण ) १५, २२, १४०	
अमीचिजय ११२, ११६		उज्जुमह ४	
अमृतरत्न १०६		उज्जोअण ५२, २०६	
अमृतविजय ११४		उत्तमरत्न १०६	
अरहमित्र ( त्त ) १५, २२		उत्तमविजय १०६, १०७, ११०, ११२, ११५	
अरिहदत्त ७		उत्तर ४	
अरिहदिन्न ८		उदयनदिसूरि ३६	
अर्णिकापुत्र १६६		उदयरत्नगणि १०६	
अर्हन्मित्र १४०		उदयमागरसूरि ११०	
अर्चन्तिसुकुमाल ४५, १२३, १२४		उद्योतनसूरि २७, ३४, ५२, ५३, १२६, १४५, १५३, १६८	
१५०, १६५		उद्योतविजय ११२, ११६	
आगममडण ६७		उद्योतविमल ११६	
[ विजय ], आणद १५, २१, १४०		उमासाइ १६	
आणदघन १०५, १०८, १०६		उमास्वाति १८, १६, २४, ५२, १४०, १५२	
आणदविजयगणि ११५		उवनदणभद ४	
आणदमागर ११८		अधिविजय-११६	
आणदसूरि ५५, १०६, ११३, ११५,		अधिविमल-११६	
आदिगुप्तमुनि ६३		अधिसूरि-११३	
आन ( ण ) विमलसूरि ६६, ७०,		एणा-१२३	
७१, १०६, ११६, १३४, १४६,		ऐन्द्रदेवसूरि-२०५	
१५७, १५८, १७२, १७३,		ककसूरि-१८८, १८६, १६०, १६१	
इद्र ( व ) दिन्न ३, ५, ७, २६, ३३,		१६२, १६३, १६४	
४६, १२४, १४४, १५०, १६५		ककुदाचार्य-१७६, १८६	
इद्रनदि ६७		कण्ह-१०	
इन्द्रहस ६७			
इसिगुत्त ५, ६			



नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
जितसागरगणि	११६	तावस	३, ७
जिनकीर्त्ति--	३६, १४६	तिलकविजय	११५
जिनचंद्रसूरि--	११०, १६८	तिलकसूरि	१०३, १०६, ११३
जिनप्रभसूरि--	६३, १७०	तीसभद्र	४
जिनभद्रगणि--	१८, २४, ५१, १४०, १५२	तेजरत्न	१०९
जिनमंडण--	३६	तेजविजय	११०, ११६
जिनमाणिक्य	६०	तेजसोजि	२०६
जिनरत्न--	१०६	तोसलिपुत्र	१७
जिनवल्लभ--	५४, १६६	थावर	१५, २२
जिनविजय--	११०, १११, ११२, १७७	थिरगुत्त	११
जिनसुन्दर--	३६, ६६, १४६	थुलभद्र	२, ४, १२, १५, ४४
जिनसोम--	६७	थोभणविजय	११७
जिनहर्ष--	१०५	दढमित्त--	१५
जिनहंस--	६७	दयाविजय--	१०७
जिनेश्वरसूरि--	५४, ६३, १६८, १६६	दयाविमल--	११६, ११७
[आचार्य] जियधर	१२	दयासूरि--	१७६
जीवविजय--	११३	दर्शनविजय--	११५, ११७
ज्येष्ठांग--	२४, १४०	दानरत्नसूरि--	१०६
जेहिल--	६, १०	दानविजय--	११६, ११७
जैनेन्द्रसूरि--	१७६	दानविमल--	११६
जोगविमल--	११२	दान(ण)सूरि--	६६, ७०, ७१, ७८, १०२, १०३, १०६, १३६, १३७, १४६, १५८, १७३
ज्ञानकिर्त्ति--	४०	[आचार्य] दिन्नसूरि--	३, ७, २६, ३३, ४६, १२४, १४४, १५०, १६६
ज्ञानधर्म	११०	दीपचंद्रगणि--	११०
ज्ञानमाणिक्य	१६५	दीहभद्र--	४
ज्ञानविजय--	११३, ११८	दुष्प्र (प) सह--	१५, १६, २२, ४२, १४०, १४१, १४२, १४३
ज्ञानविमल--	१०६, १७६		
ज्ञानसागर--	११६, १७२		
ज्ञानसागरसूरि--	३२, ३४, ६४, १४५, १५६, १७२		

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
दुमगणि-१४		देवेन्द्रसूरि २८, ३४, ३५, ५७, ५८	
दृढमित्र-०२, १४०		५९, ६०, १३१, १४५, १५४,	
देवकल्लोल-१६३		१५५, १६८, १७०, १७१, १७६	
देवगुप्तसूरि-१८८, १८९, १९०,		देसिगणि १०	
१९१, १९२, १९३, १९४		वर्णगिरी ७, ८, १०	
देवचन्द्रगणि-११०, ११२		धण्डू ४	
देवचन्द्रमूरि-५६, १५३, १७०		धणमिह १५, ०१	
देवभद्र-२७, ५७, ५८		धनत्रिजय ११०, १३७	
देवभद्रसूरि २०५		धनशिक्ष १३९	
देवमित्र (त्त) १५, ०२, १४०		धनसार १९३	
देवद्वि(द्वि)गणि ८, ११, १९, १८३,		धन्यरिपि ८५, १७४	
१९८		धम्मघोस १६, ५७	
देववाचक १२		धम्मपिय १०	
देवत्रिजय १०७, ११७, ११८		धम्मरिमि १६	
देवविमल १०९, १२०, १३७		धम्ममायर ७७	
देवशेखर २०६		धम्मिल १५, २१, १४०	
देवमुन्दरसूरि ३१, ३४, ३८, ३९		धरणेन्द्रसूरि १७९	
६३, ६४, १५, १३२, १४५,		धर्मऋषि ०४	
१५६, १७०		धर्म (म्म) कीर्ति (त्ति) १६, ५९,	
देवसूरि २६, २७, ३४, ३५, ४९,		१७१, १९५	
५३, ५४, ५५, ७२, ८१, ८२,		धर्मघोषसूरि १५, १९, ०४, २८,	
८३, ८६, ८७, ९०, ९१, ९२,		३०, ३४, ३६, ५७, ५९, ६०,	
९७, ९८, ९९, १००, १०३,		६१, ६२, १३१, १४०, १४१,	
१०४, ११०, १२९, १३८, १४४,		१४३, १४५, १५५, १६८, १७१	
१४५, १४६, १४७, १५३, १६०,		धर्ममडन ४०	
१६१, १६२, १६८, १७०,		धर्ममागर ५१, ७७, १७३	
१७४, १७५		धर्म (म्म) मिह १५, ०१, १४०	
देवानन्दसूरि ०६, ३३, ५९, ५०,		धर्म (म्म) सूरि ९, १०, १३,	
१०८, १४४, १५१, १६७		१६, १७, ०३, ५०, ११०,	
नेषिन्द्र ५७		११५, ११८, १५०, १७६	

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
धर्महंस ६७		पञ्जुण ५२	
धीरविजय ११३		पञ्जोत्राण ४८, ४९	
धीरविमल १०६		प (पा) डिवय १५, २१	
नक्ख [त्त] ६. १०		परण्डुभद्र ४	
नंदणभद्र ४		पद्मचन्द्र २०४	
नंदविजय ७६		पद्मतिलक ३०, ३४, ६२, ६३, १४५, १६३	
नंदिधर्म ४०		पद्मविजय १०७, ११२, ११४	
नंदिमित्त (त्र) १५, २१, १३६		पद्मसागर ८३, ९२, ११६	
नंदिय १०		परमानन्दसूरि ३०, ३४, ६२, १४५	
नंदिलक्खमण १३		पादलिप्त ४६, १६६, १८१, १८३ १६८	
नन्नसूरि २०६		पार्श्वचन्द्र ६६, ७०, १३७, १५७, १७२. २०४	
नयविजय ७२, १०६		पियगंथ ७	
नरविजय १०६		पुण्णभद्र ४	
नरसिंहसूरि २६, ३३, ५०, १२८, १४४, १५२, १६७		पुण्यप्रधान ११०	
नरेन्द्रविजय ११७		पुण्यराज ४०	
नाइल ३		पुण्योदयसूरि १०६	
नाग ४, ६. १०		पुण्यतिष्य १८	
ना (णा) गज्जुण १३, १४, १६		[दुर्बलिका] पुण्य (ष्प) मित्र १८, २२, २३, ४८, १४०	
नागमित्त ४		पुष्पमित्र २४, १४०	
नागहस्ति (स्थि) १३, १६, १८, २४, ५१, १४०		पुसगिरी ८	
नागार्जुन १८, २४, ५१, १४०		पुसमित्त १५, १६	
नागेन्द्र २६		पूर्णाभद्र २०५	
नीतिसूरि ११५		पोमिल ३	
नेमसागर ११६		प्रतापविजय ११५ ११६	
नेमिचंद्र (द्व) सूरि २७, ३४, ५४, ५५, १२६, १४५, १५३, २०४		प्रतिष्ठासोम ३५, ४०	
नेमिसूरि ११५, ११८		प्रद्युम्नसूरि २६, ३३, ३४, ५२ ५३ १२६, १४५, १५२, १६८	
पत्तस ८			

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
प्रद्योतनसूरि	२६, ३३, ४८, ४९, १२६, १४४, १५१, १५७, १६७	भक्तिविजय]	११५
प्रद्योतनाचार्य	२०५	भद्र	८, ९, १०
प्रधानविजय	११७	भद्रगुप्त-१	३, १६
प्रभजना	११०	भद्रजम-	५
प्र ( ल ) भद्र	२, १०, १५, १७, २३, २५, ३३, ४०, ४३, १२२, १४०, १४४, १४८, १६४	भद्रगुप्त-१	७, २३, ४७, १४०
प्रभसूरि	६७, ६९, १००, १०१, ११०, १११, १४७, १६१, १६२, १७५	भद्र ( १६ ) बाहु-	१, २, ३, १२, १५, १७, २३, २५, ३३, ३५, ४२, ४४, ८५, १२२, १८८, १४०, १४४, १४९, १६४, १८१, १९८
प्रमोदविजय	११६	भरणिमित्र ( त )	१५, २२, १४०
प्रमोदविमल	११६	भानुचन्द्र	२०४
प्रातिपद	१३६	भानु ( ण ) विजय	११०
प्रेमत्रिजय	११०, ११३, ११५	भावरत्नसूरि	१०६
प्रेमश्री	११८	भाषविजय	११८
फागुमिच्छ	८, १०, १५, १६	भीममिह	५६
फल्गुमित्र	२२, २४, १४०	सुवनसुन्दर	३६, ६५, १४६
फल्गुश्री	१४२	भूत ( य ) दिग्ग	१४, १८, ५१, १४०, १६८
वर्षभद्वन्द्वसूरि	१६, ५२, १४०, १५२, १६८, १६९	भूत ( य ) दिग्गा	४, १०३
वभ	५	भूगा ( या )	४, १०३
वभदिवग	१८	भूमि ( इ ) दिग्ग	१६, २४
वभिस्मह	४, ४६, १६५	भोवत्रिजय	११०
वहल	१०, १७, ५६	नगमविजय	११७
सुटेगरजी	११४, ११६	संगु	१३, १७, ५६, १६६
सुद्धिविजयगणि	११५	नगिभह	५
सुद्धिनागर	११८, १६८, १६९	नगिरत्नसूरि	२३, ३४, ५६, ५७, १३०, १४५, १४५, १७०
नन्दशौचक	५१		

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
मणिरथ (ह) १५, २१, १३६		१४४, १४५, १५१, १५२, १६७,	
मणिरथ ५६		१६८	
मणिविजय १०७, ११४, ११७		मानविजय १०६, ११३, ११५	
मणिविमल ११६		मानसागर ११६	
मतिरत्न ११०		मानसूरि ११३	
मतिसागर १६३		मालवी ऋषि १७३	
मनक (गाग) २, ४३, १२२, १४४,		मुक्तिरत्न १०६	
१६४		मुक्तिविजयगणि ११५, ११६,	
मयगलसागर ११६		मुर्द्धावत १६७	
मयाविजय १०७		मुंडपाद १८	
मयासागर ११६		मुनि(णि)चंद्र (ऋ) सूरि २७, ३४,	
मलयगिरि १२१, १४२		५४, ५५, ५६, १२६, १४५, १५३,	
[आर्य] महा (ह) गिरि २, ४, १२,		१५४, १६८, १६९, १७६, २०४	
१६, १७, १६, २३, २५, ३३,		मुनि(णि)सुन्दरसूरि १६, ३३,	
३४, ४४, ४५, ४६, १२३, १४०,		३४, ३६, ४०, ६३, ६४, ६५,	
१४४, १४६, १५०, १६५		६६, ७७, ८७, १३३, १४५,	
महीसमुद्र ६७		१४६, १५६, १७२	
महोदयविमल ११६		मूल १८	
मागध (ह) १५, २२, १४०		मेघजिऋषि ७२, ७८, १०६, १५६,	
माढरसंभूति (इ) १६, १८, २४,		१७४	
१४०		मेघरत्न १०६	
माणिक्यसूरि २०५		मेघविजय ८८, १०१, १०६, १०६,	
माणिक्यविजय १०७, ११०, ११६		११०	
माथु (हु) र १५, २१, १४०		मेरुतुंग १६६	
मान (ण) तुंग २६, ३३, ४०, ४६,		मेरुविजय ११०	
५०, १२७, १४४, १५१, १६७,		मेहगणि ४	
२०५		मोतिविजय ११५, ११८	
मान (ण) देव २६, ३३, ३४, ४०,		मोहनलालजीमुनि ११६	
४८, ४६, ५०, ५१, ५२, ५३,		मोहनविजय ११३, ११६, ११८	
८५, १२६, १२७, १२८, १२६,		यक्षदिना १२३	

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
यक्षदेवसूरि	१८८, १८९, १९०	रथसुत	१४०
यक्षा	१०३	रथणसूरि	१०१
यशवन्तविजय	११६	रथणसेहर	६३
यज्ञसूरि	२०६	रविप्रभ ( षष्ठ )	२६, ३३, ५१, ५२, १०८, १४५, १५२, १६८
यशोदेव	२६, ३३, ५१, ५२, १०८, १४५, १५२, १६८, २०५, २०६	रविमित्र ( त्त )	१५, २१, १३९
यशोभद्र	१७, २३, २५, २७, ३३, ३४, ४२, ४३, ४४, ५४, १२२, १२९, १४०, १४४, १४५, १४९, १५३, १६४, १६८, २०५	रविवर्धन	१४८, १६२
यशोमित्र	२१, १३९	रविसागर	११६
यशोविजय	१०५, १०६, १०७, १०९, ११०, १११, ११८	रह न	
याकिनी	१५२	रहमित्त	१५
रक्त्त	९, १०	रहसुत ( अ )	१५, २०
[आर्य] रक्षित ( रक्षित्य )	४, ८, १३, १६, १८, २३, ४७, ४८, १४०	राजचद्र	२०४
रगविजय	११६	राजप्रिय	६७
रत्नप्र ( षष्ठ ) म	४०, १७७, १७८, १७९, १८५, १८६, १८७, १८८, १८९, १९०	राजरत्न	१०९
रत्नमठन	३९	राजवर्धन	४०
रत्नविजय	११६	राजविजयसूरि	६९, १०९
रत्नविजयसूरि	६९, १०९	राजसागर	११०, १६२
रत्नगेगरसूरि	३९, ६४, ६६, ६७, १३३, १४६, १५६, १५७, १७०	राजसूरि	१०९, ११३
रत्नसूरि	१६०, १७६	राजेन्द्रसूरि	१७६
रथनेमि	१०३	रामविजय	११८
रथमित्र	२०, १४०	रद्रदत्ताचार्य्य	१८
		रूपचन्द्र	१९६
		रूपविजय	११०, ११२, ११६
		रेणा	४, १०३
		रेवडनस्यत्त	१३
		रेवडमित्त	१५, १६
		रेवति ( ती ) मित्र	६७, ११८, १२२, २३, २४, ४७, ५१, १४०
		रोहगुण	४
		रोहगु	४, ५

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
लक्ष्मीभद्र ४०, ८७, १६५		विक्र(क)मसूरि २६, ३३; ५०,	
लक्ष्मीविजय १०६, ११६		१२८, १४४, १५१, १५२, १६७	
लक्ष्मीसागर ३६, ६७, ६८, १३३,		विजय (विजा) ६६, १५७, १७२	
१४६, १५७, १६२, १७२			
लक्ष्मीसूरि ११३, १७३		विजयचन्द्र ५७, ५८, ५९, १४५,	
लखमण १३		१५४, १५८, १६८, १७०	
लच्छीसायर ६७		विजयशेखर ४०	
लब्धिचन्द्र २०४		विजयसिंहसूरि २७, ३४, ५६,	
लब्धिरत्न १०६		१३०, १४५, १५४, १७०, १६८	
लब्धिसमुद्र ६७		विजयेन्दु २८, ३४	
लब्धिसागरगणि ७७		विजाणंद १६; १६५	
लाभविजयगणि १०६		विणयमित्त १६	
लोहिञ्च १४		विणहु ६, १०	
वइ (य) २३, ८, १३, १५, १६,		विद्यानं (जाणं) दसूरि २८, ३४,	
४६		३५, ५६, १४५, १५५, १७०,	
वइ (य) रसेण ३, ८, १८, २१, २४		१७१	
वईसाह १५		विद्याविजय ८१, ८७, ८६, १०६	
वज्रसेण ४७		विद्यासागर ७०, १३४, १५८, १७३	
वज्रदिन्न १५१		विनयचन्द्र ५५	
वज्रसेन ८, २६, ३३, ४७, ४८,		विनयमित्र २४. १४१	
५१, १२५, १४०, १४४, १५१,		विनयविजय १६, १०५, ११५,	
१६६, १६७, १८६		११८, ११६, १३६, १४४, १४७	
वज्रस्वामी ८, १७, २३, २६, ३३,		विनयविमल १०६	
४६, ४७, ४८, ६०, १२४, १२५,		विनयसिंह ४०	
१३४, १३८, १३६, १४०, १४४,		विनीतविजय १०७	
१५०, १५१, १६६, १८६		विबुधप्रभ २६, ३३, ५१, १२८,	
वणिकपुत्र १४०		१४४, १५२, १६७,	
वणिकपुत्र १५, १२१		विबुह ५१	
वर्धमानसूरि १६६		विमलचन्द्र (द) ३३, ५२, ५३,	
वल्लभगणि ६१, १७६		१२६, १४५, १५२, १६८, २०४	

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
विमलप्रभ ३०, ३४, ६२, १४५		शान्तिविजय १०६, १०६, ११६	
विमलविजय १६२		शान्तिसागर ११६, ११७	
विमलहर्ष ७३, ७७		शान्तिसूरि ५४, १५३, १६८, २०५	
विमलेन्द्र २६, ५२		शिवचन्द्र २०४	
विवेकचन्द्र २०४		शिवमूर्ति ४०	
विवेकसागर ४०		शिवरत्न १०६	
विशालराज ३६		शिवविजय ७७, १७६	
विष्णुसूरि १६८		शिवश्री १८	
विहन्तु १४		शीलभद्र ४०	
वीरधवल ५६		शीलमित्र २४, १४१	
वीरभृत्शेखर ४०		शीलविजय १०६	
वीरविजय ५६, ६५, ६८, ६६, ११३, ११६		शुभरत्न ३६, ६७	
वीरविमल ११६		शुभविजय ११३, ११४	
वीरसूरि २६, ३३, ४६, ५० ५२, १२८, १४४, १५१, १६७		शुभविमल ८७	
बुद्ध ६, १०, ४८		शोभनमुनि १६८	
बृद्धदेवसूरि २६, ३३, ४८, ४६, १२६, १५१, १६७		स्यामार्य १७, २३, ४६ १४० १५०, १६८	
बृद्धवादी १७, ४६, १६६		श्रीदत्त २१, १४०	
बृद्धिचन्द्र ११५, ११७		श्रीधर २२, १४०	
बृद्धिविजय १११		श्रीपति [ऋषि] ६८, १३७, १५७, १७२	
बृद्धिसागर १६२		श्रीप्रभ २१, १३६	
वेना (णा) ४, १२३		श्रीविजय ११६	
वैशाख २१, २२, १४०		श्रुतशेखर ४०	
शैव्यभव १७, २३, २५, ३३ ४२, ४३, १२२, १४०, १४४, १४८, १४६, १६४		सगत (य) मित्त १५, २२	
शाङ्खिल्य १७		सगतिमित्र, १४०	
शान्तिचद्रगणि ४०, ७५, ७६		सघपा (वा) लिख्य ६, १०-	
		सघसाधु ६७	
		सच्चमित्त १५, १६	
		सडिल्ल १०, १२	



नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
सत्कीर्ति २२, १४०		सामञ्ज १२, १६	
सत्यमित्र १८, २१, २४, ५१, १३६		सामंतभद्र (ह) २६, ३३, ४७,	
१४०, १५२, १६७		४८, ४९, ५७, १२६, १४४, १४७	
सत्यविजयगणि १०५, ११७		१५१, १५४, १६७	
सत्यशेखर ३६		[आर्य] सिं (सी) ह ६, १०, १३,	
सन्तिसूरि १८		१६, १८, २४, १४०	
संतिसेगिण ७		सिं, (सी)   हगिरि ३, ७, २६, ३३	
संतोषविजय ११६		४६, ४७, १२४, १३८, १४४,	
समरचन्द्र २०४		१५०, १६६	
समीय ८		सिंहदेव ४०	
[आर्य] समुद्र (ह) १३, १७, २६,		सिंहमित्र २२	
३३, ५०, ५१, १२८, १४४, १५२,		सिंहविमल १३७	
१६७, १८४		सिं (सी) हसूरि ५१, ८४, ८५, ८६	
संप (या) लित्र ६, १०		६३, ६६, ६७, १०४, ११३, १४६	
संभूअ (य) विजय २, ३, ४, १२,		१६१, १७५	
१५, ४२		सिंहसेनसूरि २०५	
संभूइ १६		सिज्मंभव २, १२, १५, ४२, ४३	
संभूति (त) विजय १७, १८, २३,		सिद्धत्थ १५	
२४, २५, ३३, ४२, ४४, १२२,		सिद्धसूरि १७६, १८८, १८९, १९०,	
१४०; १४४, १४६, १५२, १६४		१६१, १६२, १६३, १६४	
सरस्वतीसाध्वी १३७		सिद्धसेन १७, ४६, १५०, १६६,	
सर्वजयदेवसूरि १ ६		१८३	
सर्व(व)देवसूरि २७, ३४, ५३,		सिद्धार्थ २२, १४०	
५४, ५७, १२६, १४५, १४७,		सिद्धिरत्न १०६	
१५२, १५३, १५४, १६८		सिद्धिविजय १०६ ११४, ११५	
सहजसागर ११६		११८	
साई १२, १६६		सिरिड्ड ४	
सांडिल्य ४६		सिरिदत्त १५	
साधुरत्न ३२, ३४, ६४, ६५, १४५		सिरिधर १५	
१५६		सिरिपह १५	
साधुराज ३६			

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
सिवमूढ ८, १०		सूरमित्र (त्त) १५, १४०	
सीलमित्त १६		सेना (णा) ४, १२३	
सुक्रार्ति (त्ति) १५, १४०		णिञ्च ७	
सुगुप्त १५१ (४७)		सेन (ण) सूरि ७२, ७५, ७६, ७८,	
सुद्विद्य ३, ४, ६, ७, ४४, ४५		८२, ८३, ८८ ६०, ६१, १०३,	
सुदानन्द ६७		१०६, १३८, १४६, १६०, १६२,	
सुदरविजय ११०, ११५		१७४	
सुपडिवद्ध ३, ४, ६, ७, ४४		सोम ५	
सुप्रतिघ्न २५, ३३ ४४, ४५, ४६,		सोमचारित्रगणि ६८	
१२४, १४४, १५०, १६५		सोमजय ३६, ६७	
सुमगल १५, २१, १४०		सोमतिलक (ग) ३०, ३१, ३४,	
सुमतिगणि ११०		३७, ५७, ६२, ६३, ६४, १३२,	
सुमतिरत्न १०९		१४५, १५५, १५६, १७१	
सुमतिविजय १०७, ११२, ११६		सोमदत्त ३	
सुमतिशेखर २०६		सोमदेव ३६	
सुमतिसाधु (हु) ६७, ६८, १३३,		सोमप्रभ (प्पह) २७ ३०, ३४, ३७,	
१४६, १५७, १७२		५६, ५७, ६१, ६२, ७०, ८२,	
सुमतिसुदर ६७		१३०, १३०, १४५, १५४, १५५,	
सुमि(म)णमद् ४		१५८, १७०, १७१	
सुमिणमित्र (त्त) १६, २४		सोमविजयगणि ७७, १४७,	
सुरसेन १५, २१ १३६		सोमशेखर ४०	
सुव्यय १०			
[आर्य] सुस्थित २५, ३३, ३४,		सोमसुन्दर ३२, ३४, ३८, ४०,	
४४, ४५, ४६, ५७, १२४, १४४,		६३, ६४, ६५, ६६, १३३, १४५,	
१२७, १५०, १५०, १६५,		१५६, १७२	
[आर्य] सुद्विस्ति (त्वि) २, ३, ४, ५		सौभाग्यविजय ११६	
१२, १६, १७, २३, २५, ३३, ४४		सौभाग्यसूरि ११३	
४५, ४७, १२३, १२४, १४०,		स्कदिल २३, ४७, १४०	
१४३, १४६, १५०, १६५		स्यावर १४०	
सुरदिन १५, २१, १४०		स्थिरविजय ११०	

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि	
स्थूलभद्र १७, २३, २५, ३३, ४४, ४५, ७०, १२३, १४०, १४४, १४६, १६५		हर्षविमल १०६		
स्वप्रमित्र १४१		हर्षवीर ४०		
स्वयंप्रभ १८४		हर्षसिंह ४०		
स्वरूपसागर ११६		हर्षसेन ४०		
स्वाति (मि) १७, ४६, १६५, १६८		हानाऋषि ६८, १५७, १७२		
हृत्थि ६, १०		हारिल १६, १८, २४, १४०		
हंसराज १६३, २०५		हिमवन्त १३		
हंसविजय ११७		हीतविजय ११३		
हरखमुनि ११८		हीररत्न १०६		
हरशेखर २०६		हीरविजयमुनि ११४		
हरिदत्त १८४		हीरविजयसूरि ४१, ७०, ७१, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८३, ८८, ८९, ९०, ९१, १०२, १०४, १०५, १०६, १०६, ११३, ११६, १३८, १४६, १४७, १५८, १५९, १६०, १७३, १७४		
हरिभद्र (द्व) १८, २६, ५१, ५४, ५५, १५२, १६७, १६६, २०५		हेतविजय ११६, ११८		
हरिमित्र (त्त) १६, २४, १४१		हेमचंद्रसूरि ५६, ८५, १३१, १४२ १५३, १७०, १६१, १६८, २०४,		
हरिसय १५		हेमविजय ८७, १०७, ११५		
हरिस्सह २१, १३६		हेमविमल ६७, ६८, ६९, ८७, १३४ १४६, १५७, १७२		
हर्षकीर्ति ४०		हेमहंस ३६		
हर्षचन्द्र २०४				
हर्षभूपणा ४०				
हर्षमूर्ति ४०				
हर्षविजय ११५, ११६				

ॐ पद्दर्शन-ज्ञाति-गच्छ-कुलाना नामानि ॥

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
अखर्द ६६, १६२, १६७		उकाउआ २०३	
अग्निवेशाअण १, २, १०		ऊकेशजाति ७१, १५८, १६०, १६१ १६२, १७४	
अजवेडिय ५		उकोसिय ३	
अचल २०६		उबानागरी ७	
अत्तरिजिया ६		उच्चैर्नागर १६	
अभिजयन्त ६		उद्धितवाल २०३	
अव्यक्त ४४, १४६		उडुवाडियगण ५, ६	
आष्टकोटी १०४		उडवीया २०३	
अहमदशाह फीरका ११६		उत्तरवलिस्सह ४	
आर्हचणा १८६		उदुवरिजिया ५	
आगडीया २०३		उदेहगण ५	
आगमिक ( ग ) ५६, १७०, २०३		उ ( औ ) पके ( को ) श १७८, १७६, १८६, १८८, १८६, १६० १६२, २०५, २०६	
आगमियक १५४		उपाध्याय पात्तिक ६३	
आजीविक १६७, १६८		उल्लगच्छ ५	
आचलिक ५६, १५४, १७०, २०३		एलामच २, ४, १२	
आणदसूरसघ १०३		ओकेश १७७, १७८	
आत्ममति २०३		ओद्धतवाल ६१	
आदित्य १६०		ओसवश १०४, १११, ११५	
आनद १६०		ओसवाल २०३ २०६	
आनदसूरि शाखा ११३		ओदिच्य ११३	
आनपुरा २०३		ओष्ट्रिकमत १७३	
आर्यसमाज ११६		ककुदाचार्य्य सतानीय १७६	
आशावसन १३०		कथायण २, १२	
इचवाकु १२०, १३०		कदुक ६६, १३४, १३५, १५७, १७२	
इदपुरग ६			
इमिगुत्ति ६			
इसिदत्तिय ६			
इसिपालिया ७			

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
कडुआ २०३		कोडंवाणी ४	
कण्हसह ५		कोडाल ६	
कनऊजया १८६		कोडिन्न १	
कनक १६०		कोडिय ३, ६, ७, ४४	
कपुरसीया २०३		कोडीवरीसिया ४	
कंबोजा २०३		कोथला २०३	
कर्णाट १८६		कोथी (थो) पुरा २०३	
कलश १६०		कोरडीया ११७	
कल्लोल १६०		कोरंटा (टीय) २०३, २०५, २०६	
कवला ५६		कोरंडवाल २०३	
काकंदिया ६		कोसंबिया ४	
काछेलीया २०३		कोसिय ३, ४, ७, ८, १०, १२	
काजा २०३		कौटिक २६, ३३, ४५, ५७, १२४, १४७, १५०, १५४, १६५	
कामड्डिय ६		क्षपणाक २६, ५०	
कायस्थ १३७		खंभाती २०३	
कासव १, २, ३, ५, ७, ८, ९, १०, ११, १२		खरतर ५६, ६४, ७०, ६१, ११०, ११६, १५४, १५८, १६६, १७३	
कासवजिया ६		बृहत्खरतर १७६, १६६	
कुका ११६		खीमसरा ८७, १७४	
कुचडीआ २०३		खेमिलजिआ ६	
कुच्छ ८, १०		खोमाणवंश ५० (१२८)	
कुतगपुरा २०३		गंगेसरा २०३	
कुत्रड २०५		गच्छपाल २०३	
कुपावत २०२		गणिय ६	
कुबेरा (री) ७		गंधव्व १८	
कुमार १६०		गंधारा २०३	
कुंभ १६०		गर्दभ १६७, १६६	
कुंभट १८६		गवेधुआ ५	
कुर्वपुरगच्छ ५४, १६९		गादिया १६१	
कुलहट १८६			

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
गुवेलीया २०३		जालोरा २०३	
गोदासगण ३		जीतहरा २०३	
गोयः (अ) म १, २, ३, ४, ७, ८, ९, १०, १२		जीरावला २०३	
गोयमज्जिआ ६		झाला, ८५, ९४	
गोशालामत १७६		ठफर ८२, ९२	
घोघा (घ) रा २०३		डिडम १८६	
घोपवाल २०३		डु डक १०४, ११२, ११५, ११६	
घोषा (घन), ६८		डु डिया १७६	
चदनोगरी ४		तपगण १३८, १४६, १७०	
चद्रकुल २६, ४८, १६६, १६८, १६९, १७१, १६०		तपा (घ) गण (गच्छ) २७, ३१, ३४, ३५, ३८, ४१, ५७, ६३, ७०, ७१, ७७, ७८, ८०, ८२, ८३, ८४, ९३, ९८, १०१, १०२, १०३, १०५, ११६, १३०, १४१, १४७, १५४, १७०, १७१, १७३, १७५, १९६, २०३	
चद्रगच्छ २६, ३३, ४८, ५७, १२६ १४७, १५१, १५४, १६७ २०५		[विजय] देवतपा १४७	
चन्द्रवश १८४		नागपुरीयतपा ६६, १७२	
चपिजिया ६		नागोरीतपा १५७	
चामुन्डा १११		बृहत्तपा ३८	
चारणगण ५		महातपा ८३, ९१, ९२, १०४, १६१, १७५	
चारवेडीया १८६, १९३			
चिचट १८६, १९२			
चितो (त्रो) डा २०३			
चित्रवाल २०३			
चैत्यवासी ५४, (१५१), १६६		तपोगच्छ ११३, १७३	
चैत्रवालगच्छ २७, ५७		तागडीया २०३	
छाजड २०६		तातहड १८६	
छापारिया २०३		तामलित्तिया ४	
जगायन २०३		तावसी ३, ७	
जयन्ती ३, ८		तिलक १६०	
जसभद ६		तु गिय १०	
जागला (डा) २०३		तु गियायण २, ३	

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
तूवर २०१		[नव] नंद १७, ४६, १६४, १६६,	
तेरा (रह) पंथ ११०		१६७, १६८, २००	
	११२ २०१,	नंदिज ५	
तेरासिय ४		नरावत २०१	
त्रि (त्रै) राशिक ४७, १५०		नहार ५६, २०१, २०४	
त्रिस्तुतिक ६८, १५७		नाइलकुल १४	
थंभणा २०३		नाईला ( ली ) ३, ८	
थिरापद ५४, १५२		नागऊला २०३	
दकाजन्ना २०३		नागभूय ५	
दासनि (रु) आ २०३		नागर १२३	
दासी खम्बडीया ४		नागराल २०३	
विगवर ४८, ५५, ५७, ८०, ८६,		नागेन्द्र २६, ४८, १६६, १६०, २०३	
१३०, १३२, १५१, १५३, १६०,		नागोरी २०३	
१६७, १७०, २०६		नाणावाल २०३	
विग्वास १२८		निर्ग ( र्ग ) थ २, ३३, ४५, ५७,	
दुज्जन्त १०		१०५, १३६, १४७, १५०, १५४,	
देवकरा २०३		१६५	
देवडै २०१		निर्वृति ४८, १६६, १६०	
देवशाखा १६०		नीगस २०३	
देवसुरसंघ १०३		नैयायिक ८०, ८६	
देशलहर १८६		पउसा ८	
देशार्ह ६६		पंचवलहीया २०३	
द्विक्रिय ४५, १५०		पंडुबद्धाणिया ४	
द्विदंदनीक २०३		पसहवाहणियं ७	
धनेरीया २०६		परसार ८६, ६७	
धर्मघोष २०३, २०५		परीक्षक ८२, ६२	
धाकड २०५		पल्लकीय २०५, २०६	
धुंधुका २०३		पल्लीगच्छ २०५, २०६	
धोषा ८८, (६८)		पल्लीवाल २०३, २०५, २०६	
नगर कोटिया २०३		पार्श्व ( ज ) २, ३, १२..	

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
पाटलीया २०३		वरहेवा २०३	
पायचन्द्र २०३		बलिस्तहगण ४	
पारिख १६१		वापणा १८६	
पारिहासय ५		वारेजा २०३	
पार्श्वचन्द्र [ गच्छ ] ( ६६ ) ७०, १५७, १५८, १७७ ( २०३ )		वावरावाल २०३	
पार्श्वनाथ सतानीय १८४		वावीसटोला १०४	
पार्वीपत्य १७७, १७८		वीजा [ मत ] ७०, १५७, १७७, २०३	
पालकीय २०६		बृहत्प्रेमगाथा १६६	
पालणपुरा २०३		बृहद्गच्छ २७, ३४, ३५, ५३, १०६, १३०, १५३	
पीडवन्मिय २		वोकडीया २०३	
पु ( प ) एणपत्तिआ ५		वोटिका १८	
पुनमीयागच्छ १६६, २०३		वोरसडा २०३	
पुममिच्छि ५		वौद्ध ( ४७ ) ८०, ८६, १०५, १६६, १८४, १६८, २००,	
पूर्णतलगच्छ १७०, २०३		ब्रह्मद्वीपिक ५०	
पूर्णिमापाक्षिक १६६		ब्रह्मसमाज ११६	
पौडवद्वणीया ४		ब्राह्मणीया २०३	
पोमिला ३		भटनेरा २०३	
पौराणिक २००		भणशाली १००	
पौराणीयक ५५, १५३		( भ० ) महावत २०५, २०६	
प्रद्योत [ चश ] १६६		भवद्गुप्तिय ६	
प्रद्योतनाचार्यगच्छ २०५, २०६		भवद्जसिय ६	
प्रभ १६०		भद्रिजिया ६	
प्रभावक १७, १८		भरुयच्छा २०३	
प्राग्चश १७२		भाद्र १८६	
प्राग्वट १११		भारदाय १, ५	
वद्धावत २०१		भावराज २०३	
वमदीनग १३		भीनमाल २०३	
वमदीविया ८			
नभलिज ७			



नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
भीमसेन <sup>१</sup> २०३		राज १६०	
भुडासिया २०३		राठोर ६६	
मईपत्तिआ ५		रामसेनिया २०३	
मगरकोटीआ २०३		रुद्रपालीय २०३	
मंगोडी २०३		रुद्रोलीया २०३	
मज्जिमा ७		रेवइया २०३	
मज्जिमिल्ला ७		लक्ष्मीभद्रीया ८७	
मंडोवरा २०३		लघुशालिक ५८, १५४	
मलधार २०३		लघुश्रेष्टि १८६	
महुकरा २०३		लुक्का [मत] ६७, ६८, ६९, ७०,	
साढर २, ३, ४, ७, ९, १०, १२,		७२, ७८, ८४, १५७, १७२,	
१६		१७६, २०३	
माणवगण ६		लुं पाकमत ७२, ८४, ९३, १०४,	
मांडलीया २०३		१०६, १३४, १३६, १३७, १५८,	
मालिज्जं ५		१७४	
मासपूरिआ ५		वइरी ७, ८	
मीमांसक ८०, ८६		वग्धावच्च ३, ६, ७	
मुडा (भा) हरा २०३		वच्छ २, ८, ११, १२	
मुरंडवाल २०३		वज्जनागरी ५	
मुहता १६४		वज्जशाखा २६, ४७, १५०, १६६	
मेडतिया २०१		वड (ट) गच्छ २७, ३४, ३५, ५३,	
मेरु १६०		५७, १४७, १५२, १५४, १६८,	
मेहलिज्जिआ ६		२०३, २०५, २०६	
मेहिय ६		वडोदरीया २०३	
मोरात्त १८६		वत्थलिज्जं ५, ७	
मो (सु) रिआ १७, ४६, १६६, १६७		वनवासी [गच्छ] ३३, ४७, ४८,	
मौर्य १६७, १६८, १६९, २००		५६, ५७, १२६, १४७, १५१,	
रंग १६०		१५४, १६७	
रज्जपालिया ६		वर्धन २०६	
रत्नशाखा ६६, १६०		वल १८६	

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
वाघेरा २०३		शिशुनाग १६६	
वाघेला २०२		शूगवशा १६८, २००	
वाणिज्य ५, ७		शंखर १६०	
वायगवस १३		शैव, ८०, ८६, १६६, २००	
वायड २०३		श्रीमाल (ली) १११, ११२, १८६,	
वासिष्ठ १, २, ३, ४, ६, ८, ९, १०		२०६	
वासिष्ठिया ६		श्रेष्ठी १८६, १६३, १६४	
वा (व) हडीया २०३		श्वेताम्बर २६ २०६	
विक्रमवशा १६६		पङ्कोटी १०४	
विजयशास्त्रा ११६		पीमसरा ८६	
विजामत ६६, १५७, १५८		पोमाण १२८	
विजाहरा २०३		सविज्ञ ६८, ६६, ७०, ७३, १५७,	
विज्जाहरी (२) ७		१७२, १७३, १७४	
विद्याधर ४८, १६६, १६०		सवेगमत ११२, ११४, ११६, ११७	
विधिपक्षगच्छ ११२		१७२	
विपिनवासी २६		सग १६७, १६६	
विमलशास्त्रा ११६		सकासिय ५	
विरिहट १८६		समुद्र १६०	
विशाल १६०		सजना (ती) २०३	
वृद्धशालिक ५८, १५४, १७०		साकर २०३	
वृद्धोपकेश ८८, ६१, ६८		सागरपाक्षिक ६३, ६५	
वेगडा २०३		सागरमत ६४, ६५	
वेदान्ती ८०, ८६		सागरशास्त्रा ११६, १६०	
वेसवाडिय ६		माचोरा २०३	
वेच १६४		माडेरवाल २०३	
वेद्यमुहता १६४		सामुच्छेदिक ४५, १५०	
शक १६६, १६८, १६६		सार १६०	
शान्तिसागरमत ११६, ११७		सार्द्धपौर्णिमीयक ५६, १५४, १७०	
शाभवशासन १२५		सार्धपुनमिया २०३	
शिवशासन १८०		सावत्थिया ६	

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
सावय ६		सोमशुद्धय ५	
सिद्धपुरिया २०३		सौरद्वीया ६	
सिद्धान्तीया २०३		सौरठीया २०३	
सुचंती १८६		स्यामिनारायणमत ११६	
सुत्तिवत्तिया ४		हंस १६०	
सुन्दर १६०		हट्चाथी २०५	
सुरंडवाल २०३		हत्थलिज्ज ५	
सुराणा २०३		हारिअमालागारी ५	
सुव्यय ६		हारिआयण १	
सेणिया ७		हारित (य) ५, १२, १७	
सेवंतरिया २०३		हालिज्जं ५	
सोइत्तिया ४		हीसारीया २०३	
सोपारा २०३			

### D ग्रहस्थानां नामानि ॥

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
अकञ्जर ७२, ७३, ७८, ८३, ८८,		अवन्तीवर्धन १६७	
८६, ९१, १०२, १०३, १३८,		अवन्तीश्रेणी १६७	
१४६, १५६, १६०, १७४, २०१		अशोक १६६, २००	
अजय १६६		अहम्मद २०१	
अजातशत्रु १६८, १६६, २००		आमराज ५२, १५२, १६८	
अनंगपाल २०१		आर्षभि १२०	
अनुरुध २००		आलिग ६२	
अबलफजल ७३, ७६		इदलसाहि ६५	
अभयकुमार ८२		इन्द्रजी ८१, ८६	
अमरचंद्र ११८		इन्द्रपालित २००	
अर्णिका १६६		ईश्वर १६१, १६४	
अलावदी २०१		ईश्वरी ४८, १६६	

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
ईसर २०१		कीकम २०५	
उजमवाइ ११७		कीका ८२, ६२	
उत्पलकुमार १८४		कीसनसग २०१	
उदयसग २०१		कुराशाहा ७१	
उनायी ( सी ) १७, १६६, २००		कुकुण ५३, १२६	
उद्धरण १८४		कुणा ( ना ) ल २००	
उवरराय १६२		कुतुवसाहि ६५	
ऊहड १८४, १८५		कुमारपाल ८५, १७०, १६०, २०१	
ऋपभदत्त १६३		कुभकर्ण १३६	
ऋपभद्राम १०३, १६४		कुभाराणा ६४	
श्रौरगसा २०२		कुशाल २००	
कचरा ११२		कूवरजी ७१, १५८, १७४	
कटुकश्रावक ६८		कूजाशा ११२	
कमा ८६, ८८, ६७, १६०		केशवराम ११३	
करमचद २०१		केसरसघ २०२	
करमाशाह १७३		कोडिमदे १६०	
कर्णसिंह ८४, ६३		कोडिमा ८८	
कर्पूर ६०		कांणिक ( अ ) १७ १६६	
कलोशा १११		कोशा ४४, १२३	
कलकी १४३		क्षेत्रजित् १६६	
कल्याणचद ११८		क्षेत्रह १६६	
कत्याणजी ८५, ९४		क्षेत्रधर्मा १६६	
कल्याणमल्ल ७४, ८३, ८४, ६२, १५६		क्षेत्रवर्मा १६६	
कस्तुरभाइ ११८		क्षेत्र २००	
काकरण १६६		खानखान ८१, ८६	
कानजी १११, २०२		खीमचद १११	
कालनेमि १२४		खुशालचद १११, १६४	
कालाशोक २००		गगा ११३, ११८	
किरीटि १००		गजसिंह ८५, ९३	

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
गणेश ११२, ११५		जयतागर १६३	
गर्दभिल्ल १७, ४६, १५०, १६६, १६८, १६६		जयमल्ल ८५, ६३, १६१, २०१	
गलराज ७१, १३६, १५८		जयसिंह ३६, ५५, १५३, १७०	
गुलाबवाइ ११४		जसु १०१	
गोपालक १६७		ज ( जि ) हांगीर ८३, ६१, ६२, १०४, १६१, १७५	
गोवल ६४		जा(या)मराज ८१, ६०, ६४, १६३, २०२,	
गोविन्द ३६		जावड (डि) ४७, १५१, १६६	
गौतम १३७		जिएदास २०६	
चंडपज्जोत्र १७		जिनदत्त ४८, १६६	
चतुरा [ दे ] ६४, १७६		जिनभद्र ५७	
चतुराशाह १७६		जियाजी ६६	
चंद्र ४८, १६६		जिवनदास ११४	
चंद्रक १६१		जीवोजि १६२	
चंद्रगुप्त १६८, १६६, २००		जोधइराव २०१	
चन्द्रचूड़ १८४		भं (भां) भरण ३६, ६०, १५५	
चन्द्रपाल ८३, ६३		भमकू ११२	
चंद्रभाण १३७		भावा १६३	
चंपकराज ६६		ठाकुरसिंह १६३, १६४	
चित्रांगद २०२		तुणसिंह ७०, १५७	
चिन्तामणि ८०, ८६		तेजपाल ७६, ८४, १७०, २०२	
चैनसंघ २०२		त्रिभूवन ११६	
छाडा २०५		थान ८७, ६७	
जग १६३		थानसिंग ७५	
जगतसिंह ८५, ६४, ६६, १०४, १७५		थीराशा १६०	
जगदीश्वर ११३		दधिवाहन १६६	
जगसींग १६१		दफरखान ६६	
जनमेजय १८२		दर्पण १६७	
जम्बूकुमार १२१		दर्भक १६६	
		दर्शक १६६	

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
दलपतभाइ ११४		नरवाहन १७	
दलपतसग २०२		नहपा (चा) ण ४६, १६८	
दलिचद ६६		नहसेन १६७	
दशरथ १६३, १६६		नागदासक २००	
दानीयार ७५		नागिल १४२	
दुवैजी २०२		नागेन्द्र ४८, १६६	
दूजणमल्ल ७५		नाथी ७१, १५८, १७४	
देदा २०२		नाभि ६३, १३०	
देदागर १६३ -		नायकदे १०४, १६१, १७५	
देवचन्द्र ८६, ६२, ६५, ११७, १६२		नारायण १३७, १८६	
देवराज ६६, १५६		नाहड १८, ४६, १७०, २०१	
देववर्मा २००		निर्वृति ४८, १६६	
देशल १६२		नेमिदास १०१	
दोलतराम १६४		पद्मनाभ १२२	
धनजी ६६, १००		परदेशी १८४	
धनपाल ५४, १५३, १६८		पाहुजी ७५	
धनाइ ८१, ८६		पानाचन्द ११०	
धन्वन्तरी ३६		पानु ११४	
धरण ६६, १५६		पालक(अ) १७, ४६, १६६, १६७, १६८	
धरमसिंह १६३		पुरणचद ५६, २०१, २०४	
धर्मदास १११		पुरुपोत्तम १२४	
धर्मादित्य १७		पुष्प (ज्य) मित्र १७, १६६, १६७	
धारिणी १६३		१६८, २००	
धीरा ६१		पुसमित्त ४६	
ध्रुवसेन १६, १८३		पूजामाह ११२	
नद्यु (ध) मल १०४, १६१, १७५		पृथ्वी १००	
[नव] नद १७, ४६, १६४, १६६, १६७, १६८, १६६, २००		पृथ्वीधर ३६, ६०, १३२	
नदिवर्धन १६६		पेथडदेव १५५	
नभस्सेन १६६		प्रतापसिंह १००	
		प्रथीराज २०२	

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
प्रद्योत १६६		भीम ५६, १५५	
प्रभव १६३		भीमजी १११	
प्रह्लादन ३६		भीमसिंह ५६	
प्रसेनजित् १६६		भीमसेन १८४	
प्रेमराज १६४		भोजा २०६	
प्रेमाभाइ ११३, ११७		भोटा ८१, ६०	
फरंगीपातशाही ८३, ६३		भ्रमादे १५८	
फैजी ७६		मणीप्रभ १६७	
वन्धुपालित २००		मंडलिक ३६	
वलभद्र १६७		मनी ६६	
वलमित्र (त्त) १७, ४६, १६६		मयूर ४६, १५१, १६७	
१६७, १६८, १६६, २००		मल्ल [साधु] ८२, ६२, १०४	
वाण ४६, १५१, १६७		मल्लक १६०	
वांविभट्ट ६७, १३३		महादेव ३६	
वाहड ५६, १५४, १७०		महानंदी १६६	
वाहुवली १३०		महापद्म १६८, १६६	
विन्दुसार १६६, २००		महासेन १२६	
विम्बिसार १६६, २००		महिमद ७१, १५८	
बृहद्रथ २००		महेशदास् ६६	
भईसाक्ष १६१		माणिकदेवी ११२	
भगीरथ १२६		माधा २०६	
भगुभाइ ११४		मानसिंह ७४, १५६	
भद्रसार १६६		मान्धाता २०२	
भरत (ह) ७१, १३०, १३६ १८३		मालजी ८७	
भाइल्ल १७, १८		मालदेव ७२, १३७	
भाणवाइ १६२		मिश्रचिन्तामणी ८०, ८६	
भानुमति ६६		मीरमोजा ६४	
भानुमित्र (त्त) १७, ४६, १६७, १६८, १६६		मुक्तावाइ ११८	
भामोसा १५८		मुन्नीलाल २०४	
		मेघवाइ ११७	

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
मेघगज १०६, १६४		लाडकी १०२	
मोतीचन्द्र ११४		लाडकुमार १११	
मोतागा ११३, ११७		लालचद्र ११७	
मोहनलाल ६६		लु का [ लेखक ] ६७, १५७, १७२	
या ( जा ) म ( न ) ( ६० ) ६४, १६३		लुणकरण २०२	
युधिष्ठिर १८०		लोलागर १६३	
रत्नपाल २०५		वगक १६६	
रत्न ६६		व ( वि ) जिया ८१, ६०	
रत्नचुड १८४		वञ्जकुमार ८२	
रत्नशी सोनी ८४		वनमाली १२८	
रलीआत ११३		वनराज ५२, १५७	
राजिगा ८१, ६०		वनादे १११	
रामचद्र ८२, १८४		वराह २५, ४४, १६४	
रामजी ७१, १५८		वर्धमान ६६, १०१	
रामदास ७६		वसुदेव ८५	
रामशाह ७२		वसुभृति १२०, १३७	
रायचद्र ६६, १००		वस्तुपाल ३५, ५८, १५५, १७०, २०२	
रायसघजी २०१		वात्सी १८	
रावण १८४		चारिसार १६६	
राष्ट्रवर्धन १६७		विक्रम १८	
रक्मिणी १२५		विक्रममित्र २७, ३२, २००	
रूपचन्द्र ११२		विक्रमादित्य १७, ४६, १५०, १६६, १६६, २००	
रूपसिंह ६६			
रूपा ६१, ११५, १६०		विजकोर ११३	
लक्ष् ३६		विजय १५८	
लक्ष्मणकुवर १५८		विजयचद्र ५८	
लग्नमल २०५		विद्याधर ४८, १६६	
लहृष्ठा ८१ ६०		विधिमार १६६	
लालराज ६४		विद्यमेन १६६	



नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
विमल १५३, १६८, १६२, २०२		सग (क) ४६, १६७	
विमलभाइ ११८		सगतसिंह १६४	
विमलवाहन १४३		संगत २००	
वीकइराच २०१		संग्राम ५६, १५५	
वीर १०१		सत्यश्री १४२	
वीरचंद्र १०५		सदारंग ७५, १५६	
वीरधवल ५७, ५६, २०२		संप्रति २००	
वीरनारायण २०२		समर १६२	
वीरभद्र १६३		संपदि २००	
वीरमदे १०५, २०१		संप्रति २५, ४५, १२३, १४६,	
वीरमदेवी १०५		१६५, २००	
वीराबाइ १११			
शकटाल ४४		संभव ६३	
शकवर्ण १६६		सलेम ६६, ८३	
शतधन्वा २००		सवलसंग २०२	
शतधर २००		सवाइजेसंग २०२	
शाक १७, १८		सहज १६२	
शातवाहन १६८		सहजू ८४, ६३, १६१	
शालिशूक २००		सहस्रमल्ल ६६, २०१	
शाहिनूप १६७, १६८		सहस्र (स) वीर ८२, ६२, १६१	
शिवगण १६२		१६३	
शिवराज १०५			
शिवसाधु १६७		साजन ६३	
शिशुनाग १६६		सारंग १६३	
शेखु (ख) जी ७५, ७६		सारगदेव ६०	
शोक १६६		सारंगधर १६२	
श्रीकुमार १८४		सावलक १६४	
श्रीपाल १०६, १०८, १०६		साहिवदे ८६, ६६, १६२, १६४	
श्रीपूज १८४		सिद्धराज १५३, ( १७० )	
श्रीवन्ती ६६		सिद्धार्थ १२०	
		सिरदारसिंह १६४	

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
सिवगण ६८		सेरसघ २०२	
सीवकरण २०२		सोनागर १६३	
सुगुण ६६		सोम ३८, ८६	
सुज्येष्ठ २००		सोमक १८६, १२०	
सुनदा १२५		सोमशर्मा २००	
सुमुत्त १४३		सोमाशाह ८२, ६२	
सुयशा २००		सौभाग्यदेवी १३७	
सुरत्राण ७६		स्थानसिंह (ग) ७२, १३७	
सुरसुदर १८४		स्वाति १८	
सुलतानजी ७६, १५६		हठीसिंह ११३, १६४	
सुसुनाग २००		हमीर २०१	
सूरजमल १६४		हरिसिंह १६४	
सूरा ८१, ६०, ६६, १६०		हलायुध १२४	
सूरारतन १६२		हीरादे १६२, १७६	
सूरासाधन १६२		हीरानद ६६, १७५	
सेनजित् १६६		हीराभाइ १६२	
सेनागज १६		हेमराज ८१, ६०	

## E देश-नगरादीनां नामानि ॥

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
अकवराबाद २०१		आघाटपुर ५७, ६४, १३०	
अकव्वरपुर ८१, ८२		आनन्दपुर १६, १८३, १६८	
अघारग्राम ११४		आवू २०२	
अघोटानगर ८५		आरासण ५५, ८१, ८४, ६३, १०४	
अजमेर ७३, ७४ २०१		१५३	
अजीमगंज २०४		आहडनगर १३०	
अणहिल्लपुर ५२, ५५, ६३ ६४		आहल्लणपुर ६६	
१०२, १०५, १५२, १५३, १६८		इलादुर्ग ६६, ८३, ८४, ६२, ६३,	
१७०, १६३		६६, १०४, १५७	
अभिरामाबाद ७५, १५६		ईडरदुर्ग ८२, ६१, १६०, १६१	
अयलपुर १३		उज्जयंत ३६, ६०, ७१, १३२, १५५,	
अयाध्या ७३		१५८	
अर्बुदाचल २७, ५३, ७६, ७८,		उज्जयिनी ३६, ४६, ५७, ६१, ७०,	
८१, ८४, ६०, १११, १५२,		८६, १३१, १५०, १६६, १६७,	
१५३, १५६, १६८, १७०, १८१		१६८	
१६०, १६२		उज्जोगि १७	
अलका ३६		उदयपुर ८५, ६३, ६४, १६१ १६२,	
अवन्ति १३१, १९७		१७६ २०१	
अवरंगाबाद ६५, (२०२)		उदयसागर ८५, ६४, १७५	
अष्टापद ७२, १२० १२१, १८१		उना ( ऊना ) ६१, १०२, १५६,	
अस्थिकग्राम १३१, १३२		१६०, १६१	
अहम्मदाबाद ७०, ७१, ७२, ७७,		उन्नतपुर १००, १०२, १०४, १७४,	
७८, ८१, ८३, ८८, ६०. ६६,		१७५	
१००, १०१, १०३, १११, ११२,		उ ( ओ ) पकेशनगर १८६, १८८	
११३, ११४, १५८, १५६, १६०		उपकेशपुर १८७ १८८	
१६१, १७३, २०१, २०५		ओसिका १७७, १७८, १७६	
आगरा ७२, ७३, ७४, ७५, ६६		औरंगाबाद ( ६५ ) २०२,	
११०, १५६ १७४, २०१,		कच्छ ८२, ८६, ६८, १०१, १६२	
		१६३	

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
कदवगिरि १८१		गलकुड ६५	
कनकगिरि १००		गिरनारि ६०, १३२, १८१	
कन्हड ६४		गु गडीसरोवर ६४	
करहेड ६५		गुजरानवाला ११५	
कलकत्ता (१६६) २०१		गुरुकुल ११६	
कलिंग १६७		गुर्जर [त्रा] ५७, ७१, ७३, ७४, ७५, ८१, ८२, ८३, ८५, ८७, ६३, ६४, ६५, ६७, १०१, १०४, १०६, ११७, १३४, १५६, १६१, १६७, १६१	
कलीकुड ९५			
काकदी (द) ३, ६, ७, ४४, ४५, १५०		गोपगिरि २६, ५२	
कालीकृता १६६		घघाणी ८६	
काशी १०५, १०६ १२६		घोघाचदिर ८६, ६२, १०१	
काश्मीरीमहल ७६		चतलेर ६६	
कीसनगढ २०१		चद्रावती ५३, १२६	
कुकुण ६७, ७१, ८२, १५५		चापानेर ३६, ८०, ८६, १६०	
कुमारपालविहार ५८		चित्तो (त्रो) ढगढ २०१, २०२	
कुभलविहार ८५		चित्रकुट ५२, ५४, १६६, १६३	
कुसुमपुर १८, १६६		जमुना २०१	
कृष्णदुर्ग-६६		जवृद्धीप (दीव) २८, १४७	
कोरटक ४६, १२६, १८६		जवूसर १११	
कोरटा/२०५, २०६		जयतारणी ६६	
कौशाम्बी १६७		जयपुर २०२, २०६	
क्यात्रिल ७३		जावालकपुर ६३	
खानदेश ६५		जामनगर ११८	
खेडा १०६		जामला ७१, १५८, १७४	
गगा ७६, ८०, ८६, १२७, १२६, १६६, २०४		जालोर ८५, ६३, १६१, २०१	
गधपुर ६८		जात्रलपुर ८४, ८६	
गधार [चदिर] ३६, ७१, ७३, ८१, ८७, ८६, ६०, ६६, १५८, १५६, १६१, १६२		जीर्णदुर्ग ३६, १०१, १४७	
३१			

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
जेसलपुर १६०		नटीपट्ट ८३, ६२	
जेसलमेर (रू) ७०, १५८, २०१		नडुलाई १६८	
जोधपुर १६३, २०१		नड्डुलपुर २६, ४६, ५२, १२७, १६७	
टेलीग्राम ५३, १२६		नंदीश्वरद्वीप १८४	
टेलीपुर २७		नरसिंहपुर २६, ५०	
डावर ७५		नलिनीगुल्मविमान १२३	
डींझ्याणक ७६		नवा ( चीन ) नगर ८१, ८४, ६०, ६४, १६६, २०२	
डींझवाणपुर १६१		नवीनपुर ६६, १६१	
डीसा ७८		नाकोडा २०६	
डुंगरपुर १०८		नागपुर ५०, ७५, १५१	
ढीली १८५, १६२		नागहद २६, ५०, १२८	
तारंग ८१		नागोर १५६, १६२, २०१, २०२	
तिक्षशिला १२७		नारंगपुर ८१	
तिलंगदेश ६५		नारदपुरी ( र ) ७२, ७८, ७६, ८८, १०३, १५६, १६०, १७४	
दक्षिण ६६, ८६, ६४, ६५, ६७, १०१, १६१, १७५		नारायणप्रासाद १८६	
दर्भावती १०६		नाहीग्राम ८५, ६४	
दलबादलमहल ८५		न्यग्रोधिका १८	
दादावाडी ११७		पंचनद ११४, ११५, ११६	
दिल्ली ७३, ७४, ७५, ७६, १०२, १५६, (१८५, १६२) २०१,		पंचासर ८१	
दीयावड २०२		पत्त ( ट्ट ) न ५५, ७१, ७२, ७६, ८०, ८२, ८३, ६०, ६६, ६६, १११, १५३, १७०, १६१, १६३	
दीव १५६, १६१		पद्महद १२५	
देवकुलपाटक ४०, ८५		पल्लीका २०५	
देवगिरि १७३		पाटण ६६, १५२, १५६, १६०, १६१, १६२, १६८	
देव [क] पत्तन ६०, १३१, १६६		पाडलीपुत्त ( र ) १७ १६६, १६७,	
द्वीपबंदिर ८३ ६३, १००, १०१			
धरणविहार ६६, १५६			
धांसी १६४			
धोराजी १०६			

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
पाटुरा १११		वौद्धपुरी ( ४७ ) १२५, ( १६६ )	
पादलिप्तपुर ११७, ११८, ११९		भरत (ह) १३, १४, ४३, ८६, ९७	
पाल ( ल्ह ) णपुर ५८, १६२,		१२०, १६४,	
१७२, १७६, १९२		भरुअ (क) च्छ १७, १८९, १९०	
पाली ११४, १७६, २०५, २०६		भाग्यनगर ९५	
पावापुरी १९७		भारह १४२	
पाँडोलरु ८५, १७५		भावनगर ११५, ११७	
पीत्रोला ९४		भीन्नमाल १८४, १८५, १९१	
पुण्यपत्तन १०६		भीमपत्नी ३०, ६२	
पुष्पकरडिनी १३१		भूज ८६	
पोयन्द्रा १११		भृगुकच्छ ४६, १३१, १६५, १९७,	
पोसीनापुर ८४		१९८	
प्रतिष्ठानपुर १९८		मकमुदावाद २०४	
प्रयाग ७३		मगलपुर १०२	
प्रह्लादनपुर २८, ३६ ७१, १००,		मर्चीन्दुर्गा ८५, ९४	
११४, ११६, १५५, १५८, १७०		मडपाचल ६०, ८३, ८६, ९२, ९७,	
प्रह्लादनविहार ५८, ५९		१०४, १३५, १५५, १६१	
फतेपुर ७३, ७४, ७५, १०२, १५९		मडोवर २०१	
फलवर्दी ५५, १५३, १७०		मथु (हु) रा ५२, १८१, १९६, १९८	
फलोधी १९४, २०१		मनोहरपुर ९८, १६२	
वगाल ७३		मरु ६२ ७०, ७१, ७५, ८१, ८२,	
वरहानपुर ८६, ९५, ११२, १६१		८४, ८६, ८७, ९०, ९६, ९७,	
वहुलि ( ला ) १८		१०१, १५५, १५८, १६१, १६२,	
वामणवाडा २०६		१७३	
वारेजा ६९		मरोटकोट १८९, १९२	
त्रिजापुर ८६, ९४, ९५, १६१		महाकाल ४५, ४६, १२४, १५०	
वीकानेर १९४, २०१		१६५, १६६	
वु दी ९६		महाराष्ट्र ११०	
बृहद्वट १२९		महाविदेह ४०, १४८	
बृहन्नगर ८३		महावीरजी २०६	

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
महिमनगर ७६		राजनगर ८१, ८३, ८६, ८६, ६०,	
महेशानपुर ७१, ११७, ११८		६२, ६६, ६७, ६६, १०४, ११२,	
महेश्वर ६४		११४, ११८, १६०, १६१, १६२	
मांगलोर १७६		राण [क] पुर ६६ ७६, ८१, ८५,	
मालव [क] ५७, ५८, ५६, ७०,		६०, १५६, १७२	
७१, ७३, ७४, ८३, ८६, १०१,		रांदेर १०६	
१५४, १५५, १५८, १६६		रामनगर ११५	
माल्यपुर ६६		रामसैन्यपुर ५३, १२६,	
मुलतान ७३, ७४		रायगिह २	
मेडता ७५, ८५, ८७, ६३, ६७,		रैवताद्रि (चल) ८१, ६४, १३२	
१५६, १६१, १६२, २०२		रोह ७६	
मेदनीपुर [७६, ८६, १०४, १७५,		रोहण १३७	
१६३		रोहीणीनगर ४०	
मेदपाट ८२, ८४, ८५, ६६, ६७,		लक्ष्मीमहास्थान १८४	
१०१		लिंका १८४	
मेरु ३१		लहरा ११५	
मेरुता ९६		लाट ८२; ६७,	
मेवाड़ ३६, १०२, १६२		लाटापल्ली ८१	
मेवात ७०, ८१, ६६, १०१, १५७,		लाडलुग्राम १०५	
१६२, १७३		लाडोली (ल) ६०, १६०	
मोतिशाहूंक ११३, ११७		लामपुर ७६, ८६, ६०, १०३	
मोरव्य ७०		[लाहो (हु)] ७३, ७४, ७८, ७६,	
योधपुर ८५, ६३, १३७ (१६३, २०१)		१६०, १७६	
रणमल्लचोकी ८४, ६३		लीवड़ी ११८	
रणमाला १८४		लुणद्रही १८५, १८६,	
रहवीरपुर १६६		लोधिआणा ७६,	
राजगृह (२) १६३, १६७, १६६		वटपल्ली ७१, ८५	
राजदेश ८२		वडाली १५८	
राजधन्यपुर ७८, ८१, ६०, ११२,		बंधनगर ८५, ६३	
१७३		वरकाण [क] ७२, ७६, ८२,	
		६४, १७४	

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
चरणी १६२		शाकभरी २६	
चलमी ( ही ) १८, ५०, १५१		शिवपुरी १००	
वसुन्धीपुर १६		शोरीपुर (७४) १५६	
वागरोड १११		श्यालकोट ११६, १९७	
वालभ ( भ्य ) १८		पमणोर ८५, ९४	
विक्रमनगर १७६, १६३, १६४		सत्यपुर १८१	
विद्यानगर ८१		सपादलक्ष १०५	
विद्यापुर ३७, ६०, १३१, १५५		समी १०८	
विन्ध्याद्रि १३७		सम्मोतगिरि १८१	
विमलगिरि ५२		सहजीग २०५, २०६	
विमलवसति १६२		सादडी ८४, ६३	
विमलाचल ८१, १४३		सावली ८४, ६३, १६१	
त्रिलासपुर १८		सिद्धगिरि ११३, ११४, ११७, १३६	
विशाला १३१, १६८		सिद्धाचल ६०, ६४, १०६, ११२,	
विश्व (स) लनगर ६६, ६१		१७०	
विहार ७३		सिरोही (ई) ६६, ७२, ७५, ७६,	
वीरनयरी १८४		७६, ८१, ८२, ८४, ६३, १०२,	
वीरमग्राम, ७०, ११४, १५८		१५६, १७४, २०१	
वीरमपुर २०६		सिवाणा २०२	
वृद्धनगर ६६, १५६		सीकदरपुर १०४	
वैताल्य १८४		सु (सौ) राष्ट्र ७०, ८१, ८२, ८३,	
वैराट ७६		६०, ६३, ६४, ६७, १००, १०१,	
शकदरपुर ८१, ६०, १६०, १७३		११०, १३६, १३७, १५७, १६१,	
शरेश्वर ७२, ८१, १०८, १८१		१६२, १७४	
शत्रुजय ३६, ४७, ६०, ७१, ८१,		सुरीपुर ७४ (१५६)	
८४, ६०, ६६, १०१, १३०, १३६,		सूरतिवदिर ८०, ८६, ६४, ६६,	
१५१, १५५, १५८, १६१, १७३,		१०३, ११०, १६०, १६१	
१८१, १६१, १६२, १६३		सोजत १०५	
शाकल १६७		सोपारक ४८, १६६	



नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
स्तंभतीर्थ ५७, ५८, ६२, ६६, ६७, ७१, ७२, ७६, ८१, ८२, ८३, ८४, ८६, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९६, ९६, १०३, १०४, ११३ १५४, १५८, १६०, १६१, १७४, १८१, १९५		हट्टीसिंहवाडी ११३ हला (ला) रदेश ८४, ९०, ९३, ९४, ९७, १०१ २०२ हस्तिनापुर १८१ हार्थीगुफा १९७ हीमवंत १३ हेमाद्रि १२०	
स्वर्णागिरि ८५, ९३, ९६, १०४			

३ गृह्य—स्तोत्राणां नामानि ॥

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
अंगविद्या ५२		अवचूर्णि ६४, ६५	
अंगोपांग स्वा० १०८		अष्टप्रकारी १०७ ११२	
अज्ञानतिमिर भास्कर ११५		अष्टमदस्वा० ११३	
अदारपापस्थानकस्वा० १०८		अष्टसहस्री १०७	
अनुयोगद्वार १४२		अष्टादशार्ह चक्रबंधस्तव ६५	
अनेकान्तजयपताका ५४, ५५ १५३		अष्टापदकल्प १८१	
अनेकान्तव्यवस्था १०७		आगमपूजा ११२	
अध्यात्मकल्पद्रुम १७२		आगमसार ११०	
अध्यात्ममतरखंडन १०७		आचार प्रदीप ६७	
अध्यात्ममत्परीक्षा १०७, १०८		आचारांग १८४	
अध्यात्मसार १०७		आठद्रष्टिस्वा० १०८	
अध्यत्मोपदेश १०७		आत्मख्याति १०७	
अध्यात्मोपनिषद् १०७		आत्मप्रबोध १०८	
अमृतवेली १०८		आदिजीनस्तव १०७	
अर्णिकापुत्रचरित्र १९६		आदिदेवसम० १३७	
अर्जु दाचलकल्प १८१		आनंदघनचतुर्विंशतिका १०६	
अलंकारचूडामणि १०७		आनंदघनस्तूति १०८	
		आराधक वि० च० १०७	

नाम	पत्राणि	नाम	पत्राणि
आराधना [कुलको]	६१, १६८	औपपातिक	१६८, १६९
आवश्यक	१, ८, २५, ४४ ४८,	औष्ट्रिकमतोत्सुत्रदीपिका	१७३
[निर्युक्ति]	६४, ६५, १२१,	कथावली	१६८
[चूर्णि]	१४०, १६४, १६७,	कदम्बगिरिकल्प	१८१
[वृत्ति]	१६८, १६९	कम्पसूत	१
आवश्यकस्तवन	१०८	कमलबधस्तव	६३
ईर्यापथिकी	१७३	कम्मपयडी	१२
उत्तमविजयरास	११२	कपूर्वविजयगणिस्वाध्याय	१११
उत्तराध्ययन	५४, १५३, १६८, १६८	कर्मग्रन्थ	३५, ५६, ११३, १७०,
उदयदीपिका	११०		१७१
उपकेशगच्छचरित्र	१८६	कर्मप्रकृति	१०७
उपकेशगच्छीय	५० १७७	कल्प	१६, १८०, १८१, १८३,
उपदेशपद	५४, १५३		१६४
उपदेशप्रामादस्तम	११३	कल्पकिरणावली	१७३
उपदेशमाला	६५, १०८, १२५, १४८	कल्पसूत्र	१, २, १६, १६६, १६८
उपदेशरत्नाकर	६६	कल्याणकपूजा	११२
उपदेशरसाल	१६२	कल्याणकस्तोत्र	६५
उपदेशरहस्य	१०७	कल्याणमन्दिर	४६, १०६, १५०,
उपधानप्राचक	२६, (१५२)		१६६
उपधानवाच्य	५२, १५२	कायस्थीतिस्तव	६१
उपशमश्रेणी	१०८	कालसप्ततिक	१४१, १४३, १६८
उपसर्गहरस्तव	४४, १२०, १२८, १६५	कालिकाचार्य कथा	१६८
उपितभोजनकथा	६३	कान्यप्रकाश	१०७
उसहवद्वमाणस्तव	५६	कुमतिकुदाल	१७३
सृपभविनति	१०६	कुमतिरडन स्तवन	१०८
सृपिमडलवृत्ति	१२१	कूपहृष्टान्त	१०७
षादशीमन्व	१११	कृपारसकोश	७६
शेतिहामिक पत्र	२०१	क्रियारत्नसमुच्चय	३२, ५२, ६५
शेन्द्रस्तुति	१०७	चेत्रसमास	६३
शोधनिर्युक्ति	६५	गगीयो० स्तव	७५